बच्चों की कक्षा, ग्रेड 1 को पढ़ाना

रूही संस्थान

पुस्तक 3

बच्चों की कक्षा, ग्रेड 1 को पढ़ाना

रुही संस्थान

श्रृंखला की पुस्तकें :

रूही संस्थान द्वारा विकसित इस श्रृंखला की वर्तमान पुस्तकों की सूची नीचे दी गई है। इन पुस्तकों का उद्देश्य युवाओं व व्यस्कों द्वारा अपने समुदायों की सेवा करने की क्षमता बढ़ाने के क्रमबद्ध प्रयासों में पाठ्यक्रम की मुख्य धारा में उपयोग किया जाना है। रूही संस्थान इस श्रृंखला की तीसरी पुस्तक जो बहाई बच्चों की कक्षा के शिक्षकों को प्रशिक्षित करने से संबधिंत है, की शाखा के रूप में एक अन्य पाठ्यक्रम भी विकसित कर रहा है और इसे इस सूची में इंगित भी किया गया है। यह तथ्य ध्यान में रहे कि सूची में क्षेत्र में हुये विकास के अनुभवों के आधार पर बदलाव भी होगा। इसमें नई पुस्तकों को सम्मिलित किया जायेगा जब पाठ्यचर्या संबंधी तत्व विकसित होकर ऐसे स्तर पर पहुँच जायेंगे जब उन्हें वृहद स्तर पर उपलब्ध कराया जा सके।

पुस्तक 1 दिव्य जीवन : एक चिन्तन

पुस्तक 2 सेवा का संकल्प

पुस्तक 3 बच्चों की कक्षायें, स्तर 1

बच्चों की कक्षायें, स्तर 2 (शाखा पाठ्यक्रम)

बच्चों की कक्षायें, स्तर 3 (शाखा पाठ्यक्रम)

बच्चों की कक्षायें, स्तर 4 (शाखा पाठ्यक्रम)

पुस्तक 4 युगल अवतार

पुस्तक 5 किशोर ऊर्जा को उजागर करना

प्रारम्भिक संवेग : पुस्तक 5 का प्रथम शाखा पाठ्यक्रम

बढ़ता दायरा : पुस्तक 5 का दूसरा शाखा पाठ्यक्रम

पुस्तक 6 प्रभुधर्म का शिक्षण

पुस्तक 7 सेवा के पथ पर साथ–साथ चलना

पुस्तक 8 बहाउल्लाह की संविदा

पुस्तक 9 एक ऐतिहासिक परिदृश्य प्राप्त करना

पुस्तक 10 जीवंत समुदायों का निर्माण

पुस्तक 11 भौतिक साधन

पुस्तक 12 परिवार और समुदाय

पुस्तक 13 सामाजिक क्रिया में शामिल होना

पुस्तक 14 जनसंवाद में भागीदारी

कॉपीराईट © 1997, 2022 रूही फाउंडेशन, कोलंबिया
सर्वाधिकार सुरक्षित। संस्करण 1.1.1.PE प्रकाशित जनवरी 1997
संस्करण 2.2.1.PE.PV (अनंतिम अनुवाद) अक्टूबर 2022
ISBN 978-628-95102-5-6

Enseñar clases para niños, primer grado के रूप में स्पेनिश में मूल प्रकाशन
कॉपीराईट © 1987, 1996, 2021 रूही फाउंडेशन, कोलंबिया
ISBN 978-958-52941-7-2

रूही संस्थान
काली, कोलंबिया
ई–मेल : instituto@ruhi.org
वेबसाईट : www.ruhi.org

विषय सूची

सहशिक्षक के लिए कुछ विचार v

बहाई शिक्षा के कुछ सिद्धांत 1

बच्चों की कक्षा के लिए, ग्रेड 1 के पाठ 43

सहशिक्षक के लिए कुछ विचार

यह पुस्तक दो इकाईयों को साथ लाती है, जो बढ़ती संख्या में व्यक्तियों की क्षमता निर्माण करने का प्रयास करती है ताकि वह पड़ोस और गाँवों में बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा की कक्षाओं के नियमित शिक्षण के अति प्रशंसनीय कार्य का उत्तरदायित्व उठा सकें। यह रूही संस्थान की श्रृंखलाओं के मुख्य क्रम में तीसरी पुस्तक है, और विशेष सेवा पथ पर चलना चाहने वालों के लिए राह खोलने वाली प्रथम पुस्तक है। प्रतिभागी जो ऐसा करने का निर्णय लेते हैं, वे बच्चों की शिक्षा से संबंधित शाखा पाठ्यक्रमों की श्रृंखला का अध्ययन करेंगे, साथ ही अपनी परिस्थितियों के अनुसार मुख्य पाठ्यक्रम श्रृंखला द्वारा निर्धारित पथ का अनुसरण करते हुए प्रगति भी करते रहेंगे।

एक समूह को इस पुस्तक के द्वारा आगे ले जाते हुए, सहशिक्षक को ऊपर दी गई दृष्टि को ध्यान में रखना चाहिए, यह कंठस्थ रखते हुए कि प्रतिभागियों का कुछ प्रतिशत ही इस प्रयास के प्रति अपने को समर्पित करेगा। इसके तात्कालिक उद्देश्य के परे, तब, यह पुस्तक हर व्यक्ति, जो अब दृढ़ता से सेवा के पथ पर नियत हो चुका है, को विस्तृत रूप से कुछ अवधारणाओं और विचारों, से अवगत करायेगी जो गाँवों और मुहल्ले में बच्चों के लिए उभरे हुए शैक्षणिक कार्यक्रम को आकार दे रही है। इसमें, यह पुस्तक समुदाय के अंदर एक बढ़ी हुई जागरूकता में योगदान देने की आशा रखती है, दोनों ही, एक समुदाय के बच्चों को आध्यात्मिक रूप से पोषित करने की तथा उन गुणों, अभिवृत्तियों और व्यवहार जिसे उसके व्यस्क सदस्यों को बच्चों से, आवश्यक रूप से, अपने अनोन्यक्रियाओं में दिखना चाहिए।

पुस्तक 2 की दूसरी इकाई के अपने अध्ययन से, प्रतिभागी पहले से ही अब्दुल बहा के इस कथन से परिचित हैं कि शिक्षा तीन प्रकार की होती हैः भौतिक, मानवीय और आध्यात्मिक। यहां उन्हें बाद की शिक्षा के बारे में अपनी समझ को आगे बढ़ाने का अवसर दिया जाएगा, जिसकी सहायता से व्यक्ति की आध्यात्मिक प्रकृति, उच्च प्रकृति विकसित होती है। शुरू से ही जो स्पष्ट होना चाहिए, वह यह है कि बहाई धर्म में बच्चों के लिए आध्यात्मिक शिक्षा की कल्पना की गई है, जो कभी–कभी धार्मिक शिक्षा से जुड़े हठधर्मी विश्वासों को लागू करने से मौलिक रूप से भिन्न होती है। इसके विलग, इसका उद्देश्य ज्ञान के प्रति प्रेम, सीखने के प्रति एक खुला दृष्टिकोण और वास्तविकता की जांच करने की निरंतर इच्छा को बढ़ावा देना है।

यह स्वीकार करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि, युवाओं की शिक्षा में, धार्मिक उपदेशों को दूर नहीं किया जा सकता है, क्योंकि ऐसा करना उन्हें दिव्य सत्यों और आध्यात्मिक सिद्धांतों, तक पहुंच से वंचित करना होगा जिन्हें उनके विचारों और कार्यों को नियंत्रित करना चाहिए। जो लोग इस दावे का समर्थन करते हैं कि युवाओं को समाज के साथ अपनी स्वतंत्र इच्छानुसार बातचीत से अपने स्वयं के मानकों और विश्वदृष्टि हासिल करने के लिए छोड देना सबसे अच्छा है, वे इस बात की सराहना नहीं करते हैं कि कैसे आक्रामक रूप से राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक शक्तियां विश्वास और व्यवहार के पैटर्न को बढ़ावा देती हैं जो स्वयं उनकी सेवा करते हैं। लेकिन यदि ऐसा नहीं होता, तो यह मानने का कोई कारण नहीं कि आने वाली पीढ़ियां व्यक्ति की आध्यात्मिक प्रकृति को पोषित करने वाली शिक्षा के बिना एक बेहतर दुनिया बनाने में सक्षम होंगी। ईश्वरीय शिक्षक के मार्गदर्शन से रहित मानवता अराजकता, अन्याय और पीड़ा से और अधिक कुछ नहीं उत्पन्न कर सकती है।

बहाई शिक्षाएँ, इस पुस्तक तथा इस पुस्तक के शाखा पाठ्यक्रम में परिकल्पित बाल शिक्षा के छह वर्षीय कार्यक्रम के केंद्र में हैं। इसके साथ ही, कार्यक्रम का डिजाइन, विशेष रूप से सभी ग्रेड में सामग्री का अनुक्रमण, सभी पृष्ठभूमि के युवाओं के भाग लेने का मार्ग खोलता है। ग्रेड 1 के पाठ 5 या 6 वर्ष की आयु के बच्चों में आध्यात्मिक गुणों के विकास से संबंधित हैं – चरित्र के शोधन में योगदान करने के प्रयास में ग्रेड 2 इन पाठों पर आधारित हो और निर्माण करता है, उन आदतों और आचरण के पैटर्न को बढ़ावा देकर जो पिछले वर्ष खोजे गए आंतरिक गुणों को अभिव्यक्ति देते हैं – उदाहरण के लिए, प्रार्थना करने की आदत, जिसके माध्यम से ईश्वर के करीब आने की इच्छा से विशिष्ट एक आंतरिक स्थिति व्यक्त की जाती है। अगले ग्रेड ज्ञान के प्रश्न की ओर मुड़ते हैं। विशेष रूप से, अपने स्वयं के आध्यात्मिक विकास के लिए सचेत रूप से कार्य करने हेतु, व्यक्तियों को उस स्रोत से जोड़ा जाना चाहिए जहाँ से ईश्वर का ज्ञान प्रवाहित होता है। इस दिवस के लिए ईश्वर के युगल प्रकटीकरणों, साथ ही उनके पूर्व प्रकट हुए प्रकटीकरणों के जीवन की विषय वस्तु पर इन ग्रेड के पाठों में चर्चा की जाती है। अंतिम ग्रेड बच्चों को बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के बारे में अपने ज्ञान को बढ़ाने का अवसर प्रदान करता है, जो अब्दुल बहा के स्पष्टीकरण और उदाहरण द्वारा निर्देशित और लाभान्वित होता है। यह आशा की जाती है कि जीवन में आगे बढ़ते समय और अपने विचारों और कार्यों को बहाउल्लाह की शिक्षाओं के साथ संरेखित करने का प्रयास करते समय यह बच्चों में उनके लेखन और कथनों की ओर मुड़ने की आदत को मजबूत करने में सहायता करेगा। 11 या 12 वर्ष की आयु तक पहुँचते हुए, वे किशोर आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम के लिए तैयार हो जाते हैं, जिसमें उनकी बढ़ती चेतना को एक एनिमेटर के साथ अध्ययन किए जा रहे पाठ्यक्रमों की श्रृंखला के माध्यम से और विस्तारित किया जाएगा, जिसमें वे पाठ्यक्रम भी शामिल हैं जो बहाई बच्चों की कक्षाओं में प्राप्त शिक्षा को जारी रखेंगे। बच्चों की कक्षा के आकांक्षी शिक्षकों को पूरा विश्वास होना चाहिए कि माता–पिता स्वयं बहाई न होते हुए भी, अपने पुत्रों एवं पुत्रियों को ऐसी कक्षाओं में भेजने के अवसर का स्वागत करते हैं और उनके कोमल हृदय और मस्तिष्क पर आध्यात्मिक शिक्षा के प्रभाव को देखकर निश्चित ही प्रसन्न होते हैं।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, ग्रेड 1 में कक्षाएं चरित्र के शोधन पर ध्यान केंद्रित करती हैं। इस संदर्भ में, पहली इकाई,'बहाई शिक्षा के कुछ सिद्धांत प्रभु धर्म के लेखों से प्राप्त कुछ मूलभूत अवधारणाओं की जांच करती है, जिनका शिक्षा पर गहरा प्रभाव होता है। इकाई का प्रारंभिक आधा भाग इस चर्चा के लिए दिया गया है, जबकि शेष यह देख्ता है कि पाठों के संचालन में और माता–पिता के साथ शिक्षक के संबंध में क्या दृष्टिकोण अपनाए जा सकते हैं।

इकाई में चर्चा की गई पहली अवधारणाओं में से एक है, मानव क्षमता, जिसे बहाउल्लाह के कथन में मिली कल्पना के माध्यम से खोजा गया है जो मानव की तुलना 'अमूल्य रत्नों से समृद्ध खदान' से करती है। प्रतिभागियों को इस कथन से निकाले जा सकने वाले दो तात्कालिक निहितार्थों पर चिंतन करने के लिए कहा जाता है – शैक्षिक दृष्टिकोण जो छात्रों को जानकारी से भरे जाने की प्रतीक्षा कर रहे खाली बर्तनों के रूप में देखते हैं, उन्हें अलग ही रखा जाना चाहिए और यह कि उचित पोषण के बिना, बच्चे अपने अंतरतम में छिपे हुए अनेक रत्नों को प्रकट करने में सक्षम नहीं होंगे।

इकाई प्रस्तावित करती है कि जिन रत्नों से प्रत्येक व्यक्ति संपन्न है, उनमें वे हैं जिन्हें 'आध्यात्मिक विशिष्टतायें' कहा जाता है, जिन्हें स्थायी संरचनाओं के रूप में देखा जाता है, जिन पर एक कुलीन और ईमानदार चरित्र का निर्माण किया जा सकता है। यह कि वे 'गुणों' की एक अलग श्रेणी का गठन करते हैं – एक सामान्य पारिभाषिक शब्द जिसका उपयोग हर तरह की प्रशंसनीय विशेषता के लिए किया जाता है, जिसमें आदतों और दृष्टिकोणों के साथ–साथ कौशल और क्षमताएं भी शामिल हैं – यह एक आवश्यक विचार है जिसे सभी प्रतिभागियों को पर्याप्त रूप से समझना चाहिए। भाग 6 और 7 इस कथन के कुछ निहितार्थों पर विचार करते हैं। ट्यूटर यह सुनिश्चित करना चाहेंगे

कि समूह के सदस्य पुस्तक 1 की तीसरी इकाई के अपने अध्ययन के साथ जो चर्चा कर रहे हैं, उससे अपने को जोड़ने में सक्षम हैं, जहां उन्होंने सोचा कि मानव आत्मा के संकायों के रूप में आध्यात्मिक गुणों को कैसे अवश्य ही इस जीवन में विकसित किया जाना चाहिए ताकि वे ईश्वर की ओर अनन्त यात्रा में हमारी सहायता करें। आध्यात्मिक गुणों के पोषण के लिए ईश्वर का प्रेम और ईश्वर का ज्ञान अनिवार्य है। प्रतिभागियों के लिए यह देखना महत्वपूर्ण है कि कैसे इन दो भागों में विचार ग्रेड 1 के पाठों को अलग करते हैं, उदाहरण के लिए, सद्‌गुणों पर उस पाठ्यक्रम से जो समय की पाबंदी और सत्यवादिता को एक और एक ही प्रकार का गुण मानता है। और, जब शिक्षक इस भेद को सराहते हैं, तो वे एक अच्छे चरित्र के विकास को मुख्य रूप से व्यवहार संशोधन के संदर्भ में देखने की प्रवृत्ति से बचेंगे।

बेशक, आध्यात्मिक गुणों की अपनी एक गतिशीलता होती है, जिसे पाठ के मुख्य तत्व–प्रार्थना, उद्धरणों को कंठस्थ करना और कहानियां–विशेष रूप से बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं। प्रतिभागियों को पहले से ही पुस्तक 1 और 2 के अपने अध्ययन से इन तत्वों की प्रकृति के बारे में कुछ जानकारी है, और भाग 8 का उद्देश्य बच्चों को पढ़ाने के कार्य के लिए उन्होंने जो कुछ सीखा है उसे विस्तारित करने में उनकी सहायता करना है। ऐसा करने में, उन्हें यह पहचानना चाहिए कि, युवाओं में आध्यात्मिक गुणों को विकसित करने के लिए, सभी पाठ उन्हें ईश्वर के शब्दों के तत्काल संपर्क में लाते हैं और सर्वोच्च मानवीय आदर्शों के मूर्तरूप अब्दुल बहा की कहानियों से उन्हें प्रेरित करते हैं।

इकाई में जांच की जा रही एक अन्य अवधारणा है, ईश्वर का भय जिसे भाग 12 में संबोधित किया गया है। बहाई लेखों के अनुसार, यह मनुष्य की शिक्षा में 'प्रमुख कारक' है। प्रतिभागियों के लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि यह भय ईश्वर के प्रेम से अविभाज्य है, क्योंकि वह जिसे हम प्रेम करते हैं उसे प्रसन्न करने की इच्छा से और किसी भी ऐसे कार्य से बचने के लिए जो उसके प्रेमपूर्ण अनुकम्पाओं को हम तक पहुंचने से रोकता है, पैदा हुआ डर है। प्रेम के अभाव में, वह भय जो हमें अनुचित आचरण से दूर होने के लिए प्रेरित करता है, एक अन्य प्रकार का है– एक क्रोधी ईश्वर द्वारा दंड का भय। यह ऐसी छवि नहीं है जो बच्चों के दिमाग में आनी चाहिए। जबकि इच्छुक शिक्षकों को शैक्षिक प्रक्रिया में ईश्वर के प्रेम और ईश्वर के भय के बीच संबंधों को अच्छी तरह से समझने की आवश्यकता है, उन्हें यह जानना चाहिए कि यह ऐसा विषय नहीं है जिसे उन्हें कक्षा में स्पष्ट रूप से उठाना है। बल्कि उन्हें अपने छात्रों के हृदयों में ईश्वर के प्रेम की लौ को जलाना सीखना चाहिए और उन्हें पूर्ण आश्वासन प्राप्त करने में सहायता करनी चाहिए कि, अपने अनंत प्रेम से मानवता का निर्माण करने के बाद, भगवान कभी भी हमारा पोषण और रक्षा करना बंद नहीं करता। यह उसके सौन्दर्य का प्रेम है, जो अंतिम विश्लेषण में, उन्हें उसकी सदिच्छा के विरुद्ध कार्य करने से हतोत्साहित करेगा।

उपरोक्त अवधारणाओं और विचारों पर चर्चा से प्रतिभागियों को यह समझ जाना चाहिए कि, अंततः, आध्यात्मिक शिक्षा की प्रक्रिया के माध्यम से, बच्चों को आध्यात्मिक गुणों के अधिग्रहण को अपने आपमें एक पुरस्कार के रूप में और एक अयोग्य चरित्र के कब्जे को सबसे बड़ी सजा के रूप में मानना चाहिए। इस सबको, तब, प्रतिभागियों को बच्चों में व्यवहार के संशोधन को एक उचित परिप्रेक्ष्य से देखने में सक्षम करना चाहिए– एक केंद्रीय उद्देश्य के रूप में नहीं बल्कि चरित्र के परिष्करण के लिए सहायता के रूप में। तदनुसार, वे वांछनीय आचरण को प्रोत्साहित करने और व्यवहार के अनुचित पैटर्न को हतोत्साहित करने के लिए बच्चों के साथ अपनी बातचीत में उचित तरीके खोजेंगे, और इनमें से कुछ का उल्लेख भाग 13 में किया गया है। इस भाग में संक्षेप में संबोधित अन्य अवधारणाएं स्वतंत्रता और अनुशासन से संबंधित हैं। जबकि कठोर दंड का स्पष्ट रूप से बच्चों की शिक्षा में कोई स्थान नहीं है, उन्हें अपनी इच्छानुसार कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता देना उनके आध्यात्मिक विकास के लिए समान रूप से हानिकारक है।

इकाई आगे इस प्रश्न की ओर मुड़ती है कि एक सीखने का आनंदमय वातावरण निर्माण करते हुए कक्षा में व्यवस्था और अनुशासन कैसे बनाए रखा जाए। ट्यूटर को यह कंठस्थ रखना चाहिए कि अधिकांश प्रतिभागियों को बच्चों को पढ़ाने का कोई पिछला अनुभव नहीं रहा होगा, और इसलिए उनको विचार करने के लिए यहां कुछ प्रारंभिक विचार मात्र प्रस्तुत किए गए हैं। सेवा के इस कार्य को करने और अनुभव के आलोक में विचारों पर चिंतन करने के बाद वे संबंधित भागों पर वापस जाना चाह सकते हैं।

इसके बाद प्रतिभागी कुछ ऐसे तरीकों की जांच करते हैं जिनका वे पाठ में दी गतिविधियों में बच्चों को शामिल करने के लिए अपना सकते हैं। प्रार्थना, उद्धरणों को कंठस्थ करना, और ऊपर बताई गई कहानियों के मूल तत्वों के अतिरिक्त, इन गतिविधियों में गीत, खेल और रंग भरना शामिल हैं। उपलब्ध तरीकों का विश्लेषण करते हुए, प्रतिभागी पवित्रता के आध्यात्मिक गुण पर पहले पाठ मे पुनः विचार करते हैं।

अंत में, भाग 26 में, वे चल रहे वार्तालाप की प्रकृति पर विचार करते हैं जो एक शिक्षक और उसकी कक्षा में बच्चों के माता–पिता के बीच होती है। यह भाग इस संबंध में पुस्तक 2 में प्रतिभागियों द्वारा पहले से ही किए गए अध्ययन के साथ–साथ किसी भी प्राप्त अनुभव पर निर्माण करता है जो उन्होंने उनके पड़ोस या गांव में कक्षाओं में भाग लेने वाले बच्चों के साथ गृह भ्रमण करते मित्रों के बढ़ते नाभिक के रूप में प्राप्त किया हो। ट्यूटर को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रतिभागियों को अभ्यास करने के लिए पर्याप्त समय दिया जाए जो उन्हें माता–पिता के साथ बातचीत की तैयारी में इस पहली इकाई में अवधारणाओं की पुनः जांच करने के लिए कहता है। यह अभ्यास समूह के सदस्यों के लिए उनके मस्तिष्क में चर्चा की गई कई अवधारणाओं और विचारों को सुदृढ़ करने के साधन के रूप में कार्य करेगा।

दूसरी इकाई, 'बच्चों की कक्षाओं के लिए पाठ, ग्रेड 1' में दो भाग शामिल हैंः इस ग्रेड के लिए सुझाए गए चौबीस पाठ और प्रारंभिक भाग शिक्षकों को पाठ की सामग्री से अच्छी तरह परिचित होने योग्य करने के लिए तैयार किए गए हैं, जिनमें से प्रत्येक एक आध्यात्मिक गुण के विकास के चारों ओर संरचित है। एक बार में चार पाठ लेते हुए, प्रारंभिक भाग प्रतिभागियों को प्रत्येक के मूल तत्वों की पुनः विचार के माध्यम से मार्गदर्शन करते हैं, जिसका वे लगभग उसी तरह से विश्लेषण करते हैं जैसे उन्होंने पिछली इकाई में शुद्धता पर किया था।

बहाई लेखों से एक उद्धरण प्रत्येक पाठ का मुख्य तत्व है। इसके साथ एक संक्षिप्त विवरण दिया गया है जिसका उपयोग शिक्षकों को बच्चों को उद्धरण प्रस्तुत करने में करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। संक्षिप्त होते हुए भी यह कथन पवित्र लेखनी से लिए गए शब्दों और छवियों के एक समूह का उपयोग करता है जो बच्चों को उनके दिमाग में उस गतिकी का एक चित्र बनाने में सहायता करेगा जो संबोधित आध्यात्मिक गुणवत्ता की विशेषता है। प्रारंभिक टिप्पणियों को स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत करने और इन गतिशीलताओं में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में एक शिक्षक की, छात्रों की सहायता करने की क्षमता अनुभव के माध्यम से और पाठों में चर्चा किए गए आध्यात्मिक गुणों पर निरंतर चिंतन के माध्यम से बढ़ेगी। इस प्रकाश में, प्रतिभागियों को प्रारंभिक भागों में एक व्यक्ति के जीवन में और उनके शिक्षण प्रयासों के लिए, प्रत्येक गुणवत्ता के महत्व पर प्रारंभिक चिंतन करने के लिए कहा जाता है, और इस उद्देश्य के लिए प्रत्येक गुण से संबंधित उद्धरणों का एक छोटा चयन शामिल किया गया है।

इस तरह के चिंतन में शामिल होने के बाद, प्रतिभागी आगे उन कहानियों की जांच करते हैं जो उन गुणों को दर्शाती हैं जिन पर वे विचार कर रहे हैं। अब्दुल बहा के जीवन से बड़े पैमाने पर प्राप्त, इनका उद्देश्य बच्चों को मानव आत्मा के गुणों के रूप में आध्यात्मिक गुणों की असीम

अभिव्यक्तियों की एक झलक प्रदान करना है। इसके लिए, प्रत्येक कहानी के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं ताकि शिक्षकों को घटनाओं के अनुक्रम से परे आध्यात्मिक वास्तविकता की खोज करने में सहायता मिल सके। विशेष रूप से अब्दुल बहा की कहानियों के मामले में, इन प्रश्नों को तैयार किया गया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि, उनको सुनाते समय, शिक्षक इस बात पर जोर दें कि अब्दुल बहा ने आध्यात्मिक गुणों को अत्यंत पूर्णता से कैसे प्रकट किया और तत्काल एवं सतही सहसंबंध को चित्रित करने से बचें जो बच्चों को उनके द्वारा किए गए कार्यों के वास्तविक महत्व को देखने से दूर कर सकता है।

प्रतिभागियों द्वारा इस तरह से चार पाठों के प्रत्येक समूह का विश्लेषण करने के बाद, उन्हें पहली इकाई में चर्चा किए गए तरीकों को उपयोग करते हुए, आपस में विभिन्न तत्वों का अभ्यास करने में समय बिताने के लिए कहा जाता है। अभ्यास के घटक के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। संभावित शिक्षकों के रूप में उनकी क्षमता को बढ़ाने के प्रयासों में समूह के सदस्यों की सहायता करने के लिए अब बहुत कुछ भार ट्यूटर पर पड़ेगा। पाठों के अध्ययन को चार के सेटों में व्यवस्थित करने से इस संबंध में कुछ हद तक लचीलेपन की अनुमति मिलती है, और ट्यूटर द्वारा बच्चों की कक्षाओं के लिए संस्थान समन्वयक के साथ परामर्श करके, आवश्यकतानुसार, सर्वोत्तम तरीके से आगे बढ़ने के बारे में कुछ विचार किया जाना चाहिए। कभी–कभी हो सकता है जब प्रतिभागी सेवा के इस कार्य को आरम्भ करने से पहले पूरी इकाई का अध्ययन अभ्यास घटक के साथ पूरा कर लें। उस स्थिति में, यह आवश्यक है कि कक्षाएं आयोजित करने के इच्छुक मित्र पुस्तक 3 के पूरा होने के बाद जल्द ही अनुभव प्राप्त कर लें, चाहे स्वयं ही शुरू करके या किसी अन्य शिक्षक के साथ काम कर, कुछ गतिविधियों में सहायता करके। हालांकि अन्य परिस्थितियों में, प्रतिभागियों के लिए चार पाठों के एक या दो सेट का अध्ययन और अभ्यास पूरा करने के बाद शिक्षण में इस प्रकार का अनुभव प्राप्त करना आरम्भ करना उपयोगी हो सकता है। उचित अंतराल पर, फिर, ट्यूटर प्रतिभागियों को उनके बढ़ते अनुभव के आलोक में चार और पाठों का अध्ययन और अभ्यास करने के लिए एक साथ वापस लाएगा। यहां यह उल्लेख किया जाना चाहिए कि प्रारंभिक भागों को चार पाठों के समूहों में व्यवस्थित करने का अर्थ यह नहीं है कि उनमें संबोधित आध्यात्मिक गुण किसी विशिष्ट रूप से संबंधित हैं।

ऐसी व्यवस्थाओं के बावजूद, शिक्षकों के लिए पाठों से पूरी तरह परिचित होना और प्रत्येक कक्षा की अवधि के लिए अच्छी तैयारी करना महत्वपूर्ण है। बच्चों की कक्षाएं और अधिक सफल होंगी यदि शिक्षक सीधे किताब से नहीं पढ़ाता, बल्कि प्रार्थना और उद्धरणों को हृदय से पढ़ना सीखता है, पाठ के लिए उद्धरण प्रस्तुत करना सीखता है, और कहानी कहने का अभ्यास करता है। इस तरह की तैयारी के अतिरिक्त, कक्षाओं के लिए खेल की कुछ आवश्यकताओं और रंग भरने वाली सामग्री और क्रेयॉन के अतिरिक्त अन्य बाहरी संसाधनों की बहुत कम आवश्यकता होती है। दूसरी इकाई के अंत में पाई जाने वाली रंग भरने वाली शीटों को कागज के अलग–अलग टुकड़ों पर ट्रेस करके अथवा फोटोकॉपी द्वारा तैयार किया जा सकता है। इसके अलावा, प्रिंट करने के लिए उन्हें रूही संस्थान की वेबसाइट से भी डाउनलोड किया जा सकता है। वेबसाइट पर ग्रेड 1 के गीतों की रिकॉर्डिंग भी उपलब्ध कराई गई है, जिसका उपयोग शिक्षक न केवल कक्षा के लिए खुद को तैयार करने के लिए बल्कि बच्चों को उन्हें गाना सीखने में सहायता करने के लिए भी कर सकते हैं। जो लोग अपने समुदाय के युवाओं के लिए कक्षा शुरू करते हैं, उन्हें अपने प्रयासों के लिए समर्पित एक नोटबुक रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे उन्हें आवश्यक जानकारी आसानी से उपलब्ध रहेगी और तैयारी और चिंतन के एक पैटर्न को मजबूत किया जा सकेगा।

यहां यह स्पष्ट करना उचित है कि ग्रेड 1 के लिए चौबीस पाठों को यह सुनिश्चित करने के इरादे से तैयार किया गया है कि प्रत्येक को सामान्य परिस्थितियों में एक ही कक्षा अवधि में पूरा किया जा सके। पाठ के तत्वों को दो अवधियों के बीच विभाजित करने से गतिविधियों को अनावश्यक रूप से

लम्बा करने की प्रवृत्ति बढ़ती है। अधिक महत्वपूर्ण रूप से, यह सीखने की इस प्रक्रिया की प्रभावशीलता को कम कर सकता है जिसमें आध्यात्मिक गुणवत्ता के इर्द–गिर्द घूमती, तीव्रता के विभिन्न स्तरों पर हो रही गतिविधियों के बीच एक लय स्थापित करना, आवश्यक है।

अंत में, शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षक और छात्रों के बीच संबंधों के बारे में कुछ शब्द कहे जाने चाहिए, एक विषय वस्तु जिसे पहली इकाई के भाग 9 और 10 में सम्मिलित किया गया है लेकिन जो पूरी किताब में निहित है। यह स्पष्ट है कि प्रत्येक शिक्षक को बच्चों के बीच अपने प्रयासों में वे सभी आध्यात्मिक गुण लाने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए जो वे ग्रेड 1 में पढ़ रहे हैं। इनमें से कोई भी प्रेम से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है, एक ऐसा प्रेम जो ईश्वर के प्रेम का प्रतिबिंब है। यह प्रेम शिक्षक द्वारा निर्मित वातावरण में अनुभव किया जाएगा – कक्षा से पहले की गई तैयारी के भाग के रूप में, प्रत्येक के आरम्भ में की जाने वाली प्रार्थनाओं में, छात्रों के साथ बातचीत में उपयोग की जा रही भाषा में, और जिस तरह से छात्र प्रोत्साहन पाते हैं और उनके द्वारा की जा रही प्रगति की प्रशंसा में।

बहाई शिक्षा के कुछ सिद्धांत

उद्देश्य

बहाई लेखों में पाए जाने वाले शिक्षा से संबंधित कुछ सिद्धांतों और अवधारणाओं की खोज और चिंतन करना कि आध्यात्मिक रूप से पोषित करने के लिए किस प्रकार बच्चों को कक्षाओं में व्यस्त रखा जाए

भाग 1

रूही संस्थान की यह तीसरी पुस्तक आपका परिचय, एक सर्वाधिक प्रशंसनीय सेवा, बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा की बहाई कक्षाओं का संचालन, से कराती है। अगर, पुस्तक का अध्ययन करने और इसके अभ्यास के भाग को करने के पश्चात आप यह निर्णय लेते हैं कि आप अपना कुछ समय और ऊर्जा इस सेवा के कार्य को समर्पित करेंगे, तब आप अपने समुदाय में बच्चों के एक समूह, जो 6 वर्ष के शैक्षणिक कार्यक्रम के प्रथम ग्रेड में प्रवेश करेंगे, के साथ, एक साप्ताहिक कक्षा को शुरू करने की स्थिति में होंगे। जब आप कक्षा चला रहे होंगे तो, अवश्य ही आप पुस्तकों के मुख्य क्रम को पूरा करने में अग्रसर रहेंगे।

जिस सेवा के पथ पर आप चल रहे हैं, उस पर की जाने वाले सेवा कार्यों में से एक है, बच्चों को शिक्षित करना। अगर आप इसमें संलग्न नहीं भी होना चाहते हैं, तब भी आप इस पाठ्यक्रम का अध्ययन बहुमूल्य पायेंगे। अपने गाँव, कस्बे या पड़ोसी क्षेत्र में समुदाय निर्माण प्रक्रिया में योगदान देते हुए, आप कई अवसरों पर छोटे बच्चों के संपर्क में आएंगे और यहाँ अपने अध्ययन से प्राप्त अंतर्दृष्टियों का उपयोग कर पायेंगे। इस भाव पर विचार करने के लिए कुछ क्षण लें, जो विश्व न्याय मंदिर का नीचे दिया गया कथन बच्चों के प्रति उत्पन्न कर रहा है :

> **"बच्चे सबसे कीमती खजाना है जो एक समुदाय के पास हो सकता है, क्योंकि उनमें भविष्य की आशा और आश्वासन है। वे भविष्य के समाज के चरित्र के बीज हैं जो काफी हद तक इस बात से आकार पाता है कि समुदाय वयस्क बच्चों के संबंध में क्या करते हैं या करने में असफल होते हैं। वे एक ऐसी धरोहर हैं जिन्हें अनदेखा करने के दुष्परिणामों से कोई भी समुदाय अचेत नहीं रह सकता। बच्चों के प्रति पूर्ण प्रेम, उनके साथ व्यवहार करने का तरीका, उनको दिये गये ध्यान की गुणवत्ता, वयस्कों द्वारा उनके प्रति किए जा रहे व्यवहार की भावना – ये सभी आवश्यक अभिवृत्ति के महत्वपूर्ण पहलुओं में से हैं।"**[1]

पुस्तक की दूसरी इकाई में प्रस्तुत पहले ग्रेड के पाठ सरल हैं। हर पाठ में कुछ गतिविधियां हैं जो एक आध्यात्मिक गुण के विकास पर केन्द्रित हैं। बच्चों को प्रोत्साहित किया जाता है कि वह पवित्र लेख से प्रार्थनाएं और उद्धरण कंठस्थ करें, शिक्षाओं की व्याख्याओं और कहानियों को सुनें, चित्र बनायें और रंग करें, गीत गाएं और खेलें। इन पाठों को पढ़ाने के लिए, शिक्षा के क्षेत्र का बहुत ज्ञान आवश्यक नहीं हैं। चाहे आपने शिक्षक के रूप में औपचारिक प्रशिक्षण लिया है या नहीं, यह पाठ्यक्रम आपको सप्ताह–दर–सप्ताह बच्चों की कक्षाओं का प्रभावकारी ढंग से संचालन करने के लिए तैयार करेगा। जैसे–जैसे आप पुस्तक तीन के शाखा पाठ्यक्रमों का अध्ययन करेंगे और अनुभव प्राप्त करेंगे, आपको शिक्षा सबंधी कई मूल विषयों पर सोचने का अवसर मिलेगा। प्रारम्भ में, शायद आपको पाठ–योजना के इर्द गिर्द रहना होगा पर, जैसे–जैसे आप आगे बढ़ेंगे, आप स्वयं की अतिरिक्त सामग्री से इनका विस्तार कर उसे अधिकाधिक समृद्ध बना पायेंगे।

भाग 2

आइए, बहाउल्लाह और अब्दुल बहा के निम्न शब्दों पर चिंतन करें, जो हमें एक शिक्षक के कार्य की सराहना करने में सहायक बनाते हैं। आप इन शब्दों को कंठस्थ करना चाह सकते हैं, ताकि आप शिक्षण करते समय इन्हें अपने विचारों में ला सकें।

"धन्य है वह शिक्षक जो बच्चों को प्रशिक्षित करने और प्रदाता, परम प्रिय ईश्वर की राहों पर लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए उठ खड़ा होगा"[2]

"सर्वशक्तिशाली ईश्वर के प्रति किसी मनुष्य द्वारा सम्भवतः जो सर्वोत्तम सेवा का कार्य किया जा सकता है वह है बच्चों की शिक्षा और प्रशिक्षण ...।"[3]

"सुस्पष्ट दिव्य लेखनी के अनुसार बच्चों को शिक्षित करना अपरिहार्य एवं अनिवार्य है। इसका अर्थ है कि शिक्षक, स्वामी ईश्वर के सेवक हैं, क्योंकि वे उस दायित्व को पूरा करने के लिए उठ खड़े हुए हैं जो आराधना के समान हैं। अतः तुम्हें प्रत्येक श्वाँस के साथ स्तुति करनी चाहिये, क्योंकि तुम अपनी आध्यात्मिक संतानों को शिक्षित कर रहे हो।"[4]

1. जब आप इन शब्दों के महत्व पर चिंतन कर रहे हों, तब आप नीचे दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों को भरें।

   अ. ______________है वह ______________जो बच्चों को ______________ करने और प्रदाता, परम प्रिय ईश्वर की______________पर लोगों का______________करने के लिए ______________होगा"।

   ब. सर्वशक्तिशाली ईश्वर के प्रति किसी मनुष्य द्वारा सम्भवतः जो ______________का कार्य ______________है वह है बच्चों की ______________।

   स. सुस्पष्ट दिव्य लेखनी के अनुसार बच्चों को शिक्षित करना ______________एवं ______________ है। इसका अर्थ है कि ______________, स्वामी ईश्वर के ______________हैं, क्योंकि वे उस दायित्व को पूरा करने के लिए ______________ हुए हैं जो ______________ के समान हैं। अतः अपनी प्रत्येक श्वाँस के साथ तुमको ______________चाहिये, क्योंकि तुम अपनी ______________को शिक्षित कर रहे हो।"

2. अभी तक जो अध्ययन हमने किया है, उसके आधार पर यह निर्णय लें कि कौन से कथन सही हैं :

   _______ माता–पिता, शिक्षक और समुदाय, सभी की बच्चों की आध्यात्मिक जिम्मेदारी में भागीदारी है।

   _______ हर समुदाय के लिए यह अनिवार्य है कि वह बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा के लिए कक्षायें स्थापित करें।

   _______ बच्चों की शिक्षा को उपासना का कार्य माना जा सकता है।

   _______ चूँकि बच्चे स्कूल जाते हैं, समुदाय को बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा के लिए कक्षायें स्थापित करने की आवश्यकता नहीं है।

   _______ बच्चों का शिक्षक आध्यात्मिक पुत्र और पुत्रियों का विकास कर रहा है।

भाग 3

प्रभुधर्म के पवित्र लेखों में शिक्षा के क्षेत्र को प्रभावित करते अनेक अंश हैं। इनमें से कुछ का अध्ययन हम इस पुस्तक में और इस पुस्तक से निकलने वाली शाखाओं में करेंगे। प्रारम्भ करने के लिए, बहाउल्लाह के निम्नांकित शब्दों को पढ़ें :

> **"मनुष्य को अत्यंत मूल्यवान रत्नों से परिपूर्ण खान समझो। मात्र, शिक्षा ही, इसके कोषों को उजागर कर सकती है, और मानवजाति को इसके लाभ प्राप्त करने के योग्य बना सकती है।"**[5]

नीचे दिए गए वाक्यों को पूरा करना आपको इस कथन के गहन अर्थ पर मनन करने और इसे कंठस्थ करने में सहायता करेगा, यदि अब तक आपने ऐसा नहीं किया है।

अ. "मनुष्य को अत्यंत ________________ रत्नों से परिपूर्ण ________________ समझो।

ब. मात्र, ________________, इसके कोषों को ________________ कर सकती है और मानवजाति को इसके ____।"

शिक्षा के क्षेत्र के लिए बहाउल्लाह के शब्दों का निहितार्थ व्यापक है, और इनमें से अनेक पर चर्चा आने वाले भागों में की जाएगी। अभी के लिए, आइए एक विचार पर ध्यान दें। मान लीजिए, आपको करीब बीस खाली डिब्बे दिए जाते हैं और उनमें चम्मच से पानी भरने के लिए कहा जाता है। अगर शिक्षा को इस तरह से सोचा जाए – विद्यार्थियों को छोटी–छोटी जानकारी से भरना – यह एक दुष्कर कार्य होगा, सच कि नहीं? अगला, एक ऐसी खान की परिकल्पना करें जो छुपे हुए रत्नों से भरी है और अन्वेषित हो, प्रकाश में आने के लिए तैयार है। क्या आप इससे सहमत नहीं होंगे कि कि अगर शिक्षा को रत्नों को खोजने जैसा देखा जाए तो, अवश्य ही, यह एक अत्यंत आनंदपूर्ण कार्य है ?

भाग 4

आइए, ऊपर दिए गए उद्धरण के बारे में आगे सोचें। क्या हम प्रेम, सत्यवादिता, न्याय, उदारता, दृढ़ता और निष्ठा को उन रत्नों में शामिल कर सकते हैं जिनकी ओर बहाउल्लाह इंगित करते हैं ? मानव–मन की शक्ति, प्रकृति के रहस्यों की खोज करने, सुन्दर कलाकृतियों को बनाने और सुंदर एवं उच्च विचारों को प्रकट करने की इसकी शक्तियों के बारे में क्या सोचते हैं ? जिन बच्चों को आप पढ़ाएंगे उनमें ये सभी गुण होने की संभावना निहित है। क्या आप कुछ अन्य का उल्लेख कर सकते हैं ? क्या समुचित शिक्षा के बिना इनमें से किसी को भी विकसित किया जा सकता है ? इन प्रश्नों का विश्लेषण करते समय, पुस्तक–1 में उपयोग की गई उपमा को याद रखें, कि एक दीपक में प्रकाश देने की क्षमता है, पर ऐसा कर पाने के लिए उसे प्रज्वलित किया जाना आवश्यक है।

____

____

____

____

भाग 5

अपनी क्षमता का विकास करने के लिए, हम सभी एक शैक्षिक प्रक्रिया की विभिन्न अवस्थाओं से गुजरते हैं, जिसे हम कह सकते हैं, हमारे जीवन के अंत तक विकसित होती रहती हैं। हम अपने घर पर, स्कूल में, कार्य–स्थल पर, और समुदाय में शिक्षित होते हैं। यहाँ पर हमें स्वयं से एक प्रश्न अवश्य ही पूछना चाहिए, बच्चों की बहाई कक्षाओं का केन्द्र–बिंदु क्या होना चाहिए, खासतौर से पहले ग्रेड में, जीवन–भर चलने वाली शैक्षिक–प्रक्रिया के एक पक्ष के रूप में? अब्दुल बहा के कुछ परामर्श हमें उत्तर ढूंढने में सहायता करेंगे :

> **"तुम्हें अच्छे चरित्र को प्राथमिक महत्व का समझना चाहिए। प्रत्येक माता–पिता का यह कर्तव्य है कि वे लम्बे समय तक अपने बच्चों को उचित परामर्श देते रहें और उन बातों की ओर उनका मार्गदर्शन करते रहें जो उन्हें चिरस्थायी सम्मान की दिशा में ले जाएँ।"[6]**

> **"नैतिकता और अच्छे आचरण का प्रशिक्षण किताबी शिक्षा से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। वह बच्चा जो निर्मल, प्रसन्न कर देने वाला, अच्छे चरित्र का और शिष्ट है वह भले ही अज्ञानी हो किन्तु ऐसे बच्चे से श्रेयस्कर है जो सभी कलाओं और विज्ञानों में पारंगत होने के बाद भी असभ्य, संस्काररहित और बुरे स्वभाव का है। इसका कारण यह है कि जो बच्चा सदाचारी है वह भले ही अज्ञानी हो किन्तु दूसरों के लिए लाभदायक है जबकि बुरे स्वभाव, बुरे व्यवहार वाला बच्चा भ्रष्ट एवं दूसरों के लिए हानिप्रद है, भले ही वह कितना ही ज्ञानी क्यों न हो। किन्तु यदि किसी बच्चे को ज्ञानवान और सदाचारी दोनों ही बनाया जाए तो यह अति उत्तम होता है।"[7]**

> **"आने वाले समय में, नैतिकता पतन की निम्नतर स्थिति तक गिर जाएगी। अतः आवश्यक है कि बच्चों का पालन–पोषण बहाई तौर–तरीकों से किया जाए ताकि वे लोक–परलोक में सुप्रसन्नता प्राप्त कर सकें। ऐसा न होने से वे दुःखों और विपत्तियों से घिर जाएंगे क्योंकि मनुष्य की सुप्रसन्नता आध्यात्मिक आचरण पर निर्भर है।"[8]**

इस तरह के अनुच्छेदों ने रूही संस्थान को बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा के अपने कार्यक्रम के पहले ग्रेड में चरित्र की परिशुद्धता पर ध्यान–केंद्रित करने की ओर अग्रसर किया है। इससे पहले कि हम इस लक्ष्य की प्राप्ति में और आगे बढ़ें, आप अपने समूह में यह चर्चा कर सकते हैं कि आप "अच्छे चरित्र" के विषय में क्या समझते हैं और अपने कुछ निष्कर्षों को नीचे दिये गये स्थान पर लिखें।

भाग 6

जब भी हम अच्छे चरित्र के विषय में सोचते हैं, एक अवधारणा जो तत्काल हमारे मस्तिष्क में आती है, वह है 'गुण'। विश्व में अनेक उपयोगी कार्यक्रम हैं जो छात्रों में गुणों के एक दो सेट अन्य को विकसित करना चाहते हैं। ये कार्यक्रम प्रशंसनीय मानवीय अभिवृत्तियों की एक विस्तृत श्रृंखला का वर्णन करने के लिए 'गुण' शब्द का उपयोग करते हैं। जिनमें कुछ होती हैं आदतें, जैसे समय–पालन। अन्य ˙ अभिवृत्तियाँ हैं, जैसे कठिनाई में पड़े लोगों के प्रति सहानुभूति। वहीं कुछ अन्य कुशलताओं एवं योग्यताओं को भी उल्लिखित करते हैं, जैसे स्पष्ट रूप से व्यक्त करने की योग्यता। परन्तु बाकी सभी से भिन्न गुणों की एक श्रेणी है सच्चाई, उदारता, विनम्रता, प्रेम आदि इनके कुछ उदाहरण हैं – जिन्हें हम "आध्यात्मिक गुण" कहते हैं। पहली ग्रेड में आपको मानव–आत्मा के इन आधारभूत गुणों के विकास पर अपने प्रयत्नों को केंद्रित करने के लिए कहा जा रहा हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि आप बच्चों के साथ अपने वार्तालाप में अन्य गुणों की उपेक्षा करेंगे। यह सिर्फ इसलिए है कि आप जो पाठ पढ़ाते हैं वह मुख्य रूप से उन गुणों से संबंधित होगा जो एक आत्मा की ईश्वर की ओर होने वाली अनन्त यात्रा के लिए आवश्यक है। यहाँ जिस प्रकार का अंतर दर्शाया जा रहा है, उसकी सराहना करने के लिए, समय–सीमा को एक गुण मानें। समय का पालन करने वाला व्यक्ति स्वार्थी और क्रूर भी हो सकता है। हालांकि, क्रूरता और क्षुद्रता उस व्यक्ति के गुण नहीं हो सकते हैं जिसने सत्यवादिता और ईमानदारी, प्रेम और न्याय, उदारता और क्षमा के दिव्य गुणों को प्राप्त कर लिया हैं। ऐसे व्यक्ति के लिए समय का पाबंद होना भी निश्चित रूप से अत्यधिक वांछनीय है।

आपने पुस्तक 1 की तीसरी इकाई में उन गुणों पर कुछ विचार किया है जिन्हें एक आत्मा को इस जीवन में अवश्य ही प्राप्त करना चाहिए। यह आपके लिए उपयुक्त होगा कि आप उस इकाई पर वापस जाएं और संबंधित भागों पर पुनः विचार करें। फिर सोचें कि बाल्यावस्था के सुकोमल वर्षों से आध्यात्मिक गुणों के विकास के महत्व के संदर्भ में आपने वहाँ क्या अध्ययन किया था। आपके लिए अपने विश्लेषण को लिखने के लिए नीचे कुछ स्थान दिया गया है।

भाग 7

बच्चों को प्रशंसनीय चरित्र धारण करने में सहायता करते समय, आप स्वाभाविक रूप से उनके आचरण के प्रति सतर्क रहेंगे, क्योंकि गुण अवश्य ही निरंतर अभ्यास से आने चाहिए। एक शिक्षक के रूप में, आप अच्छे व्यवहार को अनेक तरीकों से सशक्त करेंगे। प्रशंसा, प्रोत्साहन, आह्वान, व्याख्या, पुरस्कार– इनमें से हर एक का आप बार–बार, छोटे बच्चों के समूह के विकास हेतु उपयोग करेंगे। कभी–कभी, आपकी ओर से थोड़ी सी भी अप्रसन्नता की अभिव्यक्ति एक या दूसरे बच्चे के द्वारा अनुचित व्यवहार का प्रर्दशन न करने का माध्यम बनेगा–यह तब, जब आपने अपनी कक्षा के विद्यार्थियों के साथ प्रेम और स्नेह के गहन संबंध को स्थापित कर लिए हो। हम कुछ बिंदुओं पर जो, आपके विद्यार्थियों के साथ कैसे कार्य किया जाये, से संबंधित है, इस पर आगे के भागों में विचार करेंगे। हमारी वर्तमान चर्चा के उद्देश्य के लिए, आइए, एक उदाहरण पर विचार करें। बच्चों के साथ आपके क्रियाकलापों में, निःसंदेह आप उनमें साझा करने की प्रवृत्ति और उससे संबंधित आदत का विकास करने का प्रयास करेंगे। ऐसी कौन सी चीजें हैं जो आप कह और कर सकते हैं? इस प्रश्न पर आप अपने समूह के अन्य सदस्यों के साथ विचार करें।

अब निम्न प्रश्न पर चिंतन करें। क्या व्यवहार को एक पक्ष के रूप में साझा करना सदैव विद्यमान रहेगा, उदाहरण के लिए, अभाव के समय में भी, यदि वह उदारता, के गुण को जो सर्वउदार, सर्वअनुकम्पामय ईश्वर के एक चिन्ह को दर्शाता है, का पूर्ण प्रकटन ना हो। उत्तर, स्वाभाविक रूप से यह है, कि व्यवहार में सुधार का अपना स्थान है, परंतु वास्तविक लक्ष्य है, आध्यात्मिक गुणों का विकास जो, मानवात्मा की क्षमता के रूप में ईश्वर का ज्ञान और ईश्वर के प्रेम के माध्यम से अवश्य ही पोषित किया जाना चाहिए। अब्दुल बहा परामर्श देते हैं :

> **"तुमने बच्चों के बारे में लिखा हैः नितांत आरंभ से ही, बच्चों को दिव्य शिक्षा अवश्य ही प्राप्त हो और सतत् रूप से उन्हें ईश्वर के स्मरण करने की याद दिलाई जानी चाहिए। माँ के दूध के साथ ईश्वरीय प्रेम भी उनके आंतरिक अस्तित्व को मिले।"[9]**
>
> **"बच्चे की देखभाल अवश्य ही उसकी शैशवावस्था से ही, ईश्वरीय प्रेम की गोद में की जानी चाहिए, और ईश्वरीय ज्ञान की परिधि में उसका पालन–पोषण किया जाना चाहिए, ताकि वह प्रकाश बिखेर सके, आध्यात्मिक रूप से विकसित हो, ज्ञान और विवेक से सम्पन्न हो, और दिव्य सहचरों समान विशिष्टतायें प्राप्त करे।"[10]**
>
> **"जहाँ तक बच्चों की शिक्षा से सम्बन्धित तुम्हारा प्रश्न हैः तुम्हारे लिए यह उचित है कि तुम ईश्वरीय प्रेम की गोद में उनका पालन–पोषण करो और उन्हें चेतना के विषयों की ओर उत्प्रेरित करो ताकि वे ईश्वर की ओर अभिमुख हों, कि उनके तौर–तरीके सदाचार के नियमों के अनुरूप हों और उनका चरित्र अतिउत्तम हो, कि वे सभी अनुकम्पाओं एवं मानवजाति के प्रशंसनीय गुणों को धारण करें ..."[11]**
>
> आप इनमें से कम–से–कम एक उद्धरण को कंठस्थ करना चाह सकते हैं।

भाग 8

आप जो पाठ पहले ग्रेड में सामान्यतः 5 या 6 साल के बच्चों को पढ़ायेंगे, उन विचारों से विस्तार पाए हुए हैं जिनका हमने अभी तक अपने मस्तिष्क में अन्वेषण किया है। इस बिंदु पर, यह

आपके लिए सहायक होगा कि आप दूसरी इकाई में जाएं और दो या तीन पाठ, खासतौर से प्रारम्भिक पाठ पर विशेष ध्यान देते हुए पढ़ें। बाद में, आपको सभी चौबीस पाठों का विश्लेषण करने का अवसर मिलेगा। अभी के लिए, पिछले भागों में हुए चिंतन के प्रकाश में आपको उनके विभिन्न तत्वों पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जैसा कि नीचे दिया गया है।

हर कक्षा की शुरूआत आपके और कुछ बच्चों द्वारा प्रार्थनाओं के गायन से होगी। ठीक उसके पश्चात, बच्चे आपके सहयोग से एक प्रार्थना कठंस्थ करने के लिए समय देंगे। एक बच्चा जो "ईश्वर के प्रेम की गोद से पोषित" किया जाने वाला है, के विकास के लिए प्रार्थना अपरिहार्य है। अब्दुल बहा हमें कहते हैं कि "बच्चे नन्हे पौधों की भाँति होते हैं, और प्रार्थना ठीक वैसे ही है जैसे वर्षा उन पर पड़ने देना, ताकि वह ताजगी के साथ और सुकोमलता से बढ़ सकें, और ईश्वर के प्रेम की सुकोमल बयार उन पर प्रवाहित हो सकें, जो उन्हें आनंद से स्पंदित कर दे।" इस बात पर विचार करने के लिए कुछ क्षण लें कि कक्षा का यह तत्व कैसे बच्चों में एक अच्छा चरित्र पोषित करने के पूर्ण लक्ष्य में योगदान देता है। अपने विचारों को कुछ वाक्यों में व्यक्त करने का प्रयत्न करें। पुस्तक 1 में उद्धृत कुछ अंश, जैसे नीचे दिये गये हैं, आपकी सहायता करेंगे :

"महानतम उपलब्धि या मधुरतम स्थिति ईश्वर से वार्तालाप के अतिरिक्त दूसरी कोई नहीं है। यह आध्यात्मिकता का सृजन करती है, सजगता और पावन भाव सृजित करती है। दिव्य साम्राज्य की ओर नए आकर्षण उत्पन्न करती है और उच्च्व स्तर की बुद्धिमत्ता उत्पन्न करती है।"[12]

"हे मेरे सेवक! ईश्वर के उन छंदों का सस्वर गान कर जो तुझे उसकी ओर सें प्राप्त हुये हैं, जैसे उन लोगों द्वारा सस्वर गान किया गया था, जो ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त कर चुके हैं, ताकि तेरे स्वर का माधुर्य तेरी स्वयं की आत्मा को प्रकाशित कर दे और सभी मानवों के ह्रदयों को आकर्षित कर ले।"[13]

"चेतना का प्रभाव है; प्रार्थना का आध्यात्मिक प्रभाव है।"[14]

"सेवक के लिए यह उचित है कि वह ईश्वर की सहायता के लिए प्रार्थना करे, और उसकी सहायता के लिए अनुनय तथा याचना करे। ऐसा करना दासत्व की श्रेणी है, और वह स्वामी वह देगा जो बुद्धिमत्ता से परिपूर्ण उसकी इच्छा होगी।"[15]

____

____

____

____

____

____

प्रत्येक पाठ का विषय पवित्र लेखों से एक उद्धरण के इर्द–गिर्द घूमता है जिसे कंठस्थ करने की अपेक्षा बच्चों से की जाती है। आपको इसके अर्थ की एक साधारण समझ हासिल करने में उनकी सहायता करने के लिए अपना उच्चतम प्रयास करने के लिए कहा जाता है, एक ऐसी समझ जो

आध्यात्मिक गुणों के विकास के लिए हमेशा आवश्यक सिद्ध होती है। इस संदर्भ में, इस प्रश्न पर ध्यान देने की आवश्यकता है कि क्या ईश्वर के शब्द के सहयोग के बिना अर्थपूर्ण तरीके से आप अपेक्षित गुणों को पोषित कर सकते हैं। पुनः, अपने विचारों का निर्माण करने में, कुछ ऐसे विश्लेषणों को अपने स्मरण में लायें, जो आपने मुख्य श्रृंखला की प्रारम्भिक पुस्तकों में दिये – उदाहरण के लिए, पुस्तक 2 की पहली इकाई में ईश्वरीय शब्द की शक्ति से संबंधित।

विशेषकर नीचे दिया गया अनुच्छेद, जिसे आप संभवतः हृदय से जान कर चुके होंगे, इस प्रश्न के उत्तर देने में आपकी कैसे सहायता करेगा ?

> **"ईश्वरीय शब्द एक पौधों के समान हैं, जिनकी जड़ें मानव के हृदयों में रोपी गई हैं। तुम्हारे लिये यह उचित है कि तुम इन्हें विवेक के जीवंत जल, पुनीत एवं पावन शब्दों से सींचो ताकि इसकी जड़ें दृढ़ता से जम सकें और इसकी शाखाएँ आसमानों तथा उसके पार विस्तार पा सकें।"**[16]

____

____

____

____

____

____

पाठों का एक अन्य तत्व है बच्चों को सुनायी जाने वाली कहानियाँ। अधिकांश कहानियाँ अब्दुल बहा के जीवन से ली गई हैं, जो अपने पिता की शिक्षाओं के परिपूर्ण उदाहर्ता के रूप में, वे गुण धारण करते थे, जिनका आप पोषण करने की इच्छा रखेंगे। पुस्तक–2 की तीसरी इकाई के आपके अध्ययन से आप पहले से ही जानते हैं कि अब्दुल बहा के रूप में मानवजाति को अद्वितीय उपहार प्रदत्त किया गया है। जो कहानियाँ बच्चे उनके जीवन के विषय में सीखते हैं, वो उनके चरित्र निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, और समय–समय पर बच्चों के लिए अब्दुल बहा के महान प्रेम के विषय में उन्हें स्मरण कराना चाहिए। जैसे–जैसे अब्दुल बहा से उनका संबंध प्रगाढ़ होता जाएगा, आप उन्हें आश्वस्त कर सकते हैं कि, जब वह उनके उदाहरण का अनुपालन करेंगे, तो वे उनके हृदय को उल्लसित करेंगे। आप क्या सोचते हैं कि अब्दुल बहा के जीवन की कहानियाँ उल्लास तथा आदरभाव से सुनायी गई कहानियाँ, नव युवाओं के अंदर अपेक्षित गुणों के विकास में कैसे योगदान करेंगी ?

____

____

____

____

____

____

गीत गाना यद्यपि कक्षा का एक और तत्व है, जो बच्चों के हृदय और आत्मा को प्रसन्नता से भर देता है। अब्दुल बहा कहते हैं :

> **"संगीत की कला दिव्य और प्रभावकारी है। यह आत्मा और चेतना का भोजन हैं। संगीत की शक्ति और मोहकता के माध्यम से मनुष्य की चेतना उच्चतर हो जाती है। यह बच्चों के हृदय में आश्चर्यजनक असर तथा प्रभाव डालती है, क्योंकि उनके हृदय पवित्र हैं, और मधुर स्वरों का उन पर गहन प्रभाव पड़ता है। इन बच्चों के हृदयों में छिपी प्रतिभायें संगीत के माध्यम से अभिव्यक्त होंगी।"**[17]

अपने समूह में चर्चा करें कि बच्चों के लिए बचपन से सुंदर गीतों का गायन करना, जब वे बहुत छोटे हैं क्यों महत्वपूर्ण है।

____

खेल और रंग भरना कक्षा के दो अन्य तत्व हैं। खेलों की प्रकृति सहयोगी होती हैं और कुछ अपेक्षित प्रवृत्तियों और आदतों के विकास में योगदान करने के लिए होते हैं। पाठों के लिए उपलब्ध रंग भरने हेतु दिए गए पन्ने उस पाठ से सम्बंधित आध्यात्मिक गुण पर केन्द्रित हैं। रंग भरना, भी बच्चों के विकास के इस चरण में, आवश्यक कला–कौशल और योग्यताओं को सशक्त करता है। ये दो गतिविधियाँ उल्लास का वातावरण बनाने में सहायक होती हैं, जो अवश्य ही बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा की कक्षा का नमूना होनी चाहिए। आप इस संदर्भ में कुछ शब्द कहना चाहेंगे कि कैसे एक उल्लासमय वातावरण आध्यात्मिक गुणों के विकास हेतु अपरिहार्य है।

भाग 9

पिछले अनेक भागों में आपने पहले ग्रेड के पाठों के उद्देश्य के विषय में कुछ अंतर्दृष्टि प्राप्त की है तथा देखा है कि कैसे हर तत्व चरित्र की परिष्कृतता में योगदान देता है। आइए हम जानें, शिक्षित किए जाने वाले छोटे बच्चों के साथ आपके संबंध की प्रकृति की संक्षेप में जांच करते हैं।

पहला और सर्वाधिक महत्वपूर्ण है वह प्रेम जो आप अपने विद्यार्थियों के प्रति महसूस करते हैं, प्रेम जो ईश्वर के प्रेम का प्रतिबिम्बन है, जो प्रत्येक पृष्ठभूमि के बच्चों को शामिल करेगा। यह प्रेम किस तरीके से किया जाये कि यह हर एक बच्चे तक पहुँचे, यह शिक्षक को सीखने का प्रयास करना है।

विद्यार्थियों के लिए शुद्ध और पक्षपात से रहित आपका प्रेम, हर बच्चे को वास्तविकता में सर्वशक्तिशाली के हस्त द्वारा छिपाये गये अनमोल रत्नों, की खोज को आसान बना देगा। आप हर विद्यार्थी को ईश्वरीय प्रतिरूप में सृजित एक सुयोग्य प्राणी के रूप में देखेंगे, जिसे सत्य ही बहाउल्लाह के ये शब्द प्रमाणित करते हैं :

> **"स्मरणातीत अस्तित्व और अपने सार की पुरातन शाश्वतता में छिपा हुआ, मैं, तेरे प्रति अपने प्रेम को जानता था इसलिए मैंने तेरी रचना की, तुझ पर अपनी छवि को उत्कीर्ण किया और तुझ पर अपने सौन्दर्य को प्रकट किया।"**[18]

> **"शक्ति के हाथों से मैंने तेरी रचना की और बल की उंगलियों से मैंने तुझे सृजित किया और तेरे अन्तर में मैंने अपने प्रकाश के सार को रख छोड़ा है।"**[19]

> **"तू मेरा दीपक है और तुझ में मेरा प्रकाश है। तू उसमें से अपनी कांति प्राप्त कर और मेरे अतिरिक्त किसी अन्य की खोज न कर। क्योंकि मैंने तुझे समृद्ध बनाया और उदारतापूर्वक अपनी कृपा तुझ पर बरसाई है।"**[20]

जब आप शिक्षित करेंगे, आपको अवश्य ही, यह समझना होगा, कि प्रेम निश्चय ही परखा जाएगा। आप अपरिहार्य रूप से अपने विद्यार्थियों में चरित्र–संबंधी अवांछनीय चिन्हों को देखेंगे। ऐसे समय में, यह आवश्यक है कि आप इस भ्रमात्मक विचार का त्याग करें कि बच्चों को सुधारा नहीं जा सकता। बच्चों की बहाई कक्षाओं के शिक्षक को कोई शंका नहीं होनी चाहिए कि हर बच्चे में यह क्षमता है कि वह ईश्वर को उसके प्रकटरूपों द्वारा जान सकता है और उसकी शिक्षाओं का आज्ञापालन कर सकता है। हर बच्चे में आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ने की क्षमता होती है। आपकी कक्षा के हर एक बच्चे को सुयोग्य रचा गया है तथा, आपके सहयोग से वह अपनी सुयोग्यता को प्रदर्शित कर सकता है।

बच्चों के संदर्भ में, प्रिय मास्टर द्वारा उपयोग किए गए वाक्यों को अपने ध्यान में लाने से आपको बच्चों को ईश्वरीय रचना के रूप में उनके आध्यात्मिक सार को और भी स्पष्ट रूप से देखने में सहायता मिलेगी। नीचे ऐसे ही कुछ चयनित वाक्यांश दिए गए हैं। इन वाक्यांशों को पढ़ें और विचार करें कि उन अनमोल कृति, जिन्हें आप शिक्षित करेंगे, के विषय में आपके दृष्टिकोण को कैसे आकार देंगे।

– ये प्रेममयी बच्चे

– ये उज्जवल, प्रकाशित बच्चे

– ये दिव्य साम्राज्य के सुंदर बच्चे

– ये पौधे जो ईश्वर के मार्गदर्शन से अंकुरित हुए हैं

– आभा स्वर्ग के युवा पौधे

– तेरी वाटिका के पौधे

– ईश्वर के प्रेम की बगिया के नवांकुर

– ईश्वर के ज्ञान के उपवन के ताजा अंकुर

– तेरी दिव्य वसंत में खिले हुए पौधे

– तेरे उपवन के गुलाब

– तेरे मार्गदर्शन की बगिया के गुलाब

– तेरे उपवन के पुष्प

– जीवन वृक्ष के पल्लव

– तेरे ज्ञान के उपवन में बढ़ती हुई तरूण टहनियाँ

– तेरी दया के वृक्षों की उदीयमान् शाखाएँ

– मुक्ति की तृणभूमि के पक्षी

– परम पावन पूर्णता की अंगुलियों द्वारा प्रकाशित मोमबत्तियाँ

– तेरी शक्ति की अंगुलियों के हस्त–कौशल

– तेरी महानता के अद्‌भुत चिन्ह

– अब्दुल बहा के प्रियजन

भाग 10

प्रेम के साथ–साथ, आप अपने विद्यार्थियों के साथ जो संबंध पोषित करेंगे, उसमें अन्य सभी आध्यात्मिक गुण होंगे, जिनका सम्बोधन पहले ग्रेड के पाठों में किया गया है। इसमें कोई संदेह नहीं कि आप ये गुण न केवल कक्षा के दौरान बच्चों के साथ वार्तालाप में बल्कि अपने जीवन के हर पहलू में भी निरंतर बढ़ती मात्रा में प्रदर्शित करने का प्रयत्न करेंगे। बहाउल्लाह हमें सलाह देते हैं :

> **"सावधान, हे लोगो! तुम उनमें से न बनो जो दूसरों को तो अच्छे परामर्श देते हैं परन्तु स्वयं उनका अनुपालन करना भूल जाते हैं।"[21]**

बच्चों की कक्षाओं के शिक्षक के लिए पाठ में चर्चित प्रत्येक गुण के अर्थ और निहितार्थो की बढ़ती समझ प्राप्त करना विशेषकर महत्वपूर्ण है, एक ऐसी समझ जो उन्हें उन कोमल पौधों को प्रशिक्षित और पोषित करने के उनके प्रयासों में सहायता करेगी जो उनकी देखरेख में हैं। जैसा आपने ध्यान दिया होगा, उदाहरण के लिए पहला पाठ शुद्धता पर केन्द्रित है। यह उपयुक्त ही प्रतीत होता है कि कक्षायें जो चरित्र के प्रश्न से संबंधित हैं हृदय की शुद्धता की गुणवत्ता की खोज से आरम्भ हों। बहाउल्लाह हमें याद दिलाते हैं, "वह सब जो धरती और आकाश में है" ईश्वर ने हमारे लिए नियत किया है, "मानव हृदय के अतिरिक्त" जिसे उसने अपनी महिमा और सौदर्य के निवास–स्थल हेतु चुना है। अपने हृदय के दर्पण को स्वच्छ करने से हमें उन अन्य गुणों को प्रतिबिम्बित करने में सहायता मिलती है, जिससे मनुष्य की आत्मा को विभूषित किया गया है।

इस ग्रेड में सम्बोधित आध्यात्मिक गुणों के विषय में शिक्षकों को विचार करने में सहायता हेतु, दूसरी इकाई में हर गुण से संबंधित कई उद्धरण दिये गये हैं। अभी के लिये नीचे दिए गए शुद्धता से संबंधित उद्धरणों को पढ़ने के लिए आपको प्रोत्साहित किया जा रहा है। तत्पश्चात, अपने समूह के अन्य सदस्यों के साथ, इस विषय पर चर्चा करें कि सामान्य रूप से मानव जीवन में, और विशेषकर उनके प्रयासों में जो बच्चों को शिक्षित करने के लिए उठ खड़े हुए हैं, इन गुणों का क्या महत्व है। दिए गए स्थान में अपने कुछ विचार लिखने के पश्चात, आप कम–से–कम एक उद्धरण कठंस्थ करना चाह सकते हैं।

> **"हे मेरे भ्रात! एक शुद्ध हृदय दर्पण की भाँति होता है इसे ईश्वर के अतिरिक्त अन्य सभी से पृथक कर तथा प्रेम से चमका कर स्वच्छ रख, ताकि सत्य का सूर्य इसमें जगमगा सके तथा शाश्वत भोर का प्रकाश चमक सके।"[22]**

> **"हे अस्तित्व के पुत्र ! तेरा हृदय मेरा निवास–स्थान है, मेरे अवतरण के लिए इसे स्वच्छ रख। तेरी चेतना मेरा प्राकट्यस्थल है; मेरे प्रकटीकरण के लिए इसे स्वच्छ रख।"[23]**

> **"मनुष्य का हृदय जितना अधिक शुद्ध और पवित्र होता जाता है, वह उतना ही ईश्वर के निकट होता जाता है, और उसके अंर्ततम में सत्य के सूर्य का प्रकाश प्रकट होता है।"[24]**

> **"सबसे पहले तो मनुष्य की जीवन–शैली में शुद्धता होनी चाहिए, फिर ताजगी, स्वच्छता और चेतना की स्वतंत्रता। पहले निर्झर पथ निर्मल होना चाहिए, तभी सरिता की मृदुल जलधाराएँ उसमें प्रवाहित हो सकेंगी।"[25]**

भाग 11

अब, बच्चों की कक्षा के शिक्षक के रूप में, आपको अपने आपसे पूछना होगा कि, कैसे आप बच्चों को उन शिक्षाओं के अनुरूप कार्य करने की प्रेरणा को मजबूत करने में सहायता कर सकते हैं जिन्हें ईश्वर ने अपने प्रकटरूप बहाउल्लाह द्वारा प्रकट किया है और उनके द्वारा बताए गए गुणों को विकसित करने में जिसे हमारी आत्माओं को धारण करना चाहिए। इन प्रश्न के उत्तर खोजते समय, बहाउल्लाह के निम्नांकित शब्दों पर विचार करें :

> **"मेरी सर्वशक्तिशाली महिमा के आकाश से मेरी शक्ति की जिह्वा ने इन शब्दों से मेरी सृष्टि को सम्बोधित किया है: "मेरे सौन्दर्य से प्रेम के कारण, मेरे आदेशों का अनुपालन कर," धन्य है वह प्रेमी जिसने अपने परमप्रिय के इन शब्दों की दिव्य सुरभि का रसास्वादन किया है, शब्द जो ऐसी कृपा की सुगंध से भरे हैं, जिनका वर्णन कोई जिह्वा नहीं कर सकती।"[26]**
>
> **"अपने प्रकाशमान हृदयों में ईश्वरीय–प्रेम की जगमगाती हुई लौ जलने दो। इसे दिव्य मार्गदर्शन के तेल से दीप्त रखो, और अपनी भक्ति की शरण में सुरक्षित रखो। विश्वास तथा ईश्वर के अतिरिक्त अन्य सबसे अनासक्ति के दुर्ग में इसे संरक्षण प्रदान करो, ताकि दुर्जनों की बुराई की फुसफुसाहट इसके प्रकाश को बुझा न दे।"[27]**
>
> **"हे अस्तित्व के पुत्र ! मेरा प्रेम मेरा दुर्ग है; जो उसमें प्रवेश करता है वह सुरक्षित और संरक्षित रहता है और जो उससे विमुख होता है निश्चय ही भ्रष्ट और नष्ट हो जाता है।"[28]**

1. निम्नांकित वाक्यों को उद्धरण के शब्दों से पूरा करें :

   अ. हमें ईश्वर के आदेशों का अनुपालन उसके __________ से प्रेम के कारण करना चाहिए।

   ब. अपने __________ हृदयों में ईश्वरीय–प्रेम की __________ जलने दो।

   स. हमें ईश्वर के __________ की चमकती हुई लौ को दिव्य ____________________ . रखना चाहिए।

   द. हमें इसे अपने __________ की शरण में सुरक्षित रखना चाहिए।

   य. हमें ईश्वर के __________ की चमकती हुई लौ का__________ तथा ईश्वर के अतिरिक्त अन्य सबसे __________ के दुर्ग में इसे संरक्षण प्रदान करना चाहिए ।

   र. हमें ईश्वर के आदेशों का अनुपालन इसके __________ से प्रेम के कारण करना चाहिए। ईश्वर के प्रेम की __________ हमारे __________ हृदयों में जलनी चाहिए। हमें इस लौ को __________ मार्गदर्शन से दीप्त रखना चाहिए। हमें इसे हमारी भक्ति की शरण में सुरक्षित रखना चाहिए। हमें इसे __________ तथा ईश्वर के अतिरिक्त अन्य सबसे __________ के दुर्ग में इसे संरक्षण प्रदान करना चाहिए। हमें इसे ईश्वर के प्रेम से दीप्त रखना चाहिए, इसे सुरक्षित और संरक्षित रखना है ताकि दुर्जनों की

दुष्ट फुसफुसाहट इसके __________ को बुझा न सके । जो ईश्वर के प्रेम के दुर्ग में प्रवेश करता है वह सुरक्षित और __________ रहता है।

भाग 12

बच्चों के साथ समय देते समय, आप उनके प्रकाशमान हृदयों में "ईश्वरीय प्रेम की ज्योति" को बढ़ाने का प्रयत्न करेंगे और उन्हें ईश्वर के आशीष तथा उसके शब्दों द्वारा विकास करने के संबंध में सजग करेंगे। अवश्य ही, ईश्वर के प्रति हमारा प्रेम और उसकी अनुकम्पाओं को पाने की चाह अपने साथ भय भी लाती है, कि किन्हीं कारणों से, यदि उसका प्रेम हम तक नहीं पहुँच पायेगा तो क्या होगा। यदि हमारे गलत कार्य बाधाओं के रूप में कार्य करते हैं जो हमें उसके आशीषों को प्राप्त करने से रोकते हैं? ईश्वर का प्रेम हमारे अस्तित्व का मूल कारण है, और यदि हम एक पल के लिए भी उससे वंचित रह जाएं, तो हमारा जीवन बिखर जाएगा। यह भय, कि हम यदि ईश्वर की आज्ञाओं की अवहेलना करेंगे, तो संभवतः हम ईश्वर का प्रेम नहीं पा सकेंगे, जो हमें सीधी राह पर चलाता है और हमें अपने अहम् के प्रलोभनों, ईर्ष्या, लालच, व्यर्थ कामनाओं एवं भ्रष्ट इच्छाओं से सुरक्षित रखता है।

बच्चों के हृदयों में ईश्वर के प्रेम के बीज बोने के प्रयासों में आपको ईश्वर के भय के विषय में भी अवश्य सोचना चाहिए, क्योंकि दोनों एक–दूसरे से अभिन्न हैं। अब्दुल बहा हमें सलाह देते हैं :

"दिव्य वचनों से इन बच्चों का प्रशिक्षण करो। उनकी बाल्यावस्था से ही उनके हृदयों में ईश्वर के प्रति प्रेम का संचार करो ताकि वे अपने जीवन में ईश्वर के भय को प्रकट कर सकें और ईश्वरीय अनुकम्पाओं में भरोसा रख सकें। उन्हें स्वयं को मानवीय अपूर्णताओं से मुक्त करना और मनुष्य के हृदय में छिपी हुई दिव्य पूर्णताओं को प्राप्त करना सिखाओ।"[29]

यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि ईश्वर का भय वह अवधारणा नहीं है जिसकी चर्चा बच्चों से सीधे की जाए। बच्चों के पास प्रेमपूर्ण ईश्वर की ही छवि होनी चाहिए जिसकी अनुकम्पा और कृपा पर उन्हें पूर्ण विश्वास और भरोसा होना चाहिए। उनमें ईश्वर के प्रेम को पोषित करने का प्रयास कराते समय, एक विचार से आप उनका परिचय करा सकते हैं कि कुछ शब्द और कर्म ईश्वर को पसंद हैं और कुछ नहीं। समय–समय पर आप बच्चों को याद दिला सकते हैं कि क्योंकि वे ईश्वर से प्रेम करते हैं, इसलिए उसे प्रसन्न रखना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, उनको बताया जा सकता है, कि एक दयालु जिह्वा और एक–दूसरे के प्रति प्रेमपूर्ण रहना, ये वे कार्य हैं जो ईश्वर को प्रसन्न करते हैं, जबकि कठोर शब्दों का उपयोग या दूसरे को ठेस पहुँचाना उसे अप्रसन्न करता है।

निम्न उद्धरण आपके विश्लेषण के लिए दिए गए हैं :

"तुम्हारा यह कर्तव्य है कि तुम लोगों को सभी परिस्थितियों में, जो कुछ भी उन्हें आध्यात्मिक विशिष्टताओं और अच्छे कर्मों को दृश्यमान कराने का कारण बने, के लिए उनका आह्वान करो, ताकि सभी को यह ज्ञात हो सके जो मानव उत्थान का कारण है, और वे स्वयं को सर्वोदात्त पद और महिमा के सर्वोच्च शिखर की ओर निर्देशित कर सकें। ईश्वर का भय उसके सृजित प्राणियों की शिक्षा का प्रमुख कारक रहा है। कल्याण होगा उनका जो इसे प्राप्त करते हैं।"[30]

"इस धर्म प्रकटीकरण को जो समूह विजयी बना सकते हैं, वे हैं प्रशंसनीय कर्मों एवं सच्चे आचरण वाले समूह। ईश्वर का भय सदैव ही इन समूहों का प्रधान और सेनापति रहा है, एक ऐसा भय जो सभी कुछ को घेरे रहता है और समस्त वस्तुओं पर आधिपत्य रखता है।"[31]

"पूर्णता के अन्य गुण हैं, ईश्वर का भय, ईश्वर के सेवकों से प्रेम, ईश्वर से प्रेम, नम्रता और सहनशीलता और प्रशांतता दर्शाना, ईमानदार, आज्ञाकारी, क्षमावान और दयालु होना संकल्प और साहस, विश्वासपात्रता और ऊर्जावान, प्रयास और संघर्षरत रहना, उदार, वफादार, द्वेष रहित, उत्साह और सम्मान की भावना रखना, उच्च विचारवान और उदार होना, और दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना।[32]

इसमें और पहले के भागों के अनुच्छेदों के प्रकाश में, ईश्वर के प्रेम और ईश्वर के भय के मध्य के संबंध की व्याख्या करते हुए और कैसे दोनों गतिशील परस्पर क्रिया एक प्रशंसनीय चरित्र के विकास के लिए महत्वपूर्ण है, एक या दो अनुच्छेदों को लिखें।

भाग 13

जैसा कि पिछले भागों की हमारी चर्चा से स्पष्ट होना चाहिए, आध्यात्मिक शिक्षा सौन्दर्य के प्रति आकर्षण की शक्ति से पोषण पाती है और आध्यात्मिक गुणों के विकास पर ध्यान केन्द्रित कर बच्चों के हृदयों को ठीक प्रकार से सच्चे सौन्दर्य की ओर निर्देशित करती है— एक अच्छे चरित्र का सौन्दर्य, पवित्र शब्द में छिपा सौन्दर्य, अनुकरणीय आचरण का सौन्दर्य, उच्च विचारों का सौन्दर्य, और सबसे महत्वपूर्ण सर्वमहिमाशाली के सौन्दर्य के प्रति आकर्षण। अंततः, ईश्वर के नियमों का आज्ञापालन उसके सौन्दर्य के प्रति प्रेम से उत्पन्न होता है। अतः, बच्चे यह देखते हुए बड़े होते हैं कि आध्यात्मिक

गुण अर्जित करना अपने आप में महानतम पुरस्कार है, और अयोग्य चरित्र का होना महानतम दण्ड। अब्दुल बहा कहते हैं :

> **"हर गलत कार्य का मूल कारण है अज्ञानता, अतः हमें बोध और ज्ञान के साधनों को दृढ़तापूर्वक थामना चाहिए। अच्छे चरित्र को अवश्य ही सिखाया जाना चाहिए। प्रकाश दूर–दूर तक फैलाया जाना चाहिए ताकि मानवता की पाठशाला में सभी चेतना की दिव्य विशिष्टतायें प्राप्त कर सकें और असंदिग्ध रूप से यह स्वयं देख सकें कि दुष्टतापूर्ण एवं खराब चरित्र धारण करने से अधिक वीभत्स कोई नरक नहीं, अधिक पीड़ादायी रसातल नहीं, निंदनीय गुणों को दर्शाने से अधिक घृणास्पद अभिशाप अथवा अंधकारपूर्ण गुफा और कुछ भी नहीं।"[33]**

बच्चे दिव्य गुणों को प्रतिबिम्बित करने के उल्लास का अनुभव कर सकें इसमें उनकी सहायता करने में हमें उन्हें उच्च आचरण प्रदर्शित करने के उनके प्रयासों में प्रोत्साहित करना चाहिए और अनपेक्षित व्यवहार को हतोत्साहित करना चाहिए। कठोर दण्ड और पूर्ण स्वतंत्रता, बच्चे जैसा चाहें वैसा करने देना, दोनों से ही बचना चाहिए। जैसा विश्व न्याय मंदिर हमें याद दिलाते हैं, "प्रेम अनुशासन की मांग करता है, बच्चों को कठिनाईयों का सहन करने का साहस, उनको अपनी मनमर्जी में लिप्त होने देना या पूर्णरूप से उन्हें अपनी कल्पनाओं पर नहीं छोड़ देना चाहिए।" वे आगे कहते हैं कि बच्चों को, "प्रेमपूर्वक पर आग्रहपूर्ण तरीके से बहाई मापदण्डों के अनुसार जीवन जीने के लिए मार्गदर्शन करना चाहिए, और अब्दुल बहा समझाते हैं :

> **"जब कभी माँ को लगे कि उसके बच्चे ने कुछ अच्छा कार्य किया है तो वह उसकी सराहना और प्रशंसा करे और उसके हृदय को आह्लादित करे और यदि उससे जरा भी अवांछित व्यवहार झलके तो उसे बच्चे को उचित परामर्श एवं दण्ड देना चाहिए और उसके सुधार के लिए तर्कसंगत साधन का इस्तेमाल करे, यदि आवश्यक लगे तो थोड़ा झिड़कना भी, लेकिन बच्चे को मारने–पीटने या उसे अपमानित करने की अनुमति नहीं है क्योंकि यदि मारा–पीटा या कठोर शब्दों का उपयोग किया गया तो बच्चे का चरित्र अत्यधिक बिगड़ जाएगा।"[34]**

अब्दुल बहा के मार्गदर्शन का अनुपालन करने के लिए, जब भी बच्चे अच्छा कार्य करें, शिक्षक को बच्चों की प्रशंसा करने तथा उनके हृदयों को आनंदित करने के तरीकों के बारे में सोचना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक सतर्क रहे और हर एक बच्चे की प्रगति का ध्यान रखे, अन्य को अनदेखा करते हुए, हमेशा कुछ बच्चों की ही प्रशंसा न करे। उस बच्चे के लिए जो शिक्षक के प्रेमपूर्ण ध्यान पाने के आदी हैं, फिर, उद्दंड व्यवहार की अस्वीकृति का एक साधारण संकेत दंडित करने का एक सूक्ष्म कारण प्रभावकारी माध्यम हो सकता है। कभी–कभी, यह आवश्यक हो जाता है कि, एक कदम आगे बढ़कर, दुर्व्यवहार की अस्वीकृति मौखिक रूप से व्यक्त की जाए विशेषतौर पर जबकि बच्चा किसी गतिविधि में व्यवधान डाल रहा हो। यह दृढ़ और आदरपूर्ण लहजे में, क्रोध और अधैर्यता का किंचित मात्र संकेत दिए बिना किया जाना चाहिए। साथ ही, शिक्षक को कक्षावधि से अलग एक या दो बच्चों को सलाह देने के लिए बहुधा समय निकालना पड़ सकता है।

ऐसा हो सकता है, कि शिक्षक द्वारा ऊपर दी गई सलाहों का अनुपालन करने पर भी, कुछ बच्चे अपेक्षित व्यवहार न करें। ऐसी परिस्थितियों में, हल्के और उपयुक्त प्रतिबंध की आवश्यकता पड़ सकती है। बच्चे को रंग भरने से वंचित रखना या उसे किसी खेल से कुछ क्षणों के लिए बाहर रखना ऐसे प्रतिबंधों के उदाहरण हो सकते हैं। इस संदर्भ में दो अपरिहार्य विचारों को मन में रखने की आवश्यकता है। पहला शिक्षक को बच्चे को स्पष्ट रूप से समझाना चाहिए कि उस पर प्रतिबंध क्यों लगाया जा रहा है, उदाहरण के लिए, यह कहकर, "क्योंकि तुमने ऐसा–ऐसा किया, तुम्हें खेल में वापस आने के लिए पाँच मिनट प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। दूसरा विचार यह है कि, दुर्व्यवहार घटने के तुरंत बाद प्रतिबंध लगाना चाहिए, अन्यथा, बच्चा दण्ड को अपने व्यवहार से नहीं जोड़ पाएगा।

अब ऊपर दिए गए विचारों की अपने समूह के अन्य सदस्यों के साथ चर्चा करें। क्या आप ऐसे वाक्यों की रचना मिलकर कर सकते हैं जो बच्चों में अच्छे आचरण को प्रोत्साहन देंगे और व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों रूप में उनकी प्रगति की प्रशंसा करने में उपयोग करने के लिए उपयुक्त होंगे? दुर्व्यवहार को हतोत्साहित करने के लिए, आवश्यकतानुसार, कौन से वाक्य उपयुक्त होंगे ?

भाग 14

बच्चों के प्रशंसनीय गुणों को विकसित करने में सहायता करने के लिए, कक्षा में एक उपयुक्त वातावरण बनाना आपके लिए महत्वपूर्ण है, ऐसा वातावरण जो अनुशासन और व्यवस्था में विशिष्ट हो।

अब्दुल बहा कहते है :

"... बच्चों की पाठशाला एक अत्यंत ही व्यवस्थित और अनुशासित स्थल होना चाहिए, उन्हें समग्रता से निर्देशित किया जाना चाहिए और चरित्र को उन्नत एवं परिष्कृत करने की व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि, आरम्भिक अवस्था से ही, बच्चे के अंतःकरण में दिव्य आधारशिला पड जाएगी और पावनता का ढांचा विकसित होगा।"[35]

और बच्चों के लिए साप्ताहिक कक्षाओं की ओर इंगित करते हुए, वह निम्न सलाह देते हैं :

"तुम्हें इस व्यवस्थित गतिविधि को अनवरत चलाते रहना चाहिए और इसे महत्वपूर्ण मानना चाहिए ताकि दिन–प्रति–दिन इसका विकास होता रहे और यह 'पावन चेतना' के उच्छ्वासों से स्फूर्तिमान बनी रहे। यदि यह गतिविधि भलीभांति व्यवस्थित की जाती रहे तो आश्वस्त रहो कि परिणाम उच्च होंगे।"[36]

शिक्षण की अधिकाधिक कला इस बात के जानने पर निर्भर करती है कि कैसे हर बच्चे का मार्गदर्शन किया जाए ताकि उसका आचरण उल्लासमय फिर भी अनुशासनपूर्ण सीखने के वातावरण में योगदान दे। यद्यपि इस विषय में आपको अपने अनुभव से कई अंतर्दृष्टियाँ प्राप्त करनी होंगी, आरम्भ से ही आपकी तैयारी में सहायता के लिए आपकी सहायता के लिए हम कुछ प्रमुख विचारों पर चर्चा करेंगे। शुरू करने के लिए, एक कक्षावधि का नीचे दिया उल्लेख पढ़ें :

बच्चों के आने पर, आप उन्हें अपने आपको व्यवस्थित और शांतिपूर्वक बैठने के लिए कुछ मिनट दें। जब सभी बच्चे व्यवस्थित हो जाएं, आप प्रशांत वातावरण का लाभ उठाते हुए कक्षा को प्रार्थनाओं से आरम्भ करें। अगली गतिविधि जिसका परिचय आप करायेंगे वह है गीत गाना, जिसके पश्चात आप पाठ की विषय–वस्तु प्रस्तुत करें और बच्चों को एक उद्धरण कंठस्थ करने में सहायता करें। तत्पश्चात् अपेक्षित वातावरण बनने के बाद, आप बच्चों को एक कहानी सुनायें। उसके बाद वे एक खेल खेलें। जब यह समाप्त हो जाये, तब आप उनको रंग भरने वाले पन्ने, क्रेयान रंग तथा पेंसिल दें और उन्हें चित्र को ध्यान से रंगने को कहें। कक्षा समाप्त करने के लिए, आप बच्चों को शांत बैठने तथा कक्षा समापन प्रार्थना हेतु तैयार होने के लिए प्रोत्साहित करें जो कि तब आपके और कुछ बच्चों द्वारा की जाती है।

इस क्रम में गतिविधियों को करने का कोई तर्क है ? आप क्या सोचते हैं कि गतिविधियों को इस तरीके से क्यों व्यवस्थित किया गया है ?

भाग 15

जैसा कि आपने ऊपर चर्चा की होगी, बच्चे कक्षा में चुप रहने के लिए नहीं आते हैं। न ही आपका इरादा उन्हें इस तरह रखने का होना चाहिए। आपको उनकी नैसर्गिक ऊर्जा का लाभ उठाने का प्रयास करना चाहिए और इसे सीखने की ओर मोड़ना चाहिए। ऐसा करने के लिए, आपको शांत क्षणों और गतिविधि एवं सहजता की अवधि के लिए योजना बनाने की आवश्यकता होगी। सभी मामलों में, व्यस्थापन एक मूल तत्व है। जब एक कक्षा अच्छी तरह से व्यवस्थित होती है, तो बच्चों के लिए ध्यान केंद्रित करना और सीखना आसान हो जाता है। इस संबंध में कम से कम निम्नलिखित तीन बिंदुओं पर विचार करना उचित है :

1. प्रत्येक कक्षा को स्पष्ट और एकरूप तरीके से ही आरंभ और एक सुव्यवस्थित तरीके से ही समाप्त होना होगा।

2. एक क्रम अवश्य निर्धारित हो। बच्चों को यह मालूम हो कि किस गतिविधि के बाद कौन सी गतिविधि होगी और उनसे क्या अपेक्षित है।

3. प्रत्येक गतिविधि के लिये दिये गये समय में लचीलापन और बच्चों के उत्साह और ऊर्जा के अनुरूप होना चाहिए।

जैसाकि पूर्व के भाग में वर्णित है, प्रत्येक कक्षा अवधि में बच्चों द्वारा की जाने वाली गतिविधियां नीचे दी गई हैं :

क. प्रार्थना करना और उन्हें कंठस्थ करना

ख. गीत गाना

ग. बहाई लेखों से उद्धरणों को सीखना और उन्हें कंठस्थ करना

घ. कहानियाँ सुनना

च. खेल खेलना

छ. चित्रों में रंग भरना

ज. कक्षा समापन की प्रार्थनाओं का गायन

स्वाभाविक रूप से इन विभिन्न गतिविधियों में व्यय होने वाली ऊर्जा की मात्रा में भिन्नता होगी, कुछ में अधिक सक्रियता होगी, जबकि कुछ अधिक शांत होंगी।

इन सात गतिविधियों में से कौन सी सबसे अधिक सक्रिय होती है ? ____________________

____

____

____

____

कौन सी शांत गतिविधियाँ हैं ? ____

____

____

____

____

व्यवस्थित वातावरण बनाये रखने की कुछ मांगें शिक्षक का दायित्व होती हैं। नीचे दी गई कौन–कौन सी स्थितियाँ इच्छित वातावरण का निर्माण करने में सहयोग करती हैं और कौन–कौन सी उसको बाधित करती हैं? उन्हें "स" सहयोग के लिए और "ब" बाधित के लिए अंकित करें।

_______ कक्षा आयोजन स्थल को स्वच्छ और व्यवस्थित रखना

_______ शांत और धैर्यपूर्ण रहना भले ही परिस्थितियाँ जैसी भी हों

_______ जब बच्चे आपके निर्देशों को न सुन रहे हों तो अपना धैर्य खो देना

_______ प्रत्येक गतिविधि के लिए पहले से ही सामग्री को तैयार कर लेना

_______ बच्चे प्रतीक्षा कर रहे हैं और आप गतिविधि के लिए आवश्यक सामग्री को इधर–उधर ढूँढ़ने में लगे हैं।

_______ बच्चों को स्पष्ट निर्देश देना कि गतिविधि विशेष के लिये उनको क्या करना है

_______ अपने कार्य को समय से पूर्व समाप्त कर देने वाले बच्चों को व्यस्त रखने के लिए पहले से ही कोई अन्य गतिविधि तैयार रखना

_______ बच्चों को एक गतिविधि से दूसरी गतिविधि में व्यवस्थित प्रकार से जाने में सहायता करना

_______ बच्चों को किताब से पढ़कर कहानी सुनाना

_______ कहानी को पहले से ही अच्छी तरह सीख लेना ताकि बच्चों को रोचक व उत्साहपूर्वक आसानी से सुनाया जा सके

भाग 16

कक्षा में अनुशासन और व्यवस्था का वातारण बनाने के प्रयास में, आपको आचरण के कुछ मानदण्डों को स्थापित करने की आवश्यकता होगी। इस संबंध में प्रारम्भिक कुछ सप्ताह विशेष रूप से महत्वपूर्ण होंगे। इस प्रारंभिक अवधि के दौरान जो भी अपेक्षाएं निर्धारित हो जाती हैं, उनकी वर्ष भर बने रहने की संभावना रहती है। आरम्भ में शिक्षक को व्यवहार के अनेक मानदण्डों का चयन करना चाहिए और उन्हें एक बार में तीन या चार मानदण्डों को ही बच्चों को सरल भाषा में समझाया जाना चाहिए। "हमें अच्छा व्यवहार करना चाहिए" जैसे अधिक सामान्य मानदण्ड उनकी अधिक सहायता नहीं करते हैं, किन्तु अन्य जैसे "अपनी बारी आने पर ही बोलना चाहिए" जैसे अन्य मानदण्डों को समझना सरल होता है। अपने समूह के सदस्यों के साथ नीचे दिये गए कथनों में निर्धारित मानदण्डों पर चर्चा करें और सूची में कुछ और जोड़ें।

अ. खेल खेलते समय हम एक दूसरे की सहायता करते हैं।

ब. हम एकता में रहते हैं और झगड़ा नहीं करते।

स. हम अपनी कक्षाओं में नये मित्रों का स्वागत करते हैं।

द. जब वे बोलते हैं तो हम एक दूसरे की तथा अपने शिक्षक की बातों को सुनते हैं।

क. हम एक दूसरे से दयालु जिह्वा के साथ बातें करते हैं।

ख. हम बोलने के लिये अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हैं।

ग. हम अपने रंग एक दूसरे के साथ बाँटते हैं।

घ. हम अपना कार्य समाप्त करने की कोशिश करते हैं।

ड. ______________________________

____

च. ______________________________

____

छ. ______________________________

____

त्र. ______________________________

____

व्यवहार की अपेक्षाएं, जब इस तरह के सरल वाक्यों में निर्मित की जाती हैं, कि बच्चों के साथ चर्चा की जा सकती हैं, और उनके साथ नियमित रूप से इन कथनों को पढ़ा जा सकता हैं। इस प्रकार यह कथन मानदण्डों की भांति आत्मसात किये जा सकते हैं जिन्हें बच्चे पूरा करने के इच्छुक होंगे और स्वयं पर कठोरता के साथ लादे गए नियमों के रूप में नहीं देखेंगे। जब वे अपेक्षाओं के एक निश्चित समुच्चय से परिचित हो जाते हैं, तो शिक्षक धीरे–धीरे कुछ–कुछ अपेक्षाओं का परिचय दे सकते है। ये ध्यान रखते हुए कि एक बार में बहुत अधिक न हो जाये। यदि किसी कक्षा के दौरान कोई विशेष कठिनाई आ जाये तो उसका हल ढूंढते कुछ सरल वाक्य बनाने में बच्चों की सहायता की जा सकती है। ऐसे समय में शिक्षक को दृढ़ और एकरूप लेकिन साथ ही मित्रवत् और कोमलता से भरा रहना चाहिए।

भाग 17

भाग 8 में हमने संक्षेप में ग्रेड 1 के पाठों के विभिन्न तत्वों के महत्व का परीक्षण किया और चर्चा की कि किस प्रकार उनमें से प्रत्येक एक प्रशंसनीय चरित्र में योगदान देने का प्रयास करता है। इसमें और अगले सात भागों में हम उन कुछ विधियों पर विचार करेंगे जिन्हें आप कंठस्थ करने वाली गतिविधि से आरम्भ करते हुए और अन्य दी गई गतिविधियों में बच्चों को शामिल करने के लिए कार्य में ला सकते हैं।

पवित्र लेखों से प्रार्थनाओं और उद्धरणों को कंठस्थ करना आपके द्वारा अध्ययन कराये जा रहे पाठों के केंद्र में है, और प्रत्येक कक्षा में आप बच्चों को उनको कंठस्थ प्रार्थनाओं का सस्वर गान करने में और एक नया उद्धरण कंठस्थ करने में सहायता करेंगे। इसके पहले कि हम यह चर्चा आरम्भ करें कि आप इस गतिविधि में बच्चों को कैसे शामिल करेंगे, एक प्रचलित गलत अवधारणा के विषय में कुछ शब्द कहे जाने चाहिये, जिसको छोटे बच्चो को पवित्र शब्दों को कंठस्थ करने में सहायता करने के दौरान दूर रखना ही सर्वोत्तम होगा।

आपने शायद सुना होगा या जब आप अध्ययन शुरू करेंगे तो ऐसी टिप्पणियाँ सुन सकते हैं कि "बच्चों को चीजों को दोहराना नहीं चाहिये", "उनको अपने विचारों को व्यक्त करना सीखना चाहिये", "उनको तथ्यों और सूचनाओं को तोते की भांति नहीं दोहराना चाहिये। वास्तव में, रटकर सीखने की आलोचना इतनी व्यापक है कि ये विचार पूरी दुनिया में अधिकाधिक फैलते जा रहे हैं। यह सत्य है कि कोई व्यक्ति गणित के एक समीकरण को, भौतिकशास्त्र के एक नियम की परिभाषा या साहित्य में एक गद्यांश को इसकी कम समझ के साथ या बिना समझे कंठस्थ कर सकता है। लेकिन आपको स्वयं से यह प्रश्न पूछना चाहिये किः एक गहन वक्तव्य को कंठस्थ करना और इसके अर्थ की समझ को एक दूसरे के विरुद्ध क्यों रखा जाना चाहिये। स्मरणशक्ति भी मानव मन–मस्तिष्क की समझ, विचार और कल्पना की शक्ति की भांति ही एक शक्ति है। वे सभी एक–दूसरे के पूरक हैं और एक दूसरे को सशक्त करते हैं। हम कल्पना मात्र कर सकते हैं कि मानव हृदय और मन की पुनर्रचना की अंतहीन संभावनाओं के साथ 'ईश्वर के शब्द' को कंठस्थ करना बच्चों में बुद्धिमत्ता और समझ को कितना बढ़ाएगा। बाद में जब वे विकास के विभिन्न चरणों से गुजरेंगे, वे कंठस्थ किये गये उन अंशों से नई अंतर्दृष्टियाँ प्राप्त करेंगे और अपने पूरे जीवन काल वे 'ईश्वरीय शब्द' की रचनात्मक, संपोषक, पुनरूद्धारक और रूपांतरकारी शक्तियों से लाभ प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

अपने समूह के सदस्यों के साथ इस बात पर चर्चा करें कि शिक्षकों के लिये इस संबंध में आश्वस्त होना क्यों आवश्यक है कि 'ईश्वरीय शब्द को कंठस्थ करना बच्चों के हृदय और मन–मस्तिष्क में आध्यात्मिक ज्ञान के बीजों को दृढ़ता से रोपित करने में सहायता करता है, बीज जो समय के साथ–साथ स्वादिष्ट फल उपजाएंगे।

भाग 18

उपरोक्त चिंतन को ध्यान में रखते हुये आइये पाठ–1 के उद्धरण को एक उदाहरण के रूप में लेते हुए हम विचार करें कि आप अपने विद्यार्थियों को पवित्र लेखों से अंश कंठस्थ करने में कैसे

सहायता करेंगे। आरंभ करने के लिये, आप चाहेंगे कि पाठ के केंद्र में जो आध्यात्मिक गुण है उसके विषय में कुछ आरंभिक अंतर्दृष्टियां प्राप्त करने में उनकी सहायता करें। इस उद्देश्य को प्राप्त करने में सहायता के लिये आपके चिंतन के लिये एक छोटा परिचयात्मक वक्तव्य उपलब्ध कराया गया है। फिर आपको इस बात के लिये प्रोत्साहित किया जाता है कि आप उद्धरण के अर्थ की प्रारंभिक समझ के लिये, इसके कठिन शब्दों को चुनें और ऐसी परिस्थितियों में उनका उपयोग करें जिनको बच्चे आसानी से पहचान सकें। इस तरीके को जैसा पाठ–1 में उपयोग किया गया है, पर ध्यान दें जो शुद्धता के गुण के संबंध में है।

हमारे हृदय दर्पण के समान होते हैं। हमें इन्हें हमेशा स्वच्छ रखना चाहिये। नफरत, ईर्ष्या, और नकारात्मक विचार, उस धूल के समान होते हैं जो इस दर्पण को चमकने से रोकते है। जब हमारे हृदय शुद्ध होते हैं, तब ये ईश्वर के प्रकाश को प्रतिबिंबित करते हैं, और हम दूसरों की उल्लास का कारण बन जाते हैं। अपने हृदयों को शुद्ध रखने के लिये, आईये हम बहाउल्लाह के निम्नलिखित उद्धरण को कंठस्थ करें :

"हे चेतना के पुत्र ! मेरा प्रथम परामर्श यह है : एक शुद्ध, दयालु एवं प्रकाशमय हृदय धारण कर ...।"[6]

परामर्श

1. एक दिन जेरार्ड और मैरी कुछ चित्रों में रंग भर रहे थे। जेरार्ड को पीले रंग की जरूरत थी लेकिन मैरी उसको वह देना नहीं चाहती थी। शिक्षिका ने मैरी से कहा कि उसको दूसरों से बांटना चाहिये। शिक्षिका ने उसे उत्तम परामर्श दिया।

2. पेट्रेशिया को यह निर्णय लेना था कि वह अपने पैसे चॉकलेट पर खर्च करे या कहानी की पुस्तिका पर। उसके माता–पिता ने उसे कहानी की पुस्तिका लेने की सलाह दी। उसके माता–पिता ने उसको सही परामर्श दिया।

धारण करना

1. टिनायी नहाने के बाद साफ धुले कपड़े पहनती है। टिनायी ने साफ कपड़े धारण किये।

2. अमन सदैव मुस्कुराता रहता है। उसका चेहरा सदैव मुस्कुराहट धारण किये रहता है।

शुद्ध हृदय

1. कैथी क्रोधित हो गई और एगोट को उसने खरी–खोटी सुनायी जिससे एगोट बहुत दुःखी हो गई लेकिन शीघ्र ही उसने कैथी को माफ कर दिया। एगोट के पास एक शुद्ध हृदय है।

2. गुस्तावो अपने बिस्किट सभी से बांटना पसंद करता है, जॉर्ज से भी जो अपनी चीजें किसी से नहीं बाँटता। गुस्तावो का हृदय शुद्ध है।

दयालु हृदय

1. जब उसके माता–पिता अपने घर पर मित्रों को आमंत्रित करते हैं, तो मिंग लिंग प्रसन्नतापूर्वक भोजन परोसता है। मिंगलिंग के पास दयालु हृदय है।

2. श्री रॉबर्टसन बहुत बुजुर्ग हैं। जिम्मी उनके बगीचे के फूलों को बाजार पहुँचाने में उनकी सहायता करता है। जिम्मी के पास एक दयालु हृदय है।

प्रकाशमय हृदय

1. जब मैं उदास होता हूँ, मेरी माँ हमेशा मेरा उत्साहवर्द्धन करती है और मुझे प्रसन्न करती है। मेरी माँ एक प्रकाशमय हृदय धारण करती है।

2. जब ओबुया बीमार पड़ा और उसको अपना सारा समय बिस्तर में बिताना पड़ा। उसने अनेक प्रार्थनायें कीं, बिना उदास हुए और निरंतर प्रसन्न दिखता रहा। ओबुया के पास एक प्रकाशमय हृदय है।

निश्चय ही, आप परिचयात्मक वक्तव्यों को और व्याख्यात्मक वाक्यों को पुस्तक से पढ़कर नहीं सुनायेंगे, और इसलिये आपको बच्चों के सामने सहज प्रस्तुति करने के लिये पहले से पाठ की तैयारी कर लेनी चाहिये।

बच्चों द्वारा कंठस्थ की जाने वाली प्रार्थनाओं के संबंध में भी आपको यही तरीका अपनाने का सुझाव दिया जाता है।, परन्तु आपको ही यह सोचना होगा कि बच्चों के लिये किन शब्दों और वाक्यांशों की व्याख्या प्रस्तुत करने की आवश्यकता पड़ेगी। आपको इसमें कुछ सावधानी बरतनी होगी। कभी–कभी बच्चों को स्वयं प्रार्थना से ही धीरे–धीरे शब्दों के अर्थ निकालने के लिए छोड़ देना बेहतर होगा। उदाहरण के लिए नीचे दी गई प्रार्थना को देखें जिसे बच्चे पाठ 1 में सीखना आरम्भ करते हैं। वे आसानी से यह पहचान लेंगे कि 'शुद्ध हृदय' और 'मोती' दोनों ही बहुमूल्य चीजें हैं लेकिन यह समझने के लिये कि, अंततः 'शुद्ध हृदय' हमें ईश्वर की देन है, हो सकता है कि उनको 'प्रदान करने' शब्द का अर्थ जानने की आवश्यकता हो। इसका अर्थ समझाने के लिये आप कौन से वाक्य बनायेंगे?

"वह ईश्वर है ! हे ईश्वर, मेरे ईश्वर ! मुझे मोती के समान शुद्ध हृदय प्रदान कर।"[37]

भाग 19

आइये अब हम एक तरीके की बात करें जिसे आप बच्चों को प्रार्थनायें और उद्धरण कंठस्थ करने के लिये अपना सकते हैं। आप ऐसा कर सकते हैं कि अंश को छोटे–छोटे भाग में बांट सकते हैं, और फिर एक बार में एक भाग को सीखा सकते हैं। जब पहला भाग कंठस्थ कर लिया गया हो तो दूसरे भाग को इसमें जोड़ा जा सकता है और इसी प्रकार आगे के भाग भी, जब तक उद्धरण या प्रार्थना पूरी तरह से कंठस्थ न हो जाये। आप बच्चों को अपने पीछे हर भाग को दोहराने के लिए कहें कभी अकेले और कभी समूह में।

उदाहरण के लिये, आप पाठ एक में उद्धरण को अपने विद्यार्थियों को सिखाने के लिए, 'हे चेतना के पुत्र!' वाक्यांश से आरम्भ करें और बच्चों को उसको दोहराने के लिये कहें। इसके बाद आप उन्हें 'हे चेतना के पुत्र' को 'मेरा प्रथम परामर्श यह है' को एक साथ जोड़कर दोहराने के लिए कहें। अंततः आप इन भागों को जोड़ें, 'शुद्ध, दयालु एवं प्रकाशमय हृदय धारण कर' के साथ। एक बार जब समूह उद्धरण कंठस्थ कर ले तो कुछ बच्चों की इसको गाकर कंठस्थ करने में सहायता करें। निश्चय ही आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि यह अभ्यास उल्लास के साथ किया जा रहा हो ताकि बच्चे ध्यान दें और आनंद का वातावरण बना रहे। आगे जब धीरे–धीरे उनकी क्षमता बढ़ जायेगी तो वे एक बार में ही प्रार्थना के बड़े अंश और पूरा उद्धरण कंठस्थ करने योग्य हो जायेंगे।

इस कक्षा के इस भाग को करते समय कुछ ऐसी परिस्थितियाँ आ सकती हैं जिसका अंदाजा पहले से लगाना कठिन होता है और आपको स्वयं के अनुभव के द्वारा उनको संबोधित करना सीखना होगा। फिर कुछ स्थितियाँ ऐसी भी हैं जिनको अच्छा होगा कि आप अपनी तैयारी के दौरान सीख लें। निम्नलिखित प्रश्नों पर अपने समूह के साथ चर्चा करें :

– यदि आपकी कक्षा में अधिक बच्चे हैं तो उद्धरण कंठस्थ करने में आप उनकी सहायता कैसे करेंगे ?

– आप तब क्या करेंगे जब कक्षा के कुछ बच्चे औरों से जल्दी कंठस्थ कर लेते हैं ?

– आप तब क्या करेंगे जब एक या अधिक को कंठस्थ करने में कठिनाई हो रही हो ?

– आप इस बात के प्रति स्वयं को किस प्रकार आश्वस्त करेंगे कि एक उद्धरण को कक्षा में पूरी तरह कंठस्थ नहीं कर सकने वाला बच्चा भी कुछ उपलब्ध कर पाने का भाव महसूस कर सके ?

भाग 20

बच्चे गीत गाना पसंद करते हैं, और यह गतिविधि, जो उद्धरणों को कंठस्थ करने की, सर्वाधिक आनंदपूर्ण गतिविधियों में से एक है। अभ्यास, सफलता की कुंजी है। आपको स्वयं भी, किसी ऐसे के साथ धुन और लय पर विशेष ध्यान देते हुए गीतों को गाना चाहिये जो पहले से उसको जानता हो। यदि गीतों की रिकार्डिंग को सुन सकें तो आप और भी तेजी से सीख सकेंगे। बच्चों के साथ, आपको गीतों को बार–बार तब तक गाना होगा जब तक वो पूरी तरह से कंठस्थ न कर लें। गीतों के शब्दों को वैसे ही कंठस्थ किया जा सकता है जैसे उद्धरणों को किया गया था, बस इस बार शब्दों को धुन के साथ दोहराना होगा। आप विद्यार्थियों की क्षमता को देखते हुये यह समझ जायेंगे कि कुछ गीत गाना उनके लिए कठिन है। ऐसी स्थिति में आप गीत के बोलों को गायें और विद्यार्थी उसके कोरस को आपके साथ गायें।

भाग 21

अगली गतिविधि जिस पर हम ध्यान देंगे, वह है कहानी सुनाना। जैसाकि पहले बताया जा चुका है, प्रथम ग्रेड में अधिकांश कहानियाँ अब्दुल बहा के जीवन से ली गई हैं। ये कहानियाँ एक बहुत विशेष उद्देश्य को पूरा करती हैं। वे बच्चों को यह देखने में सहायता करती हैं कि वे जिन आध्यात्मिक गुणों को अर्जित करने का प्रयास कर रहे हैं वे दोषरहित उदाहर्ता में धरती पर उनके जीवन काल में सदैव प्रदर्शित हुए। इन जीवन वृतांतों को सुनाते समय शिक्षक द्वारा प्रदर्शित की गई श्रद्धा बच्चों के कोमल हृदयों में दिव्य भावनाओं को उद्वेलित करती हैं और उनकी आध्यात्मिक संवेदनशीलताओं को जागृत करती हैं।

हालाँकि आप बच्चों को जो अब्दुल बहा के बारे कहानियाँ सुनायेंगे वे छोटी हैं परन्तु बहुत गहन आध्यात्मिक अंतर्दृष्टियाँ प्रदान करती हैं। अतः आप चाहेंगे कि आप अपने विद्यार्थियों को कहानी में वर्णित घटनाओं में छिपी आध्यात्मिक वास्तविकताओं को समझा सकें। आइये हम इस प्रकाश में पाठ 1 कि कहानी का परीक्षण करें।

अब्दुल बहा हमेशा जानते थे कि व्यक्ति के हृदय में क्या है, और वे उन लोगों से बहुत प्रेम करते थे जिनके हृदय शुद्ध और प्रकाशमान थे। एक बार एक महिला को रात्रि भोजन पर अब्दुल बहा के अतिथि बनने का सौभाग्य मिला। जब वह बैठकर उनके विवेकपूर्ण शब्दों को सुन रही थी, तब उसने अपने सामने रखे हुए पानी के एक गिलास को देखा और उसके मन में विचार आया, "काश! अब्दुल बहा मेरे हृदय को प्रत्येक सांसारिक इच्छा से रिक्त कर देते और इसे दिव्य प्रेम और समझ से उसी तरह पुनः भर देते जैसे कोई इस गिलास को पानी से भर दे।

यह विचार बड़ी तेजी के साथ उसके मन में आकर चला गया, और उसने इसके बारे में किसी से कुछ नहीं कहा, लेकिन शीघ्र ही कुछ ऐसा घटित हुआ जिसके कारण वह यह समझ गयी कि अब्दुल बहा जान गये थे कि वह क्या सोच रही है। अचानक अब्दुल बहा अपनी बात कहते–कहते रूक गये और उन्होंने एक सेवक को अपने पास बुलाकर उससे फारसी में कुछ कहा। सेवक चुपचाप मेज के उस ओर गया जहाँ वह महिला बैठी हुयी थी, उसका गिलास उठाया, खाली किया, और दुबारा उसके सामने रख दिया।

कुछ देर बाद, अपनी बात को जारी रखते हुए, अब्दुल बहा ने मेज पर से पानी का जग उठाया, और बड़े स्वाभाविक ढंग से धीरे–धीरे उस महिला के गिलास को पानी से भर दिया। कोई समझ नहीं सका कि क्या हुआ, लेकिन वह महिला जान गयी कि अब्दुल बहा उसके मन की इच्छा पूरी कर रहे थे। वह आनन्द से भर उठी। अब वह जान गयी कि अब्दुल बहा के समक्ष हमारे हृदय और मस्तिष्क खुली किताब की भाँति हैं, और वे इन्हें बड़े प्रेम और दयालुता से पढ़ते हैं।

शुद्धता स्पष्ट रूप से आध्यात्मिक गुण है जिस पर यह कहानी – और वास्तव में पूरा पाठ केंद्रित है। निम्नलिखित प्रश्न इस बात पर विचार करने में आपकी सहायता करेंगे कि आपका कहानी सुनाना किस प्रकार विद्यार्थियों को सुदृढ़ करेगा समझ की गुणवत्ता को बढ़ाता है और इसको प्राप्त करने का क्या अर्थ होता है।

1. बच्चों के लिये यह समझना आवश्यक है कि अब्दुल बहा की अतिथि हृदय की शुद्धता को प्राप्त करने के लिये लालायित थी। लालायित होने और अतिथि के समक्ष पानी के गिलास होने में क्या संबंध है ?

2. शुद्धता को अर्जित करने के लिये, हमें अवश्य, ठीक जिस प्रकार गिलास को खाली करके फिर से भरा गया, उसी प्रकार हमें भी स्वयं को गलत आदतों और भावनाओं से रिक्त कर लेना चाहिये ताकि ईश्वर हमारे हृदय को प्रेम, दयालुता और उदारता जैसे गुणों से प्रकाशमान कर दे। निश्चय ही हमको यह ज्ञात है कि ईश्वर की दृष्टि से कुछ भी छिपा नहीं हैं। किस प्रकार शुद्धता को प्राप्त करने के प्रयासों में यह समझ, उनकी सहायता करती है।

अपने समूह के साथ इन प्रश्नों पर चर्चा करने के पश्चात प्राप्त अपने कुछ विचारों को नीचे लिखें।

____

____

____

____

____

____

इस ग्रेड में कुछ कहानियाँ हैं जो यद्यपि अब्दुल बहा के जीवन से संबंधित तो नहीं है परन्तु आध्यात्मिक गुणों के महत्व पर प्रकाश डालती हैं। उनमें बच्चे इन गुणों के प्रदर्शन से प्राप्त होने वाले पुरस्कार और इन्हें नकारे जाने के परिणामों को देख पाने में समर्थ होंगें। उदाहरण के लिये पाठ 4 की कहानी जो अनेक संस्कृतियों में प्रसिद्ध है, जिसमें चरवाहा झूठ–झूठ में, भेड़िया–भेड़िया चिल्लाता है, झूठ बोलने के परिणाम को दर्शाता है, इस प्रकार यह सत्यवादिता के गुण पर अंतर्दृष्टियां प्रदान करता है। बच्चे इन कहानियों में द्वारा दिए जाने वाले संदेश से बहुत लाभ प्राप्त कर सकते हैं, जो उनके चरित्र निर्माण में उनके के लिए मूल्यवान सिद्ध होंगी।

भाग 22

कहानी सुनाना एक कला है। किसी कहानी को प्रभावपूर्ण ढंग से सुनाने के लिये, आवश्यक है कहानी का पूर्ण ज्ञान होना। इस भाग में, हम पाठ 1 से कहानी का अधिक विस्तार से अध्ययन करेंगे कि यह देखने के लिए कि एक शिक्षक को इसे बच्चों को कैसे सुनाना चाहिए।

हम यह समझ गये हैं कि कहानी का केन्द्रीय विषय हृदय की शुद्धता है, जिसको एक पानी के गिलास के माध्यम से समझा गया हे। तब आपके लिये स्वयं से यह पूछने की आवश्यकता है कि, कहानी के कौन से भाग इस विषय से सीधे संबंधित है? कि अब्दुल बहा की विवेकपूर्ण बातें महिला को यह सोचने के लिए बाध्य करती हैं कि अपने सामने के पानी के भरे गिलास की भाँति वह भी अपने हृदय को भौतिक कामनाओं से कितना रिक्त करना चाहती है, एक महत्वपूर्ण भाग है। अब्दुल बहा द्वारा सेवक को पानी से गिलास खाली करने का निर्देश, जिसको अब्दुल बहा फिर से भरते हैं, एक अन्य महत्वपूर्ण भाग है। उदाहरण के लिये मान लीजिये तब क्या होगा जब आपने यह नहीं बताया कि अब्दुल बहा ने सेवक से महिला के गिलास को खाली करने का निर्देश दिया ?

अब हालाँकि हमने कहानी के महत्वपूर्ण अंशों को पहचान लिया है लेकिन, इसके अन्य विवरणों को नहीं भूला जा सकता है। क्या यह कहानी कही जायेगी यदि आप सिर्फ यह बता दें कि अब्दुल बहा की एक अतिथि ने, खाने की मेज पर बैठे हुये ऐसी कामना की कि उसका हृदय ठीक उसी प्रकार शुद्ध किया जा सकता है जैसे कोई गिलास खाली करता है ? कहानी में हमेशा ही कुछ बातें होती हैं जो इसे अधिक भावपूर्ण और रोचक बनाती हैं। वे कौन–कौन सी हैं ?

- अतिथि को यह विचार खाने की मेज पर अब्दुल बहा की विवेकपूर्ण बातों को सुनते समय आता है, लेकिन उसने इस विचार को मन में ही रखा, बोला नहीं।

- यद्यपि अब्दुल बहा खाने की मेज पर एकत्रित व्यक्तियों से बातें कर रहे थे फिर भी उन्होंने रूककर महिला की अनकही कामना को पूरा किया।

- लेकिन जो कुछ भी घटा उसको और कोई भांप नहीं पाता है।

- अतिथि का ह्रदय यह जानकर अत्यधिक उल्लास से भर गया कि अब्दुल बहा ने उसके ह्रदय की इच्छा को जान लिया।

यहाँ पर इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि हर शिक्षक को ग्रेड–1 की कहानियों को ऐसी अतिरिक्त बातों और अन्य तत्वों को जोड़ने से बचना चाहिये जो बच्चों का ध्यान आध्यात्मिक सत्यों से भटका दें जो इन कहानियों का मन्तव्य है।

कहानी कहने के पूरे समय आपको अपने ध्यान में रखना चाहेंगे कि बच्चों को कहानी सुनाने का उद्देश्य उनको कुछ महत्वपूर्ण सिखाना है। आप जब उनको आनंद और भाव के साथ कहानी सुनायेंगे तो बच्चे बेहतर समझेंगे। बच्चे कभी भी नीरस ढंग से कही गई कहानी में रूचि नहीं लेने वाले। आपको संवेदनाओं जैसे प्रसन्नता, दुख, निराशा, भय या साहस को अपनी आवाज के उतार–चढ़ाव, लहजे, आपके शरीर की भाव–भंगिमा जो कहानी के भावों के साथ बदलती रहे, प्रदर्शित करना सीखना होगा। कहानी के विकास के अनुसार आपकी आवाज का स्वर और ढंग बदलना चाहिए, और आपके हावभाव, सरल हों पर प्रत्येक भाग के अनुरूप होने चाहिए। आपको अपनी कहानी कहने की लय और गति के विषय में भी ध्यान रखना होगा। यदि आपकी गति धीमी होगी तो बच्चे बोर हो जायेंगे यदि आपकी गति तेज होगी तो बच्चों को कहानी समझने में कठिनाई होगी। सबसे ऊपर आपको यह कंठस्थ रखना होगा कि आप कोई नाटक की प्रस्तुति नही कर रहे हैं और आपके भाव निष्कपट होने चाहिये। बच्चे बहुत आसानी से निष्कपटता की कमी को पहचान सकते हैं। जो वांछित है वह है बच्चों के ह्रदयों से जुड़ना और चिरकालिक कहानी कहने की परंपरा को आगे बढ़ाना जिसके द्वारा सहस्त्रों वर्षो से मानवता द्वारा अर्जित किया गया विवेक का भंडार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्थानांतरित किया गया है।

भाग 23

आइये अब हम कहानी कहने के बाद आने वाली दो गतिविधियों के विषय में बातें करें – खेल खेलना और रंग भरना। इस भाग में हम खेल के समय को कैसे संचालित करेंगे, इस पर चर्चा करें, और अगले भाग में रंग भरने पर विचार करेंगे।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि ग्रेड–1 के खेलों की प्रकृति सहयोगी है। अनेक लोग ऐसा विश्वास करते हैं कि खेलों के चुनौतीपूर्ण होने के लिये बच्चों में एक–दूसरे से स्पर्धा करनी चाहिए। हमें यह समझ में आना चाहिये कि जब बच्चों को ऐसी स्थिति में डाला जाता है जिसमें उन्हें प्रतिस्पर्धा करनी चाहिए, तब उनमें कुछ ऐसी अवांछित मनोवृत्तियाँ और आदतें उत्पन्न हो जाती हैं जो खेल के समय के बाद भी लंबे समय तक बनी रहती हैं। इसके बाद यह धारणा भी है कि उत्कृष्टता सिर्फ प्रतिस्पर्धा द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। आपको इस विचार की सच्चाई और वास्तविकता का निकटता से परीक्षण करने की आवश्यकता है। क्या यह सत्य है कि हम सहयोग के द्वारा उत्कृष्टता

नहीं प्राप्त कर सकते? प्रतिस्पर्धा में कुछ लोग जीतते हैं जबकि कुछ लोग हार जाते हैं। जबकि सहयोग में हर किसी को उपलब्धि प्राप्त करने की भावना होती है।

ग्रेड 1 के खेल बच्चों में सुनने और निर्देशों का पालन करने की कुशलता का विकास करना चाहते हैं। वे यह भी समझ पायेंगे कि हर खेल पूरी कक्षा के लिए एक समान लक्ष्य तय करता है और अपने प्रयासों को संयोजित करने के दौरान इसको प्राप्त करने में हर किसी को भूमिका निभानी होती है। सबसे ऊपर ऐसी अपेक्षा है कि एक दूसरे का ध्यान रखने के अपने भावों में वे बढ़ोत्तरी करेंगे, प्रयास करना सीखेंगे और मित्रता में उनको जोड़ने वाले बंधनों को सशक्त करेंगे। अतः आपको यह याद रखना चाहिए कि उन्हें सफल होने का भाव अनुभव करने के लिये ही पूर्ण दक्षता से खेलने की आवश्यकता नहीं हैं। उदाहरण के लिये देखें कि पाठ–1 में दिए गए खेल को देखें। इच्छित उद्देश्य को प्राप्त करने में यह कैसे योगदान करता है?

अगली गतिविधि के लिये जमीन पर एक टायर रखें और तब बच्चों से कहें कि एक समय में कितने बच्चे इस पर खड़े हो सकते हैं। यदि टायर उपलब्ध नहीं है तो आप कोई चटाई या तौलिया बिछा सकते हैं या ऐसी ही कोई चीज डाल सकते हैं। जो भी चीज आप चुने वह इतनी छोटी होनी चाहिये कि इस पर अधिक संख्या में कक्षा के बच्चों को खड़ा होना चुनौतीपूर्ण लगे।

जिस तरह से एक शिक्षक किसी खेल का परिचय देता है, वह यह तय करता है कि बच्चे इसे कैसे खेलते हैं। इसके उद्देश्य स्पष्ट रूप से समझाने चाहिये। इसके अतिरिक्त बच्चों को निर्देश देते समय शिक्षक को अक्सर ही, करके दिखाना होगा कि खेल को कैसे खेलना है और उनके साथ इसका अभ्यास करना होगा।

भाग 24

बच्चों की रचनात्मक और मानसिक कुशलताओं को विकसित करने के लिये कलात्मक गतिविधियाँ आवश्यक हैं और प्रारंभिक वर्षों से ही स्वतंत्र चित्रकारी और अन्य प्रकार की कलात्मक अभिव्यक्तियों के द्वारा बच्चों को उनकी कल्पनाशीलता को उपयोग में लाने के अवसर दिये जाने चाहिये। हालाँकि, विश्व के अनेक भागों में बच्चों को पाँच या छः वर्ष की आयु के पहले चित्र बनाने के बहुत ही कम अवसर होंगे और रंगीन पेंसिलें तो और भी कम को उपलब्ध होंगी। अतः बच्चों के लिये प्रथम ग्रेड में पाठों के साथ रंग भरने का अवसर कक्षा की बहुत ही उत्साहपूर्ण समयावधि होती हैं और इनसे उनमें आगे के ग्रेड में आने वाली जटिल कलात्मक गतिविधियों को करने के लिये आवश्यक आत्मविश्वास उत्पन्न होता है। यह उनमें दक्षता और अनुशासन की भावना का विकास करने का साधन है। किस प्रकार रंग भरने की गतिविधि के द्वारा बच्चों में निम्नलिखित योग्यतायें, कुशलतायें और अभिवृत्तियाँ और अधिक विकसित होती हैं ?

- सुव्यवस्था और सौदर्य को सराहना
- विस्तृत विवरण पर ध्यान देना
- हाथ में लिये गये कार्य पर ध्यान केंद्रित करना

– अपने संसाधनों को दूसरों के साथ बाँटना

– दूसरों का सम्मान करना

बच्चों में कुछ कुशलताओं और अभिवृत्तियों को बढ़ाने के अतिरिक्त, रंग भरने का कक्षा का समय, शिक्षक को अपने विद्यार्थियों के साथ ग्रेड–1 में दिये गये गुणों पर चर्चा करने का एक और अवसर भी देता है। ड्राइंग में चित्रण के बारे में कक्षा से प्रश्न पूछकर, शिक्षक बच्चों को मौका दे सकते हैं कि वे बताएं कि चित्र में क्या दर्शाया गया है, और इस समय वे अपने विचारों को स्पष्ट करने और इनके साथ अपने मन में संबंध बनाने का मौका दे सकते हैं। पहले पाठ में उनको दी जाने वाली शीट पर नजर डालें और अपने समूह के साथ खोज करें कि आप किस तरीके से बच्चों को इसका परिचय देंगे। नीचे अपने विचारों को लिखें।

____

____

____

____

____

____

एक शिक्षक को इस गतिविधि के लिये समुचित तैयारी करनी चाहिये। बिना किसी अपवाद के बच्चे रंग भरने में अत्यधिक रूचि रखते हैं, फिर भी कक्षा का यह भाग यदि समुचित तरीके से संयोजित न किया गया तो काफी अव्यवस्थित हो सकता है। रंग भरने के लिये बच्चों के लिये एक स्थान नियत होना चाहिये और प्रत्येक पाठ के लिये चित्रों की प्रतिलिपियाँ पहले से ही करवा कर रखनी चाहिये। विशेष रूप से पहले कुछ पाठों में, शिक्षक को एक मानक निर्धारित करने की आवश्यकता हो सकती है कि बच्चों को क्रेयॉन का किस प्रकार उपयोग करना चाहिए और उनके साथ अनुशासन और सहयोग की भावना स्थापित करनी चाहिए। शुरुआत में, प्रत्येक बच्चे को शिक्षक द्वारा रखे गए बॉक्स में से एक क्रेयॉन चुनने के लिए कहा जा सकता है। जब वे रंग बदलना चाहते हैं, तो वे क्रेयॉन को वापिस रख सकते हैं और इसे दूसरे से बदल सकते हैं। कई कक्षाओं के बाद जब उनको एक बार में एक क्रेयोन लेने की आदत पड़ जाती है तब क्रेयोन का डिब्बा कक्षा के बीच में रखा जा सकता है।

अब नीचे दी गई स्थितियों को देखें। प्रत्येक जोड़े में से कौन सी परिस्थिति गतिविधि की प्रभावशीलता को बढ़ायेगी ?

_______ शिक्षक एक बच्चे को लाइनों के बाहर रंग भरने देता है, जब तक कि वह अच्छी तरह से रंगने की कोशिश कर रहा हो।

_______ सभी बच्चों को दृढ़ता से लाइन के अंदर रंग भरने के लिये कहा जाता है।

_______ बच्चों को रंग भरने के दौरान शिक्षक उनके मध्य टहलता है और उनको सहायता और प्रोत्साहन देता रहता है।

_______ बच्चों द्वारा रंग भरते समय शिक्षक अलग बैठकर अपना कुछ काम करने में व्यस्त रहता है।

_______ रंग भरने के समय बच्चे अपने काम पर ध्यान केंद्रित रखते हैं।

_______ रंग भरने के लिये दिये गये समय के दौरान बच्चे एक–दूसरे का ध्यान भंग करते हैं।

_______ रंग भरने के दौरान बच्चे एकदम शांति बनाये रखते हैं।

_______ रंग भरने के दौरान आनंदपूर्वक एक–दूसरे से बातचीत करते हैं और एक–दूसरे का उत्साह बढ़ाते हैं।

भाग 25

कुछ शिक्षक अपनी नोटबुक रखना उपयोगी पाते हैं जिसमें वे अपने विद्यार्थियों के समूह के विषय में कुछ आवश्यक जानकारियाँ रखते हैं। इससे संबंधित दो तालिकायें उपयोगी होंगी। एक में विद्यार्थियों के नाम होंगे, जिससे उनकी कक्षा में उपस्थिति का विवरण रखने के लिये और दूसरी में उद्धरणों को कंठस्थ करने में उनके विकास की गति को अंकित करने के लिये। उदाहरण के लिये, दूसरी तालिका के बायें कॉलम में बच्चों के नाम होंगे और ऊपर की लाइन में पाठों की संख्या। इस प्रकार शिक्षक सही खाने में निशान लगा सकेगा कि कौन से बच्चों ने किन उद्धरणों को कंठस्थ कर लिया है।

नोटबुक में एक भाग पाठों के लिये हो सकता है जिसमें शिक्षक प्रत्येक पाठ का अपना विश्लेषण अंकित कर सकते हैं – उसको पढ़ाने की विधि पर अपने विचार और बाद में, बच्चों के साथ कक्षा सत्र कैसे अनावृत हुए।

अन्य भाग में, शिक्षक प्रत्येक बच्चे की प्रगति पर टिप्पणी अंकित कर सकता है और साथ ही कोई विशेष अनुभव जो बच्चे के माता–पिता के साथ साझा किया जाना हो। कुछ शिक्षक, इस भाग में माता–पिता और भाई–बहनों के नाम और उनके घरों में मिलने जाने के समय विषयों पर हुई बातचीत का सार सम्मिलित करना सहायक पाते हैं।

भाग 26

बच्चों की कक्षा के शिक्षक के रूप में आपको प्रत्येक बच्चे के माता–पिता से निकट एवं प्रेमपूर्ण संबंध स्थापित करने की आवश्यकता होगी। उनके पुत्र अथवा पुत्री के विकास और प्रगति के विषय में उनसे चर्चा करने और इसमें उनकी सहायता प्राप्त करने के लिये उनके साथ नियमित रूप से भेंट करते रहना होगा। आपने पुस्तक सं. 2 का अध्ययन पूरा करने के बाद कुछ बच्चों के माता–पिता से भेंट की होगी जिनके बच्चे अभी आपकी कक्षा में आते हैं। अपनी याद को ताजा करने के लिये आप उस पुस्तक की तीसरी इकाई का भाग 15 देखना चाह सकते हैं। उस भाग में हम देखते हैं कि बच्चों की कक्षाओं की एक शिक्षिका मारिबेल अपने विचारों को एकत्र करती है कि वह एम्मा की माँ से दूसरी बार गृह भ्रमण पर क्या कहेगी। उसने निश्चित किया कि वह सबसे पहले एम्मा की माँ से कहेगी कि

उसकी कक्षा में एम्मा की उपस्थिति से वह कितना प्रसन्न है और तब वह बतायेगी कि उनकी बेटी में उसने कितने अद्भुत गुण पाये हैं। माता–पिता के लिए यह देखना कितना महत्वपूर्ण है कि एक शिक्षक किस आनंद और उत्साह के साथ समुदाय के बच्चों की सेवा करता है? कुछ अन्य गुण क्या हैं जो माता–पिता के ह्रदयों को आकर्षित करेंगे और उनके साथ विश्वास का बंधन बनाएंगे ?

शिक्षक के लिये माता–पिता के ध्यान में उनके बच्चों में विकसित हो रहे आध्यात्मिक गुणों को लाना क्यों आवश्यक है ?

मारिबेल एम्मा की माँ से उस उद्धरण को भी साझा करना चाहती है जो आपने इस इकाई के भाग 3 में पढ़ा और बच्चों की शिक्षा में इसकी उपयोगिता पर भी चर्चा करना चाहती है। माता–पिता के साथ किये जाने वाले अनेक वार्तालापों में आपको उन शैक्षिक विचारों को समझाने के अवसर भी मिलेंगे जिन्होंने बच्चों की कक्षा के कार्यक्रम को आकार दिया है। नीचे कुछ अवधारणायें दी जा रही हैं जिनका परीक्षण आपने इस इकाई में किया है। बच्चों के माता–पिता से बातचीत के दौरान आप उनके बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा के संदर्भ में प्रत्येक अवधारणा के विषय में आप क्या बात करेंगे? क्या उस अवधारणा से संबंधित पवित्र लेखों से कोई अंश आपके ध्यान में आ रहा है जिसको आप बच्चों के माता–पिता के साथ उनके बच्चों के विषय में बातें करते समय उनसे साझा करेंगे ?

एक प्रशंसनीय चरित्र का विकास : ______________________________

____

____

____

____

____

आध्यात्मिक गुणों को अर्जित करना : ______________________________

____

____

____

____

____

बच्चों के हृदयों पर प्रार्थना का प्रभाव : ______________________________

____

____

____

____

____

ईश्वर के शब्द को कंठस्थ करने का महत्व : ______________________________

____

____

____

____

____

अब्दुल बहा के जीवन से कहानियों के बच्चों पर प्रभाव : ____________________

____

ईश्वर का प्रेम और ईश्वर का भय : ______________________

अनुशासन और स्वतंत्रता : ______________________

एम्मा की माता के समक्ष अपनी प्रस्तुति को थोड़ा विराम देकर अब मारिबेल उनको अपने विचारों को देने के लिये आमंत्रित करती है। ऐसी अपेक्षा की जाती है कि समय के साथ–साथ शिक्षकों और बच्चों के माता–पिता के मध्य बातचीत गहन होती जायेगी। यह क्यों महत्वपूर्ण हो जाता है कि शिक्षक बातचीत की जा रही विषय–वस्तुओं पर बच्चों के माता–पिता की टिप्पणियों, विचारों और चिंतन को प्राप्त करें?

माता–पिता के साथ आध्यात्मिक गुणों की अवधारणा पर सामान्य रूप चर्चा करने के अतिरिक्त, आपको पूरे वर्ष में प्राप्त होने वाले ऐसे अवसरों पर माता–पिता से विभिन्न पाठ में चर्चित विशेष गुण को उनके बच्चों में विकसित करने के प्रयास के विषय में बात करने का लाभ उठाना चाहिये। पाठ 1 में हृदय की शुद्धता की गुणवत्ता पर प्राप्त अंतर्दृष्टि को ध्यान में रखते हुये अपने अध्ययन समूह के सदस्यों के साथ इस बात पर चर्चा करें कि किस प्रकार आप ऐसी बातचीत आरम्भ करेंगे।

मारिबेल को ज्ञात है कि यदि एम्मा को उसकी कक्षाओं का पूर्ण लाभ प्राप्त करना है तो इसके लिये उसके और एम्मा की माँ के मध्य आपसी सहयोग और समझ का होना आवश्यक है। उदाहरण के लिये कक्षा में सीखी गई प्रार्थनाओं और उद्धरणों को माता–पिता की सहायता से गाया जा सकता है। इस प्रकार से बच्चे ईश्वर के शब्द को बेहतर रूप से आत्मसात करने में समर्थ होंगे जो उनके हृदयों और आत्मा में अंदर उतर जायेंगे और उनके चरित्र को वांछित स्वरूप प्रदान करेंगे। अपने समूह में इस पर चर्चा करें कि किस प्रकार से माता–पिता शिक्षकों के प्रयासों को सहायता और सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

हृदय और मन के वांछित गुणों को बच्चों में एक लंबे समय तक शिक्षा के माध्यम से ही पोषित किया जा सकता हैं। अब तक यह स्पष्ट हो चुका है कि माता–पिता से आपकी नियमित मुलाकातों में बच्चों द्वारा की गई प्रगति पर जोर देना चाहिये, भले ही वह कितनी भी अल्प क्यों न हो। माता–पिता से बढ़ते वार्तालापों में आप इन उपलब्धियों को बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा कर सकते हैं। जब इस प्रकार की सकारात्मक बातचीत का तरीका स्थापित हो जाता है तब शिक्षक अत्यधिक सावधानी के साथ माता–पिता के साथ उनके बच्चे के साथ कक्षा में आ रही कठिनाइयों की चर्चा कर सकता है। इसका उद्देश्य दोनों को मिलाकर आपसी सहयोग के साथ किसी तरीके को ढूंढ़ना होगा जिससे उनका बच्चा कठिनाइयों को दूर कर सके। अपने समूह में संवाद कर माता–पिता से वार्तालाप करने के रचनात्मक तरीके निकालने के विषय में चर्चा करनी चाहिये।

भाग 27

जैसा कि इस इकाई के आरम्भ में ही बताया गया है कि इस पाठ्यक्रम में भाग लेने वाला हर प्रतिभागी बच्चों की कक्षा ही ले यह आवश्वयक नहीं है। जो बच्चों की कक्षा लेना आरंभ करते हैं, हो सकता है वे कुछ समय के लिये इसको करें, फिर सेवा की दूसरी गतिविधि को शुरू कर सकते हैं जबकि जो इसको जारी रखना चाहते हैं वे इस सेवा के क्षेत्र में आगे बढ़ सकते हैं और बच्चों को ईश्वर के प्रेम में पोषित करेंगे। फिर भी वे इस सेवा के क्षेत्र को चुनें न चुनें सभी को अपने समुदाय के नन्हे सदस्यों से मिलने–जुलने के अवसर तो मिलते ही रहेंगे, सम्मिलनों, बैठकों – पड़ोसियों के रूप में और छोटे भाई–बहनों या माता–पिता के रूप में। परिस्थितियाँ जो भी हो इस इकाई में उजागर अवधारणायें एवं विचार प्रतिभागियों को, उनके समुदाय के दायित्वों के प्रति अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में सहायता करेगा, जैसा कि विश्व न्याय मंदिर कहते है कि ये 'सर्वाधिक बहुमूल्य कोष' हैं। आइये हम सब अपेक्षा भरी दृष्टि से मानवता के उज्जवल भविष्य की ओर देखें, निम्नांकित अंश से प्रेरणा और सम्बल प्राप्त करें:

> "हम सभी मनुष्यों के लिए निर्धारित करते हैं कि जो उनके सेवकों के मध्य ईश्वरीय शब्द को उन्नति की ओर ले जाएगा, और इसी भाँति, अस्तित्व के संसार की उन्नति और आत्माओं के उत्थान के लिए भी। इस हेतु महानतम साधन बच्चों की शिक्षा है।"[38]

> "बच्चों की शिक्षा और उनका प्रशिक्षण मानवजाति के सबसे योग्य कार्यों में से एक है और यह सर्वदयालु ईश्वर की कृपा और करुणा को आकर्षित करता है, क्योंकि शिक्षा समस्त मानवीय उत्कृष्टता का अपरिहार्य आधार है और मानव को चिरस्थायी गौरव की ऊंचाइयों तक उसका मार्ग प्रशस्त करने में सहायक होता है। यदि बच्चे को उसकी शैश्वावस्था से ही प्रशिक्षित किया जाए तो वह, 'पवित्र माली' की स्नेहिल देखभाल के माध्यम से, प्रवाहित फव्वारों के बीच स्थित नन्हे पौधे की तरह चेतना और ज्ञान के स्फटिक स्वच्छ जल का पान कर सकेगा। और निस्संदेह वह अपने लिए 'सत्य के सूर्य' की प्रखर किरणें एकत्रित करेगा और इसकी रोशनी और उष्मा से वह जीवन की वाटिका में सदा ताजगी और निर्मलता से अपना विकास करता रहेगा ...।"

> "यदि इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए सबल प्रयास किया जाए तो मानव–जगत अपनी अन्य विशिष्टताओं के साथ प्रकाशमान हो उठेगा और उज्ज्वल प्रकाश बिखेरेगा। तब यह अंधकारमय जगत ज्योतिर्मय हो उठेगा और यह धरती स्वर्ग समान रूपांतरित हो जायेगी।"[39]

संदर्भ

1. 21 अप्रैल 2000 के संदेश से
2. बहाउल्लाह, 'कम्पाइलेशन ऑन बहाई एजूकेशन' से
3. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स ऑफ अब्दुल बहा से
4. अब्दुल बहा, 'कम्पाइलेशन ऑन बहाई एजूकेशन' से
5. बहाउल्लाह के संग्रहित लेखों से
6. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स ऑफ अब्दुल बहा से
7. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स ऑफ अब्दुल बहा से
8. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स ऑफ अब्दुल बहा से
9. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स ऑफ अब्दुल बहा से
10. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स ऑफ अब्दुल बहा से
11. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स ऑफ अब्दुल बहा से
12. अब्दुल बहा के शब्द 'स्टार ऑफ द वेस्ट' से
13. बहाउल्लाह के संग्रहित लेखों से
14. द प्रोमोलगेशन ऑफ यूनीवर्सल पीस, अब्दुल बहा के वक्तव्य से
15. अब्दुलबहा 'प्रेयर एंड डिवोशनल लाइफ' कम्पाइलेशन से
16. बहाउल्लाह के संग्रहित लेखों से
17. द प्रोमोलगेशन ऑफ यूनीवर्सल पीस, अब्दुल बहा के वक्तव्य से
18. बहाउल्लाह, निगूढ़ वचन, अरबी सं. 3
19. बहाउल्लाह निगूढ़ वचन, अरबी सं. 12
20. बहाउल्लाह निगूढ़ वचन, अरबी सं. 11
21. बहाउल्लाह के संग्रहित लेखों से
22. कॉल ऑफ डिवाइन बील्वेड
23. बहाउल्लाह निगूढ़ वचन, अरबी सं. 59

24. द प्रोमोलगेशन ऑफ यूनीवर्सल पीस, अब्दुल बहा के वक्तव्य से

25. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स ऑफ अब्दुल बहा से

26. बहाउल्लाह के संग्रहित लेखों से

27. बहाउल्लाह के संग्रहित लेखों से

28. बहाउल्लाह निगूढ़ वचन, अरबी सं. 9

29. द प्रोमोलगेशन ऑफ यूनीवर्सल पीस, अब्दुल बहा के वक्तव्य से

30. बहाउल्लाह, भेड़िये पुत्र के नाम पत्र, से

31. बहाउल्लाह किताब–ए–अकदस के बाद प्रकाशित पाती से

32. अब्दुल बहा 'द सीक्रेट ऑफ डिवाइन सिवलाइजेशन' से

33. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स ऑफ अब्दुल बहा से

34. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स ऑफ अब्दुल बहा से

35. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स ऑफ अब्दुल बहा से

36. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स ऑफ अब्दुल बहा से

37. अब्दुल बहा, बहाई प्रेयर्स

38. बहाउल्लाह द्वारा प्रकाशित पाती से, सोशल एक्शन

39. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स ऑफ अब्दुल बहा से

बच्चों की कक्षा के लिए, ग्रेड 1 के पाठ

उद्देश्य

पाँच या छः वर्ष की आयु के बच्चों के लिए कक्षाओं को पढ़ाने की क्षमता विकसित करने के लिए, जो चरित्र के परिष्करण पर केंद्रित है, जिसमें प्रार्थनाओं एवं उद्धरणों को कंठस्थ करना और गीत, कहानियाँ, खेल और रंग करना सम्मिलित है

भाग 1

पिछली इकाई में आपने प्रथम ग्रेड में अपने शिक्षण के प्रयासों के विषय में सोचा और उन अनेक तत्वों के विषय का परीक्षण किया जिनसे एक पाठ बनता है। इस दूसरी इकाई में चौबीस पाठ हैं जो, जैसा कि आपको पता है, आध्यात्मिक गुणों के विकास के इर्द–गिर्द संरचित हैं। इन प्राथमिक भागों में आपको इन पाठों की विषय–वस्तु से अपने आपको परिचित कराने और उनका संचालन करने का अभ्यास करने का अवसर दिया जाएगा। जो हम करेंगे, वह है कि हम लोग एक बार में चार पाठों को लेंगे और प्रत्येक में संबोधित आध्यात्मिक गुणों पर चिंतन करेंगे। उसके बाद आपको प्रोत्साहित किया जाएगा कि आप, विभिन्न गतिविधियों को बारी–बारी से करते हुए, अपने साथी प्रतिभागियों के साथ विस्तार से इन पाठों को करें, और फिर अगले चार पाठों की ओर आगे बढ़ें।

भाग 2

ग्रेड 1 की प्रत्येक कक्षा शिक्षक द्वारा गान की गई प्रार्थना से आरम्भ होनी चाहिए। सहायता के रूप में, प्रत्येक चार पाठों के बाद एक नई प्रार्थना का सुझाव दिया जाएगा, इस प्रकार अंत में कुल मिलाकर छः प्रार्थनायें होंगी। यदि आप इन प्रार्थनाओं को कंठस्थ कर पाने में सक्षम होते हैं तो यह बच्चों को प्रार्थनायें कंठस्थ करने के उनके अपने प्रयासों में उन्हें काफी प्रोत्साहित करेगा। पाठ 1 से 4 तक के लिए निम्नलिखित प्रार्थना का सुझाव दिया जाता है :

> **"हे ईश्वर! इन बच्चों को शिक्षित कर। ये बच्चे तेरी फलों की बगिया के पौधे हैं, तेरे उद्यान के पुष्प हैं, तेरी वाटिका के गुलाब हैं। अपनी वर्षा की फुहारें उन पर पड़ने दे, सत्य के इस सूर्य को अपने स्नेह सहित इन पर जगमगाने दे अपने समीर को उनमें ताजगी भरने दे, ताकि ये प्रशिक्षित हो सकें, विकास और वृद्धि कर सकें, और परम सौंदर्य में परिलक्षित हो सकें। तू दाता, तू करूणामय है।"**[1]

उपरोक्त प्रार्थना करने के बाद, आप कुछ बच्चों को एक प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे जो उनको पहले से कंठस्थ हैं। आरम्भ में शायद सभी बच्चे कक्षा के इस भाग में योगदान नहीं दे पायेंगे। फिर भी, इस ग्रेड में जैसे–जैसे वे प्रार्थनाओं को कंठस्थ करेंगे, धीरे–धीरे और भी अधिक बच्चे यह कर पाएंगे। अपनी पिछली इकाई के अध्ययन से आप निम्नलिखित प्रार्थना से पहले से ही परिचित हैं, जिस पर वे आरम्भ के कुछ पाठों में अपने प्रयासों को केंद्रित करेंगे।

> **"वह ईश्वर है ! हे ईश्वर, मेरे ईश्वर ! मुझे मोती के समान शुद्ध हृदय प्रदान कर।"**[2]

प्रारंभिक प्रार्थनाओं के लिए समर्पित समयावधि सर्वाधिक महत्वपूर्ण है; यह ईश्वर के प्रति समर्पण के वातावरण का निर्माण करेगी, एक ऐसा वातावरण जो सीखने के कार्य में सहायक हो। अब्दुल बहा हमें बताते हैं कि बच्चों को एक साथ लाना और उन्हे प्रार्थना सिखाना उनके हृदयों को आनंद प्रदान करता है। ईश्वर से वार्तालाप करना "उच्च स्तर की बुद्धिमता की संवेदनशीलता को उत्पन्न करता है।"

बच्चों की ईश्वर के प्रति श्रद्धा का गहन भाव विकसित करने में और प्रार्थना करते समय तदनुसार आचरण करने में सहायता की जानी चाहिये। पवित्र शब्दों पर अपने मन–मस्तिष्क को केन्द्रित करने में बच्चों को सहायता करने की आवश्यकता हो सकती है, चाहे वे स्वयं प्रार्थना कर रहे हों या किसी अन्य बच्चे के द्वारा की जा रही प्रार्थना को सुन रहे हों। शिक्षक बच्चों से पूछ सकते हैं कि वे

किस प्रकार श्रद्धा व्यक्त कर सकते हैं – उदाहरण के लिये, उन्हें किस तरह बैठना चाहिये, उनको अपने हाथ किस प्रकार रखने चाहिए ताकि वे ध्यान विचलित करने का कारण न बन जाएं, और उन्हे क्या करना चाहिए यदि वे पाएं की उनकी आँखें इधर–उधर देख रही हैं। शिक्षक बच्चों को कह सकता है कि वे दिखायें कि उनको प्रार्थना कि तैयारी किस प्रकार करनी चाहिये। आप यह भी स्मरण रखना चाहेंगे कि यह बेहतर होगा एक आध्यात्मिक वातारण में सिर्फ तीन चार बच्चे प्रार्थना का पाठ करें बजाय इसके कि वे शोर के और हलचल के माहौल में प्रत्येक बच्चा एक–एक प्रार्थना करे। अतः आपको ऐसा सुझाव दिया जाता है कि आप पहले उन बच्चों का चयन कर लें जो कक्षा के आरम्भ में प्रार्थना करेंगे। आप यह भी सुनिश्चित करना चाहेंगे कि हर तीन या चार कक्षाओं के बाद हर बच्चे को कम से कम एक बार प्रार्थना का पाठ करने का अवसर अवश्य मिले।

पूरे वर्ष के दौरान आपके लिये यह महत्वपूर्ण होगा कि आप अपने विद्यार्थियों से समय–समय पर प्रार्थना की प्रकृति के विषय में और हम प्रार्थना क्यों करते हैं, के विषय में बातें करते रहें। नीचे दिये गये स्थान में आप इसका वर्णन करें कि आरंभ के कुछ सप्ताहों में आप उनसे कौन सी बातें कर सकते हैं।

____

____

____

____

____

____

____

____

____

____

____

भाग 3

अब एक–एक करके, अपने समूह के अन्य सदस्यों के साथ, पहले चार पाठों को ध्यानपूर्वक पढ़ें। आपको विशेष रूप से परिचयात्मक टिप्पणियों एवं उन उद्धरणों पर ध्यान देना चाहिए जिन्हे विद्यार्थियों को कंठस्थ करना है। निश्चित ही आपको यह ज्ञात है कि प्रथम पाठ शुद्धता के विषय पर केन्द्रित है। उन आध्यात्मिक गुणों का नाम लिखें जिनके इर्द गिर्द अगले तीन पाठ व्यवस्थित हैं।

पाठ 1 : शुद्धता ______________________________

पाठ 2 : ______________________________

पाठ 3 : ____________________

पाठ 4 : ____________________

इन पाठों की तैयारी करते समय आपको अपना कुछ समय उनमें से प्रत्येक सम्बंधित गुणों के विषय में चिंतन करने में बिताना चाहिये जैसा कि आप इसके पहले ही प्रथम इकाई में हृदय की शुद्धता के विषय में कर चुके हैं। नीचे अन्य तीन गुणों से सम्बंधित पवित्र लेखों से उद्धरण दिये गये हैं। ऐसा सुझाव दिया जाता है कि आप इस बात को ध्यान में रखते हुये कि आपके विद्यार्थी इन उद्धरणों को कंठस्थ करेंगे, आप अपने समूह के सदस्यों के साथ प्रत्येक सेट को कई बार पढ़ें और साथ मिलकर उन अंशों पर चिंतन करें। इसके बाद व्यक्ति के जीवन में सामान्य रूप से उस गुण के महत्व पर और विशेष रूप से एक शिक्षक के रूप में अपने प्रयासों के विषय में अपने कुछ विचारों के विषय में लिखें। याद रखें कि यह उद्धरण आपकी कक्षा के बच्चों के लिये नहीं हैं बल्कि आपके स्वयं के चिंतन के लिये हैं।

न्याय के सम्बंध में हम पढ़ते हैं :

"मनुष्य का प्रकाश न्याय है। इसे अत्याचार और दमन की विरोधी हवाओं से न बुझाओ। न्याय का उद्देश्य मनुष्यों में एकता का प्रकट होना है।"[3]

"न्याय की चमक की तुलना किसी भी अन्य चमक से नहीं की जा सकती है। संसार की संस्थाओं एवं मानवजाति की शांति इस पर ही निर्भर करती है।"[4]

"जो विश्व को प्रशिक्षित करता है वह न्याय है, क्योंकि यह दो स्तम्भों, पुरस्कार एवं दण्ड पर आधारित है। ये दोनों ही विश्व के जीवन स्रोत हैं।"[5]

"हे चेतना के पुत्र ! मेरी दृष्टि में समस्त वस्तुओं में सर्वाधिक प्रिय न्याय है, उससे विमुख न हो, यदि तुम्हें मेरी अभिलाषा है, तो इसकी अवहेलना न करो, ताकि मैं तुममें विश्वास कर सकूँ। इसकी सहायता से तू अपनी आँखों से देखोगे न कि दूसरों की आँखों से, स्वयं अपने ज्ञान से जानोगे न कि अपने पड़ोसी के ज्ञान से। अपने हृदय में इस पर विचार करो; कि तुम्हें कैसा होना योग्य है। वस्तुतः न्याय तुम्हारे लिये मेरा उपहार है और मेरी प्रेममयी–दयालुता का प्रतीक है। अतः इसे अपने नेत्रों के सम्मुख धारण करो।"[6]

____

____

____

____

____

प्रेम की गुणवत्ता के विषय में पवित्र लेख हमें बताते हैं :

"प्रेम का सार यह है कि मनुष्य अपने हृदय को सर्वप्रिय की ओर मोड ले, और स्वयं को उसके सिवा अन्य सभी कुछ से विरक्त कर ले, और जो उसके स्वामी की इच्छा है उसके सिवा किसी अन्य की इच्छा न करे।"[7]

“इस दिवस में, ईश्वर के धर्म की सेवा करने के लिए उसके मित्रों के बीच प्रेम और साहचर्य उत्पन्न करना है।”[8]

“पवित्र प्रकटरूपों के प्रकट होने का उद्देश्य सदैव विश्व की मानवता के मध्य प्रेम और साहचर्य की स्थापना करना रहा है।”[9]

“तुम निश्चित रूप से जान लो कि ईश्वर के पवित्र धर्मप्रकटीकरण का रहस्य प्रेम है, सर्वदयालु का प्रकटीकरण, आध्यात्मिक प्रवाह का निर्झर। प्रेम स्वर्गिक दयामय का प्रकाश है, पवित्र आत्मा की शाश्वत श्वांस है जो मानव आत्मा को जीवंत करती है।”[10]

और, सत्यवादिता के सम्बंध में हमें सुझाव दिया जाता है :

“कहोः “सत्यवादिता और शिष्टाचार तुम्हारे आभूषण हों।”[11]

“ईश्वर के समस्त लोकों में किसी भी आत्मा के लिये सत्यवादिता के बिना प्रगति एवं सफलता असंभव है।”[12]

“सत्यवादिता गुणों में सबसे उच्च श्रेणी है क्योंकि यह अन्य सभी गुणों को समझती है। एक सच्चा व्यक्ति सभी नैतिक कष्टों से सुरक्षित रखा जायेगा, और हर बुरे कार्य से बचाया जायेगा, प्रत्येक कुकर्म से संरक्षित रखा जायेगा क्योंकि सभी पाप और कुकर्म सत्यवादिता के विपरीत हैं, और एक सत्यवादी व्यक्ति उस सभी से पूर्णतया घृणा करेगा।”[13]

अब इन उद्धरणों को कंठस्थ करने के अलावा बच्चे इन पाठों में उद्धरणों को अपने हृदय में उतारेंगे। आप प्रत्येक सेट में से एक अंश को कंठस्थ करना चाह सकते हैं।

भाग 4

उपरोक्त चिंतन को अपने मन में रखते हुए, प्रथम चार पाठों में आप जिन कहानियों को विद्यार्थियों को सुनायेंगे, उन्हें पुनः पढ़ लें। जैसा कि आप पायेंगे, चार में से तीन उच्चतम मानवीय आदर्शों के मूर्तरूप अब्दुल बहा के जीवन से लिए गए हैं। ग्रेड 1 के आपकी कक्षा के कुछ विद्यार्थियों को अब्दुल बहा के व्यक्तित्व के विषय में नहीं ज्ञात होगा अतः अब्दुल बहा का संक्षिप्त परिचय उन्हें देना होगा। पुस्तक संख्या 2 की तीसरी इकाई में आपने जो सीखा है, उसने उनके अद्वितीय स्थान के विषय में आपकी जागरूकता को बढ़ा दिया है। जैसे–जैसे आप इस श्रंखला की पुस्तकों के अध्ययन में आगे बढ़ेंगे ईश्वर के प्रति आपकी कृतज्ञता और भी अधिक गहन होती जायेगी कि उसने अब्दुल बहा

के रूप में मानवता को अत्यंत मूल्यवान उपहार दिया है। बच्चों के ग्रेड 1 की कक्षा के प्रथम पाठ को आरम्भ करते समय आप बच्चों को अब्दुल बहा के विषय में क्या बतायेंगे ?

पहली इकाई के अपने अध्ययन से, आप जानते हैं कि बच्चों को कहानियाँ सुनाने में, आप उन्हें घटनाओं से परे ले जाना चाहेंगे और उन्हें आध्यात्मिक वास्तविकता की एक झलक पाने में सहायता करेंगे। आपको पहले से ही इस बारे में सोचने का अवसर दिया गया था कि पाठ 1 में अब्दुल बहा के अतिथि की कहानी आपके विद्यार्थियों को शुद्धता के गुण के महत्व को समझने में सहायता करेगी और इसके लिए प्रयास करने का क्या अर्थ है। आइए अगले तीन पाठों की कहानियों की इसी भाँति जाँच करें।

जैसा कि आपने देखा होगा, पाठ 2 में आप एक कहानी सुनाएंगे जो अब्दुल बहा की न्याय के प्रति चिंता को दर्शाती है, जो कि पाठ का विषय–वस्तु है। यह एक घटना का वर्णन करती है जो तब घटती है जब एक दिन अब्दुल बहा अक्का से हाइफा की ओर जा रहे थे। कुछ ऐसे विवरण हैं, जिसको बच्चों को अब्दुल बहा की कहानी को समझने के लिए विस्तार में कुछ बातों को जानना होगा– उदाहरण के लिए, एक सार्वजनिक कोच में एक सीट और एक निजी कोच में एक सीट के बीच का अंतर। इससे उन्हें यह देखने में सहायता मिलेगी कि अब्दुल बहा जरूरतमंद लोगों को आध्यात्मिक और भौतिक पोषण देने में सक्षम होने के लिए अपने व्यक्तिगत आराम को त्यागने के लिए तत्पर थे। आप यह कैसे सुनिश्चित करेंगे कि अब्दुल बहा की जीवन–शैली – अनावश्यक रूप से स्वयं पर खर्च न करना और जरूरतमंदों की सहायता करना – न्याय के आध्यात्मिक गुण को प्रकट करता है? कहानी सुनाने से पहले कुछ विवरण क्या हैं जो आपके मन में स्पष्ट होने चाहिए ?

पाठ 3 का विषय प्रेम है, और यहाँ आप बच्चों को 'अक्का' में एक ऐसे व्यक्ति के बारे में एक कहानी सुनाएंगे, जो 'अब्दुल बहा' के प्रति हमेशा अनादर के बावजूद, अनेक वर्षों से उनकी प्रेममयी–दयालुता का प्राप्तकर्ता था। निःसंदेह, हमारे हृदय में उन लोगों के लिए प्रेम रखना आसान है जो हम पर दयालु हैं। लेकिन अब्दुल बहा के प्रेम की कोई सीमा नहीं थी और वह सशर्त नहीं था। जिस तरह से आप कहानी सुनाते हैं, आप यह कैसे सुनिश्चित करेंगे कि अब्दुल बहा के प्रेम का यह चिन्ह बच्चों को दिखाई दे? अज्ञानतावश गलत व्यवहार करने वाले व्यक्ति के हृदय को रूपांतरित करने के लिए प्रेम की शक्ति की सराहना करने में आप उनकी सहायता कैसे कर सकते हैं ? कुछ विवरण क्या हैं, जिन्हें यदि छोड़ दिया जाए, तो बच्चों के लिए कहानी का अनुसरण करना और यह अंतर्दृष्टि प्राप्त करना कठिन हो जाएगा ?

पाठ 4, जो सत्यवादिता के गुण पर केंद्रित है, व्यापक रूप से जानी जाने वाली कथा भेड़िया–भेड़िया आया चिल्लाने वाले चरवाहे की कहानी है। कहानी एक युवा चरवाहे के झूठ बोलने के परिणामों को दर्शाती है, इसको बच्चे आसानी से समझ लेंगे। लेकिन आप चाहेंगे कि वे और आगे बढ़ें और सत्यवादी होने के पुरस्कार को पहचानें। यह पुरस्कार क्या है और आप कैसे सुनिश्चित करेंगे कि बच्चे इसे कहानी में देख पायें।

भाग 5

इन भागों में आपने उन आध्यात्मिक गुणों के विषय में विचार किया जो ग्रेड 1 के प्रथम चार पाठों में बताये गये हैं, जिनसे उनके अभिप्राय के विषय में आपकी समझ भी गहन हुई है। आपने यह भी देखा, कि, किस प्रकार ये कहानियाँ उन गुणों की झलक भी प्रस्तुत करती हैं जिनकी इस ग्रेड के अध्ययन के दौरान भविष्य में आप अपने विद्यार्थियों में गुणों की प्रकृति विकसित होने की आशा करेंगें।

इसके पहले कि आप अगले चार पाठों की ओर बढ़ें, अपने सह प्रतिभागियों के साथ मिलकर प्रथम चार पाठों को पढ़ाने की तैयारी के लिए कुछ समय बिताना होगा। पिछली इकाई में चर्चा किये गये तरीकों को ध्यान में रखते हुये, प्रत्येक पाठ में बारी–बारी से कंठस्थ करने के लिए दी प्रार्थना और आध्यात्मिक गुणों के साथ कंठस्थ करने के लिये आप दिये गये उद्धरणों से भी परिचित करा सकते हैं। आप एक दूसरे के साथ तब तक बारी–बारी से कहानियाँ सुनाने और खेलों को खेलने का, गीतों को गाने का अभ्यास करते रहें जब तक उनको सिखाने के लिये आपको कुछ आत्मविश्वास न हो जाये। सोचें कि आप किस प्रकार रंग भरने वाले चित्रों का परिचय करायेंगे। इन अभ्यासों को आरम्भ करने से पहले प्रथम इकाई के भाग 17 से 24 तक का पुनरावलोकन करना आपके लिये सहायक होगा। सुझाए गए विभिन्न तत्वों का अभ्यास करने के बाद, आपके समूह के प्रत्येक सदस्य को एक या अधिक पाठों को पढाने के लिये कहा जा सकता है जबकि समूह के अन्य प्रतिभागी विद्यार्थियों की भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं। परिस्थितियों के अनुसार, यह भी संभव हो सकता है कि आप तीन या चार बच्चों को एकत्रित करके उनके साथ पाठों को पढ़ाने का अभ्यास करें।

उपरोक्त अभ्यास को कार्यरूप देते समय संभव हो सकता है कि आप प्रत्येक पाठ के अनुभव पर ऐसा नोट्स भी तैयार कर सकते हैं कि किस प्रकार कक्षा का संचालन किया जाये और उस पर अपने विचारों को भी रिकार्ड कर सकते हैं। आगे, कुछ खेलों के लिये आपको बच्चों के पाठों को पढ़ाने के बहुत पहले ही इनकी तैयारी कर लेनी होगी। कई शिक्षक ऐसी तैयारी के लिये प्रथम इकाई से वर्णित अभ्यास के लिये आपने नोटबुक का पूरा एक भाग ही रख लेते हैं।

उपरोक्त अभ्यास को करने में, आप शायद प्रत्येक पाठ के बारे में नोट्स लेना चाहेंगे और इसे कैसे पढ़ाया जाए, इस पर अपने विचार अंकित करेंगे। इसके अतिरिक्त, कुछ खेलों के लिए, आपको पाठ से पहले कुछ वस्तुएँ तैयार करने की आवश्यकता हो सकती है। कई शिक्षक पहली इकाई में वर्णित नोटबुक के एक भाग को ऐसी तैयारियों के लिए समर्पित करते हैं।

कंठस्थ रखें कि, जब आप इस पुस्तक और अपने नोटबुक कक्षा में अवश्य ही ले जाना चाहेंगे। परन्तु आप केवल उससे वहाँ पढ़ना नहीं चाहेंगे। जिस हद तक आप सामग्री को सहजता और उत्साह के साथ प्रस्तुत करने में सक्षम होंगे, क्या आपके विद्यार्थियों गतिविधियों में संलग्न होने में उतने ही सक्षम होंगे, तब, अभ्यास और तैयारी, आवश्यक होगी।

भाग 6

पाठ 5 से 8 तक के लिये, ऐसा सुझाव दिया जाता है कि आप कंठस्थ की जा चुकी निम्नलिखित प्रार्थना के गायन के साथ कक्षा का आरम्भ करें :

> **"हे तू दयालु स्वामी! ये प्रेम बच्चे तेरी शक्ति की उँगलियों के हस्तकौशल हैं और तेरी महानता के अद्‌भुत चिन्ह हैं। हे ईश्वर! इन बच्चों की रक्षा कर, उनके शिक्षित होने में कृपापूर्वक उनकी सहायता कर और मानवता के संसार की सेवा करने के लिए उन्हें समर्थ बना। हे ईश्वर! ये बच्चे मोती हैं, इनका अपनी स्नेहमयी–दयालुता के कवच के भीतर पोषण करा।**
>
> **"तू अनुकम्पामय, सर्वप्रेमी है।"**[14]

आप अपने शिक्षण प्रयासों के आलोक में इन शब्दों पर चिंतन करने के लिए कुछ समय निकालना चाहेंगे। किस प्रकार वे आपके प्रत्येक कक्षा संचालन को प्रभावित करेगा? किस प्रकार वे बच्चों के कोमल हृदयों में ईश्वर के प्रेम को दृढ़ करेंगे ?

इन पाठों में आप अपने विद्यार्थियों को नीचे दी गई प्रार्थना को कंठस्थ करने में सहायता करेंगे, जैसाकि आप जानते हैं, यदि उन्हें इसके महत्व की थोड़ी सी भी समझ है तो उन्हें कंठस्थ करना आसान हो जाएगा। आप इस संबंध में अपने कुछ विचार दिए गए स्थान पर लिख सकते हैं। आपको क्या लगता है कि कौन से शब्द नए या अपरिचित लग सकते हैं, और आप उन्हें उन स्थितियों के माध्यम से कैसे समझा सकते हैं जिन्हें बच्चे आसानी से समझ सकते हैं? ऐसे शब्दों के अतिरिक्त, आपको उन्हें यह समझने में सहायता करने की आवश्यकता हो सकती है कि दीपक और सितारा दोनों प्रकाश देते हैं और प्रकाश के बिना अंधकार है, साथ ही, हम देख नहीं सकते और रास्ता भटक सकते हैं। अतः इस प्रार्थना में, हम ईश्वर से यह याचना करते हैं कि हम आध्यात्मिक प्रकाश के साथ चमकें और हम उसकी शक्ति और बल को प्रमाणित करते हैं कि वह जो चाहे वह करने में समर्थ है।

> **"हे ईश्वर! मेरा मार्गदर्शन कर, मेरी रक्षा कर, मुझे एक दीप्तिमान दीप और दैदीप्यमान सितारा बना दे। तू शक्तिशाली एवं बलशाली है।"[15]**

भाग 7

अब पाठ 5 से 8 को, एक–एक करके पढ़ें, उन परिचयात्मक विचारों पर जिन्हें आप विद्यार्थियों के साथ साझा करेंगे और उद्धरण जो वे कंठस्थ करेंगे, पर विशेष ध्यान दें। प्रत्येक पाठ में चर्चा किए गए आध्यात्मिक गुणों को यहां लिखें :

पाठ 5 : ______________________________

पाठ 6 : ______________________________

पाठ 7 : ______________________________

पाठ 8 : ______________________________

नीचे कुछ पवित्र लेखों से उद्धरण दिये जा रहे हैं जो इन चार गुणों की अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। प्रत्येक सेट के विषय में उसी प्रकार चिंतन करें जैसा आपने इसके पहले किया था और अपने कुछ विचारों को उपलब्ध कराये गये स्थान में लिखें :

उदारता के गुण पर, हम पढ़ते हैं :

"समृद्धि के अपने दिवसों में उदार बनो, और क्षति के क्षणों में धैर्यवान बनो।"[16]

"उदारता का प्रारम्भ तब होता है जब मनुष्य अपनी संपदा को स्वयं पर, अपने परिवार पर और अपने धर्म के निर्धन बंधुओं के मध्य व्यय करता है।"[17]

"उन्हें जितना अधिक विरोध मिले, वे उतना ही अधिक अपनी सदाश्यता दर्शाएँ। उन्हें जितना अधिक यातनाओं और संकट का सामना करना पड़े, उन्हें उतनी ही उदारतापूर्वक अनुकम्पाओं के पात्र प्रदान करने चाहिए। ऐसी ही वह भावना है जो इस विश्व का जीवन होगी, ऐसा ही उसके हृदय में फैलने वाला प्रकाश होगा ..."[18]

"तुम उदारता के दिवास्रोत बनो, अस्तित्व के रहस्यों के उदय–बिन्दु, स्थल जहां प्रेरणा अवतरित होती है, भव्यता के उदय–स्थल, आत्माएं जो पवित्र चेतना से पोषित होती हैं, अपने स्वामी पर मोहित, उसके अतिरिक्त अन्य सभी से अनासक्त, मानवता के विशिष्ट गुणों से पवित्र, स्वर्ग के देवदूतों के परिधानों से सुसज्जित, ताकि तुम स्वयं को इस नवकाल, अद्भुत युग में उच्चतम सभी अनुकम्पों को विजित कर सको।"[19]

____

____

____

____

____

निस्वार्थता के संदर्भ में, हमारा आह्वान किया गया है :

"... तुममें अवश्य ही एक दूसरे के लिए असीम प्रेम हो, प्रत्येक स्वयं पर दूसरे को प्राथमिकता दे।"[20]

"हे स्वामी! निःस्वार्थता के पात्र से मुझे पान करने दे; इसका ही परिधान मुझे पहना और मुझको इसके महासिंधु में निमग्न कर दे। मुझे तेरे प्रियजनों की राहों की धूल बना दे, और

मुझे वह प्रदान कर कि मैं, अपनी आत्मा उस धरती के लिये बलिदान कर सकूँ जिस पर, तेरी राह में तेरे प्रियजन चले हों, हे उच्चतम महिमा के स्वामी!"[21]

"मनुष्य वह है जो दूसरों के लिए स्वयं के लाभों को भूल जाता है। वह सभी के कल्याण हेतु अपने आराम का त्याग कर देता है। नहीं, अपितु, अपने स्वयं के जीवन को मानवजाति के जीवन हेतु समर्पित करने के लिए सदैव तत्पर रहता है। ऐसा व्यक्ति मानव जगत की प्रतिष्ठा है। ऐसा मनुष्य मानव जगत की महिमा है। ऐसा मनुष्य शाश्वत आनंद को विजित करता है। ऐसा मनुष्य ईश्वर की देहरी के निकट होता है। ऐसा व्यक्ति शाश्वत प्रसन्नता का स्वयं प्रकटकर्ता होता है।"[22]

____

____

____

____

____

निम्नलिखित उद्धरणों में हमें उल्लासमयता की गत्यात्मकता की झलक देखने को मिलती है :

"ईश्वर के प्रेम के वातावरण में उल्लास के पंखों पर सवार हो।"[23]

"समस्त उल्लास उनके लिए जिन्होंने उसकी उपस्थिति को प्राप्त किया है, उसके सौन्दर्य का अवलोकन किया है, उसके स्वर–माधुर्य का श्रवण किया है, और उसके पवित्र तथा उच्च, उसके महिमाशाली एवं दैदीप्यमान अधरों से निकलते पवित्र शब्दों से जीवन पाया है!"[24]

"उल्लास हमें पंख देता है। उल्लास के समय हमारी शक्ति अधिक जीवनाधार, हमारी बुद्धि अधिक तीक्ष्ण और हमारी समझ कम धुंधली होती है।"[25]

"जहाँ तक तुम सम्भव हो सके, प्रत्येक सभा में प्रेम का एक दीप जलाओ, और अपनी मृदुलता से प्रत्येक हृदय को आनंदित और प्रफुल्लित करो।"[26]

____

____

____

____

____

नीचे दिये गद्यांश हमें निष्कपटता के विषय में बताते हैं :

"कहो : निष्कपट आत्मा ईश्वर की निकटता के लिए वैसे ही लालायित होती है, जैसेकि नवजात शिशु अपनी माँ के स्तनपान के लिए, नहीं इससे भी कहीं उत्कट है उसकी लालसा,

काश तुम इसे जान पाते! पुनः, उसकी लालसा ऐसी ही है जैसे अनुग्रह के जीवन जल के लिए व्यथित प्यासे का तड़पना, या पापी की क्षमायाचना और दया की चाहत।"[27]

"इन दिनों सत्यवादिता और ईमानदारी असत्य के चंगुल में बुरी तरह ग्रसित है, और न्याय अन्याय की मार से पीड़ित है।"[28]

"सभी के लिए यह उचित है कि इस अल्पकालिक जीवन को निष्कपटता और निष्पक्षता के साथ व्यतीत करे।"[29]

"तुम्हारा हृदय अवश्य ही शुद्ध और तुम्हारे इरादे अवश्य ही निष्कपट हों ताकि तुम ईश्वरीय अनुकम्पाओं के प्राप्तकर्ता बन सको।"[30]

ऊपर दिए प्रत्येक सेट से कम से कम एक–एक उद्धरण कंठस्थ करने का प्रयास करो।

भाग 8

आइये अब हम पाठ 5 से 8 तक कहानियों की ओर मुड़ें और सोचें कि किस प्रकार वे बच्चों की सहायता उन आध्यात्मिक गुणों के विषय में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में करेंगी जिनकी वे खोज कर रहे हैं। प्रत्येक कहानी को पुनः पढ़ने के बाद नीचे के प्रश्नों के विषय में सोचें।

उदारता पाठ 5 की कहानी की मुख्य विषय–वस्तु है, जो अब्दुल बहा के बाल्यकाल में उनके पिता की भेड़ों के झुंड से संबंधित एक घटना का वर्णन करती है। कहानी के कौन से भाग मुख्य विषय–वस्तु से संबंधित हैं? कुछ विवरण क्या हैं, जिन्हें यदि छोड़ दिया जाए, तो बच्चों के लिए कहानी को समझना कठिन हो जाएगा? निःसंदेह, सबसे महत्वपूर्ण है बहाउल्लाह द्वारा अपने पुत्र की चरवाहों के प्रति उदारता की भावना के बारे में जानने पर दर्शाई गई प्रसन्नता। उनकी बातों में भविष्यवाणी छिपी थी कि कैसे अब्दुल बहा बड़े होकर मानवता के कल्याण के लिए अपना सब कुछ दें, न केवल भौतिक संपत्ति बल्कि पूरी तरह स्वयं को भी। आप यह कैसे सुनिश्चित करेंगे कि बच्चे अब्दुल बहा की उदारता की सीमा को पहचानें, जिसकी कोई सीमा नहीं थी ?

पाठ 6 की कहानी बच्चों को निस्वार्थता के तरीकों की एक झलक प्रदान करती है। अब्दुल बहा ने महंगे कोट को स्वीकार करने से इनकार करते हुए दिखाया कि किस प्रकार वे स्वयं पर दूसरों को प्राथमिकता देते थे। आप यह कैसे सुनिश्चित करेंगे कि आपके वर्णन से बच्चे इस निष्कर्ष पर पहुँचें ? कहानी सुनाने से पहले कुछ विवरण क्या हैं जो आपके मन में स्पष्ट होने चाहिए ?

पाठ 7 की विषय–वस्तु है, उल्लासमयता और आप लेरॉय इओस के बारे में एक कहानी सुनाएंगे, जो एक छोटे बच्चे के रूप में, अब्दुल बहा से मिले और जिन्होंने अपना जीवन ईश्वर के धर्म को आगे बढ़ाने के लिए समर्पित कर दिया। कहानी में, लेरॉय ने अब्दुल बहा को उनके लिए खरीदे गए फूलों का गुलदस्ता नहीं देने का फैसला किया; वह इसके बदले उन्हें अपना ह्रदय देना चाहता है। बच्चों को यह समझाने के लिए कि लेरॉय ने ऐसा क्यों किया, आपके लिए यह जानना महत्वपूर्ण होगा कि मानव ह्रदय किसी भी भौतिक वस्तु से कहीं अधिक मूल्यवान है। जब आप कहानी के उस भाग को सुनाते हैं तो क्या आपके लिए अपनी आवाज में जोर देना ही काफी होगा ? यदि बच्चों को विचारों के अनुक्रम का पालन करना है और यह महसूस करना है कि अब्दुल बहा के लेरॉय को अपने कोट से लाल गुलाब भेंट करने से लड़के को इतना आनंद क्यों दिया, तो आपके वर्णन में किन विवरणों पर जोर देने की आवश्यकता होगी ?

अपने पूरे जीवन में, अब्दुल बहा ने उनकी उपस्थिति में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को आनंदित किया। इस विवरण में, हम देखते हैं कि लेरॉय अब्दुल बहा के ह्रदय को प्रसन्न करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहता था। बच्चों के लिए यह समझना क्यों जरूरी है कि आनंद के महानतम स्रोतों मे से एक है, दूसरों को आनंद देना ?

पाठ 8 के केंद्र में है, निष्कपटता, और बच्चों को कहानी से परिचित कराते समय आप इसे स्पष्ट करना चाहेंगे कि कभी–कभी हम उस वर्णन को सुनकर जिसमें वह गुण अनुपस्थित होता है,

बेहतर ढंग से समझ सकते हैं कि गुण होने का क्या अर्थ है। इसी का उदाहरण है वह कहानी जिसमें एक व्यक्ति ने अपने पड़ोसी को पेड़ काटने के लिये आश्वस्त कर लिया। आप किस प्रकार बच्चों को इस बात को समझायेंगे कि कभी–कभी जो सामने दिखता है वह भ्रमात्मक होता है? कहानी सुनाते समय आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि बच्चे यह न सोच लें कि कपटपूर्ण पड़ोसी को वास्तव में पुरस्कृत किया गया था। आप बच्चों को कपट के नकारात्मक प्रभावों को समझने में सहायता करने के लिए क्या कहेंगे ?

भाग 9

अब जब आपने पाठ 5 से 8 में चर्चा किए गए आध्यात्मिक गुणों में कुछ अंतर्दृष्टि प्राप्त कर ली है, तो आपको अपने सहभागी प्रतिभागियों के साथ पाठों और उनके विभिन्न तत्वों को करने का अभ्यास करने के लिए यहां रुकना चाहिए, जैसा कि आपने पहले चार के साथ किया था। याद रखें कि, अपनी नोटबुक में, आप प्रत्येक पाठ के बारे में कोई भी बिंदु लिख सकते हैं और इसे कैसे पढ़ाया जाए, इस पर अपने विचार दर्ज कर सकते हैं।

भाग 10

ऐसा सुझाव दिया जाता है कि, पाठ 9 से 12 तक आप प्रत्येक कक्षा का आरम्भ निम्नलिखित प्रार्थना के पाठ के साथ करें, जिसको कंठस्थ करने के लिये आपको प्रोत्साहित किया जाता है :

> **"हे मेरे स्वामी! अपने सौंदर्य को मेरा भोज्य, अपनी उपस्थिति को मेरा जीवन–जल, अपनी सुप्रसन्नता को मेरी आशा, अपनी स्तुति को मेरा दैनिक कर्म, अपने स्मरण को मेरा साथी, अपनी सम्प्रभु शक्ति को मेरा सहायक, अपने आलय को मेरा आश्रयस्थल और अपने उस स्थान को मेरा निवास बना जहाँ वैसे लोगों का प्रवेश वर्जित है जो एक पर्दे के कारण तुझसे दूर हैं।**
>
> **"सत्य ही तू, सर्वसामर्थ्यशाली, सर्वमहिमामय, सर्वशक्तिमान है।"**[31]

इन चार पाठों में आप अपने विद्यार्थियों को निम्नलिखित प्रार्थना कंठस्थ करने में सहायता करें। प्रार्थना के महत्व को बच्चों को समझाने में आपको किन शब्दों या वाक्यांशों की आवश्यकता पड़ेगी ?

> **"मंगलमय है वह स्थल, और वह गृह और वह स्थान और वह नगर और वह हृदय और वह पर्वत और वह आश्रय और वह गुफा और वह उपत्यका और वह धरती और वह सागर वह**

द्वीप और वह उपवन जहाँ उस ईश्वर का उल्लेख हुआ है और उसके यश की महिमा गाई गई है।"[32]

भाग 11

परिचयात्मक टिप्पणियों एवं उद्धरणों को कंठस्थ करने पर विशेष ध्यान देते हुए, जैसाकि आपने पहले भी किया है, पाठ सं. 9 से 12 तक को पढ़ें। प्रत्येक पाठ के केंद्र में स्थित आध्यात्मिक गुण को नीचे दिये स्थान में लिखें :

पाठ 9 : ____________________

पाठ 10 : ____________________

पाठ 11 : ____________________

पाठ 12 : ____________________

उपरोक्त चार गुणों के महत्व पर अपनी समझ को गहन करने के लिये प्रत्येक गुण से संबंधित चयनित उद्धरण पर चिंतन करें। ऐसा करने के दौरान उन गद्यांशों को ध्यान में रखें जिन्हें आपके विद्यार्थियों को कंठस्थ करना है। इसके बाद व्यक्ति और छोटे बच्चों के शिक्षक के जीवन में गुण के महत्व के बारे में अपने विचार लिखें।

विनम्रता के गुण पर पवित्र लेख हमें बताते हैं :

"विनम्रता मनुष्य को महिमा तथा शक्ति के आकाश पर ले जाती है, जबकि अभिमान उसे नीचता और पतन के गर्त तक गिरा देता है।"[33]

"प्रत्येक आत्मा जो इस दिवस में ईश्वर के साथ विनम्रतापूर्वक भ्रमण करती है और उससे जुड़ी रहती है वह स्वयं को सभी भव्य नामों एवं पदों के सम्मान से विभूषित पाएगी।"[34]

"वे जो ईश्वर के प्रियपात्र हैं, जहाँ कहीं भी एकत्रित हों और जिस किसी से भी मिलें, ईश्वर के प्रति अपनी दृष्टि, आराधना और प्रार्थना में इस प्रकार की विनम्रता और सहृदयता का परिचय दें कि उनके पांव तले की धूल का प्रत्येक कण उनकी भक्ति की गहनता का प्रमाण दे।"[35]

"यह निश्चित है कि मनुष्य की सर्वोच्च विशिष्टता अपने ईश्वर के प्रति आज्ञाकारिता और उसके समक्ष नम्रता में है।"[36]

कृतज्ञता के महत्व पर हम पढ़ते हैं :

"तुम जान लो कि पावनता की संपूर्ण सुरभि को मैंने तुम तक प्रवाहित कर दिया है, मैंने अपने शब्द तुमको प्रकट कर दिये हैं तुम्हारे माध्यम से अपनी अनुकम्पाओं को पूर्ण कर दिया है और तुम्हारे लिए उसकी इच्छा की है जिसकी इच्छा मैंने अपने स्वयं के लिए की है। तब तुम मेरी प्रसन्नता से संतुष्ट और मेरे प्रति कृतज्ञ रहो।"[37]

"जानो कि ईश्वर ही तेरे लिए सर्व–पर्याप्त है। उसकी चेतना के साथ अंतरंग वार्तालाप करो, और कृतज्ञ बनो।"[38]

"इसलिये, ईश्वर के प्रति कृतज्ञ बनो, क्योंकि उसने तुम्हें अपने धर्म की सहायता के लिए सशक्त किया है, तुम्हारी हृदय–वाटिका में ज्ञान तथा समझ के पुष्प खिलाये हैं। इस प्रकार उसकी कृपा तुम्हें चतुर्दिक घेरे हुए है, और सम्पूर्ण सृष्टि को भी घेरे हुए है।"[39]

"सत्य यह है कि ईश्वर ने मनुष्य को गुणों, शक्तियों एवं आंतरिक शक्तियों से सम्पन्न किया है, जिनसे प्रकृति पूर्णतया विहीन है और जिनके द्वारा मनुष्य श्रेष्ठ, प्रतिष्ठित और विशिष्ट किया गया है। हमें ईश्वर को इन उपहारों के लिए, इन शक्तियों को प्रदान करने के लिए, इस मुकुट को हमारे मस्तकों पर रखने के लिए अवश्य ही कृतज्ञ होना चाहिए।"[40]

क्षमाशीलता के विषय में निम्नलिखित उद्धरण हमें बताते हैं :

"उसे पापियों को क्षमा कर देना चाहिए, और उनकी निम्न अवस्था से घृणा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि कोई नहीं जानता कि स्वयं उसकी अवस्था क्या होगी।"[41]

"समस्त वस्तुओं का अंतर्तम सार सभी वस्तुओं में यह प्रमाणित करना है कि इस दिवस में, संपूर्ण क्षमाशीलता, ईश्वर से प्रवाहित होती है, उसकी किसी से तुलना नहीं की जा सकती, उसके साथ कोई सहभागी नहीं जुड़ सकता, समस्त मानव का सम्प्रभु रक्षक, उनके पापों को छिपाने वाला है !"[42]

"इसलिए, किसी की भी कमियों को न देखो; क्षमाशीलता की दृष्टि से देखो। अपूर्ण आँखें अपूर्णताओं को देखती हैं। दोष छिपाने वाली आँखें आत्माओं के सृजनकर्ता की ओर ही देखती हैं।"[43]

"तुम्हारे ह्रदय से किसी को ठेस न पहुँचे। यदि कोई तुम्हारे साथ त्रुटि और गलत करता है, तो तुम्हें अवश्य ही उसे तत्काल क्षमा कर देना चाहिये।"[44]

और ये उद्धरण ईमानदारी के उस स्तर का वर्णन करते हैं जिसकी हम आकांक्षा करते हैं :

"कहो : ईमानदारी, सदाचार, विवेक और संत चरित्र मनुष्य के उत्थान में सहायता करते हैं, जबकि बेईमानी, कपट, अज्ञानता और पाखंड उसको पतन की ओर ले जाते हैं।"[45]

"हे उसके नगरों में निवास करने वाले ईश्वर के मित्रों और उसके भूभागों में निवास कर रहे प्रियजनों! यह अन्यायपीडित ईमानदारी और सदाचारिता का नियम तुम पर लागू करता है। धन्य है वह नगर जो इनके प्रकाश से जगमगाता है। इनसे मनुष्य उन्नत होता है, और सुरक्षा का द्वार समस्त सृष्टि के सम्मुख खुल जाता है। धन्य है वह मनुष्य जो दृढ़ता के साथ उनसे जुड़ा रहता है और उन गुणों को पहचानता है और जो उनके स्थान को नकारता है वह कष्ट में होता है।"[46]

"विश्वासपात्रता, विवेक एवं ईमानदारी, सत्य ही, ईश्वर का अपने प्राणियों के लिए सुंदर अलंकरण है। ये निष्कपट परिधान प्रत्येक मानव–मंदिर के एक लिए एक उपयुक्त परिधान हैं। धन्य हैं वे जो इसे समझते हैं, और उनका कल्याण होगा जो इन गुणों को प्राप्त करते हैं।"[47]

ऊपर दिये गये प्रत्येक सेट से कम से कम एक उद्धरण को कंठस्थ करने का प्रयास करें।

भाग 12

आइये अब देखें कि किस प्रकार इन चार पाठों की कहानियाँ आपके विद्यार्थियों को उपरोक्त आध्यात्मिक गुणों के विषय में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने का अवसर देंगी :

पाठ 9 की कहानी में एक घटना का वर्णन है जो अब्दुल बहा से कुछ समृद्ध अतिथियों से भेंट के विषय में है। ये बच्चों को अब्दुल बहा की परम विनम्रता के गुण के विषय में बतायेगा। जिसका मुख्य विषय यह है कि अब्दुल बहा को अपने प्रति शान–शौकत और दिखावा बिल्कुल पसंद नहीं था। यह किस प्रकार उनकी विनम्रता को दर्शाता है? निश्चित ही, दिखावे का एक विशेष रूप – पात्र, जल, और सुगंधित तौलिया – सिर्फ एक रोचक विवरण है लेकिन ये कहानी सुनाते समय आपको केन्द्रीय विषय से नहीं भटकना चाहिये। इसके बजाय जो निष्कर्ष निकले, उस पर जोर दिया जाना चाहिए। यह अब्दुल बहा की विनम्रता और दूसरों की सेवा करने की उनकी इच्छा के बारे में बच्चों की समझ को कैसे आगे बढ़ाएगा ?

____

____

____

____

____

पाठ 10 का विषय कृतज्ञता है, और बच्चे एक महिला के बारे में एक कहानी सुनेंगे जो अब्दुल बहा के पास आती है और उनके साथ अपनी सभी परेशानियों और कष्टों को साझा करती है। बाद में अब्दुल बहा उन्हें मिर्जा हैदर–अली से परिचय करवाते हैं, जो जीवन में बड़ी कठिनाइयाँ सहन करने के बाद भी, ईश्वर से प्राप्त समस्त अनुकम्पाओं के लिए हमेशा कृतज्ञ रहते थे। कहानी सुनाते समय, आप चाहेंगे कि आपके विद्यार्थियों को यह स्पष्ट हो जाए कि अब्दुल बहा ने संयोग से मिर्जा हैदर–अली को महिला से नहीं मिलवाया था। आपको क्या लगता है कि महिला ने उनसे मिलकर क्या सीखा ? कहानी इस सीख को कैसे व्यक्त करने का प्रयास करती है ?

पाठ 11 का विषय क्षमाशीलता है और आप बच्चों को एक अब्दुल बहा के बारे में कहानी सुनायेंगे जो दर्शाती है कि क्षमाशीलता का प्रभाव उन पर पड़ता है जिनको हम क्षमा करते हैं। यदि बच्चे को विचारों की एक श्रृंखला का अनुसरण करना है, इसके लिये आपको कहानी के अनेक विवरणों पर स्पष्ट रूप से प्रकाश डालना होगा। यह कहानी अक्का के एक राज्यपाल की है जो अब्दुल बहा और उनके साथियों को शहर में अत्यंत क्षति पहुँचाने वाला था। कहानी में, अब्दुल बहा राज्यपाल को उसके कार्यों के लिये सिर्फ क्षमादान ही नहीं देते, जिसका सर्वस्व छिन चुका था, अपितु उसके साथ दयालुतापूर्ण व्यवहार भी करते हैं और उसके कठिन समय में उसकी सहायता भी करते हैं। आपको यह आशा करनी चाहिए कि बच्चे यह ग्रहण करें कि इस कहानी में अब्दुल बहा द्वारा दर्शायी गई क्षमाशीलता हमारे प्रति गलत करने वालों के प्रति मन में मलीनता की भावना का त्याग करने से कहीं आगे है। आप कैसे यह जान पायेंगे कि बच्चों ने इस सीख को ग्रहण कर लिया है ?

____

____

पाठ 12 की कहानी में बच्चे देखेंगे कि कैसे घोड़ागाड़ी के चालक के प्रति अब्दुल बहा का क्या व्यवहार था जिसने अनुचित किराया मांगा था। यद्यपि अब्दुल बहा दयालुता और शिष्टाचार के सार थे परन्तु वे किसी भी अपने प्रति या किसी और के प्रति बेईमानी या छल को सहन नहीं करते थे। आपको क्या लगता है कि चालक को अब्दुल बहा के व्यवहार से क्या सीख मिली? आप बच्चों को यह समझ पाने में किस प्रकार सहायता करेंगे कि वास्तव में बेईमान होने पर हम जो खोते हैं वह किसी भी भौतिक वस्तु से कहीं अधिक है जैसे कि चालक द्वारा खोया गया इनाम।

भाग 13

अपने प्रतिभागियों के साथ पाठ 9 से 12 तक की गतिविधियों को करने के बाद आप अगले चार भाग की ओर बढ़ सकते हैं। ऐसी सलाह दी जाती है कि पाठ 13 से 16 तक के लिये आप प्रत्येक कक्षा की शुरुआत निम्नलिखित कंठस्थ की गई प्रार्थना के साथ करें।

> **"हे मेरे दयालु स्वामी! यह एक पुष्पित–पौधा है जो तेरी आनंदमयी बगिया में उत्पन्न हुआ है और एक शाखा जो सच्चे ज्ञान के उद्यान में प्रकट हुई है। हे अनुग्रह के स्वामी, इसे निरंतर और प्रत्येक काल में अपनी जीवंत बयार के माध्यम से नवस्फूर्त होने दे, और इसे अपने अनुग्रहमयी मेघों के प्रवाह के माध्यम से हरा–भरा, नवस्फूर्त और समृद्ध बना, हे दयालु स्वामी!**
>
> **"वस्तुतः तू सर्व महिमावंत है।"[48]**

नीचे वह प्रार्थना है जो आपके विधार्थी पाठ 13 से 16 में कंठस्थ कर रहे होंगे। इसके महत्व को समझाने में उनकी सहायता के लिए, आपको ऐसे शब्दों या वाक्यांशों की पहचान करनी होगी जो आपके विद्यार्थियों के लिए नए या अपरिचित होंगे और उनको समझाने के लिए उपयुक्त वाक्य तैयार करना चाहिए। निश्चित रूप से, वे आसानी से प्रार्थना में दिये गये प्रतीकों को समझ जायेंगे और जो आपके द्वारा कंठस्थ की गई प्रार्थना के भाव से मेल खाएगा, जिसका उच्चारण आप इन पाठों के शिक्षण के दौरान कक्षाओं में करेंगे।

"हे स्वामी! इस सुकोमल अंकुर को अपनी बहुरूप अनुकम्पाओं की बगिया में बो, इसे अपनी प्रेमपूर्ण दयालुता के निर्झर से सींच और ऐसा कर दे कि यह तेरी प्रेममयी–कृपालुता के प्रवाह के माध्यम से एक अच्छे पौधे के रूप में विकसित हो सके।

"तू शक्तिशाली एवं बलशाली है।"[49]

____

____

____

____

____

भाग 14

पाठ 13 से 16 तक, को अपने साथी प्रतिभागियों के साथ सामान्य रूप से पढ़ने के बाद, प्रत्येक पाठ में चर्चित गुणों को लिखें :

पाठ 13 : ______________________________

पाठ 14 : ______________________________

पाठ 15 : ______________________________

पाठ 16 : ______________________________

जैसा कि आप इसके पूर्व भी कर चुके हैं, निम्नलिखित उद्धरण आपको उन पाठों में चर्चित आध्यात्मिक गुणों पर और अधिक चिंतन करने के अवसर प्रदान करेंगे।

करूणा प्रदर्शन करने के महत्व पर हम पढ़ते हैं :

"करूणा के प्रकाश को विकीर्ण करें ताकि हृदय स्वच्छ और शुद्ध हो सकें और वे तेरी सम्पुष्टियों में से एक अंश और भाग पा सकें।"[50]

"करुणामयी बनो, ताकि तुम्हारे कर्म दीपक से निकलने वाले प्रकाश की भाँति चमकें।"[51]

"तुम सब एक ही वृक्ष के फल और एक ही शाखा की पत्तियाँ हो; तुम समस्त मानवजाति के प्रति करुणामयी और दयालु बनो।"[52]

"अब ईश्वर के प्रेमियों को चाहिए कि वे उसकी इन आज्ञाओं को पूरा करने के लिए उठ खड़े हों: उन्हें मानवजाति की संतानों के लिए एक दयालु पिता के समान, युवाओं के लिए दयावान बंधुओं की भाँति और वृद्धजनों के प्रति अनासक्त संतानों की भाँति होना चाहिए।"[53]

अनासक्ति के गुण पर हमें सलाह दी जाती है :

"मेरे अतिरिक्त अन्य सभी से स्वयं को अनासक्त कर लो, और अपने मुखड़ों को मेरे मुखारविन्द की ओर अभिमुख करो, क्योंकि तुम्हारी धारण की जाने वाली चीजों से यह तुम्हारे लिए बेहतर है।"[54]

"संसार की वस्तुओं और उसके व्यर्थ आभूषणों से प्रसन्न न हो, और न ही उन पर अपनी आशा रखो। ईश्वर के स्मरण पर भरोसा रखो, जो अत्यंत उच्च, सर्वमहान है।"[55]

"अनासक्ति का सार है कि मनुष्य अपना मुखड़ा ईश्वर के प्रांगणों की ओर मोड़े, उसकी उपस्थिति में प्रवेश करे, उसके मुखड़े को देखे, और उसके समक्ष साक्षी के रूप में खड़ा हो।"[56]

"अनासक्ति सूर्य की भाँति है; जिस किसी भी हृदय में यह चमकती है, लालच और स्वः की अग्नि को बुझा देती है। वह जिसकी दृष्टि समझ के प्रकाश से प्रकाशित है वह निश्चय ही स्वयं को संसार से अनासक्त कर लेगा ... स्वयं को विश्व के गर्व और निम्नता से दुखी न होने दो। धन्य है वह जिसे धन–धान्यता ना तो व्यर्थ महिमा से, न ही दरिद्रता दुःख से स्वयं को भरने देती है।"[57]

निम्नलिखित उद्धरण हमें संतोष के गुण के विषय में बताते हैं :

"हे मनुष्य के पुत्र ! यदि तुम अन्तरिक्ष की विशालता को तीव्रता से चीरता हुए भी निकल जाओ और आकाश के विस्तार को छान मारो तो भी हमारे आदेश के प्रति समर्पित हुए बिना व हमारे मुखमण्डल के समक्ष विनयशील हुए बिना तुम्हें संतुष्टि नहीं प्राप्त होगी।"[58]

"हे वासना के सारतत्व! समस्त लोभ को परे हटा दो और संतोष की खोज करो; क्योंकि लोभी सदैव वंचित है, और संतोषी सदैव प्रशंसित और प्रिय है।"[59]

"इसलिए, मौन–स्वीकृति और परित्याग की राह पर चलो। तुम्हारे हृदय को कोई भी कठिनाई दुखित न करे, और न ही अपनी आशा किसी सांसारिक उपहार पर रखो। ईश्वर की जो भी इच्छा हो उसमें संतुष्ट और प्रसन्न रहो, जिससे तुम्हारी आत्मा और हृदय को शांति मिले और तुम्हारा अन्तःकरण और अंतरात्मा सच्चे आनंद का अनुभव कर सके।"[60]

नीचे दिये उद्धरण दयालुता की हमारी समझ को और अधिक विस्तार देते हैं :

"हम तुम्हें आनंद के स्वर्ग में सदैव मित्रतापूर्ण तथा प्रेममयी वातावरण में एक–दूसरे से सहचर होते देखना चाहते हैं और तुम्हारे कर्मों से मित्रता और एकता, प्रेममयी–दयालुता तथा साहचर्य की सुरभि पाना चाहते हैं।"[61]

"तुम निष्कपट दयालु बनो, मात्र दिखावे के लिये नहीं। ईश्वर के सभी प्रियजन इस बात पर अपना ध्यान केंद्रित करें: मनुष्य के प्रति स्वामी की दया बनना, स्वामी की कृपा बनना। वह जिस किसी मनुष्य की राह से गुजरे उसके प्रति कुछ भला करे, और उसके लिए कुछ लाभकारी बने।"[62]

"क्यों मनुष्यों को एक दूसरे के प्रति निर्दयी एवं अन्यायी होना चाहिए, जो उन्हें ईश्वर के विरुद्ध दर्शाता है? जैसे वह हमसे प्रेम करता है, हम क्यों वैर और घृणा को दिखलायें? यदि ईश्वर सभी से प्रेम नहीं करता, तो वह सभी के लिए सृजन, प्रशिक्षण और व्यवस्थायें नहीं करता। प्रेममयी–दयालुता दिव्य साधन है।"[63]

"केवल शब्द मात्र में ही मित्रता प्रकट कर तुम संतोष न कर लो अपितु, तुम्हारे सम्पर्क में आने वाले सभी लोगों के प्रति तुम्हारा हृदय प्रेममयी दयालुता से प्रदीप्त हो जाये।"[64]

उपरोक्त उद्धरणों के प्रत्येक सेट में से कम से कम एक को कंठस्थ करने की कोशिश करें।

भाग 15

पाठ 13 से 16 में संबोधित आध्यात्मिक गुणों के बारे में अपनी समझ को गहन करने के बाद, चार कहानियों को फिर से पढ़ें और नीचे दिए गए प्रश्नों पर अपने समूह के साथ चर्चा करें।

पाठ 13 की विषय–वस्तु है करूणा और जो कहानी आप सुनायेंगे उसमें अब्दुल बहा से मिलने की आशा में आई एक महिला उस घर के दरवाजे को जहाँ अब्दुल बहा ठहरे हुये थे, खटखटाने पर वापस कर दी गई थी। कहानी का कौन सा भाग महिला के प्रति उनकी करूणा को दर्शाता है ? कौन से विवरण बच्चों को कहानी को समझ पाने में सहायता करेंगे कि एक करुणामयी ह्रदय सभी के प्रति समान रूप से लगाव रखते हुए, उनके प्रति विशेषकर संवेदनशील रहता है जो कष्ट, विपत्ति अथवा दुख में हैं ?

____

____

____

____

____

पाठ 14 अनासक्ति के आध्यात्मिक गुण पर केंद्रित है। कहानी में दो मित्र शामिल हैं जो पवित्र भूमि की यात्रा पर जाने का फैसला करते हैं, एक जो अमीर है और दूसरा कम अमीर है। निश्चय ही, अनासक्ति के गुण में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए, बच्चों को यह पहचानने की आवश्यकता होगी कि पवित्र भूमि की यात्रा ईश्वर से निकटता प्राप्त करने का प्रतीक है। बच्चों को इस बात को समझने में सहायता करनी होगी कि अनासक्ति इस बात पर निर्भर नहीं करती कि हमारे पास कितना अधिक और कितना कम है बल्कि इस पर कि हम अपनी सम्पत्ति का कितना उपयोग ईश्वर की निकटता प्राप्त करने के लिये करते हैं। किस प्रकार यह कहानी इस समझ को बढ़ाएगी ?

____

____

____

____

पाठ 15 की कहानी संतोष के गुण की समझ में अंतर्दृष्टि देती है जो इसकी मुख्य विषय–वस्तु है। अब्दुल बहा अपने साथ रहने वालों को बताते हैं कि वे कारानगरी अक्का में कैद के दिनों में भी प्रसन्न थे क्योंकि उनके वे दिन सेवा की राह में बीते। यह कथन बच्चों की संतोष की समझ को कैसे प्रभावित करेगा? वे कैसे देखेंगे कि शारीरिक रूप से कैद होते हुए भी अब्दुल बहा की आत्मा को कभी सीमित नहीं किया जा सकता था ?

____

____

पाठ 16 की कहानी सुनाते समय, आपके लिये कुछ विवरणों पर जोर देना आवश्यक होगा, अन्यथा बच्चे इस बात से चूक सकते हैं कि यह दयालुता के मुख्य विषय से कैसे संबंधित है। कहानी अक्का के एक ऐसे क्रोधी व्यक्ति के चारों ओर घूमती है जो अपने क्रोध की और घृणा की आग में जल रहा था, वे विवरण कौन से हैं ? अब्दुल बहा उस व्यक्ति को क्या सबक सिखाते हैं जो इतने लंबे समय तक अपने क्रोध और घृणा से चिपका रहा ?

भाग 16

ऐसी आशा की जाती है कि पाठ 13 से 16 का आपका विश्लेषण उपयोगी था और आप और आपके साथी प्रतिभागी मित्रों ने एक साथ विभिन्न तत्वों पर अभ्यास करने का आनंद उठाया। पाठ 17 से 20 के लिए, आप कंठस्थ की गई निम्नलिखित प्रार्थना से प्रत्येक कक्षा का आरम्भ कर सकते हैं।

> **"हे ईश्वर! मेरे ईश्वर! यह तेरा सेवक तेरी ओर बढ़ चला है। तेरी कृपाओं की आशा करते हुए, तेरे साम्राज्य पर भरोसा रखे हुए, तेरी अनुकम्पाओं की अपेक्षा रखे हुए और तेरे वरदानों की मदिरा से मदमस्त होकर तेरे प्रेम की मरूभूमि में भावुक भटक रहा है। हे मेरे ईश्वर! अपने प्रति अनुराग की उसकी प्रचंडता को, तेरी स्तुति की उसकी निरंतरता को और तेरे प्रति प्रेम की प्रखरता को बढ़ा दे।**
>
> **"निश्चय ही तू परम उदार, अधिकाधिक कृपा का स्वामी है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं क्षमाशील, दयामय।"[65]**

इन पाठों में, बच्चे नीचे दी गई प्रार्थना को हृदय से सीखने पर ध्यान केंद्रित करेंगे, जैसा कि आपने अन्य के साथ किया है, आप कैसे सुनिश्चित करेंगे कि वे उन शब्दों की कुछ समझ प्राप्त करें जो वे कंठस्थ कर रहे हैं। यह प्रार्थना पिछली प्रार्थनाओं की तुलना में कुछ लंबी है, और यदि बच्चे इसे, या किसी अन्य को आवंटित चार पाठों के दौरान, कंठस्थ करना चुनौतीपूर्ण पाते हैं, तो जो भी समायोजन आवश्यक लगता है, आपको करना चाहिए।

> **"तेरा नाम ही मेरा आरोग्य है, हे मेरे ईश्वर, और तेरा स्मरण ही मेरी औषधि है। तेरा सामीप्य ही मेरी आशा, और तेरा प्रेम ही मेरा सहचर है। मुझ पर तेरी दया ही मेरी निरोगता और**

इहलोक तथा परलोक दोनों में मेरी सहायक है। सत्य ही, तू ही है सर्वउदार, सर्वज्ञ एवं सर्वप्रज्ञ।"[66]

भाग 17

पाठ 17 से 20 तक का पुनरावलोकन आरम्भ करने के लिये, सभी पाठों को एक बार में एक सामान्य रूप से पढ़ें और उन आध्यात्मिक गुणों को लिखें जिन्हें आप बच्चों के साथ मिलकर उनमें खोज करेंगे।

पाठ 17 : ____________________

पाठ 18 : ____________________

पाठ 19 : ____________________

पाठ 20 : ____________________

नीचे कुछ उद्धरण दिये गये हैं जो आपको और आपके साथी प्रतिभागियों को उपरोक्त गुणों के महत्व पर अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में सहायता करेंगे। उनके साथ चर्चा करने के लिए याद रखिए कि एक मनुष्य के जीवन के परिपेक्ष्य में ही नहीं बल्कि छोटे बच्चों के शिक्षक के रूप में आपके लिए उनका क्या अर्थ है, के दृष्टिकोण से भी आपको सोचना चाहिये।

साहस के गुण के विषय में हमें बताया गया है :

"'ईश्वरीय–साम्राज्य' की ओर उन्मुख होने का यथासम्भव प्रयत्न करो, ताकि तुम अंतर्निहित साहस और आदर्श शक्ति प्राप्त कर सको।"[67]

"तुम टूटे हुए हृदयों के लिए राहत के स्रोत बनो। तुम पथिक की शरणस्थली बनो। तुम पीड़ित के लिए साहस का स्रोत बनो। इस प्रकार, ईश्वर की कृपा और सहायता के माध्यम से विश्व के केंद्र में मानवता की प्रसन्नता के स्तर को ऊँचा उठा रहे और सार्वभौमिक सहमति की ध्वजा फहराये।"[68]

आशावादिता के महत्व के विषय में हम पढ़ते हैं कि :

"अपनी समस्त आशा ईश्वर में रखो, और पूर्ण दृढ़ता के साथ उसकी अचूक दया को थामे रहो। उसके अतिरिक्त अन्य कौन है जो निर्धनों को धनवान और पददलितों को ऊँचा उठा सकता है।"[69]

"हे धूल के गतिमान स्वरूप! मैं तुमसे घनिष्ठता की इच्छा रखता हूँ, परन्तु तुम्हें मुझ पर भरोसा कहाँ है। तुम्हारे विद्रोह की तलवार ने तुम्हारी आशा के वृक्ष को धराशायी कर दिया है। सदैव ही मैं तुम्हारे निकट रहा हूँ, परन्तु तुम सदैव मुझसे दूर रहे। मैंने तुम्हारे लिए अविनाशी महिमा का चयन किया है, फिर भी तुमने अपने लिये अंतहीन लज्जा को चुना है। अभी भी समय है, लौट आओ, और अपने अवसर को न गंवाओ।"[70]

"हर परिस्थिति में, मनुष्य ईश्वर के आशीर्वादों के महासिंधु में निमग्न रहता है। अतः कदापि हताश न हो, बल्कि अपनी आशा में अडिग रहो।"[71]

"यदि हृदय ईश्वर द्वारा प्राप्त अनुकम्पाओं से विमुख हो जाए तो यह आनन्द की आशा कैसे कर सकता है? यदि वह ईश्वर की दया पर आशा और आस्था नहीं रखता तो उसे सुखचैन कहाँ मिल सकता है? आह! ईश्वर में विश्वास कीजिए क्योंकि उसकी अनुकम्पा और आशीष अनन्त है, क्योंकि वे सर्वोत्तम हैं।"[72]

और विश्वासपात्रता के संबंध में पवित्र लेख हमें बताते हैं :

"हे लोगो! इस दिवस में ईश्वर की दृष्टि में विश्वासपात्रता सबसे श्रेष्ठ परिधान है। ईश्वर की समस्त अनुकम्पायें और सम्मान का भाग उसी आत्मा को मिलेगा जो इस महानतम आभूषण से स्वयं को सुसज्जित करता है।"[73]

"विश्वासपात्रता मानवता के नगर के दुर्ग की भांति है, और मानव–मंदिर के लिए नेत्र के समान है। जो कोई उससे वंचित रह जाता है, वह उसके सिंहासन के समक्ष, दृष्टिहीनों के रूप में गिना जाएगा।"[74]

"तुम प्रत्येक भू–भाग में ईश्वर की विश्वासपात्रता के मूर्तरूप बनो। तुम इतनी पूर्णता से इस गुण को प्रतिबिम्बित करो कि यदि तुम ऐसे नगरों से होकर यात्रा करो जहाँ सोने के ढेर लगे हों, तो भी तुम्हारी दृष्टि एक क्षण के लिए भी उसके आकर्षण से विचलित न हो।"[75]

ये शब्द हमें प्रज्वलता के विषय में बताते हैं :

"हे मित्रो! इस दिवस में तुम सभी को ईश्वरीय प्रेम की अग्नि से इतना प्रज्वलित हो उठना चाहिए कि उसकी ऊष्मा आपकी समस्त नसों, आपके अंगों और आपके शरीर के प्रत्यंगों में प्रकट हो सके, और संसार के जन इस ऊष्मा से ऊष्मा पा सकें और सर्वप्रिय के क्षितिज की ओर मुड़ें।"[76]

"अपनी आत्मा को कभी न बुझने वाली उस अग्नि की ज्वाला से प्रकाशमान होने दो, जो इस प्रकार विश्व के मध्य प्रकाशित है कि सम्पूर्ण धरा की जलराशि भी इसकी ऊष्मा को बुझा पाने में असमर्थ है।"[77]

"इस अविनाशी अग्नि की ज्वाला से, जिसे सर्वमहिमामय ने सृष्टि के मध्य हृदय में धधकाया है, अपनी आत्मा को इतना उज्जवल बनाओ, कि तुम्हारे माध्यम से उसके प्रेम की ऊष्मा, उसके प्रियजनों के हृदयों में प्रज्वलित हो सके। मेरे पथ का अनुसरण करो और मुझ सर्वशक्तिशाली, परमोच्च के स्मरण के माध्यम से मनुष्यों के हृदयों को मंत्रमुग्ध कर लो।"[78]

"प्रेम की अग्नि जलाओ और सभी कुछ इसमें भस्मसात कर दो, तब अपने पगों को प्रेमियों के भू–भाग में रखो।"[79]

उपरोक्त उद्धरणों के प्रत्येक सेट में से कम से कम एक को कंठस्थ करने की कोशिश करें।

भाग 18

आईये अब पाठ 17 से 20 तक की कहानियों की ओर चलें। उनमें से प्रत्येक को फिर से पढ़ने के बाद अपने समूह के अन्य सदस्यों के साथ निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार करें।

पाठ 17 में आप अली असगर की कहानी सुनायेंगे जो एक भ्रष्ट अधिकारी के द्वारा धमकाये जाने के बावजूद भी झूठ और बेइमानी से दूर रहे। बच्चों को पहले से ही यह ज्ञात है कि झूठ बोलना ईश्वर की दृष्टि में प्रशंसनीय नहीं है। कहानी उन्हें यह देखने में सक्षम बनायेगी कि ईश्वर द्वारा दी गई शिक्षाओं का अनुपालन करना किस प्रकार साहस का स्रोत हैं, जो इस पाठ की विषय–वस्तु है। कहानी के कौन से भाग उन्हें यह संबंध बनाने में सहायता करेंगे ? यदि बच्चों को कहानी को अच्छे से जानना है और इस महत्वपूर्ण तथ्य को समझने में सहायता करनी है तो आपके लिये किन घटनाओं पर जोर देना महत्वपूर्ण होगा ?

____

____

____

____

____

पाठ 18 आशावादिता के गुणों के चारों ओर घूमता है और आप बच्चों को निराश–हृदय वाले मनुष्य की कहानी सुनायेंगे जिसकी आशा को अब्दुल बहा ने फिर से पुनर्स्थापित किया। वे उसके ऊपर अपनी दया की वर्षा करते हैं और यह कंठस्थ हृदयाते हैं कि वह ईश्वर के साम्राज्य में समृद्ध है। ईश्वर के साम्राज्य में समृद्ध होने का तात्पर्य यह नहीं है कि हमारे पास अत्यधिक भौतिक समृद्धि हो। फिर इसका अर्थ क्या है? अब्दुल बहा का हृदय किस प्रकार ईश्वर में उस मनुष्य के विश्वास को बढ़ा देता है ? आप बच्चों को यह पहचानने में कैसे सहायता करेंगे कि ईश्वर पर विश्वास के बिना आशावान बने रहना कठिन है ?

____

____

____

____

____

विश्वासपात्रता पाठ 19 की विषय–वस्तु है और इस गुण के महत्व को बताने के लिये आप अपने विद्यार्थियों को मुहम्मद तकी की कहानी सुनायेंगे, जिनको अब्दुल बहा के द्वारा पवित्र भूमि में पत्रों को प्राप्त करने और भेजने की जिम्मेदारी दी गई थी। कहानी सुनाते समय आपको अपने मनो–मस्तिष्क में अनेक विवरणों को ध्यान में रखना होगा ताकि बच्चे इस कहानी के मुख्य विचार से चूक न जायें। वे कौन से हैं ? मुहम्मद तकी के व्यक्तित्व का वर्णन करते समय आप 'भरोसेमंद' और विश्वसनीय' शब्दों का उपयोग करेंगे। क्या आप सोचते हैं कि एक ही समय में लापरवाह और विश्वासपात्र होना संभव है ?

पाठ 20 की कहानी के केंद्र में थॉमस ब्रेकवेल का चरित्र है, जो प्रज्वलन से संबंधित है। एक जलती हुई मोमबत्ती, एक चमकती लौ, एक धधकती आग का रूपक अक्सर लेखन में उपयोग किया जाता है ताकि हमें प्रज्वलन– ईश्वर के लिए हमारे हृदयों में प्रेम की तीव्रता के गुण को समझने में सहायता मिल सके। आपको विश्वास होना चाहिए कि, इस रूपक के माध्यम से, आपके विद्यार्थियों को कुछ समझ में आ जाएगा कि प्रज्वलन का क्या अर्थ है। कम उम्र से ही बच्चो में अमूर्त सोच विचार करने की योग्यता मौजूद होती है, और जैसे–जैसे उनमें भाषा सीखने की क्षमता बढ़ती है, यह और विकसित होती है। इन विचारों को ध्यान में रखते हुए, पहचानें कि कहानी के कौन से भाग दिखाते हैं कि कैसे थॉमस ब्रेकवेल ईश्वर के प्रेम की अग्नि से दीप्तिमान हो उठे थे। कुछ विवरण क्या हैं जो कहानी को मनमोहक बनाते हैं ?

भाग 19

यह माना जाता है कि आपने और आपके साथी प्रतिभागियों ने पाठ 17 से 20 के तत्वों के अभ्यास से प्रेरणा ली है और अब आप ग्रेड 1 के अंतिम चार पाठों, 21 से 24 में जाने के लिए तैयार हैं। आप प्रत्येक कक्षा की शुरूआत कंठस्थ की गई इस प्रार्थना के साथ कर सकते हैं :

> **"हे मेरे ईश्वर, मुझमें एक शुद्ध हृदय का सृजन कर, और मुझमें एक प्रशांत अंतःकरण का नवीनीकरण कर, हे मेरी आशा! अपनी शक्ति की चेतना से मुझे अपने धर्म में दृढ़ कर, हे मेरे परम प्रिय, अपनी महिमा के प्रकाश से मेरे समक्ष अपना पथ आलोकित कर, हे तू, मेरी आकांक्षा के लक्ष्य! अपनी सर्वातीत शक्ति से अपनी पावनता के आकाश तक मुझे ऊपर उठा, हे मेरे अस्तित्व के स्रोत और अपनी शाश्वतता के समीरों से मुझे आनन्दित कर दे, हे तू, जो मेरा ईश्वर है ! अपने शाश्वत स्वर–माधुर्य से मुझे प्रशांति प्रदान कर, हे मेरे सखा, और तेरे पुरातन स्वरूप की सम्पदा से मुझे तेरे अतिरिक्त अन्य सभी से विमुक्त कर दे, हे मेरे स्वामी! और तेरे अविनाशी सार की अभिव्यक्ति के सुसामाचार से मुझे आह्लादित कर दे, हे तू जो प्रकटों में परम प्रकट और निगूढ़ों में परम निगूढ़ है !"[80]**

नीचे बच्चों द्वारा इस ग्रेड में कंठस्थ की जाने वाली अंतिम प्रार्थना दी गई है। हालाँकि वे इसके महत्व को आसानी से समझ जाएंगे, आपको यह निश्चित करना चाहिए कि आप किसी भी ऐसे शब्द या वाक्यांश की व्याख्या कैसे करेंगे जो उन्हें नया या अपरिचित लग सकता है।

"हे तू दयालु स्वामी! मैं एक नन्हा बालक हूँ, मुझे अपने साम्राज्य में प्रवेश देकर उच्च बना। मैं सांसारिक हूँ, मुझे दिव्य बना; मैं अधम हूँ, मुझे उच्च लोक से सम्बंधित कर; उदास हूँ, प्रदीप्त बनने में मुझे सहायता दे; भौतिक हूँ, मुझे आध्यात्मिक बना, और ऐसा कर दे कि मैं तेरी असीम अनुकम्पाओं को प्रकट कर सकूँ।"

"तू शक्तिशाली, सर्वप्रेमी है।"[81]

____

____

____

____

____

भाग 20

ग्रेड 1 में आप जो अंतिम चार पाठ पढ़ाएंगे, उनको पढ़ें, हमेशा की तरह, उन विचारों पर विशेष ध्यान दें, जिन्हें आप अपने विद्यार्थियों के साथ उन उद्धरणों को प्रस्तुत करने के लिए साझा करेंगे जो वे हृदय से कंठस्थ करेंगे। उन गुणों को लिखिए जिस पर प्रत्येक पाठ केंद्रित है।

पाठ 21 : ______________________________

पाठ 22 : ______________________________

पाठ 23 : ______________________________

पाठ 24 : ______________________________

निम्नलिखित उद्धरण आपको और आपके समूह के अन्य सदस्यों को इन पाठों में संबोधित आध्यात्मिक गुणों पर साथ मिलकर चिंतन करने का अवसर प्रदान करेंगे, जैसाकि आपने पिछले के साथ किया था।

प्रकाशमानता के महत्व पर, पवित्र लेख बताते हैं :

"हे ईश्वर की प्रेममयी लौ! किरण को अवश्य ही प्रकाश डालना चाहिए और सूर्य को उदित होना चाहिए; पूर्ण चन्द्र और तारे अवश्य चमकें। चूँकि आप एक किरण हैं, इसलिए स्वामी से प्रार्थना करें कि आपको प्रकाशमान तथा जगमगाने, क्षितिजों को रोशन करने और ईश्वर के प्रेम की अग्नि से जगत को समा लेने में सक्षम बनाए।"[82]

"हे लोगों, एक दूसरे के साथ आनन्द एवं उल्लास से मिलजुल कर रहो।"[83]

"सर्वप्रेमी ईश्वर ने मानव को दिव्य प्रकाश का प्रसार करने तथा अपने शब्दों, कर्मों और जीवन द्वारा संसार को प्रकाशयुक्त बनाने के लिए उत्पन्न किया है।"[84]

"मानवता की सेवा ईश्वर की सेवा है। दिव्य साम्राज्य के प्रेम और प्रकाश को आप तब तक प्रसारित होने दें जब तक कि वे सभी जो आपकी ओर देखते हैं, इसके प्रतिबिम्बन से प्रकाशित न हो जायें। अपने दिव्य पद की ऊँचाइयों में जगमगाते और उज्जवल होते सितारों की भांति बनो।"[85]

निम्नांकित अनुच्छेदों से, हम आस्थावान होने के गुण की अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं :

"ईश्वर की महिमा तुम पर, हर दृढ़ एवं अडिग हृदय पर, और प्रत्येक स्थिर एवं विश्वास योग्य आत्मा पर विराजती है।"[86]

"सर्वदयालु ईश्वर की सेविकाओं को तू यह संदेश दे कि जब परीक्षा की घड़ी बहुत ही उग्र हो तो उन्हें अविचलित रहना चाहिए और बहा के प्रति अपने प्रेम में निष्ठावान। शीतकाल में आंधियाँ उठती हैं, तेज हवाएँ बहती हैं, लेकिन उसके बाद अपने समस्त सौन्दर्य के साथ बसंत का आगमन होता है, मैदान और पहाड़ियाँ सुगन्धित पौधों और रत्न समान ज्योति के सुन्दर फूलों से सुसज्जित हो जाते हैं।"[87]

"इस दिवस में, स्वामी की देहरी पर कृपा–प्राप्त व्यक्ति वह है जो सबको अपनी निष्ठा का अर्पित करता है, जो अपने शत्रुओं को भी, उदारता के रत्न प्रदान करता है, और पतित जनों के लिए भी सहायता के हाथ आगे बढ़ाता है; यह वह व्यक्ति है जो अपने प्रबलतम शत्रु के लिए भी, एक स्नेहिल मित्र होता है।"[88]

नीचे दिये अनुच्छेद हमें धैर्य के बारे में बताते हैं :

"हे मनुष्य के पुत्र! प्रत्येक वस्तु का एक चिन्ह है। प्रेम का चिन्ह है मेरे आदेशों में दृढ़ता तथा मेरी परीक्षाओं में धैर्य धारण किये रहना।"[89]

"धन्य हैं वे जो धैर्यपूर्वक दुःखों और कठिनाइयों को सहते हैं और अविचलित रहते हैं। उनके ऊपर जो भी कहर टूटता है उससे वे आँसू नहीं बहाते। ऐसे लोग समर्पण के मार्ग का अनुसरण करते हैं।"[90]

"उस पर संतोष कर जो अटल आज्ञा द्वारा आदेशित किया गया है, और उनमें से बन जो धैर्य के साथ सहन करते हैं।"[91]

"उसके लिए यह उचित है जिसने भी अपना मुखड़ा सर्वउदात्त क्षितिज की ओर उन्मुख किया है, वह दृढ़ता से धैर्य की डोर को थामे हुए है, और ईश्वर पर भरोसा रखता है, जो संकट में सहायक, अप्रतिबंधित है।"[92]

और हम निम्नलिखित को अडिगता के संबंध में पढ़ते हैं :

"शाश्वत सत्य को पहचानने के पश्चात मनुष्यों का प्रथम तथा परमोच्च कर्तव्य है कि वे उसके धर्म में अडिग रहें।"[93]

"ईश्वरीय धर्म में तुम्हारी अडिगता अवश्य ही ऐसी होनी चाहिये कि पृथ्वी की कितनी भी शक्तिशाली कोई वस्तु क्यों न हो वह तुम्हें अपने कर्तव्य से विमुख न कर सके।"[94]

"ईश्वर के प्रेम में अडिगता के साथ चलो और उसके धर्म में दृढ़ रहो तथा अपनी वाणी की शक्ति से उसकी सहायता करो।"[95]

"इस प्रकार हम अडिग पगों से निश्चय के पथ पर चलें कि संयोग से ईश्वर की सद्कृपा के चारागाहों से प्रवाहमान प्रातःसमीर हम पर दिव्य स्वीकृति की मधुर रसानुभूति प्रवाहित कर दे, हम जो नश्वर प्राणी हैं, को शाश्वत महिमा का साम्राज्य प्राप्त करा दे।"[96]

"तुम निश्चय और अडिग रहो; तुम्हारी सेवाओं की संपुष्टि दिव्य शक्तियों द्वारा की जायेगी, क्योंकि तुम्हारे उद्देश्य उदात्त हैं, तुम्हारे उद्देश्य शुद्ध और सुयोग्य हैं।"[97]

उपरोक्त प्रत्येक सेट से कम से कम एक अनुच्छेद को कंठस्थ करने का प्रयास करें।

भाग 21

अब हम उन अंतिम चार कहानियों को देखें जो आप अपने विद्यार्थियों को सुनायेंगे, जिनके साथ आपने अनेक अद्‌भुत घंटे एक साथ बिताए होंगे, उनमें उन आध्यात्मिक गुणों को विकसित करने का प्रयास किया होगा जिनके विषय में वे सीख रहे हैं। प्रत्येक कहानी को पुनः पढने के पश्चात, नीचे दिए प्रश्नों पर अपने समूह के साथ चर्चा करें।

पाठ 21 में, बच्चे डोरेथी बेकर के बारे में एक कहानी सुनेंगे, जब वह प्रथम बार अब्दुल बहा से एक युवा लड़की के रूप में मिली थी। वे देखेंगे कि कैसे, कहानी के दौरान, वह प्रकाशित मुखमंडल से मनमोहित हो जाती है, जो कि मुख्य विषय–वस्तु है। अब्दुल बहा की प्रकाशमयता का डोरेथी पर क्या प्रभाव पड़ता है ? आप कैसे आशा करते हैं कि कहानी अब्दुल बहा के प्रति बच्चों की रूचि को बढ़ाएगी ?

पाठ 22 की विषय–वस्तु विश्वासपात्रता है, जो इस्फंदियार की कहानी द्वारा प्रदर्शित एक गुण है। कहानी के कौन से भाग इस विषय से सबसे अधिक सीधेतौर पर संबंधित है ? इस्फंदियार कौन से अन्य आध्यात्मिक गुणों को प्रदर्शित करता है जो उसे विश्वासपात्र बने रहने में सहायता करते हैं ? आप अपने वर्णन में किन विवरणों को सम्मिलित करना सुनिश्चित करेंगे ?

पाठ 23 धैर्य के गुण पर केंद्रित है। कहानी में, ली शिन धैर्य दिखाता है जब वह अपने आडू के पेड़ की देखभाल करता है और पेड़, विकास के विभिन्न चरणों से गुजरता है – एक छोटे से बीज

से एक पेड़ बनने तक जो अंततः फल देता है। कहानी लंबे समय तक किए गए धैर्य से पुरस्कृत हुए आनंद पर जोर देती है और दिखाती है कि अनेक बार, हमारे परिश्रम का परिणाम देखने से पूर्व, हमें अत्यधिक प्रयास करने चाहिए। बच्चों के लिए धैर्य के आध्यात्मिक गुण को इस तरह देखना क्यों आवश्यक है ? अपने विद्यार्थियों को कहानी सुनाते समय आप अपने मस्तिष्क में कौन से विवरण स्पष्ट करना चाहेंगे ?

____

____

____

____

____

पाठ 24 में आप बच्चों को अब्दुल बहा की बहन बहियेह खानम के जीवन के बारे में एक कहानी सुनायेंगे। यह उन्हें दिखलायेगा कि किस प्रकार बहियेह खानम ने प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते हुए भी अडिगता दिखलाई। लेकिन आप यह भी चाहेंगे कि वे इस समझ को प्राप्त करें कि ईश्वर के प्रेम में दृढ़ता का तात्पर्य, किसी एक विशेष संकट या कठिनाई पर विजय पाने से कहीं अधिक है। उनके जीवन की कहानी बच्चों को उस शक्ति और निरंतरता की झलक कैसे देगी जो ईश्वर के धर्म में अडिगता की मांग है ?

____

____

____

____

____

भाग 22

इस इकाई में, आपने उन आध्यात्मिक गुणों के बारे में विचार किया है जो आप पहली कक्षा में बच्चों के साथ उजागर करेंगे और उन चौबीस पाठों के विभिन्न तत्वों को पूरा करने का अभ्यास किया है जो आप उन्हें सिखायेंगे, इस आशा में कि आप उनके चरित्र के विकास में योगदान देंगे। अभी कुछ समय निकालें और अपने मन में उन सभी आध्यात्मिक गुणों को सोचें जिनको अपने विद्यार्थियों को ग्रेड 1 में विकसित करने में सहायता करने का उपहार आपको मिलेगा। यह उचित लगता है कि, इनमें से, ईश्वर के प्रेम में अडिगता वह विषय–वस्तु है जिसके साथ वह अपने पाठों को समाप्त करेंगे वैसे ही जैसे कि पहले चर्चा की गई थी, हृदय की शुद्धता पर ध्यान देते हुए, उनको पाठों का आरम्भ करना महत्वपूर्ण होगा। जब आप अपना पहला बच्चों का शिक्षण प्रयास शुरू करते हैं, तो आपको अक्सर इस बात पर चिंतन करना चाहिए कि कैसे आपकी संरक्षा में आए बच्चों में ईश्वर के प्रति प्रेम में दृढ़ता उनके भीतर छिपे हुए सभी रत्न–समान गुणों को प्रकट करने के प्रयासों में दृढ़ रहने में सहायता करेगी।

बच्चों के लिए 24 पाठ

पाठ 1

क. प्रार्थनाओं का गान और कंठस्थ करना

दिव्य अनुकम्पाओं को आकर्षित करने और आध्यात्मिक वातावरण बनाने के लिए कंठस्थ प्रार्थना, से कक्षा आरंभ करें। जैसी कि भाग 2 में सुझाई गई थी। फिर आप बच्चों से पूछ सकते हैं कि क्या उनमें से किसी को कोई प्रार्थना कंठस्थ है जिसका गान वह कक्षा में करना चाहता है। बाद में, वे नीचे दी गई प्रार्थना को कंठस्थ करेंगे। इसके महत्व को समझने में उनकी सहायता करने के लिए, कठिन शब्दों को पहचानें और जिन्हें ठोस उदाहरणों के साथ समझाने की आवश्यकता हो सकती है। यह आशा की जाती है कि कई बच्चे इसे आसानी से सीख लेंगे, लेकिन आपको आरम्भ में ही उनके साथ अगली तीन कक्षा अवधियों में इसका पुनः विचार करना चाहिए ताकि, पाठ 5 में जब वे एक नई प्रार्थना सीखना शुरू करें तो यह उनके ह्रदय और दिमाग पर अंकित हो चुकी हो।

"वह ईश्वर है ! हे ईश्वर, मेरे ईश्वर ! मुझे मोती के समान शुद्ध ह्रदय प्रदान कर।"[98]

चूंकि इन पहले कुछ पाठों में बच्चों को कंठस्थ की जाने वाली प्रार्थना संक्षिप्त है, आपके पास उनके साथ श्रद्धा और प्रार्थना की प्रकृति के बारे में कुछ विचारों पर चर्चा करने के कई अवसर होंगे जिनका उल्लेख भाग 2 में किया गया है।

ख. गीत

प्रार्थना के लिए समर्पित अवधि के बाद, बच्चे निम्नलिखित गीत सीख सकते हैं जो उस उद्धरण को संगीतबद्ध करता है जिसे वे पाठ की विषय–वस्तु, ह्रदय की शुद्धता के संबंध में कंठस्थ करेंगे। चूँकि कुछ शब्द बच्चों के लिए कठिन हो सकते हैं, आप पहली चार पंक्तियों को गाना सीखने में उनकी सहायता कर सकते हैं जबकि बाकी आप स्वयं गा सकते हैं।

मेरा प्रथम परामर्श

वो आवाज़ सुनो जो हमारे ह्रदयों को आनन्दित करती है
वो आवाज़ सुनो जो हमारे ह्रदयों को आनन्दित करती है

पहला उपदेश है प्रभु का
एक शुद्ध ह्रदय धारण कर
धारण कर एक दयालु ह्रदय
और प्रकाशमय ह्रदय

वो आवाज़ सुनो जो हमारे ह्रदयों को आनन्दित कर दे

ह्रदय तो एक खज़ाना है, है अनमोल ये उपहार
ह्रदय तो एक खज़ाना है, है अनमोल ये उपहार
स्वामी की एक कृपा है ये
संसारिक इच्छाओं की ज्वाला से इसे बचाना है
और मुक्त हो उड़ने देना है
और मुक्त हो उड़ने देना है

वो आवाज़ सुनो जो हमारे ह्रदयों को आनन्दित कर दे
वो आवाज़ सुनो जो हमारे ह्रदयों को आनन्दित कर दे

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

अगली गतिविधि के रूप में बच्चे बहाई पवन लेखों से एक उद्धरण कंठस्थ करेंगे। आप पाठ की विषय–वस्तु तथा कंठस्थ करने वाला उद्धरण नीचे दिए अनुसार परिचित करा सकते हैं। :

हमारे ह्रदय दर्पण के समान होते हैं। हमें इन्हें हमेशा स्वच्छ रखना चाहिये। नफरत, ईर्ष्या, और नकारात्मक विचार, उस धूल के समान होते हैं जो इस दर्पण को चमकने से रोकते है। जब हमारे ह्रदय शुद्ध होते हैं, तब ये ईश्वर के प्रकाश को प्रतिबिंबित करते हैं, और हम दूसरों की उल्लास का कारण बन जाते हैं। अपने ह्रदयों को शुद्ध रखने के लिये, आईये हम बहाउल्लाह के निम्नलिखित उद्धरण को कंठस्थ करे :

"हे चेतना के पुत्र ! मेरा प्रथम परामर्श यह है : एक शुद्ध, दयालु एवं प्रकाशमय ह्रदय धारण कर ...।"[99]

बच्चे इस उद्धरण को अच्छी तरह से समझ लेंगे, तो इसे कंठस्थ करना अधिक आसान पाएंगे। अतः यह सलाह दी जाती है कि आप कुछ देर उनके साथ इसके शब्दों और वाक्यांशों के अर्थ के बारे में चर्चा करें। इस कार्य में आपकी सहायता करने के लिये यहाँ कुछ वाक्य दिये गये हैं।

परामर्श

1. एक दिन जेरार्ड और मैरी कुछ चित्रों में रंग भर रहे थे। जेरार्ड को पीले रंग की आवश्यकता थी, जो मैरी उसे नहीं देना चाहती थी। शिक्षक ने मैरी से कहा कि उसे अपनी वस्तुं बांटनी चाहिये। शिक्षक ने उसे अच्छा परामर्श दिया।

2. पैट्रिशिया को यह निर्णय लेना था कि वह अपना पैसा टॉफी पर खर्च करे या एक कहानी की किताब पर। उसके माता–पिता उसे कहानी की किताब खरीदने की सलाह देते हैं। पैट्रिशिया के माता–पिता ने उसको सही परामर्श दिया।

धारण करना

1. टिनायी नहाने के बाद साफ धुले कपड़े पहनती है। टिनायी ने साफ कपड़े धारण किये।

2. अमन सदैव मुस्कुराता रहता है। उसका चेहरा सदैव मुस्कुराहट धारण किये रहता है।

शुद्ध ह्रदय

1. कैथी नाराज़ होकर सुज़ैन पर चिल्लायी। सुज़ैन दुखी थी लेकिन उसने जल्द ही कैथी को क्षमा कर दिया। सुज़ैन एक शुद्ध ह्रदय धारण करती है।

2. गुस्तावो को सभी बच्चों के साथ, यहाँ तक कि जोर्ज के साथ भी – जो कि उसके साथ कुछ भी नहीं बांटता – अपने बिस्कुट बांटना अच्छा लगता है। गुस्तावो एक शुद्ध हृदय धारण करता है।

दयालु हृदय

1. जब मिंग लिंग के माता पिता लोगों को अपने घर आमंत्रित करते हैं, वह उन्हें भोजन परोसती है। मिंग लिंग एक दयालु हृदय धारण करती है।

2. श्री रोबर्टसन बहुत बूढ़े हैं। उनकी फलों की फसल को बाज़ार तक ले जाने में जिमी उनकी सहायता करता है। जिमी एक दयालु हृदय धारण करता है।

प्रकाशमय हृदय

1. जब मैं दुखी होता हूँ, तो मेरी माँ हमेशा मुझे दिलासा देती है और मुझे खुश करती है। मेरी माँ एक प्रकाशमय हृदय धारण करती है।

2. ओबुया बीमार हो गया है और उसे अपना पूरा समय बिस्तर पर बिताना पड़ता हे। वह कई प्रार्थनाएँ करता है, कभी दुखी नहीं होता, और हमेशा प्रसन्न दिखता है। ओबुया एक प्रकाशमय हृदय धारण करता है।

घ. कहानी

जब बच्चे उद्धरण कंठस्थ कर चुके हों, तो आप उन्हें अब्दुल बहा की नीचे दी कहानी सुना सकते हैं जो हृदय की शुद्धता के महत्व को और अधिक दर्शाएगी। ध्यान रखिए कि यदि कुछ बच्चे अब्दुल बहा से अपरिचित हैं तो आरम्भ करने से पहले आप उनके बारे में कुछ शब्द कहने को तैयार रहें।

अब्दुल बहा हमेशा जानते थे कि व्यक्ति के मन में क्या है, और वे उन लोगों से बहुत प्रेम करते थे जिनके हृदय शुद्ध और प्रकाशमय थे। एक बार एक महिला को रात के भोजन पर अब्दुल बहा की मेहमान बनने का सौभाग्य मिला। जब वह बैठकर उनके विवेकपूर्ण शब्दों को सुन रही थी, तब उसने अपने सामने रखे हुए पानी के एक गिलास को देखा और उसके मन में विचार आया, "ओह ! काश अब्दुल बहा मेरे हृदय को हर सांसारिक इच्छा से खाली कर देते और इसे दिव्य प्रेम और समझ से उसी तरह फिर से भर देते जैसे कोई इस गिलास को पानी से भरता।"

यह विचार बड़ी तेज़ी के साथ उसके मन में आकर चला गया, और उसने इसके बारे में कुछ नहीं कहा, लेकिन शीघ्र ही कुछ ऐसा घटित हुआ जिसके कारण वह यह समझ गयी कि अब्दुल बहा जान गये थे कि वह क्या सोच रही थी। अचानक अब्दुल बहा अपनी बात कहते–कहते रूक गये और उन्होंने एक सेवक को अपने पास बुलाकर उससे फारसी में कुछ कहा। सेवक चुपचाप मेज़ के उस ओर गया जहाँ वह महिला बैठी हुयी थी, उसका गिलास उठाया, खाली किया, और दुबारा उसके सामने रख दिया।

कुछ देर बाद, अपनी बात को जारी रखते हुए अब्दुल बहा ने मेज़ पर से पानी का जग उठाया, और बड़े स्वाभाविक ढंग से धीरे धीरे उस महिला के गिलास को पानी से भर दिया। कोई समझ

नहीं सका कि क्या हुआ था, लेकिन वह महिला जान गयी थी कि अब्दुल बहा उसके मन की इच्छा पूरी कर रहे थे। वह आनन्द से भर उठी। अब वह जान गयी थी कि अब्दुल बहा के समक्ष हमारे हृदय और दिमाग खुली किताबों की तरह हैं, और वे इन्हें बड़े प्रेम और दयालुता से पढ़ते हैं।

ङ. खेल : "साझा करना"

अगली गतिविधि के लिये कार का टायर जमीन पर रखें और तब बच्चों से यह कहें कि कितने बच्चे इस पर एक साथ खड़े हो सकते हैं। यदि टायर उपलब्ध नहीं है तो एक तौलिया, अखबार या ऐसा ही कुछ बिछा सकते हैं। आप जो कुछ भी चुनें, यह इतना छोटा होना चाहिए जो कक्षा के बच्चों की संख्या के लिए यह खेल चुनौतीपूर्ण हो जाए।

च. रंग भरना : चित्र 1

खेल के बाद, आप बच्चों को इकट्ठा कर सकते हैं और प्रत्येक को रंग भरने के लिये चित्र 1 की प्रति दे सकते हैं, यह समझाते हुए कि जो उद्धरण उन्होंने कंठस्थ किया है वह पृष्ठ के नीचे दिया गया है और कुछ शब्द कहें जो आपने पहले से तैयार कर रखे हैं कि कैसे चित्र पाठ की विषय वस्तु से संबंधित है।

छ. समापन प्रार्थनाएं

कक्षा के अंत में, दो या तीन बच्चों से एक ऐसा उद्धरण या प्रार्थना सुनाने को कहा जा सकता है जो उन्हें आती हो। फिर आप स्वयं समापन प्रार्थना कर सकते हैं।

पाठ 2

क. प्रार्थनाओं का गान और कंठस्थ करना

यह सुझाव दिया जाता है कि आप यह तथा अगली दो कक्षाएं पाठ 1 के आरम्भ में आपके द्वारा गायन की गई प्रार्थनाओं से करें– तब आप पहले ही चुने गए कुछ बच्चों से उनके द्वारा कंठस्थ की गई प्रार्थनाओं का गान करने को कहें। इसके बाद अपने विद्यार्थियों की सहायता पिछले पाठ में परिचय कराई गई प्रार्थना कंठस्थ करने में करें।

ख. गीत

इसके बाद की गतिविधि में बच्चे दो गीत गा सकते हैं – एक तो वह जो पिछली कक्षा में सिखाया गया था और नीचे दिया गया एक नया वाला जो इस पाठ की विषय–वस्तु न्याय पर है।

न्याय है वह रास्ता

न्याय है वह रास्ता जिससे दिन सुनहरा बनता है
न्याय है वह रास्ता जिससे दिन सुनहरा बनता है
इन्सानों की जरूरत मे, न्याय है वह प्रकाश

जो अच्छे कर्मो द्वारा प्रखरता से चमकता है
न्याय है वह रास्ता जिससे दिन सुनहरा बनता है

कितने बार सुना है हमने
अब्दुल बहा ने अपना सब कुछ दे दिया
थोड़े में ही संतोष किया
और सादा जीवन था जिया, और आनन्द दूसरों को दिया
न्याय है वह रास्ता जिससे दिन सुनहरा बनता है

नेक बनने से भी न्याय ऊँचा है
न्याय के लिए हमे देना होगा
जो है पास हमारे, उसे बाँटना होगा
जो प्यार है हमें, उसे बाँटना होगा
जीवन की खुशियों को बाँटना होगा
जीवन की खुशियों को बाँटना होगा
न्याय है वो रास्ता जिससे दिन सुनहरा बनता है।

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

दो गीतों के बाद आप बच्चों को बहाउल्लाह के लेखों से एक उद्धरण कंठस्थ करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। यहाँ कुछ सुझाव पाठ की विषय–वस्तु को बताने तथा उद्धरण हेतु कुछ विचार दिए गए हैं।

> ईश्वर को न्याय बहुत प्रिय है। जहां न्याय होता है, प्रत्येक व्यक्ति जीवन की अच्छी चीजों का आनंद उठाता है, प्रत्येक बच्चा विद्यालय जा सकता है, प्रत्येक परिवार के पास आरामदायक घर होता है, जिनके पास अधिक होता है वे अधिक प्रसन्नता से दूसरों की भलाई के लिए ईश्वर से प्राप्त अनुकम्पाओं को बांटते हैं। ईश्वर हमसे प्रसन्न होता है जब हम दूसरों के साथ निष्पक्षता और न्याय का व्यवहार करते हैं। यदि हम किसी के साथ अनुचित व्यवहार होते देखते हैं, हमें उनके साथ खड़ा होना चाहिए तथा उनकी सहायता करनी चाहिए। जब कोई चीज बांटी जानी है तो हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि कोई वंचित न रह जाए तथा प्रत्येक को उचित भाग प्राप्त हो। न्यायसंगत बनने में सहायता प्राप्त करने के लिये, आईये हम बहाउल्लाह के इस उद्धरण को कण्ठस्थ करें :

"न्यायपथ का अनुसरण करो, क्योंकि यही सीधा मार्ग है।"[100]

यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण होगा कि इस उद्धरण को कंठस्थ करने से पहले बच्चों को इसकी आधारभूत समझ हो। कुछ ऐसे शब्दों के अर्थ समझाने में आपकी सहायता करने के लिये, जो शायद बच्चों के लिये नये हों, नीचे कुछ वाक्य दिये गये हैं।

अनुसरण करना

1. जंगल में पेड़ों से कई पत्तियाँ गिरी हैं और उन्होंने रास्ते को ढक दिया है। फुमिको जंगल के मार्ग से जाती है। वह जंगल के मार्ग का अनुसरण करती है।

2. पेड्रो को सब के साथ मिलकर उल्लास से खेलने में अपने मित्रों की सहायता करना अच्छा लगता है। पेड्रो और उसके मित्रों के बीच बहुत एकता है। पेड्रो एकता के मार्ग का अनुसरण करता है।

मार्ग

1. लुई के पास एक गधा है। उसे चराने के लिये वह उसे एक चारागाह में ले गया और वहाँ उसे अकेला छोड़ दिया। गधे ने अपने आप घर का मार्ग ढूँढ लिया।

2. स्कूल जाने के दो रास्ते हैं। मिली को हमेशा उस मार्ग से जाना अच्छा लगता है जो उसकी नानी के घर से गुज़रता है।

न्याय

1. कार्लोस को कक्षा के दौरान क्रेयोन बांटने के लिये दिये गये। क्रेयोन दस थे और बच्चे पाँच। कार्लोस ने हर बच्चे को दो क्रेयोन दिये। क्रेयोन बांटने में कार्लोस ने न्याय किया।

2. एना के घर के आंगन के कुँए में बहुत सारा पानी है, लेकिन कभी कभी उसके पड़ोसी का कुँआ सूख जाता है। एना अपने पड़ोसी को कभी कष्ट नहीं होने देती और उसे हमेशा उल्लास से पानी लेने देती है। एना न्याय प्रिय है।

घ. कहानी

जब बच्चे कंठस्थ कर उद्धरण को कहना सीख जाएँ, आप उन्हें अब्दुल बहा के बारे में निम्नलिखित कहानी सुना सकते हैं जो यह दर्शाती है कि वे कितने न्यायनिष्ठ थे।

> *एक बार अब्दुल बहा अक्का से हाईफा जाना चाहते थे। वे एक सामान्य गाड़ी की एक सस्ती सीट का टिकट खरीदने गये। ड्राईवर आश्चर्य में पड़ गया। उसने अपने आप से पूछा होगा कि अब्दुल बहा इतने मितव्ययी क्यों थे कि इतनी सामान्य गाड़ी में यात्रा कर रहे थे। उसने अब्दुल बहा से कहा "महामहिम अवश्य ही एक निजी गाड़ी में यात्रा करना ज़्यादा पसंद करेंगे।" "नहीं," अब्दुल बहा ने उत्तर दिया, और उन्होंने उस भीड़ वाली गाड़ी में हाईफा तक की यात्रा की। हाईफा में जैसे ही वे गाड़ी से उतरे, तो एक विपदाग्रस्त मछुआरन उनके पास आयी और उनसे सहायता माँगने लगी। उस पूरे दिन वह एक मछली भी नहीं पकड़ सकी थी और अब उसे अपने भूखे परिवार के पास खाली हाथ लौटना पड़ रहा था। अब्दुल बहा ने उसे एक अच्छी खासी रकम दी और ड्राईवर की ओर मुड़कर कहा, "जब इतने लोग भूख से मर रहे हों, तो मैं आरामदेह गाड़ी में कैसे यात्रा कर सकता हूँ ?"*

ङ. खेल : "तेज प्यास"

कहानी के बाद आने वाली गतिविधि एक खेल है जिसका नाम है "तेज़ प्यास"। बच्चों की बाहों पर इस तरह छड़ियाँ बांधें कि वे अपनी कुहनियाँ मोड़ न सकें, और फिर उनसे यह अभिनय करने को कहें कि वे एक रेगिस्तान से गुज़र रहे हैं और बहुत प्यासे हैं। जब वे पानी से भरे गिलासों तक पहुँचें, तो उन्हें उस पानी को पीने का कोई तरीका ढूँढना है। वे पायेंगे कि ऐसा करने का एकमात्र तरीका है एक दूसरे की सहायता करना, और इस बात का ध्यान रखना कि वे एक दूसरे को गीला न कर दें।

च. रंग भरना : चित्र 2

अगली गतिविधि के रूप में प्रत्येक बच्चे को चित्र 2 रंग भरने को दें– आप बच्चों को कंठस्थ हृदयाएं कि उनके द्वारा कंठस्थ उद्धरण पृष्ठ के नीचे दिया गया है। आप कुछ शब्द कहने के लिए भी तैयार रहें कि पाठ की विषय–वस्तु से चित्र कैसे संबंधित है।

छ. समापन प्रार्थनाएं

बच्चे जब रंग भर चुकें, आप उनमें से कुछ को पिछले पाठ में कंठस्थ किए उद्धरणों को कहने के लिए आमंत्रित कर सकते हैं। इसके पश्चात आप एक समापन प्रार्थना कर सकते हैं।

पाठ 3

क. प्रार्थनाओं का गान और कंठस्थ करना

कक्षा के आरम्भ के लिए, कंठस्थ की गई एक प्रार्थना का गान करें और पहले से चुने गए कुछ बच्चों में से प्रत्येक से करने को कहें। तब आप कुछ समय अपने विद्यार्थियों के साथ पाठ 1 में उनके द्वारा सीखना आरम्भ की गई प्रार्थना की पुनः विचार करने में बिता सकते हैं।

ख. गीत

बच्चों द्वारा पिछले पाठों में सीखे गए दो गानों को गाने के साथ अगली गतिविधि का आरम्भ करें। तब उन्हें नीचे दिया गया गाना सिखाएं जो कि पाठ की विषय–वस्तु, प्रेम से संबंधित है।

प्यार, प्यार, प्यार

प्यार, प्यार, प्यार, प्यार
करो मानव से प्यार

प्यार, प्यार, है ये प्यार
जिससे शुरू हुआ संसार
जिससे शुरू हुआ संसार

प्यार, प्यार, प्यार, प्यार
करो मानव से प्यार
प्यार, प्यार, है ये प्यार
जिससे शुरू हुआ संसार
जिससे शुरू हुआ संसार

प्रभु को था सृष्टि से प्यार
तो उसने रचा है तुम्हे
तो उसने रचा है तुम्हे

इसलिये कि तुम कर सको
ईश्वर और मानव से प्यार

प्यार, प्यार, प्यार, प्यार

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

कंठस्थ करने के लिए उद्धरण उपलब्ध कराते समय, आप अपने विद्यार्थियों के साथ पाठ की विषय–वस्तु से संबंधित विचारों को बाँट सकते हैं।

ईश्वर का प्रेम सूरज की किरणों की तरह मानवजाति पर चमकता है। सूरज की किरणें रेगिस्तानों और उपवनों पर समान रूप से पड़ती हैं। इसकी ऊष्मा से, उर्वरा भूमि में बोए गए बीज विकसित हो मूल्यवान फल उपजाते हैं। यदि हम अपने हृदयों की पवित्र भूमि में ईश्वर के प्रेम के बीज बोएँ जो ईश्वर की प्रेममयी देखभाल की ऊष्मा में विकसित और पल्लवित होंगे। तब हमारा प्रेम आगे फैलेगा, और हम अपना प्रेम सब को दिखाएंगे, उनके प्रति भी जो कभी कभी हमारे प्रति निष्ठुरता दर्शाते हैं। सम्पूर्ण मानवता को प्रेम करने में हमारी सहायता के लिए, आइए बहाउल्लाह के इस उद्धरण को कंठस्थ करें।

"हे मित्र ! अपनी हृदय–वाटिका में प्रेम के गुलाब के अतिरिक्त कुछ भी न उपजा ...।"[101]

इस उद्धरण में जिसे समझाने की आवश्यकता हो सकती है, वह है "कुछ भी न" जिसका अर्थ होता है "और कुछ नहीं"

1. डिनिओ सूर्य और फूलों के गाने गाना पसंद करता है, और वह किसी अन्य से संबंधित गाने नहीं गाता। डिनिओ सूर्य के प्रकाश और फूलों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं गाता।

2. ता जेन नदी के पास जाना चाहता था, लेकिन उसने घर का कार्य नहीं किया था । उसके पिता ने कहा कि वह अपना कार्य किए बगैर नहीं जा सकता। उसकी दादी ने कहा, बेटा, यदि तुम अपने पिता की बात नहीं मानोगे तो तुम्हारी बनाई योजनाएं कुछ भी न कर पायेंगी।

घ. कहानी

कंठस्थ करने की अवधि के बाद आप बच्चों को नीचे दी गई कहानी सुना सकते हैं :

जिस समय अब्दुल बहा अक्का में एक कैदी थे, उस समय उस नगर में एक आदमी रहता था जो उनके साथ बहुत बुरा बर्ताव करता था। वह सोचता था कि अब्दुल बहा एक अच्छे व्यक्ति नहीं थे और ईश्वर को कोई परवाह नहीं थी कि बहाइयों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है। सच तो यह है, कि उसका मानना था कि बहाइयों से नफरत करके वह ईश्वर के प्रति प्रेम दर्शा रहा था। वह पूरे हृदय से अब्दुल बहा से नफरत करता था। यह नफरत बढ़ती गयी और उसके मन में कटुता उत्पन्न करने लगी, और कभी कभी यह उसके अंदर से ऐसे छलक जाती थी जैसे टूटे हुए घड़े से पानी।

मस्जिद में जब लोग प्रार्थना करने आते, तो यह आदमी चिल्ला चिल्ला कर उन लोगों से अब्दुल बहा के बारे में बहुत बुरी बातें कहता। रास्ते में अब्दुल बहा को देखते ही वह अपना चेहरा अपने कपड़ो से ढक लेता ताकि उसकी नज़र अब्दुल बहा पर न पड़े। वह आदमी बहुत

गरीब था और उसके पास न तो पर्याप्त खाने को था, न ही पहनने को गरम कपड़े थे। आपको क्या लगता है, अब्दुल बहा ने उसके साथ कैसा व्यवहार किया होगा ? उन्होंने उसके प्रति दयालुता दिखाई, उसके लिये खाना और कपड़े भेजे, और यह सुनिश्चित किया कि उसकी देखभाल होती रहे। उदाहरण के लिये, एक बार जब यह आदमी बहुत बीमार पड़ गया, तो अब्दुल बहा ने उसके पास एक डॉक्टर भेजा, उसके इलाज और भोजन का खर्च उठाया, और उसे कुछ पैसे भी दिये। उसने अब्दुल बहा के इन उपहारों को तो स्वीकार कर लिया, लेकिन उन्हें धन्यवाद नहीं दिया। सच तो यह है, कि उसने अपनी नब्ज़ दिखाने के लिये अपना एक हाथ तो डॉक्टर की ओर कर दिया, और दूसरे हाथ से अपना चेहरा छिपा लिया ताकि उसे अब्दुल बहा का चेहरा न देखना पड़े। कई वर्षों तक ऐसा ही चलता रहा। और फिर, एक दिन, आखिरकार इस आदमी के हृदय में परिवर्तन आ ही गया। वह अब्दुल बहा के घर आया और उनके चरणों में गिर पड़ा और बहुत भारी मन और दो धाराओं की तरह बहते आँसू लिये बोला, "मुझे क्षमा कर दीजिये श्रीमान ! चौबीस वर्षों तक मैंने आपके साथ बुराई की। और आपने चौबीस वर्षों तक मेरे प्रति केवल अच्छाई दिखाई। अब मैं जान गया हूँ कि मैं गलत था। कृपया मुझे क्षमा कर दीजिये !" इस तरह, अब्दुल बहा का महान प्रेम नफरत पर विजयी हुआ।

ङ. खेल : "पुलिया"

अगली गतिविधि के लिए आप बेंच, बोर्ड, ईंटें अथवा टाइलों का उपयोग जमीन पर एक लाइन बनाने के लिए कर सकते हैं। यह एक पुलिया है। बच्चों को दो समूहों में बांटें और उन्हें बताएं कि दोनों समूहों को विपरीत दिशा से आते हुए एक ही समय में पुलिया को पार करना है और कोई बच्चा पुलिया से गिरे भी नहीं। बच्चे पाएंगे कि सफल होने के लिए उन्हें एक दूसरे की सहायता जगह बदलने के लिए एक एक कर करनी होगी।

उनकी सहायता करने के लिए, आप बच्चों को उनके आरम्भ स्थान तक ले जा सकते हैं और कदम उठा सकते हैं। सभी बच्चों को एक साथ पुलिया पर ले जाने के स्थान पर, आप उनमें से कुछ के साथ, एक बार में दो के साथ आप इसकी प्रैक्टिस कर सकते हैं। अनेक बार कर के दिखने के पश्चात, पुलिया पर बच्चों की संख्या तब तक बढ़ाई जा सकती है जब तक सभी लोग इसमें शामिल ना हो जाएं।

च. रंग भरना : चित्र 3

खेल के पश्चात अंतिम गतिविधि के रूप में आप प्रत्येक बच्चे को चित्र 3 दे सकते हैं। कुछ शब्द कहना जरूर कंठस्थ रखिएगा कि चित्र किस प्रकार पाठ की विषय–वस्तु से संबंधित है।

ज. समापन प्रार्थनाएं

कक्षा को समाप्त करने के लिए, विद्यार्थियों को शांत बैठने को प्रोत्साहित करें, जबकि उनमें से दो या तीन कंठस्थ प्रार्थना या उद्धरण का गान करें। तब आप या कोई एक बच्चा एक समापन प्रार्थना कर सकता है।

पाठ 4

क. प्रार्थनाओं का गान और कंठस्थ करना

प्रारम्भिक प्रार्थनाओं के बाद, अपने विद्यार्थियों के साथ पिछले कुछ पाठों में उनके द्वारा सीखी जा रही प्रार्थना पर पुनः विचार करें।

ख. गीत

अगली गतिविधि के लिए, पिछले पाठों में उनके द्वारा सीखे गानों को बच्चों से गँवाएं। फिर सत्यवादिता की विषय–वस्तु पर आधारित यह गाना उन्हें सिखाएं।

सच बोलो

जब तुम सच बोलोगे
सबका विश्वास जीतागे
जब तुम सच बोलोगे
सबका विश्वास जीतोगे
सदा सत्य ही बोलो
सदा सत्य ही बोलो

जब तुम सच बोलोगे, कभी न लज्जित होगे
जब तुम सच बोलोगे, कभी न लज्जित होगे
और तुमसे प्रभुजी प्रसन्न होंगे
और तुमसे प्रभुजी प्रसन्न होंगे

जब तुम सच बोलोगे
सबका विश्वास जीतोगे
जब तुम सच बोलोगे
सबका विश्वास जीतोगे

सदा सत्य ही बोलो
सदा सत्य ही बोलो
यदि झूठ बोलोगे तुम पर इल्जाम लगेगा
और दोस्त तुमसे दूर होंगे
और दोस्त तुमसे दूर होंगे

जब तुम सच बोलोगे
सबका विश्वास जीतोगे
जब तुम सच बोलोगे
सबका विश्वास जीतोगे

सदा सत्य ही बोलो
सदा सत्य ही बोलो

सदा सत्य ही बोलो
सदा सत्य ही बोलो

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

यह सुझाव दिया जाता है कि आप पाठ की विषय–वस्तु तथा कंठस्थ किया जाने वाला उद्धरण इस प्रकार प्रस्तुत करें :

> सत्यवादिता उन अति महत्वपूर्ण गुणों में से एक है जो प्रत्येक व्यक्ति के पास होने चाहिए। अगर किसी को पता न भी चले, तब भी हमें कभी भी छोटे से छोटा झूठ भी नहीं बोलना चाहिए। कभी कभी लोग झूठ बोलते हैं क्योंकि वे सच बोलने से डरते हैं। तथापि हम जानते हैं कि ईश्वर हमारे सभी कार्यों से अवगत है और हम उनसे कुछ भी नहीं छिपा सकते। हमें सत्य से प्रेम करना चाहिए। यदि हम सत्यवादी नहीं हैं तो हमारे लिए अन्य गुणों जैसे न्याय, प्रेम और दयालुता, तथा ईश्वर के समीप आना कठिन होगा। आइए, अब्दुल बहा के निम्न उद्धरण को कंठस्थ करें।
>
> **"सत्यवादिता सभी मानवीय गुणों का आधार है।"**[102]

नीचे कुछ ऐसे वाक्य दिये गये हैं जो उपरोक्त उद्धरण के ऐसे शब्दों के अर्थ समझाने में आपकी सहायता करेंगे जो शायद बच्चों को कठिन लगें।

सत्यवादिता

1. संजय के हाथ से एक गिलास गिर कर टूट गया। जब उसकी माँ ने पूछा कि क्या हुआ, तो उसने उन्हें सब कुछ सच–सच बता दिया और झूठ नहीं बोला। संजय ने सत्यवादिता का गुण दर्शाया।

2. गीता ने एक शाम इतना समय खेलने में लगा दिया कि उसने अपना होमवर्क पूरा नहीं किया। अगले दिन, जब होमवर्क देने का समय आया तो उसने अपने शिक्षक को सही सही बताने का निर्णय लिया, यद्यपि उसे पता था कि वह नाराज होगा। गीता ने सत्यवादिता का सहारा लिया।

आधार

1. आलोक के पिता एक घर बना रहे थे। दीवारें खड़ी करने से पहले, उन्होंने उन जगहों के नीचे पत्थर और सीमेंट भर दिये जहाँ दीवारें खड़ी की जानी थी। एक घर का आधार पत्थर और सीमेंट से बनता है। यह घर को एक साथ बांधे रखने में सहायता करता है।

2. पढ़ना–लिखना सीखने से पहले हमें अक्षर और उनके उच्चारण मालूम होने चाहियें। अक्षरों के उच्चारण का ज्ञान, पढ़ना–लिखना सीखने का आधार है।

गुण

1. औरोरा मित्रवत, शिष्ट एवं दयालु है। मित्रवतता, विनम्रता एवं दयालुता उसके अनेक गुणों में से हैं।

2. श्रीमती पटेल बच्चों को न्याय, उदारता, विनम्रता, और ईमानदारी के बारे मे सिखाती हैं। ये कुछ ऐसे महत्वपूर्ण गुण हैं जो सभी में होने चाहिये।

घ. कहानी

अगली गतिविधि के रूप में, आप बच्चों को निम्नलिखित कहानी सुना सकते हैं जो सत्यवादिता के गुण के बारे में सोचने में उनकी सहायता करेगी।

कुछ समय पहले, एक दूर–दराज़ देश में, एक नन्हा चरवाहा रहता था। जब उसके पिता खेतों में काम करते और माँ घर का कामकाज देखती, तब उसका काम परिवार की भेड़ों की देखभाल करना था। एक दिन वह लड़का बहुत बोर महसूस कर रहा था और उसे अपने पड़ोसियों के साथ शरारत करने की सूझी। अचानक वह चिल्लाने लगा "भेड़िया ! भेड़िया ! भेड़िया भेड़ों को खा रहा है !" उसके सभी मित्र, भेड़िये को भगाने के लिये दौड़े दौड़े आये, लेकिन जब वे वहाँ पहुँचे तो देखा कि नन्हा चरवाहा उन पर हँस रहा था क्योंकि वे इतना डर जो गये थे, जबकि हकीकत में वहाँ आसपास कोई भेड़िया नहीं दिखायी दे रहा था। उसके मित्र यह कहते हुए अपने–अपने काम पर लौट गये कि उस लड़के ने बहुत बुरा बर्ताव किया था।

अगले दिन, उस लड़के ने अपनी इस मूर्खता को एक बार फिर दोहराया। "भेड़िया! भेड़िया! मेरी सहायता कीजिये !" कुछ पड़ोसी एक बार फिर दौड़े दौड़े आये, लेकिन उन्होंने एक बार फिर पाया कि नन्हा चरवाहा उन पर हँस रहा था क्योंकि इस बार भी यह बात झूठी थी कि भेड़िया आया था। तीसरे दिन, जब उन्होंने सुना कि वह चरवाहा फिर से चिल्ला रहा था "भेड़िया! भेड़िया! भेड़िया मेरी भेड़ो को खा रहा है! कृपया मेरी सहायता कीजिये!" तो किसी ने भी उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि उन्हे लगा कि यह भी उसका एक और झूठ है। लेकिन उस दिन सचमुच भेड़िया आ गया और उसने भेड़ों को खा लिया! नन्हा चरवाहा बहुत दुखी हुआ, लेकिन उसे एक अच्छा सबक मिल चुका था। यदि हम झूठ बोलेंगे, तो वह दिन ज़रूर आयेगा जब यदि हम सच भी बोल रहे होंगे, फिर भी हमारी बात पर न तो हमारे माता–पिता या भाई–बहन विश्वास करेंगे न ही हमारे मित्र।

ङ. खेल : "टेलीफोन छुओ"

उपरोक्त कहानी सुनाने के बाद, दिन की अगली गतिविधि के रूप में आप बच्चों को एक खेल खिला सकते हैं। बच्चों को एक लाईन में खड़े रहने को कहें। उन सभी को एक ही दिशा की ओर मुँह करना है, और सबसे पहले खड़े बच्चे को दीवार से टंगे एक कागज के टुकड़े की ओर, या एक पेड़ की ओर, या सम्भव हो, तो एक ब्लैकबोर्ड की ओर देखना है। बच्चे अधिक होने पर एक से अधिक लाईनें बनायी जा सकती हैं।

अब लाईन के अंत में खड़े हुए बच्चे की पीठ पर अपनी उँगलियों से कुछ आंकें। यह बच्चा अपने आगे खड़े हुए बच्चे की पीठ पर भी वही आंकेगा, और वह बच्चा अपने आगे खड़े हुए बच्चे की पीठ पर वही आंकेगा। इस तरह यह क्रम तब तक जारी रहेगा जब तक कि यह उस बच्चे तक नही पहुँच जाता जो लाईन मे सबसे आगे खड़ा है, और वह इसे उस कागज़ के टुकड़े या ब्लैकबोर्ड पर बनायेगा जो उसके सामने होगा। इसके बाद इस बच्चे द्वारा ब्लैकबोर्ड पर बनाई गयी आकृति के पास आपको वह आकृति बनानी है जो खेल की शुरूआत में आपने लाईन के अन्त में खड़े हुए बच्चे की पीठ पर आंकी थी। आंकी गयी आकृतियां आसान होनी चाहिये ताकि सभी बच्चे इन्हें आंक सकें।

च. रंग भरना : चित्र 4

अब हमेशा की भांति चित्र 4 को बच्चों को रंग भरने के लिए अगली गतिविधि के रूप में बांटें।

छ. समापन प्रार्थनाएं

सदैव की भांति कक्षा का समापन बच्चों को उद्धरण और प्रार्थनाओं के गायन के दौरान शांत रहने के लिए कह कर करें.

पाठ 5

क. प्रार्थनाओं का गान और कंठस्थ करना

इस पाठ और अगले तीन पाठों के लिए, आपको कक्षा का आरम्भ कंठस्थ की गई प्रार्थना से करें और इस उद्देश्य के लिए भाग 6 की प्रार्थना को भी सुझाया जाता है। जब कुछ बच्चे प्रारम्भिक प्रार्थनाओं के गायन में आपका साथ दे चुके हों, आप नीचे दी गई प्रार्थना कंठस्थ कराने के लिए परिचित करा सकते हैं। यह आशा की जाती है कि वे सभी इस कक्षा में इसका कुछ भाग अवश्य सीख लेंगे और पाठ 8 तक इसे कंठस्थ कर गाना सीख लेंगे।

> **"हे ईश्वर, मेरा मार्गदर्शन कर, मेरी रक्षा कर, मुझे एक दैदीप्यमान दीपक और जगमगाता सितारा बना दे। तू शक्तिशाली एवं बलशाली है।"[103]**

ख. गीत

इस पाठ के लिए, नीचे दिए गए गाने को सिखाने के साथ, वे जो पहले से जानते हैं, उन्हें भी आप साथ में गा सकते हैं।

उदारता का फव्वारा

बन जाओ तुम एक फव्वारा, बन जाओ तुम झरना
बन जाओ तुम एक फव्वारा, बन जाओ तुम झरना
बन जाओ तुम बहती धारा
बन जाओ तुम एक फव्वारा, बन जाओ तुम झरना
बन जाओ तुम बहती धारा

जो तुम ऐसा कर पाओगे
जो तुम ऐसा कर पाओगे
तो सचमुच खुशियों को अपने कदमों मे पाओगे
बन जाओ तुम एक फव्वारा, बन जाओ तुम झरना
बन जाओ तुम एक फव्वारा, बन जाओ तुम झरना
बन जाओ तुम बहती धारा

रोज अपने हृदय मे झाँकना है, ऐसा क्या है जिसे बाँटना है
रोज अपने हृदय मे झाँकना है, ऐसा क्या है जिसे बाँटना है
आनन्द ही उद्देश्य होना चाहिए
आनन्द ही उद्देश्य होना चाहिए
अपने हृदय को देकर देखो, अपनी आत्मा को देकर देखो
अपने हृदय को देकर देखो, अपनी आत्मा को देकर देखो

जो तुम ऐसा कर पाओगे
जो तुम ऐसा कर पाओगे
तो सचमुच प्रभु को सदा अपने संग पाओगे

बन जाओ तुम एक फव्वारा, बन जाओ तुम झरना
बन जाओ तुम एक फव्वारा, बन जाओ तुम झरना
बन जाओ तुम बहती धारा

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

नीचे दिए गए विचार पाठ की विषय–वस्तु तथा कंठस्थ किए जाने वाले उद्धरण को प्रस्तुत करने में आपकी सहायता करेंगे :

> ईश्वर अपनी सृष्टि के प्रति अत्यंत उदार है। वह पौधों को वर्षा भेजता है और पशुओं तथा मनुष्यों को भोजन एवं पोषण उपलब्ध कराता है। वह हम सभी का ध्यान रखता है। उसने हमें अनेक उपहार दिए हैंः आँखें, जिनसे हम पर्वत, नदियां, सितारे तथा हमारे चारों ओर का सौन्दर्य देखते हैं; कान, जिनसे हम मधुर गीत, पक्षियों की चहचहाहट, माता–पिता की सलाह तथा ईश्वर के शब्द सुनते हैं। उसने हमें बुद्धिमत्ता दी है जिससे हम ब्रह्मांड के रहस्यों के बारे में सीखते हैं और इससे ऊपर, उसने हमें आध्यात्मिक शक्तियां जिनसे हम उसे पहचानते और प्रेम कर सकते हैं। जिस प्रकार ईश्वर हमारे प्रति उदार है, हमें भी दूसरों के प्रति उदार होना चाहिए। जो कुछ हमारे पास है – भोजन, चीजें, हमारा समय, हमारा ज्ञान– दूसरों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए दे देना चाहिए। हमें अपना प्रेम, अपना आनंद, घर और स्कूल में सीखी गई बातें सभी साझा करनी चाहिए। उदार होने के हमारे प्रयासों में हमारी सहायता करने के लिए आइए बहाउल्लाह के उद्धरण को कंठस्थ करें जो हमें ईश्वर की उदारता की कंठस्थ हृदयाता है।

> **"देना तथा उदार रहना मेरे गुण हैं; भला होगा उसका जो मेरे गुणों से स्वयं को आभूषित करता है।"[104]**

उदार

1. राम और राजेश ने कुछ पैसों की बचत की थी। उन्होंने अपने छोटे भाई–बहनों के लिये कुछ किताबें खरीदने का निर्णय लिया। राम और राजेश उदार हैं।

2. श्रीमती मर्फी ने पूरी सुबह केक बनाने में बिता दी। इन्हें बेचने के लिये शहर ले जाने से पहले उन्होंने दो बड़े केक पड़ोसियों को दिये। श्रीमती मर्फी उदार हैं।

गुण

1. पत्थर बहुत मजबूत होता है। मजबूती पत्थर का एक गुण है।

2. शिक्षक ने शरलीन से कहा, "तुम्हारा एक गुण यह है कि तुम कड़ी मेहनत करती हो।"

अलंकृत

1. आज रात सामुदायिक केन्द्र पर एक प्रार्थना सभा है। सभा–कक्ष को सजाने के लिये बच्चों ने फूल चुने। सभा कक्ष फूलों से अलंकृत है।

2. ली फेन्ग की मुस्कुराहट बहुत सुन्दर है। उसका चेहरा अधिकतर एक मुस्कुराहट से अलंकृत रहता है।

घ. कहानी

इस पाठ में आप बच्चों को नीचे दी कहानी सुनाएंगे, जो उन्हें उदारता की अवधारणा की पुनः विचार करने में सहायता करेगी।

> *एक दिन, अब्दुल बहा को उन गड़रियों ने अपने साथ गाँव में एक दिन बिताने के लिए आमंत्रित किया जो उनके पिता बहाउल्लाह की भेड़ों की देखभाल करते थे। उन दिनों अब्दुल बहा एक नन्हे बालक थे, और बहाउल्लाह एवं उनके परिवारजनों को अपनी प्रिय जन्मभूमि को जबरदस्ती छोड़ने से बहुत पहले की बात है। उन दिनों बहाउल्लाह के पास पहाड़ों पर बहुत सारी जमीन हुआ करती थी और भेड़ों के बहुत बड़े–बड़े झुण्ड थे। अपनी माँ की सहमति से, अब्दुल बहा ने गड़ेरियों के साथ एक दिन खूबसूरत दिन बिताया। सभी ने गाया, नृत्य किया और शानदार सहभोज किया।   जब दिन समाप्त हुआ और अब्दुल बहा जाने के लिये तैयार हुए तो सभी गड़ेरिये उनके चारों ओर एकत्र हुए और विदाई भाषण दिए। अब्दुल बहा के साथ आने वाले व्यक्ति ने उनसे कहा, "प्रत्येक भू और भेड़ों के मालिक के लिए यह रिवाज है कि वह जाते समय कुछ उपहार दे।श कुछ देर के लिये अब्दुल बहा शांत हो गये, क्योंकि उनके पास देने के लिये कुछ भी नहीं था। लेकिन, उस आदमी ने इस बात पर जोर दिया कि गड़रिये कुछ पाने की आशा कर रहे थे। अब्दुल बहा को विचार आया कि वे उन गड़रियों को उन्ही भेड़ों में से कुछ भेड़ें दे दें जिनकी वे देखभाल कर रहे थे। गड़रियों के प्रति अब्दुल बहा के उदार विचारों के बारे में बहाउल्लाह ने सुना, तो वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने हँसते हुए कहा कि सभी को अब्दुल बहा की अच्छी देखभाल करनी चाहिये क्योंकि किसी दिन वे अपने आपको ही दान कर देंगे। और सचमुच, अब्दुल बहा ने अपने शेष जीवन में यही किया। हमें एक करने और सच्ची खुशी प्रदान करने के लिये उन्होंने मानवजाति को अपना सब कुछ, अपने जीवन का हर पल दे दिया।*

ङ. खेल : "जुड़वाँ"

आज के खेल के लिये, दो, तीन या चार बच्चों से कहें कि वे एक दूसरे की ओर पीठ करके खड़े हो जायें और फिर पालथी मारकर बैठ जायें। फिर उनसे कहें कि वे एक दूसरे की कोहनियों को आपस में अटका कर खड़े होने की कोशिश करें।

च. रंग भरना

अंतिम गतिविधि के रूप में आप बच्चों को रंग भरने के लिये चित्र क्रमांक 5 की प्रतियाँ दे सकते हैं।

छ. समापन प्रार्थनाएँ

हमेशा की तरह, कक्षा के अंत में आप और कुछ बच्चे प्रार्थना का पाठ कर सकते हैं।

पाठ 6

क. प्रार्थनाओं का गान और कंठस्थ करना

आप और कुछ विद्यार्थियों द्वारा आरंभिक प्रार्थनाएं कर लेने के बाद, आप बच्चों की सहायता पाठ 5 में बताई गई प्रार्थना सीखते रहने में कर सकते हैं।

ख. गीत

अगली गतिविधि के रूप में, बच्चों को नीचे दिया गीत गाना सिखाएं जो कि पाठ की विषय–वस्तु से संबंधित है। वे कुछ और गीत भी विशेषकर जिनमें उन्हें बहुत मजा आता हो, गा सकते हैं।

भाई को अधिक महत्व दो

समूहगान

भाई को अपने से महत्व देना, आशीर्वाद दिलाता है
दूसरों का कितना ख्याल रखते हैं ये तरीका सिखलाता है।
बहनों को अपने से महत्व देना आशीर्वाद दिलाता है
जितना बाँटते जाते हैं
उतना ही धनवान बनाता है
भाई को अपने से महत्व देना
आशीर्वाद दिलाता है
आशीर्वाद दिलाता है।

मैं प्यासा हूँ, मैं प्यासा हूँ
पर मेरे भाई को पहले चाहिये
इसीलिये पानी उसे देना है
पहले उसकी प्यास बुझाईये

समूहगान

मैं भूखा हूँ, मैं भूखा हूँ
और भूखी मेरी बहन भी है
अपना भोजन उसे बाँटना, यही कार्य सर्वोत्तम भी है।
बहनों को अपने से महत्व देना
आशीर्वाद दिलाता है

समूहगान

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

इस पाठ में, बच्चे बहाउल्लाह के लेखों से उद्धरण कहना सीखेंगे जो हमें निस्वार्थता की ओर बुलाता है। आप इस विषय–वस्तु को निम्न प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं ।

> ईश्वर हममें से सभी को प्रेम करता है, और उसने मानव हृदय को उसे जानने और प्रेम करने के लिए सृजित किया है। जब हमारे हृदय पवित्र होते हैं, हम ईश्वर के चिन्ह उसकी सृष्टि में देख पाने योग्य हो जाते हैं। हम उसकी उदारता, उसकी दयालुता, उसकी कृपा देखते हैं। ईश्वर के अपने प्रेम के कारण, हम अपने चारों ओर सभी लोगों–अपने माता पिता, अपने भाइयों बहनों, अपने मित्रों और अपने पड़ोसियों को आनंदित और प्रसन्न करना चाहते हैं। हमारा प्रेम इतना महान है कि जो हमें सबसे अधिक प्रसन्नता देता है, वह है दूसरों को आनंदित करना तथा उनकी सहूलियत को स्वयं पे वरीयता देना। हम अपने साथी जनों के बारे में अपने से पहले सोचते हैं। आइए बहाउल्लाह के नीचे दिए उद्धरण को कंठस्थ करें।
>
> **“धन्य है वह जो अपने भाई को अपने से अधिक महत्व देता है।”**[105]

धन्य

1. एमेलिया की माँ ने उसे स्टोर से पाँच चीजें खरीदने को कहा। उसने सूची नहीं बनाई लेकिन उसे सब कुछ खरीदना याद रहा। एमेलिया अच्छी स्मरण शक्ति से धन्य है।

2. विक्ट्र का परिवार हर रोज़ अपने घर में प्रार्थनाएँ करता है। विक्टर के परिवार का घर धन्य है।

महत्व

1. अनुष्का की दादी को नींबू चाय और मिंट चाय दोनों पसंद है। लेकिन पूछे जाने पर वह मिंट चाय चुनती है। वह मिंट को अधिक महत्व देती है।

2. विआसना खेलने भी जा सकती है और अपने पिता की सहायता बगीचे में भी कर सकती है। वह अपने पिता की बगीचे में सहायता करने का निर्णय लेती है। विआसना अपने पिता की सहायता करने को महत्व देती है।

घ. कहानी

निम्नलिखित कहानी दर्शाती है कि किस प्रकार, अपने वचन और कर्म, दोनों से, अब्दुल बहा हमें निःस्वार्थता का मार्ग दिखलाते हैं।

अब्दुल बहा अपने लिये सस्ते कपड़े ज़्यादा पसंद करते थे। उनके लिए अत्यंत साफ रहना अधिक महत्वपूर्ण था। जब उनके पास ज़्यादा कपड़े होते तो वे हमेशा उन्हें दूसरों को दे दिया करते थे। एक दिन वे अक्का के गवर्नर का सत्कार करने वाले थे। उनकी पत्नी को लगा कि इस अवसर के लिये उनका पुराना कोट उचित नही था। समय रहते वे दर्जी के पास गयीं और अब्दुल बहा के लिये एक नये कोट का आर्डर दे आयीं। जब गवर्नर के भ्रमण का दिन आया, तो अब्दुल बहा के लिये नया कोट रख दिया गया, लेकिन अब्दुल बहा अपना पुराना कोट ढूँढने लगे। कैसे इतना महंगा कोट उनका हो सकता है? उस एक कोट की कीमत में पाँच सादे कोट बन सकते थे। उन्होंने अपनी पत्नी से कहा "और इस तरह, न सिर्फ मेरे पास एक नया कोट होगा, बल्कि चार और कोट होंगे जो मैं दूसरों को दे सकूँगा !"

ङ. खेल : "घोंघा"

अगली गतिविधि के लिए, बच्चों से कहें कि वे घोंघा बनने जा रहे हैं। सफल होने के लिए, उन्हें एक दूसरे का हाथ पकड़ कर एक पंक्ति में खड़ा होना पड़ेगा। पंक्ति के एक सिरे का व्यक्ति केंद्र बनेगा, और उसे बिल्कुल स्थिर खड़ा रहना पड़ेगा। पंक्ति के दूसरे सिरे के बच्चे को अन्य बच्चों को पहले बच्चे के चारों ओर बिना हाथ छोड़े घेरा बनाने में निर्देशित करना होगा। धीरे धीरे सभी बच्चों को कुंडली बनाकर घोंघे की भांति खड़ा होना होगा। ऊपर दिये खेल के विकल्प के रूप में बच्चों से कहें कि एक बार फिर से एक दूसरे का हाथ पकड़ कर लाईन में खड़े रहें। इसके बाद लाईन के एक छोर पर खड़े बच्चे से कहें कि वह एक गोले में घूमना शुरू करे और धीरे धीरे दूसरे बच्चों को भी अपने पीछे आने दें और एक घेरे के बाहर दूसरा घेरा बनाने दें। यह सुनिश्चित करें कि जब वे घेरे बना रहे हों तो कहीं एक दूसरे के पैर पर पैर न रख दें।

ऊपर दिये खेल के विकल्प के रूप में बच्चों से कहें कि एक बार फिर से एक दूसरे का हाथ पकड़ कर पंक्ति में खड़े रहें। इसके बाद पंक्ति के एक छोर पर खड़े बच्चे से कहें कि वह एक गोले में घूमना शुरू करे और धीरे धीरे दूसरे बच्चों को भी अपने पीछे आने दे। यह सुनिश्चित करें कि वे ऐसा करते समय कहीं एक दूसरे के पैर पर पैर न रख दें।

यदि समय उपलब्ध हो, एक बार जब बच्चे घोंघे का आकार बना चुके हों, तो बीच में खड़े बच्चों को झुकने को कहें और जो बच्चा केन्द्र में हो उससे कहें कि वह अपने पास खड़े बच्चे की बांह के नीचे से निकले और उसी तरह दूसरे बच्चों की बांहों के नीचे से तब तक निकलता रहे जब तक घोंघे से बाहर न आ जाये। दूसरे बच्चे भी इसी तरह एक दूसरे का हाथ छोड़े बगैर उसके पीछे पीछे जायेंगे और घोंघे से बाहर निकलेंगे। यह क्रम तब तक जारी रहता है जब तक कि सभी बाहर आकर एक बार फिर पंक्ति में खड़े नहीं हो जाते। निश्चित ही, इस खेल को सफल होने के लिए, आपकी कक्षा में बच्चों की संख्या पर्याप्त होनी चाहिए।

च. रंग भरना : चित्र क्रमांक 6

छ. समापन प्रार्थनाएँ

पाठ 7

क. प्रार्थनाओं का गान और कंठस्थ करना

आपने तथा कुछ बच्चों ने जब प्रारंभिक प्रार्थनाएँ कर ली हों तो आप पाठ 5 में बच्चों द्वारा कंठस्थ करना आरम्भ की गई प्रार्थना की आप समीक्षा कर सकते हैं।

ख. गीत

खुशी हमें देती है पंख

खुशी देती उड़ने को पंख, खुशी देती है पंख
खुशी देती उड़ने को पंख, खुशी देती है पंख
खुशी के पलों मे बढ़ जाती है शक्ति
खुशी में तेज़ हो जाती है बुद्धि
खुशी में समझ बन जाती है उज्जवल
खुशी देती उड़ने को पंख, खुशी देती है पंख

लेकिन जब दुखी होते है हम, दुखी होते हैं हम
तब बन जाते हैं हम कमज़ोर और बल रह जाता बहुत कम
परख बन जाती है हमारी धुँधली, और सोच हो जाती है गुम
फिर भी

खुशी देती उड़ने को पंख, खुशी देती है पंख
खुशी देती उड़ने को पंख, खुशी देती है पंख
खुशी के पलों मे बढ़ जाती है शक्ति

खुशी में तेज़ हो जाती है बुद्धि
खुशी में समझ बन जाती है उज्जवल

खुशी देती उड़ने को पंख, खुशी देती है पंख

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

निम्नांकित वक्तव्य उद्धरण को प्रस्तुत करने में आपकी सहायता करेगा जो इस पाठ में बच्चे कंठस्थ करेंगे जो उल्लासमयता की विषय–वस्तु पर केंद्रित है।

> अब्दुल बहा हमें बताते हैं कि उल्लास हमें पंख देता है, कि जब हम उल्लसित होते हैं; तब हम अधिक सशक्त होते हैं, जब हम प्रसन्न होते हैं, तब हमारी समझ तीव्र हो जाती है। उल्लासमयता मानव–हृदय का एक गुण है। उल्लास से भरे हृदय से, हम चारों ओर ईश्वर की अनुकम्पाओं को देखते हैं – प्रेम करने वाले माता–पिता की अनुकम्पा, मित्रता की अनुकम्पा, और सबसे ऊपर उसको जानने आर उसको प्रेम करने की अनुकम्पा। हमें सभी परिस्थितियों में प्रसन्न और उल्लसित रहना चाहिए तथा दूसरों के लिये उल्लास लाने के लिए अपना सर्वोत्तम प्रयास करना चाहिए। अब्दुल बहा सभी बच्चों को उन प्रखर दीपकों के समान चमकते देखना चाहते हैं जो उल्लास का प्रकाश चारों ओर बिखेरते हों। यह कंठस्थ रखने में

हमारी सहायता के लिए हम सदैव उल्लासमय रहें, आईए हम निम्नलिखित उद्धरण को कंठस्थ करें :

“हे मनुष्य के पुत्र ! अपने हृदय की प्रफुल्लता पर आनंद मना, ताकि तू मुझसे मिलन तथा मेरे सौंदर्य को प्रतिबिम्बित करने के योग्य बन सके।”[106]

प्रफुल्लता

1. रोनाल्ड का घर उसके नाना–नानी के घर से दूर था। जब उसने सुना कि स्कूल की छुट्टियों के समय वह उनसे मिलने जायेगा, तो वह बहुत प्रसन्न हो गया। उसका हृदय प्रफुल्लता से भर गया।

2. मोज़गान ने अपनी माँ और पिता को उनके उद्यान में खीरे के बीज बोने में सहायता की। आरम्भ में जब छोटे खीरे दिखने लगे तो उसका हृदय प्रफुल्लित हो गया।

योग्य

1. स्योना ने मन लगा कर पढ़ाई की और उसने अच्छी श्रेणी प्राप्त की। शिक्षक ने उसकी कड़ी मेहनत और लगन के लिये उसकी प्रशंसा की। स्योना उसके शिक्षक की प्रशंसा के योग्य थी।

2. डेविड हमेशा अपने भाईयों और बहनों की अच्छी देखभाल करता था। उसके माता–पिता जानते थे कि वे बच्चों को उसके भरोसे छोड़ सकते थे। डेविड अपने माता–पिता के विश्वास के योग्य था।

प्रतिबिम्बित

1. अमारी को एक पत्थर मिला जिसको उसने इतना चमकाया कि वह प्रकाश प्रतिबिंबित करने लगा।

2. पवित्र हृदय ईश्वर की विशिष्टताओं को प्रतिबिंबित करते हैं।

सौन्दर्य

1. इलाना की माँ आकाश में उड़ते पक्षी, खिले फूल, सागर की लहरों को तट पर आता देख कर आनंदित होती है। वह प्रकृति में सौन्दर्य को निहारती है।

2. कभी कभी एक गीत का सौन्दर्य हमारे हृदयों को इतना छू जाता है कि हमारी आँखों में आँसू आ जाते हैं।

3. जब भी मुनीर प्रार्थना करता है, वह ईश्वर के सौन्दर्य, प्रेम, उसकी उदारता तथा विवेक को याद करता है।

घ. कहानी

नीचे दी कहानी बच्चों को यह बताएगी कि किस प्रकार अब्दुल बहा अपने आस–पास के लोगों के हृदयों में उल्लास लाते थे।

लेरोय आयोस एक विशिष्ट बहाई थे जिनके बारे में आप जैसे–जैसे बड़े होंगे, संभवतः अधिक जान पाएंगे। 1912 में जब मास्टर ने शिकागो शहर का भ्रमण किया तब वे एक बालक थे। क्या आप इस आध्यात्मिक बालक के उत्साह की कल्पना कर सकते हैं जब उसे अब्दुल बहा की उपस्थिति में होने का अवसर मिला? एक दिन, जब लेरोय और उनके पिता उस होटल की ओर जा रहे थे जहाँ अब्दुल बहा ठहरे थे, तो लेरोय को एक विचार आयाः उसने तय किया कि वह अब्दुल बहा के लिये कुछ फूल ले जायेगा। उसके पास जो थोड़े–बहुत पैसे थे, उससे उसने सफेद गुलनार के फूलों का एक गुलदस्ता खरीद लिया। लेकिन जब तक वे होटल पहुँचे, लेरोय ने अपना विचार बदल दिया था। उसने सोचा कि वह अब्दुल बहा को कोई भौतिक वस्तु नहीं देना चाहता है, फूल भी नहीं बल्कि वह उन्हें अपना हृदय अर्पित करेगा। उन्हें देने के लिये उसके पास सबसे महत्वपूर्ण वस्तु यही थी। इसलिये, बिना यह बताए कि गुलदस्ता कौन लाया था, लेरोय के पिता ने फूलों का वह गुलदस्ता अब्दुल बहा को भेंट कर दिया।

इसके बाद, अब्दुल बहा ने उन सभी मित्रों के सामने, जो उनसे मिलने के लिये होटल में जमा हुए थे, एक वक्तव्य दिया,। वक्तव्य के समय लेरोय चुपचाप उनके चरणों में बैठा रहा और उनके विवेकपूर्ण एवं प्रेम से भरे शब्दों को सुनता रहा। तत्पश्चात, मास्टर उठे और उन्होंने मेहमानों के साथ हाथ मिलाये और अपने प्रेम के प्रतीक के रूप में हर व्यक्ति को गुलनार का एक सफेद फूल दिया। उस समय लेरोय मास्टर के पीछे खड़ा था। इस नन्हे बालक ने सोचा, "काश अब्दुल बहा मुड़ कर एक फूल मुझे भी दे देते"। शायद, हृदय ही हृदय में वह यह भी चाहता था कि मास्टर को ज्ञात हो जाये कि ये सुन्दर फूल वास्तव में उनके लिये कौन लाया था। लेकिन एक–एक करके सफेद गुलनार के वे फूल दूसरों को दिये जा रहे थे। ऐसा लग रहा था कि लेरोय को एक भी फूल नहीं मिलेगा। फिर अचानक अब्दुल बहा मुड़े और उन्होंने अपनी दृष्टि लेरोय आयोस पर टिकायी। उनके मुखमण्डल पर प्रेम का प्रकाश निकल रहा था और उनकी आँखें दयालुता से भरी थीं। और क्या उन्होंने लेरोय को भी सफेद गुलनार का एक फूल दिया ? नहीं। अब्दुल बहा ने उसे एक ऐसी वस्तु दी जो और भी बहुमूल्य थी। अब्दुल बहा ने अपने कोट पर एक बहुत खूबसूरत लाल गुलाब लगाया था। उन्होंने वह गुलाब निकाला और उस नन्हे बालक को भेंट कर दिया। लेरोय का हृदय उल्लास से उछल पड़ा। आखिरकार मास्टर जानते थे कि सफेद गुलनार के वे फूल उनके लिये कौन लाया था।

ङ. खेल : "ड्रेगन की पूँछ पकड़ना"

अगली गतिविधि को आरम्भ करने के लिए बच्चों से एक लाईन में इस प्रकार खड़े होने को कहें कि प्रत्येक बच्चे का हाथ, आगे वाले बच्चे के कंधे या कमर पर हो। जो बच्चा लाईन में सबसे पहले खड़ा होगा, वह ड्रेगन का सिर होगा। लाईन के अंत में खड़ा होने वाला बच्चा ड्रेगन की पूँछ होगा जो ड्रेगन के सिर से बचने के लिये तेज़ी से कभी दांयी तो कभी बांयी ओर जायेगा। जब तक "आरम्भ करें" का संकेत न दिया जाये, तब तक ड्रेगन को एक सीधी लाईन में खड़ा रहना है। एक बच्चा गिनती करेगा "एक, दो, तीन, शुरू कर !" "शुरू कर" का संकेत सुनते ही, ड्रेगन का सिर पूँछ की तरफ दौड़ेगा और उसे पकड़ने का प्रयास करेगा। ड्रेगन के पूरे शरीर को उसके सिर के साथ इधर–उधर चलना है लेकिन उसे टूटना नहीं चाहिये। यदि उसका सिर, उसकी पूँछ को छूने में सफल रहता है, तो सबसे आगे वाला बच्चा ही सिर बना रह सकता है। यदि पूँछ को पकड़ने से पहले ही ड्रेगन का शरीर टूट जाता है, तो सिर बनने वाला बच्चा पूँछ बन जाता है, और लाईन में खड़ा हुआ अगला बच्चा ड्रेगन का सिर बन जाता है। इस प्रकार खेल तब तक जारी रहता है जब तक कि प्रत्येक बच्चे को कम से कम एक बार सिर और पूँछ बनने का मौका नहीं मिल जाता।

च. रंग भरना : चित्र क्रमांक 7

छ. समापन प्रार्थनाएँ

पाठ 8

क. प्रार्थनाओं का पाठ करना और उन्हें कंठस्थ करना

कक्षा को सदैव की भांति कंठस्थ प्रार्थना का पाठ कर तथा पहले से चुने गए कुछ विद्यार्थियों से भी करने को कह कर आरम्भ करें। तब आप बच्चों के साथ पाठ 5 में सीखना आरम्भ की गई प्रार्थना की पुनः विचार कर सकते हैं।

ख. गीत (इसमें पिछले गीतों को दोहराया जाना भी शामिल है)

मुझको तुम पर है विश्वास

बात बताते हो इस नवयुग की
अद्‌भुत हो यह दुनिया कितनी

मानवता है एक परिवार बताते हो तुम
विश्व शांति का है एक मार्ग समझाते हो तुम

समूहगान :

हाँ तुम पर है विश्वास मुझे, हाँ तुम पर है विश्वास
हाँ तुम पर है विश्वास मुझे, हाँ तुम पर है विश्वास
तुम पर है हृदय से विश्वास

मानवता की नयी नस्ल की करते हो तुम बात
उन लोगों की जो रखते है ईश्वर में पूरा विश्वास
भरपूर प्रयत्न कर रहे हैं स्त्री–पुरूष कई
कि दिव्य एकता के घेरे में आ जायें लोग सभी

समूहगान

कहते हो तुम सौ वर्ष पहले
प्रभु का हम से वादा निभाने
धरती पर आया प्रभु का प्रकाश
और लाया एक स्वर्णयुग अपने साथ

समूहगान

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

जो उद्धरण बच्चे आज कण्ठस्थ करने वाले हैं, उसे प्रस्तुत करने के लिये आप पाठ की विषय–वस्तु से संबंधित निम्नलिखित विचारों का उपयोग कर सकते हैं :

> जब हमारे शब्द और कर्म, हमारे हृदय में जो है, उसे प्रदर्शित करते हैं तब हम सत्यनिष्ठा का गुण प्रदर्शित कर रहे होते हैं। सत्यनिष्ठा हमें दूसरों के साथ अपने व्यवहार में सच्चा और विश्वसनीय बनने की प्रेरणा देती है। उदाहरण के लिये, जब हम कहते हैं कि जो हमने किया है उसका हमें खेद है, तो हम अपने मन में यह भी जानते हैं कि हम अपनी गलतियों को न दोहराने का हर सम्भव प्रयास करेंगे। यह हमारी सत्यनिष्ठा ही होती है जिसके माध्यम से लोग हमारे हृदय की शुद्धता को देख सकते हैं और हम पर विश्वास कर सकते हैं। इस गुण के महत्व को कंठस्थ रखने के लिये, हम अब्दुल बहा का निम्नलिखित उद्धरण कंठस्थ करेंगे :
>
> **"हमें हर समय अपनी सत्यवादिता और ईमानदारी प्रदर्शित करनी चाहिये ...।"**[107]

प्रकट

1. सवा ने उस सीप से मिट्टी साफ की जो उसे समुद्र के किनारे मिला था और उसे तब तक चमकाया जब तक कि वह चिकना और चमकीला नहीं हो गया। जब यह कार्य पूरा हो गया तो सीप की सुन्दरता प्रकट हो गयी।

2. जब सूरज उगा और सुबह की धुन्ध हटी, तो पर्वत की विशालता प्रकट हो गयी।

सत्यनिष्ठा

1. लियो के सहपाठी अक्सर पढाई करने के बजाय खेलते रहते हैं। लियो चिन्तित है कि कहीं वे पढ़ाई में पीछे न रह जाए इसलिये वह सुझाव देता है कि सभी मिलकर पढ़ाई करेंगे, और वह ऐसे तरीके खोज निकालता है जिनसे वे सभी पढाई में एक दूसरे की सहायता कर सकें। अपने सहपाठियों के लिये लियो की चिन्ता में सत्यनिष्ठा है।

2. रोज़ा ने अपनी माँ से वादा किया था कि वह प्रतिदिऩ अपना होमवर्क करेगी। जब उसके माता–पिता घर पर नहीं होते, तब भी रोज़ा अपने होमवर्क पर कड़ी मेहनत करती है। रोज़ा के वादे में सत्यनिष्ठा है।

घ. कहानी

इस पाठ की जो कहानी आप बच्चों को सुनाएंगे वह उन्हें यह सोचने में सहायता करेगी कि सत्यनिष्ठा का गुण धारण करने का क्या अर्थ है और कब इस की कमी है।

> *एक दम्पति के घर के पीछे एक विशाल वृक्ष कई सालों से खड़ा था। इस दम्पति के कई बच्चे थे। जैसे–जैसे वह वृक्ष बड़ा होता गया, वैसे–वैसे उसकी शाखाएँ बहुत ऊपर तक उठती गयीं और उनके घर के पीछे के हिस्से मे छाँव हो गयी। एक दिन, सर्दी के मौसम में, जब घर का मालिक उस पेड़ के नीचे से गुज़र रहा था, तो उनकी मुलाकात उनके एक पड़ोसी से हुई। कुछ देर तक तो उन्होंने अपने गाँव की एवं इधर–उधर की बातें की। फिर, उस बड़े वृक्ष को देखते हुए पड़ोसी ने घर के मालिक से कहा, "जानते हो, अब समय आ चुका है कि तुम*

इस विशाल वृक्ष को काट दो। यह बहुत फैल चुका है और अनियंत्रित होता जा रहा है। यदि इसकी एक बड़ी शाखा तुम्हारे घर की छत पर गिर गयी तो क्या होगा – और इससे भी अधिक बुरा यदि तुम्हारा एक बच्चा इसकी छाँव में खेल रहा हो और यह उसके सिर पर गिर गया तो क्या होगा ?" जब ये दोनों आदमी अपने–अपने काम पर चले गये, तो घर के मालिक ने अपने पड़ोसी की सलाह पर विचार किया। वह वृक्ष उसके आंगन में तबसे खड़ा था जब वह एक छोटा सा बच्चा था और उसने होश भी नहीं सम्भाला था, लेकिन अब तक उससे कोई नुक्सान नहीं पहुँचा था। गर्मियों में यह अच्छी छाँव देता था और सर्दियों मे ठंड़ी हवाओं से बचाता था। देखने में तो यह वृक्ष अब भी काफी मजबूत और स्थिर लगता था। "फिर भी, शायद मेरे पड़ोसी की बात में दम है," उसने सोचा। "कभी कभी जो दिखाई देता है वैसा होता नहीं है। यदि यह पेड़ उतना मजबूत न हुआ जितना कि यह दिखाई देता है, तो क्या होगा ?" और उसने निर्णय ले लिया कि वह उस पेड़ को काट देगा।

यह एक कठिन कार्य था, क्योंकि वह पेड़ सचमुच बहुत बड़ा था, और उसमें कई टहनियाँ और शाखाएँ थीं, जिनमें से कूछ तो बहुत ऊँची थीं। जैसे ही पेड़ काटने का काम समाप्त हुआ वैसे ही उसका पड़ोसी वहाँ आ पहुँचां। इस बार वह अपने दो बेटों और एक ठेले को साथ ले कर आया था। वहाँ पड़ी लकड़ियों की अनेक ढेरों को देख कर वह बोला "देख रहा हूँ कि तुमने पेड़ काटने का निर्णय ले ही लिया", वह बोला, "मुझे लगता है कि इन ढेरों को यहाँ से हटाने में तुम्हे किसी की सहायता की आवश्यकता होगी। शायद हम तुम्हारी सहायता कर सकते हैं। मैं अपना ठेला और अपने दोनो बेटों को साथ लाया हूँ, और इन ढेरों को तुम्हारे आंगन से हटाने में हमें उल्लास होगी।" किसी उत्तर का इन्तज़ार किये बगैर ही उसके बेटों ने ढेरों को ठेले पर लादना शुरू कर दिया। जब वे ठेला ले जाने लगे, तो घर का मालिक उस पेड़ के कटे हुए तने पर बैठ गया जिस पेड़ ने उसके घर को इतने लम्बे समय तक आश्रय दिया था। तब कहीं उसे यह आभास हुआ कि उसके पड़ोसी को उसके परिवार की सुरक्षा की चिन्ता नहीं थी, बल्कि सर्दियों में अपने घर को गरम रखने के लिये लकड़ियों की आवश्यकता थी। "कभी कभी जो दिखायी देता है, वास्तव में सच नहीं होता" उसने आहें भरते हुए कहा। कितना दुखद था कि परिवार ने उस दिन अपना सुंदर पेड़ खो दिया। पर उससे भी दुखद – पड़ोसी ने अपने मित्र का विश्वास खो दिया और ईश्वर की सुप्रसन्नता पाने का अवसर भी।

ङ. खेल : "गरम या ठंडा"

आरम्भ करने के लिए किसी एक बच्चे को कमरे से बाहर या कक्षा के स्थान से कुछ दूर जाने को कहें। जब बाकी बच्चे किसी छोटी सी वस्तु को छिपा चुके होते हैं – जैसे कि पेन्सिल या क्रेयोन – तो उस बच्चे को वापस बुला लिया जाता है और उसे उस वस्तु को ढूँढने को कहा जाता है जो छिपायी गयी है। बाकी बच्चे तालियाँ बजाते हैं। जब वह बच्चा छिपायी हुयी वस्तु के निकट पहुँचने लगता है तो सभी और ज़ोर–ज़ोर से तालियाँ बजाने लगते हैं। यदि वह छिपायी गयी वस्तु से दूर जाने लगता है तो बच्चों की तालियों की आवाज़ धीमी पड़ने लगती है। ताली बजाने के बजाय, जैसे जैसे वह बच्चा छिपायी गयी वस्तु के निकट पहुँचने लगे तो बाकी बच्चे "गरम," "और गरम," तथा "बहुत गरम" जैसे शब्दों का उपयोग भी कर सकते हैं। यदि बच्चा छिपायी गयी वस्तु से दूर जाने लगे तो उन्हें "ठंडा," "और ठंडा," या "बहुत ठंडा" जैसे शब्दों का उपयोग करना होगा। बच्चों को सावधानी बरतनी चाहिये कि जो बच्चा छिपायी गयी वस्तु को ढूँढ रहा हो उसे वे भटका न दें; अन्यथा वह दूसरों पर विश्वास नहीं कर सकेगा, और खेल निरर्थक हो जायेगा।

च. रंग भरना : चित्र क्रमांक 8

छ. समापन प्रार्थनाएँ

पाठ 9

क. प्रार्थनाओं का पाठ करना और उन्हें कंठस्थ करना

इस पाठ और अगले तीन पाठों को आरम्भ करने के लिए, जैसी कि भाग 10 में बताई गई है, वैसी कंठस्थ प्रार्थना को चुनें, कुछ विद्यार्थी प्रारम्भिक प्रार्थनाओं को करने में आप के साथ जुड़ सकते हैं, जिसके बाद आप नीचे दी गई प्रार्थना कंठस्थ करने के लिए दे सकते हैं। यह पिछली दो कंठस्थ की गई प्रार्थनाओं से लंबी है पर उन्हें इसे समझना कठिन नहीं होगा, और वे सभी पाठ 12 तक इसे कंठस्थ कर पाएंगे।

> **"मंगलमय है वह स्थल, और वह गृह, और वह स्थान, और वह नगर, और वह हृदय, और वह पर्वत, और वह आश्रय, और वह गुफा, और वह उपत्यका, और वह धरती, और वह सागर, और वह द्वीप और वह उपवन, जहाँ उस ईश्वर का उल्लेख हुआ है और उसके यश की महिमा गायी गयी है।"**[108]

ख. गीत (इसमें पिछले गीतों को दोहराया जाना भी शामिल है)

धरती के समान बनो

धरती को देखो कितनी विनम्र है
धरती को देखो कितनी विनम्र है
प्रभु का सारा वैभव रखती है
जीवन के लिये सबकुछ देती है
आओ इस पर नित चलकर देखें
लेकिन क्या यह कभी कहती है हमसे
हूँ मैं तुमसे बड़ी और हूँ तुमसे भी अमीर ?
हूँ मैं तुमसे बड़ी और हूँ तुमसे भी अमीर ?
धरती को देखो कितनी विनम्र है
पेड़ों को देखो कितने विनम्र हैं
पेड़ों को देखो कितने विनम्र हैं

जितना ही ये फलों से लदते हैं
उतना ही धरती पर झुकते हैं
हम सबको फल ये देते हैं
आओ इन पर चढ़कर देखें
लेकिन क्या ये कभी कहते हैं हमसे
हैं हम तुमसे बड़े और हैं तुमसे भी अमीर ?
हैं हम तुमसे बड़े और हैं तुमसे भी अमीर ?

धरती की तरह बन जाओ
पेड़ों की तरह बन जाओ
धरती की तरह बन जाओ
पेड़ों की तरह बन जाओ
विनम्रता के पंख लगाकर
महानता की ओर उड़ जाओ
धरती को देखो कितनी विनम्र है।

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

जो उद्धरण आज कण्ठस्थ किया जाना है, उसे और इस पाठ की विषय–वस्तु प्रस्तुत करने में निम्नलिखित विचार आपकी सहायता करेंगे।

एक अत्यंत महत्वपूर्ण आध्यात्मिक गुण है विनम्रता। जो लोग ईश्वर के समक्ष विनम्र होते हैं, वे उसकी और उसकी रचना की महानता को समझते हैं। वे जानते हैं कि उसकी कृपा और सहायता के बिना, हममें से कोई भी कुछ प्राप्त नहीं कर सकता। वह सर्व–महान, सर्व–शक्तिशाली है। और जैसे हम ईश्वर के समक्ष कभी गर्व नहीं दिखाएंगे, हम उसकी समस्त सृष्टि के समक्ष भी विनम्र रहेंगे। हम कंठस्थ रखते हैं कि पृथ्वी तथा इस पर स्थित सब कुछ उसके द्वारा सृजित है और ईश्वर के चिन्हों और गुणों को प्रतिबिंबित करती है। हम प्रकृति का सम्मान करते हैं और अपने ह्रदयों में जानते हैं कि सदैव ही हम अपने चारों ओर लोगों से कुछ सीख सकते हैं। आइए निम्न उद्धरण कंठस्थ करें।

"हे मनुष्य के पुत्र ! मेरे समक्ष स्वयं को विनम्र कर ले, ताकि मैं कृपापूर्वक तुझ तक आगमन करूँ"[109]

विनम्र

1. गणित के अपने कार्य में ज़ैनब मन लगा कर कार्य करती है और हमेशा अच्छा करती है। वह विनम्र है और अपनी उपलब्धियों के बारे में कभी घमंड नहीं करती।

2. योंग फू के पड़ोस के बच्चे सीखने के लिए उत्सुक हैं, और उससे कहा गया है कि वह उनके लिये एक छोटी सी कक्षा आरंभ करे। यद्यपि उसके पास कम अनुभव है और वह स्वयं को इस योग्य नहीं समझता, फिर भी वह अपना भरोसा ईश्वर में रखता है और पूरा–पूरा प्रयास करता है। वह अपने कार्य को विनम्र भाव से करता है।

कृपापूर्वक

1. कैंडेस के परिवार ने अपने कुछ पड़ोसियों को घर पर भोजन के लिए आमंत्रित किया है। जब अतिथि आते हैं तो कैंडेस उनका स्वागत गर्मजोशी से करता है तथा कृपापूर्वक उन्हें शीतल पेय देता है।

2. जिओवनी ने अपने वृद्ध पड़ोसी को सामान का झोला घर ले जाने में उनकी कठिनाई देखी। उसने कृपापूर्वक झोला घर तक पहुंचाने में सहायता की।

घ. कहानी

अब्दुल बहा के सबसे उल्लेखनीय गुणों में से एक गुण विनम्रता का था। अनेक लोग उन्हें महान उपाधियाँ देना चाहते थे, लेकिन वे चाहते थे कि उन्हें केवल "अब्दुल बहा" के नाम से जाना जाये, जिसका अर्थ है "बहा का सेवक"। उनकी प्रबल इच्छा थी, सेवा करना। एक बार, कुछ अमीर मित्रों ने भोजन से पहले उनके लिये हाथ धोने की एक विस्तृत व्यवस्था की। हाथ धोने के लिये "स्वच्छ जल" का पात्र उठाने के लिये उन्होंने एक विशेष परिधान पहने हुए लड़के का प्रबंध किया, और एक सुगंधित तौलिया का भी। जब मास्टर ने देखा कि कुछ मित्र उनकी तरफ आ रहे है और उनके साथ पानी का पात्र और तौलिया लिये वह लड़का भी था, तो वे उनका उद्देश्य समझ गये। उन्होंने जल्दी से आस–पास में कहीं से पानी ढूँढा, अपने हाथ धोये, और उस कपड़े से पोंछ लिये जो माली के पास था। प्रसन्नतापूर्वक वे उन मित्रों का स्वागत करने के लिए मुड़े। और तब, अपने अतिथियों को, अपने लिये दिये जाने वाले सम्मान को उन्हें प्रदान करते हुए, वह जल और सुगंधित तौलिया प्रेमपूर्वक उपयोग करने के लिए दे दिया।

ङ. खेल : "ऊँचा नाटां"

एक बच्चे की आँख पर पट्टी बाँधें और बाकी बच्चों को उसके इर्द–गिर्द एक गोला बनाने को कहें। उन्हें एक साथ मिलकर कहना है :

"हम बहुत ऊँचे हैं।" (यहाँ उन्हें अपने पैर के पंजों पर खड़े होना है और जितना हो सके स्वयं को ऊपर की ओर खींचना हैं)

"हम बहुत नाटे हैं।" (यहाँ उन्हें पालथी मारकर बैठ जाना है और स्वयं अधिक से अधिक नाटा बना लेना हैं)

"कभी कभी हम ऊँचे हैं।" (यहाँ उन्हें दुबारा ऊपर की ओर तन जाते हैं)

"कभी कभी हम नाटे हैं।" (यहाँ उन्हें दुबारा पालथी मारकर बैठ जाते हैं)

इसके बाद आप बच्चों को इशारे से बतायेंगे कि उन्हें लम्बा तन कर खड़ा होना है या पालथी मार कर बैठना है, और वे मिलकर कहेंगे :

"बूझो तो हम क्या हैं !"

जिस बच्चे की आँख पर पट्टी बंधी होती है वह उनकी आवाज़ के स्तर से पता लगाने की कोशिश करता है कि वे "नाटे" हैं या "ऊँचे" । प्रत्येक बच्चे को बारी बारी से आँखों पर पट्टी बंधवानी होगी।

च. रंग भरना : चित्र क्रमांक 9

छ. समापन प्रार्थनाएँ

पाठ 10

क. प्रार्थनाओं का पाठ करना और उन्हें कंठस्थ करना

प्रारम्भिक प्रार्थनाओं के बाद, बच्चे पिछले पाठ में दी गई प्रार्थना को कंठस्थ करना जारी रख सकते हैं ।

ख. गीत (इसमें पिछले गीतों को दोहराया जाना भी शामिल है)

प्रभु तेरा धन्यवाद और गुणगान करता हूँ मैं

प्रभु तेरा धन्यवाद और गुणगान करता हूँ मैं
दया का यह ताज मेरे सर पर रखने के लिये
जितना धन्यवाद देता रहूँगा मैं
उतना ही जगमगाता रहेगा ये
प्रभु तेरा धन्यवाद और गुणगान करता हूँ मैं

प्रभु तेरा धन्यवाद और गुणगान करता हूँ मैं
मेरे मन को ज्ञान और प्यार से भरने के लिये
जितना धन्यवाद देता रहूँगा मैं उतने ही बढ़ते रहेंगे ये
प्रभु तेरा धन्यवाद और गुणगान करता हूँ मैं

प्रभु तेरा धन्यवाद और गुणगान करता हूँ मैं
उस सत्य की रोशनी के लिये
जो मेरी आँखों को प्रकाशित करती है
जितना धन्यवाद देता रहूँगा मैं
देखूँगा तेरी कृपा बरसते हुए

प्रभु तेरा धन्यवाद और गुणगान करता हूँ मैं
प्रभु तेरा धन्यवाद और गुणगान करता हूँ मैं

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

नया उद्धरण कंठस्थ कराने के लिये इसे निम्नलिखित तरीके से छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जा सकता है :

> जब हमें छोटे से छोटा उपहार भी मिलता है तो हम इसे देने वाले को धन्यवाद देते हैं। तब हमें ईश्वर को कितना धन्यवाद देना चाहिए जिसने हमें असंख्य उपहार तथा अनुकम्पायें प्रदान की हैं–हमारा ध्यान रखने के लिए आँखें, प्रेम करने के लिए हृदय, और वह सब कुछ सृजित किया है ताकि हम विकसित व पल्लवित हो सकें। अब्दुल बहा हमें बताते हैं कि अनेक अनुकम्पाओं और हमारे हृदयों को अपने प्रेम से भरने के लिए हमें ईश्वर के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए। हमें सदैव ही, कष्टों के समय भी, ईश्वर के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए। ईश्वर को धन्यवाद देना हमें उसकी असंख्य अनुकम्पायें अधिकाधिक प्राप्त करने योग्य बनाता है। आइए नीचे दिए उद्धरण को कंठस्थ करें।

"तुम आनन्दित रहो और तुम कृतज्ञ बनो। ईश्वर को धन्यवाद देने के लिये उठ खड़े हो, ताकि यह कृतज्ञता अनुकम्पाओं को बढ़ाने में सहायक बन सके।"[110]

उठ खड़े होना

1. सलमा अपनी दादी को लंबी बीमारी के बाद बिस्तर से उठ खड़े होते तथा चलते देखकर प्रसन्न थी।

2. बच्चे प्रातः काल प्रार्थना करने के लिये उठ जाते हैं

सहायक

1. नादिया हमेशा स्वच्छ रहती है। उसे पता है कि स्वच्छता आध्यात्मिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। स्वच्छता आध्यात्मिकता में सहायक है।

2. सेफ्फ के परिवार के सदस्य सभी महत्वपूर्ण कार्यों में एक दूसरे का सहयोग करते हैं। क्योंकि वे सहयोग करते हैं, वे सामंजस्यता में रहते हैं। सामंजस्यता में सहयोग सहायक है।

बढ़ना

1. पिछले वर्ष, मारिया के स्कूल में मात्र पाँच शिक्षक थे। शिक्षकों की संख्या का बढ़ाया जाना स्कूल के लिए अच्छा है।

2. शायान हमेशा उल्लासपूर्ण लड़का है। उसका उल्लास और भी अधिक हो जाता है जब वह दूसरों की सहायता करता है। उसका उल्लास और बढ़ता है जब वह दूसरों की सेवा करता है।

घ. कहानी

एक दिन, एक धनी महिला बहुत दूर से अब्दुल बहा से मिलने पवित्र भूमि आई। वह विस्तार से उन्हें एक के बाद एक अपने छोटे–छोटे कष्टों को बताने लगी। अब्दुल बहा ने उन्हें धैर्य तथा दयालुता से काफी देर तक तब तक सुना जब तक उन्हें दूसरे स्थान पर जाने का समय नहीं आ गया। अपने अतिथि को छोड़ने से पहले उन्होंने खिड़की के बाहर टहल रहे एक सज्जन की ओर इशारा किया। उसने कहा मैं इस व्यक्ति को आपसे मिलाने लाता हूँ। उनका नाम मिर्जा हैदर अली है । वह धरती पर विचरण करता है पर आकाश में रहता है। अब्दुल बहा ने समझाया, उसे अनेक कष्ट हुए हैं और वह उनके बारे में बताएगा।

मिर्जा हैदर अली को वास्तव में अनेक कष्ट हुए थे। वह फारस से थे, जहां बहाइयों को अन्याय तथा अत्यंत क्रूरता का सामना करना पड़ा था। कुछ को कैद कर अनुचित ढंग से जेल में डाल दिया गया था। अन्य को उनसे घृणा करने वाले लोगों द्वारा मारा–पीटा गया था। मिर्जा हैदर अली के जीवन के सभी कष्टों के विषय में अधिक जानने से आपके हृदय को बहुत दुख पहुंचेगा।

अब, अब्दुल बहा बाहर जा कर मिर्जा हैदर अली को अपने अतिथि से मिलाने के लिए ले कर आए। इस महिला से उन्हें मिला कर अब्दुल बहा चले गए। मिर्जा हैदर अली उस महिला को आनंद और विनम्रता के साथ इस अद्‌भुत समय जिसमें हम रह रहे हैं तथा आने वाले ईश्वर

के आशीर्वादों के संबंध में बात करने लगे। अतिथि ने कुछ समय तक धैर्य से सुना, फिर, अधैर्यता से उनको रोकते हुए कहा, प्लेकिन अब्दुल बहा ने कहा था कि आप अपने कष्टों के बारे में मुझे बताएंगे। मिर्जा हैदर अली ने आश्चर्य से उपर देखा और कहा कष्ट?, मैडम, मुझे तो कभी कोई कष्ट हुआ ही नहीं। कष्ट होते क्या हैं। अब्दुल बहा को पता था कि यद्यपि मिर्जा हैदर अली ने अत्यंत कठिनाइयों का सामना किया था, वे कभी उनकी प्रसन्नता को छू नहीं पाईं, उन्होंने जीवन में केवल ईश्वर के सभी आशीर्वादों को ही देखा, जिनके लिए वे कृ तज्ञ थे।

ङ. खेल : "तेज़ क्रिया"

बच्चों से कहे कि एक दूसरे का हाथ पकड़ कर एक घेरा बनाएँ। पहले, उन्हें अपने बाएं हाथ और फिर अपने दायें हाथ को दबाने का अभ्यास करने दें। उन्हें अपने समूह के अंदर एक स्पंदन संकेत (पल्स संकेत) भेजना है। खेल की शुरूआत करते हुए, एक बच्चा जल्दी से अपने पड़ोस में खड़े बच्चे का हाथ दबा कर संकेत देता है, जो उस संकेत को अगले बच्चे तक पहुँचाता है, और यह क्रम तब तक चलता रहता है जब तक कि यह घूम कर उसी बच्चे तक वापस नहीं आ जाता जिसने वह संकेत सबसे पहले दिया था। खेल के समय मापते हुए बच्चों को यह खेल कम से कम समय में पूरा करने की चुनौती दी जानी चाहिये। जब बच्चे मुख्य खेल को सीख चुके हों, तो आप उन्हें विपरीत दिशा में संकेत भेजने को कह सकते हैं और संकेतों की संख्या बढ़ाने को कह सकते हैं।

च. रंग भरना : चित्र क्रमांक 10

छ. समापन प्रार्थनाएँ

पाठ 11

क. प्रार्थनाओं का पाठ करना और उन्हें कंठस्थ करना

कक्षा को सदैव की भांति कंठस्थ प्रार्थना का पाठ कर तथा, पहले से चुने गए कुछ विद्यार्थियों से भी करने को कह कर आरम्भ करें। तब आप बच्चों की सहायता पाठ 9 में उनके द्वारा सीखना आरम्भ की गई प्रार्थना को कंठस्थ करने में कर सकते हैं।

ख. गीत (इसमें पिछले गीतों को दोहराया जाना भी शामिल है)

अच्छाई देखना

उत्कृष्टता को है मैंने लक्ष्य बनाया
लेकिन इसको बड़ी दूर है पाया
राह में इससे मुझको मदद मिलेगी
प्रतिदिन मैंने यदि कुछ अच्छा पाया।
उत्कृष्टता को है मैंने लक्ष्य बनाया ––––––

इसीलिए मैं जब भी तुम में त्रुटियां पाऊंगा,
नहीं कभी भी किसी गीत में इस को गाऊंगा,

किसी मित्र से कभी ना इसकी चर्चा करूंगा,
इतना तक की इसके बारे कभी ना सोचूंगा।
मुझको तो तुम में सिर्फ अच्छाई देखना है,
मुझको तो सब में सदा अच्छाई देखना है।

मुझे पता है तुम भी मुझसे यही तो चाहोगे
क्योंकि मैं भी हर किसी से यही तो चाहूंगा
और ईश्वर भी तो हम सब में अच्छाई देखता है,
वह तो हर एक में सदा अच्छाई देखता है।

और जब कभी हम पर्दा डालते हैं,
दूसरों की छोटी–मोटी गलतियों पर,
आशा है की ईश्वर भी पर्दा डालेगा,
हमारी भी तो ऐसी गलतियों पर।

अब्दुल बहा तो अन्तर्दृष्टि से सम्पन्न थे,
हमारी आंखो द्वारा हृदय को वो देख लेते थे।
और जब कभी कोई कमी उन्हें दिखाई दी,
हमें अच्छा बनाने का कोई रास्ता खोज लेते थे।

इसीलिए मैं जब भी तुम में त्रुटियां पाऊंगा,
मुझे पता है कि अब मुझको क्या करना है,
मुझको जाकर अन्य किसी से ना कहना है
इतना तक कि मुझे स्वयं से ना कहना है।

मुझको तो तुम में सिर्फ अच्छाई देखना है,
मुझको तो सब में सदा अच्छाई देखना है।

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

यह सुझाव दिया जाता है कि आप नीचे दिए विचारों को बांटते हुए इस पाठ की विषय–वस्तु तथा कंठस्थ करने के लिए उद्धरण का परिचय कराएं।

क्षमादान ईश्वर के गुणों में से एक है। अब्दुल बहा हमेशा मित्रों से कहते थे कि उन्हें एक दूसरे के प्रति क्षमाशील होना चाहिये। हमें क्षमा की दृष्टि से देखना चाहिये और एक दूसरे की कमियों को अनदेखा कर देना चाहिये। यदि हम अब्दुल बहा के उदाहरण के अनुसार चलेंगे, तो जब भी हमारे मित्र त्रुटियाँ करेंगें, तब हम न केवल उनके प्रति, बल्कि ऐसे लोगों प्रति भी क्षमाशील रहेंगे जो हमारे साथ दया का व्यवहार नही करते। क्षमाशील बनने के अपने प्रयासों में हमारी सहायता करने के लिये, आईये हम निम्नलिखित उद्धरण कंठस्थ करें :

"... क्षमा और दया तथा उसे अपना आभूषण बनने दो जो ईश्वर के प्रिय पात्रों के हृदयों को आनन्दित कर दे।"[111]

दया

1. वर्षा अनेक दिनों तक होती रही। गाँव में बाढ़ आ गई तब भी वर्षा नहीं रुकी । वर्षा ने कोई दया नहीं दिखाई।

2. जब हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं, वह हमारी त्रुटियों को माफ कर देता है। वह हम पर दया करता है।

आनंदित

1. उर्सला बीमार थी। उसकी मित्र एल्सी उसके लिए फूल ले कर आई और काफी देर तक उसके साथ बैठ कर बातें कीं और कहानियाँ सुनाईं। एल्सी के आने से उर्सला को बहुत अच्छा लगा। उसके आने से उर्सला का ह्रदय आनंदित हुआ।

2. श्रीमती सांचेज को दूसरे शहर गये अपने पति का पत्र मिला। पत्र से शुभ समाचार मिला कि वह शीघ्र ही घर वापस आयेंगे। इस समाचार से वह आनंदित हुई।

प्रिय पात्र

1. शिक्षिका अपने सभी विद्यार्थियों को प्रेम करती थी तथा सभी का विशेष ध्यान रखती थी। सभी उसके प्रिय पात्र थे।

2. जेम्स को अपने सभी विषय पसंद थे, पर वह विज्ञान में अच्छे अंक पाता है। विज्ञान उसका प्रिय पात्र है।

घ. कहानी

जिन दिनों मास्टर अक्का में रहते थे, उन दिनों वहाँ एक गवर्नर था, जो बहाइयों को बार–बार नुकसान पहुँचाने की कोशिश करता रहता था। एक बार उसने बहाइयों की रोज़ी–रोटी के ज़रिये को ही समाप्त कर देने की योजना बनायी, और अपने सिपाहियों को आदेश दिया कि वे जाकर सभी बहाइयों की दुकानों पर ताले डाल दें और चाबियाँ उसे सौंप दें। लेकिन अब्दुल बहा को गवर्नर की इस योजना का पता चल गया और उन्होंने मित्रों को सलाह दी कि वे अलगे दिन अपनी–अपनी दुकानें न खोलें। उन्होंने मित्रों से कहा कि वे इन्तज़ार करें और देखें कि ईश्वर क्या विहित करते हैं।

जब गवर्नर ने सुना कि उसके सिपाही इसलिये चाबियाँ नहीं ला सके क्योंकि उस दिन बहाइयों ने दुकाने ही नहीं खोली थीं, तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। इससे पहले कि वह अपनी अगली योजना बनाता, उसके साथ कुछ ऐसा घट गया जिसकी उसने कल्पना भी नहीं की थी। उसे अपने वरिष्ठ अफसरों की ओर से एक तार मिला जिसमें उसे शहर के गवर्नर के पद से हटाये जाने की खबर थी। इस तरह बहाइयों की दुकाने बच गयीं।

इस पूर्व–गवर्नर को अक्का छोड़ने और डेमेस्कस नाम के किसी दूसरे शहर जाने का आदेश दिया गया था। वह समझ नही पा रहा था कि वह करे तो क्या करे। उसे तत्काल और अकेले अक्का छोड़ने के आदेश दिये गये थे। उसके परिवार का क्या होगा ? जिस व्यक्ति को सरकार ने ही पद से हटा दिया हो भला उसकी सहायता कौन करता ? जब मास्टर को यह खबर मिली, तो वे उससे मिलने गये। उन्होंने उस दुखी आदमी के प्रति ऐसी दयालुता

दिखायी मानो वह कभी धर्म का दुश्मन था ही नहीं। उन्होंने उसकी पिछली गलतियों का एक बार भी ज़िक्र नहीं किया। बल्कि हर प्रकार से उसकी सहायता करने का प्रस्ताव रखा। यह तथाकथित गवर्नर अपनी पत्नी और बच्चों को पीछे छोड़ जाने की बात को लेकर बहुत चिन्तित था। अब्दुल बहा ने उसे आश्वासन दिया कि वे सब कुछ सम्भाल लेंगे। बाद में उन्होंने उसकी पत्नी और बच्चों के लिये आरामदेह यात्रा का बन्दोबस्त किया, एक भरोसेमंद व्यक्ति को उनके साथ भेजा, उस सम्पूर्ण व्यवस्था का पूरा–पूरा खर्च उठाया, और गवर्नर के परिवार को डेमेस्कस के लिये रवाना किया।

जब गवर्नर अपने परिवार से दुबारा मिला तो उसकी उल्लास का ठिकाना न रहा। उसने कृतज्ञता भरे हृदय से उस आदमी से यात्रा के खर्च के बारे में पूछा, जो उसके परिवार को पहुँचाने आया था। उस सेवक ने बताया कि सारा खर्च अब्दुल बहा द्वारा उठाया गया है। यात्रा के दौरान उस आदमी की दयालुता और उसकी मेहनत के लिये इस पूर्व–गवर्नर ने उसे एक उपहार भेंट करना चाहा, लेकिन सेवक ने इसे स्वीकार करने से साफ इन्कार कर दिया, और कहा कि वह तो केवल अब्दुल बहा की आज्ञा का पालन कर रहा था और अपनी सेवाओं के बदले में वह कुछ भी प्राप्त करने की चाह नहीं रखता था। फिर गवर्नर ने उसे अपने घर में रात में रूकने का आमत्रंण दिया। लेकिन सेवक ने कहा कि वह मास्टर की आज्ञा का पालन करने के लिये उत्सुक था, जिन्होंने उसे तत्काल अक्का लौटने को कहा था। पूर्व–गवर्नर ने उससे आग्रह किया कि कम से कम वह तब तक रूक जाये जब तक कि वह अब्दुल बहा को एक पत्र नहीं लिख लेता। सेवक ने यह बात स्वीकार कर ली और अक्का लौटते ही उस चिट्ठी को मास्टर के हवाले कर दिया। चिट्ठी में लिखा था "हे अब्दुल बहा, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे क्षमा करें, मैं आपको समझ नहीं सका। मैं आपको नहीं जानता था। मैंने आपके साथ बहुत बुरा किया। बदले में आपने मेरे साथ बहुत भलाई का व्यवहार किया है।"

ङ. खेल : "लोगों से लोगों"

बच्चों से कहें कि वे तालियाँ बजाते हुए और "लोगों से लोगों" कहते हुए इधर–उधर घूमें। जब आप कहें "पीठ से पीठ," तो उन्हें रूक जाना है, और प्रत्येक बच्चे को किसी एक साथी की ओर पीठ करके खड़े होना है। आप के संकेत पर, वे एक बार फिर तालियाँ बजाते हुए तथा "लोगों से लोगों" कहते हुए इधर–उधर घूमना शुरू करेंगे। जब आप कहें "आमने सामने," तो प्रत्येक को रूक जाना है और किसी एक साथी की तरफ मुँह करके खड़े होना है और अभिवादन करते हुए सिर झुकाना है। इस प्रकार खेल जारी रहता है, और इन दोनो आदेशों को कई बार दोहराया जाता है। इस खेल में "घुटने से घुटने" और "कोहनी से कोहनी" जैसे आदेशों को भी शामिल किया जा सकता है।

च. रंग भरना : चित्र क्रमांक 11

छ. समापन प्रार्थनाएँ

पाठ 12

क. प्रार्थनाओं का पाठ करना और उन्हें कंठस्थ करना

सदैव की भांति, कक्षा का आरम्भ प्रार्थनाओं से होना चाहिए। तब आप बच्चों के साथ पिछले तीन पाठों से सीखी जा रही प्रार्थना की पुनः विचार कर सकते हैं। आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि वे सभी इसे ठीक से कह सकें, क्योंकि आप उनको कंठस्थ करने के लिए एक नई प्रार्थना पाठ 13 में बताएंगे।

ख. गीत (इसमें पिछले गीतों को दोहराया जाना भी शामिल है)

सत्यवादिता

सत्यवादिता, सूर्य के प्रकाश से भी अधिक चमकदार है
सत्यवादिता, सूर्य के प्रकाश से भी अधिक चमकदार है
सत्यवादिता से ओ लोगों, अपनी जिव्हा को सँवार लो
सत्यवादिता से ओ लोगों, अपनी जिव्हा को सँवार लो

ईमानदारी हर व्यक्ति की आत्मा को सँवारती है
ईमानदारी हर व्यक्ति की आत्मा को सँवारती है
ईमानदारी, सूर्य के प्रकाश से भी अधिक चमकदार है
ईमानदारी, सूर्य के प्रकाश से भी अधिक चमकदार है
सत्यवादिता, सूर्य के प्रकाश से भी अधिक चमकदार है
सत्यवादिता, सूर्य के प्रकाश से भी अधिक चमकदार है

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

नीचे कुछ विचार और उद्धरण दिया गया है जिन्हें आप बच्चों के साथ इस पाठ की विषय–वस्तु ईमानदारी को प्रस्तुत कर सकते हैं और उद्धरण वे कंठस्थ कर सकते हैं।

बगीचे विभिन्न रूपों और रंगों के होते हैं। वसंत काल में फलों के वृक्ष सुगंध से आभूषित हो जाते हैं। हम स्वयं को स्वच्छ और दागरहित परिधानों से आभूषित करते हैं। फिर भी, इन भौतिक वस्तुों से अधिक आध्यात्मिक चीजों की चमक ही है जो मनुष्यों को सुन्दर बनाती हैं और हमारे हृदयों को उल्लसित करती है। हमारे जीवन को अंलकृत करने वाले सबसे सुन्दर गुणों में से एक है ईमानदारी। जब हम स्वयं को ईमानदारी से संवार लेते हैं, तो हम दूसरों की अनुमति के बिना वस्तुों को नहीं छूते, और अपना कुछ कार्य बनाने के लिए कभी किसी को धोखा नही देते। ईमानदारी का गुण कंठस्थ रखने में हमारी सहायता के लिये, आईये हम बहाउल्लाह के निम्नलिखित उद्धरण को कण्ठस्थ करें :

"हे लोगों, अपनी जिह्वा को सत्यवादिता के सौंदर्य से निखारो और अपनी आत्माओं को ईमानदारी के आभूषण से विभूषित करो।"[112]

निखारना

1. मलित ने बगीचे में सुन्दर गुलाब लगाये। गुलाब बगीचे को निखारते हैं।

2. सुनील केवल सच बोलता है। उसके शब्द सदैव सत्यवादिता से निखरते हैं।

घ. कहानी

अपने जीवन के उत्तरार्ध में अब्दुल बहा पूरे विश्व के अनेक भागों की यात्रा कर पाने में सक्षम हुए। वह जहाँ भी जाते, सभी प्रकार के लोगों से मिलते – मजदूर और नेता, शिक्षक और वैज्ञानिक – और सभी को सहज महसूस कराने के लिए अपना हर संभव प्रयास करते। एक दिन, मिस्र में, उन्होंने एक उच्च पदस्थ सरकारी अधिकारी को दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित किया। अब्दुल बहा ने एक घोड़ा गाड़ी अपने अतिथि को उनके गंतव्य तक पहुँचाने के लिए किराए पर लेने का फैसला किया क्योंकि अधिकारी इस तरह के आराम के अभ्यस्त थे।

यात्रा लंबी नहीं थी, और वे शीघ्र ही अपने दोपहर के भोजन–स्थल पर पहुँच गए। लेकिन जब गाड़ी चालक ने भुगतान के लिए अब्दुल बहा से संपर्क किया, उसने यात्रा के लिए उचित मूल्य से कहीं अधिक मांगा। अब्दुल बहा को पता चल गया कि चालक ईमानदार नहीं है। उन्होंने उसे उचित भुगतान ही किया, और वापस होने के लिए मुड़ गए।

जब चालक ने बहस करने की कोशिश की तो अब्दुल बहा डटे रहे। उन्होंने उस आदमी से कहा कि यदि वह किराये के बारे में ईमानदार होता तो उसे एक सुंदर बख्शीश के साथ पुरस्कृत किया गया होता। चालक को उसके कार्यों के बारे में सोचने के लिए छोड़ कर, मास्टर चले गये।

ङ. खेल : "वर्ग, वृत्त, त्रिभुज"

यह माना जा रहा है कि बच्चे कम से कम कुछ आकारों के नाम तो जानते ही होंगे, उदाहरण के लिये, "वर्ग", "वृत्त", और "त्रिभुज"। इन आकारों के नामों के बारे में बच्चों के साथ एक बार फिर चर्चा करें, और यह सुनिश्चित करें कि बच्चे प्रत्येक आकार को पहचान सकते हैं। फिर उन्हें एक ऐसा कार्ड दिखाएँ जिस पर आपने एक क्रम में तीनों आकारों के चित्र बनाये हों – उदाहरण के लिये, वृत्त, एक और वृत्त, और वर्ग – और उनसे कहें कि इस क्रम को ध्यान से देखें। इसके बाद कार्ड को रख दें और एक बच्चे से कहें कि वह इस क्रम को तेज़ आवाज़ में दोहराए। पहले से तैयार किये गये ऐसे कई कार्डों का उपयोग करते हुए – जिनमें आपने इन आकारों के अलग अलग क्रम बनाएँ हों – आपको यह कई बार दोहराना है। यदि तीन का क्रम कंठस्थ रखने में बच्चे कठिनाई महसूस करते हैं, तो केवल दो आकार वाले क्रम भी बना कर तैयार रखिए और यदि उन्हें तीन का क्रम बहुत आसान लगें तो चार या पाँच आकारों के क्रम के कार्ड भी पहले से ही बना कर तैयार रखें।

इसके बाद – अपने छात्रों के समझ के स्तर के अनुसार – आपको दो, तीन या चार का क्रम बोलना है, और किसी एक बच्चे से या एक समूह से इस क्रम को दोहराने को कहना है। जब आप प्रत्येक बच्चे को कई बार मौका दे चुके हों, तो इस खेल को और चुनौतीपूर्ण बनाने के लिये आप बच्चों से वे क्रम बनाने को कह सकते हैं जो आप पुकारेंगे।

च. रंग भरना : चित्र क्रमांक 12

छ. समापन प्रार्थनाएँ

पाठ 13

क. प्रार्थनाओं का पाठ करना और उन्हें कंठस्थ करना

इस कक्षा और अगली तीन में, बच्चे अपने प्रयास नीचे दी प्रार्थना को कंठस्थ कर गाने पर केंद्रित करेंगे। आरम्भ में, आप और आपके कुछ विद्यार्थियों द्वारा कंठस्थ की गई प्रार्थना, जैसाकि भाग 13 में सुझाया गया था, करने के बाद, इसे परिचित करा सकते हैं।

> "हे स्वामी! इस कोमल बीज को अपनी असंख्य अनुकम्पाओं के बगीचे में बो, अपनी प्रेममयी दयालुता के झरने से इसे सींच और ऐसा कर दे कि यह तेरी कृपा तथा अनुग्रह के प्रवाह से अच्छे पौधे के रूप में विकास कर सके।
>
> "तू शक्तिशाली एवं बलशाली है।"[113]

ख. गीत (इसमें पिछले गानों को दोहराया जाना भी शामिल है)

Be Fair

CHORUS:

```
  A
Be fair, be fair
      E7                      A
And strive to provide for the comfort of all
  A
Be fair, be fair
      E7                      A
And strive to provide for the comfort of all


 A                      E
When we are fair in our dealings with others
 E7                     A
We gain the trust of our sisters and brothers
 A7                     D
When things are divided equitably
 E                                 A
Justice will shine for the world to see
```

CHORUS

When you give true comfort and aid
You'll follow the path that the Master laid
When wise and just in what you say and do
You'll bring joy to hearts around you

CHORUS

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

आज, बच्चे करूणा के गुण से संबंधित उद्धरण को कंठस्थ करेंगे, जिसे आप उनके समक्ष निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत कर सकते हैं।

ईश्वर सर्वकरूणामय, सर्वकृपालु है। कठिनाईयों के समय में हम अपने हृदयों को उसकी ओर उन्मुख करते हैं और उससे याचना करते हैं कि वह हमारे मन को राहत और शक्ति प्रदान करे। जब हमारे किसी परिचित को कोई समस्या हो या वह उदास हो तो हमें उसे समझने का हर सम्भव प्रयास करना चाहिये और उसकी सहायता करनी चाहिये। हमें हर हाल में सभी के प्रति उस वृक्ष की भाँति करूणा और दया दिखानी चाहिये जो सभी को अपने फल देता है – यहाँ तक कि उनको भी जो उस पर पत्थर फेंकते हैं। यद्यपि अब्दुल बहा का जीवन कठिनाईयों से भरा था, फिर भी उन्होंने हर समय में सभी के प्रति करूणा दिखायी। करूणामय बनने के अपने प्रयासों में हमारी सहायता करने के लिये, आईये हम बहाउल्लाह के इन शब्दों को कण्ठस्थ करें :

"ईश्वर का साम्राज्य समानता व न्याय के साथ–साथ, कृपा, करूणा, और प्रत्येक सजीव आत्मा के प्रति दया पर भी आधारित है।"[114]

आधारित

1. डॉक्टर गाँव के बच्चों के स्वास्थ्य के बारे में चिंतित था, इसलिये उसने उनके लिये एक दवाखाना खोला। यह दवाखाना बच्चों के प्रति उस डाक्टर के प्रेम पर आधारित था।

2. जेन्ना और मर्सिडिस एक लम्बे समय से एक दूसरे के मित्र हैं। वे हमेशा साथ–साथ पढाई करते हैं और सीखी गयी उपयोगी बातें एक दूसरे को बताते हैं। उनकी मित्रता, दया और प्रेम पर आधारित है।

समानता

1. राज्य के सभी लोग उसकी समृद्धि के लिये कार्य करते थे। जब पूरा अनाज इकट्ठा कर लिया जाता, तो राजा उसे अपनी प्रजा के बीच प्रत्येक परिवार के सदस्यों की संख्या के अनुसार बांट देता। राजा अपनी प्रजा के साथ समानता का व्यवहार करता था।

2. नगर परिषद को अगले गाँव तक एक सड़क बनानी थी। उसने निर्णय लिया कि उस सड़क को खेती की ज़मीन के पास से घुमाकर निकाला जाये। ऐसा करने से कई लोगों को उस सड़क से फायदा हुआ और किसानों को कोई नुकसान भी नहीं उठाना पड़ा। परिषद नें अपने निर्णय में समानता दिखायी।

1. ली योन्ग ने देखा कि उसकी मित्र जेहरा दुखी थी, इसलिये वह देखने गया कि वह उसकी क्या सहायता कर सकता था। जेहरा ने उसे बताया कि उसकी माँ अस्पताल में भरती थी। ली योन्ग ने उसकी बात को ध्यान से सुना और उसे सांत्वना देते हुए कहा कि अगले दिन वह उसके साथ अस्पताल जायेगा। ली योन्ग ने जेहरा के प्रति करूणा दिखायी।

2. एक दिन गाँव में घूमते समय शिओरी ने एक भेड़ के बच्चे को देखा जिसका एक पैर एक बाड़ में अटक गया था। शिओरी ने धीरे से उसका पैर निकाला और उस पर महरम–पट्टी की। शिओरी ने भेड़ के बच्चे के प्रति करूणा दिखायी।

घ. कहानी

जब अब्दुल बहा ने पश्चिम का भ्रमण किया था, तब वे जिस शहर में भी गये वहाँ अनेक लोग उनसे मिलने और उनके प्रोत्साहन भरे शब्द सुनने के लिये आये। वे दिन–रात हर तरह के लोगों से मिलते थे – जवान और बूढ़े, अमीर और गरीब, अफसर और सामान्य नागरिक आदि। कुछ लोग अब्दुल बहा के प्रति अपने अत्यधिक प्रेम के कारण आये, और अन्य इसलिये आये क्योंकि वे उनकी बातें सुनने को उत्सुक थे।

एक दिन एक औरत उस घर पर पहुँची जहाँ मास्टर ठहरे हुए थे और उसने दरवाज़े पर दस्तक दी। वह एक साधारण महिला थी जिसके हृदय में अब्दुल बहा के साथ कुछ पल बिताने की बहुत चाह थी। दरवाज़ा खोलने वाले व्यक्ति ने उससे पूछा "क्या तुमने अब्दुल बहा से मिलने के लिये पहले से अनुमति ली है ?" इस पर उसने बताया कि उसके पास ऐसी कोई अनुमति नहीं है। उससे कहा गया कि यदि उसके पास अनुमति नहीं है तो उसके लिये अुब्दल–बहा से मिलना सम्भव नहीं होगा, क्योंकि वे कुछ अत्यधिक महत्वपूर्ण लोगों के साथ भेंट कर रहे हैं। वह महिला उदास होकर मुड़ी और घर की सीढ़ियाँ उतर कर जाने लगी। उसका हृदय गहन निराशा से भर गया था ! लेकिन अचानक अब्दुल बहा की ओर से एक संदेशवाहक उसके पास आया और उसे लौट आने को कहा। मास्टर उससे मिलना चाहते हैं। अब्दुल बहा को सामर्थ्य और अधिकार भरे स्वर में यह कहते हुए सुना गया, "शीघ्र जाओ, शीघ्र जाओ, एक हृदय दुखी हुआ है, उसे मेरे पास ले आओ !"

ङ. खेल : "साथ साथ"

बच्चों को जोड़ों में बांट दें, और एक दूसरे के पास खड़ा करें। अब एक बच्चे के बायें पैर को दूसरे बच्चे के दाहिने पैर से बाँध दें। प्रत्येक जोड़े को एक निश्चित स्थान से दूसरे निश्चित स्थान तक चलने को कहें। इस खेल को और भी चुनौतीपूर्ण बनाने के लिये आप उनके मार्ग में छोटी छोटी बाधायें भी रख सकते हैं, जैसे कि टहनियाँ, और पत्थर। यह सुनिश्चित करें कि यह सबकुछ बिल्कुल सुरक्षित तरीके से किया जाये। वैकल्पिक रूप से, केवल चलने के बजाय, बच्चों के जोड़ों को मेंढकों की तरह कूदने, या घोड़ों की तरह सरपट दौड़ने को कहा जा सकता है।

च. रंग भरना : चित्र क्रमांक 13

छ. समापन प्रार्थनाएँ

पाठ 14

क. प्रार्थनाओं का पाठ करना और उन्हें कंठस्थ करना

सदैव की भांति, आप और आपके कुछ विद्यार्थी कुछ प्रार्थनाएं कक्षा के आरम्भ में करें। बच्चे तब पिछले पाठ में दी प्रार्थना कंठस्थ करना जारी रख सकते हैं।

ख. गीत (इसमें पिछले गीतों को दोहराया जाना भी शामिल है)

On the Wings of Detachment

```
CHORUS:

             C                              F    G
One day a bird was flying in the sky above
C                 F     G
Full of joy and confidence
C                F     G        C       F G
Soaring in this Paradise, his home


C                 F          G        C       F G
As he flew, his hunger began to grow
C                       F        G      C      F G
So he turned to the water and clay below
C                F
Down below
G         C         F
He was trapped
G         C
By his desire
         F          G           C      F G
And his wings got covered in mud
    C
Too heavy to fly,
           F     G          C       F G
He could not return to his home


CHORUS


Like that bird I belong to the heavens
So I will not cling to the earth below
I will not cling to riches
I will not cling to my wishes
I will not cling to anything but God
```

C G F G
So I will walk on the feet of detachment

C G F G
I will soar on the wings of detachment

C G F
I will free myself of all attachment

G C
To anything but God *(repeat)*

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

आज बच्चे अनासक्ति के गुण के बारे में एक उद्धरण कंठस्थ करेंगे जो कि पाठ की विषय–वस्तु है। आप विषय–वस्तु को निम्नलिखित तरीके से प्रस्तुत कर सकते हैं।

> ईश्वर ने इस दुनिया की हर अच्छी वस्तु को हमारे सुख और आनन्द के लिये बनाया है – जैसे कि अच्छा स्वास्थ्य, स्वादिष्ट भोजन, प्रेम और मित्रता, प्राकृतिक सौंदर्य, तथा मस्तिष्क की शक्ति, जिसके द्वारा हम अपने जीवन का स्तर ऊपर उठाने के लिये खोज और आविष्कार कर सकते हैं। हमें ईश्वर द्वारा प्रदान की गई समस्त अनुकम्पाओं का उपयोग करना चाहिये और जीवन के सुख के लिये उन्हें धन्यवाद देना चाहिये। लेकिन हमें सावधान रहना चाहिये कि कहीं हम इस संसार से आसक्त न हो जायें। हमारी आत्माओं को सदैव स्वतंत्र रहना चाहिये; स्वतंत्र और शक्तिशाली पंछियों की भाँति हमारी आत्माओं को पावनता के आकाश में ऊँची उड़ान भरना चाहिये। कितने दुख की बात होगी यदि कोई पक्षी ज़मीन पर रह जाये और केवल इसलिये उड़ान न भर सके क्योंकि वह अपने आसपास की वस्तुओं से आसक्त है। आईये हम निम्नलिखित उद्धरण को कंठस्थ करें :
>
> **"यह जान लो कि तुम्हारा सच्चा अलंकरण ईश्वर से प्रेम करने में, और उसके अतिरिक्त अन्य सभी से अनासक्त रहने में है ...।"**[115]

अलंकरण

1. मूर्ति को बहुत सुंदर आभूषण पहनाए गए हैं। मूर्ति का अलंकरण आभूषणों से किया गया है।

2. निबंध में अत्यंत सुंदर शब्द उपयोग किए गए हैं। निबंध का अलंकरण सुंदर शब्दों से किया गया है।

अनासक्त

1. हेलगी अपने मित्रों के साथ तैरने जाना चाहता था। फिर भी, वह अपनी छोटी बहन के साथ घर पर रह गया ताकि उसकी माँ खरीदारी करने जा सके। हेलगी अपनी योजना से अनासक्त रहा ताकि वह अपने परिवार की सहायता कर सके।

2. स्कूल का वर्ष समाप्त होने पर, अंजली ने सोचा कि अपनी शिक्षिका के लिए फूल ले जाना अच्छा रहेगा। उसकी बहन ने सुझाव दिया कि इसकी जगह वे केक बनाते हैं। अंजली सोचती है कि यह अच्छा सुझाव है। वह अपने विचार से अनासक्त है।

घ. कहानी

एक दिन, दो लोग, जो लंबे समय से मित्र थे, चाय पर आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा कर रहे थे। इनमें से एक ने अपने जीवन में काफी धन एकत्र किया था और किसी चीज की कमी नहीं थी। दूसरे के पास काफी कम धन था। दूसरे ने अपने धनी मित्र से कहा, मैं पवित्र भूमि की यात्रा करना चाहता हूँ। पहले मित्र ने कहा, अति सुंदर सुझाव है!, मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा। दोनों ने चाय के प्याले रखे और तुरंत पवित्र भूमि की ओर चल पड़े।

वे कुछ ही दूर गये थे कि रात होने लगी। गरीब मित्र रुक गया और बोला, मित्र, रात बिताने अपने घरों को चलें। आराम से सो कर सुबह हम लोग फिर चल सकते हैं। पहले ने कहा श्वापस क्यों चलें?, दूसरे ने उत्तर दिया, हम लोग पवित्र भूमि जा रहे हैं जो पैदल चलने के लिए बहुत दूर है, मुझे जाने दो, मैं अपना गधा ले कर आता हूँ, जिसे मैं नहीं छोड़ सकता।

धनी मित्र ने दूसरे से कहा, शायद तुम इस यात्रा पर मेरे साथ जाने के इच्छुक नहीं हो। उल्लास के साथ, मैंने अपना सब कुछ त्याग दिया है–घोड़े, जमीन, कीमती वस्त्र–पर किसी हानि का अनुभव नहीं करता। पवित्र भूमि में कुछ क्षण बिताने से अधिक अनुकम्पा क्या हो सकती है। क्या तुम अपना गधा भी नहीं छोड़ सकते? दुखद, वह अपनी एकमात्र संपत्ति भी न छोड़ सका। उसने अपने मित्र का साथ छोड़ दिया जो कि पवित्र भूमि की राह पर चलता रहा और पीछे मुड़ कर नहीं देखा।

ङ. खेल : "चक्र"

बच्चों से कहें कि एक घेरे में तिरछे हो कर इस तरह खड़े हो जायें कि प्रत्येक बच्चे का बाँया हाथ वृत्त के अंदर की ओर हो ओर वृत्त के केन्द्र में मिल रहा हों। अब वे एक चक्र के समान और उनके हाथ पहिये की तीलियों के समान दिखायी देने चाहिये। इसके बाद बच्चों से कहें कि अब वे इस केन्द्र के इर्दगिर्द एक चक्र की तरह घूमें। जब वे ऐसा कर चुके हों, तो उनसे कहें कि वे उस क्षेत्र में घूमें जहाँ कक्षा आयोजित की जा रही है, और इस दौरान उन्हें चक्र समान बने रहना है। इस खेल को और चुनौतीपूर्ण बनाने के लिये वे कूदने और उछलने का प्रयास कर सकते हैं।

आप इस खेल को और चुनौतीपूर्ण बना सकते हैं। बच्चों को जमीन पर वृत्त में बैठने और अपने पैरों को सीधा करने को कहें ताकि उनके पैर केंद्र में एक दूसरे से जुड़े रहें। तब वे अपनी हथेली अपनी कमर के पास जमीन पर रखें। अब वे चक्र घुमाने के लिए तैयार हैं। ऐसा करने के लिए, उन्हें अपने हाथों से अपने को उठाना और एक कदम दायीं ओर चलना होगा। उन्हें एक एक कदम ऐसे ही चलना होगा, अपने पैरों को केंद्र में रखते हुए, जब तक कि चक्र पूरा ना हो जाए।

च. रंग भरना : चित्र क्रमांक 14

छ. समापन प्रार्थनाएँ

पाठ 15

क. प्रार्थनाओं का पाठ करना और उन्हें कंठस्थ करना

कक्षा के आरम्भ में प्रार्थनाएँ कर लेने के बाद, पाठ 13 में शुरू की गयी प्रार्थना कंठस्थ करने के बच्चों के प्रयासों में आप उनकी सहायता कर सकते हैं

ख. गीत (इसमें पिछले गीतों को दोहराया जाना भी शामिल है)

मुझे मेरा भाग प्रदान कर

मुझे मेरा भाग प्रदान कर
हे परमेश्वर, हे परमेश्वर
मुझे मेरा भाग प्रदान कर
जैसे भी तू चाहे हे ईश्वर

जब सब कुछ ठीक चलता हो
तब संतुष्ट रहना है आसान
जब स्वास्थ्य अपना अच्छा हो
तब संतुष्ट रहना है आसान
लेकिन इससे चुनौती भरा है
परेशानियों मे संतुष्ट रहना
कठिनाई में धीरज रखना
और शायद गीत गाना

समूहगान

जब से मास्टर एक बालक थे
सहे उन्होंने बहुत अपमान
जीवन के आरम्भ से ही
मिल सका ना चैन उन्हें ना मिला सका उन्हें आराम
लेकिन रहते थे वे संतुष्ट और शांत सदा
चिंताग्रस्त नहीं रहते थे कभी
करते वे प्रभु पर विश्वास
करते प्रभु इच्छा को स्वीकार
धीरज से आगे बढ़ते हर बार

समूहगान

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

नीचे कुछ विचार दिए गए हैं जो आपको पाठ की विषय–वस्तु और बच्चों द्वारा कंठस्थ की जाने वाले उद्धरण को प्रस्तुत करने में सहायता करेंगे।

अब्दुल बहा प्रत्येक परिस्थिति में ईश्वर–इच्छा से संतुष्ट रहते थे। वे सभी से कहते थे कि जब सबकुछ ठीक चल रहा हो, जब व्यक्ति स्वस्थ्य और सुखी हो तब संतुष्ट रहना बहुत आसान है। लेकिन परेशानी में, बीमारी और कठिनाई में संतुष्ट रहना अधिक कठिन है। यद्यपि अब्दुल बहा का जीवन कष्टों से भरा था, फिर भी वे कभी निराश नहीं हुए। सबसे गंभीर और कठिन दौर में भी, वह संतुष्ट तथा ईश्वर के प्रति कृतज्ञ रहते थे। वह सदैव आनंदित और आशावान रहते थे। आईये हम निम्नलिखित उद्धरण कंठस्थ करें ताकि ईश्वर–इच्छा में संतुष्ट रहने का महत्व सदा कंठस्थ रखें :

"समस्त महिमा का स्रोत वह सब कुछ स्वीकार करना है जो उस स्वामी ने प्रदान किया है, और उसमें संतुष्ट रहना है जो उस ईश्वर ने आदेशित किया है।"[116]

महिमा

1. स्कूल में विज्ञान की बातें सीखने के बाद पोह लेंग उन वैज्ञानिकों के समूह में शामिल हो गयी जिन्होंने कई महत्वपूर्ण खोजें की थीं। उसके काम ने उसके परिवार के नाम को महिमा प्रदान की।

2. स्वी को प्रकृति को देखना पसंद था – अर्थात पर्वत, पेड़, और सागर – को देखना बहुत अच्छा लगता था। जब भी वह दुनिया की सुन्दरता को देखती थी तो सभी वस्तुों के रचयिता ईश्वर के प्रताप और महानता के बारे में सोचने लगती। प्रकृति को देख कर स्वी को ईश्वर की महिमा की याद आती थी।

प्रदान करना

1. अपने स्नेहमय परिवार के लिये, अपने अच्छे स्वास्थ्य के लिये, तथा ईश्वर द्वारा प्रदान की गयी सभी अच्छी वस्तुओं के लिये, पाओलो ईश्वर को रोज़ धन्यवाद देता है। ईश्वर द्वारा प्रदान किये गये अनेकों अनुकम्पाओं के लिये पाओलो कृतज्ञ है।

2. सूरज के बिना पृथ्वी अंधकारमय और शीतल हो जाती, और इस पर कोई भी वस्तु जीवित न रह पाती। सूरज दुनिया को रोशनी और ऊष्मा प्रदान करता है।

आदेशित करना

1. राजा ने घोषणा की कि उसके जन्मदिन पर देश का कोई भी व्यक्ति काम नहीं करेगा। राजा के जन्मदिन को अवकाश आदेशित किया गया।

2. एक क्षेत्र में कई महीनों तक बारिश नहीं हुयी, और ग्राम–परिषद ने लोगों से कहा कि वे कम पानी मे अपना काम चलायें। ये प्रतिबंध ग्राम–परिषद द्वारा पानी की बचत के लिये आदेशित किये गये थे।

घ. कहानी

एक शाम, अब्दुल बहा कुछ बहाइयों के साथ सुंदर शहर लंदन में घूम रहे थे। वे एक सड़क पर टहल रहे थे जिसके दोनों ओर वहाँ तक लैम्प जल रहे थे जहां तक नजर जाती थी। प्रिय मास्टर के साथियों को ऐसा लगा जैसे उनके हृदय दूसरे जगत में चले गए थे।

अब्दुल बहा ने कहा, मैं इस दृश्य से अत्यंत प्रसन्न हूँ। प्रकाश अच्छा है, बहुत अच्छा। अक्का की कैद में बहुत अंधेरा था।

अब्दुल बहा से प्रेम करने वाले मित्रों के इस छोटे समूह को अक्का की कारानगरी में उनके कारावास जहां उन्होंने अपने प्रिय पिता, बहाउल्लाह के साथ इतने वर्ष बिताये थे, की याद कर अत्यंत दुख पहुँचा। यह अत्यंत स्वागत योग्य स्थान नहीं था, जहां उनके परिवार ने अत्यंत कष्ट उठाए। उन्होंने कहा, हम प्रसन्न हैं, इतने प्रसन्न हैं कि अब आप स्वतंत्र हैं।

इस पर अब्दुल बहा ने प्रत्युत्तर दिया "मैं उस कारावास में प्रसन्न था, क्योंकि वे दिन सेवा में बिताए गए थे। महानतम कारावास स्वः का कारावास है। देखो, अगर हम मात्र स्वयं के बारे में सोचते हैं और अपने आस पास वालों का नहीं–तब हम वास्तव में कैद में हैं, हम निश्चित ही कष्ट में हैं!" अब्दुल बहा हर समय संतुष्ट थे, क्योंकि वह ईश्वर तथा मानवता की सेवा की राह में चल रहे थे। इसीलिए, अक्का में कैदी के रूप में बिताए अंधकारपूर्ण दिवसों में भी, उनकी अदम्य चेतना का प्रकाश, दूसरों को ऊष्मा और आराम देता हुआ दिखाई दिया।

ङ. खेल : "मूर्तिकार"

दर्शाएं जैसे कि आप मूर्तिकार हैं और बच्चे एक कलाकृति बनाने में आपकी सहायता करेंगे। एक बच्चे को कक्षा के सामने आने को कहें और आप एक ऐसी मुद्रा बनाएं – उदाहरण के लिए, बाँहों को फैलाते हुए आगे की ओर झुकना। तब एक–एक कर अथवा कई को एक साथ, अन्य बच्चों को समूह के समक्ष आने को कहें और उनके सामने भी मुद्रा भंगिमाएं बनाएं जिनकी वे नकल कर सकें। एक बार जब सभी को अपनी भंगिमाएं पता चल जाएँ, उन्हें एक साथ आकर वह कलाकृति बनाने को कहें। अंत में आप स्वयं को भी इस समूह में सम्मिलित कर कलाकृति पूरी करें।

अपने विद्यार्थियों को जोड़ों में बाँट कर आप इस खेल को जारी रख सकते हैं। प्रत्येक जोड़े को बारी बारी से इसे करने दें। एक मूर्तिकार बनेगा और दूसरा बताई गई भंगिमाएं बनाएगा।

आप इस खेल में कुछ फेर–बदल भी सोच सकते हैं। उदाहरण के लिए, आप कुछ प्रश्न पूछ सकते हैं "जैसे क्या तुम बाड़ बन सकते हो?" अथवा "क्या तुम बगीचा बन सकते हो?" बच्चे तब अपने को इस रूप में दर्शाएंगे।

च. रंग भरना : चित्र क्रमांक 15

छ. समापन प्रार्थनाएँ

पाठ 16

क. प्रार्थनाओं का पाठ करना और उन्हें कंठस्थ करना

इस कक्षा तक, बच्चे पाठ 13 में बतायी गई प्रार्थना कंठस्थ कर गाना सीख चुके होंगे, जिस पर पुनः विचार आप प्रारम्भिक प्रार्थनाओं के बाद उनके साथ कर सकते हैं।

ख. गीत (इसमें पिछले गीतों को दोहराया जाना भी शामिल है)

हम बूंदें हैं

हम बूंदें हैं
हम बूंदें हैं।

एक सागर की
एक सागर की

हम लहरें हैं
हम लहरें हैं

एक सागर की
एक सागर की

आओ हम सब हिल मिल जाएँ
आओ हम सब हिल मिल जाएँ
और एकता खोज कर लाएं
इसको ही अपना जीवन बनाएं

हम पुष्प हैं
एक बगिया के
हम पत्ते हैं
एक वृक्ष के

सारी धरती
एक विश्व है
मानव एक है
देखो इसको

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

आज की कक्षा में बच्चे जिस उद्धरण को कंठस्थ करने वाले हैं, उसे प्रस्तुत करने में निम्नलिखित विचार आपकी सहायता करेंगे।

ईश्वर ने सम्पूर्ण मानवजाति को एक परिवार की भाँति मिलकर रहने के लिये उत्पन्न किया। यदि हम इस भाँति रहना चाहते है तो हम अपने मतभेदों को अपने मध्य न आने दें, अपने हृदयों में दयालुता और प्रेम लिये हमें प्रत्येक धर्म, जाति, राष्ट्र, और वर्ग के लोगों के साथ मिलजुल कर रहना चाहिये। इस बात को कंठस्थ रखने में हमारी सहायता के लिये, आईये हम बहाउल्लाह के निम्नलिखित उद्धरण को कण्ठस्थ करें :

"धन्य है वह जो सभी मनुष्यों से पूर्ण दया और प्रेम के साथ मिलता है।"[117]

मिलना

1. सफेद बगुले और श्यामापक्षी दो ऐसे पक्षी होते हैं जो उपवन में रहते हैं। इन्हें अक्सर साथ–साथ देखा जा सकता है। ये दो प्रकार के पक्षी आपस में मिलना पसंद करते हैं।

2. प्रार्थना सभाओं में विभिन्न जातियों के लोग अत्यंत प्रेम व एकता के साथ नियमित आते हैं। वे आपस में मिलना पसंद करते हैं।

घ. कहानी

हमारी पिछली कुछ कहानियों से आपको पता है कि जब अब्दुल बहा पहली बार अक्का पहुंचे तो अनेक लोगों ने उनके साथ दुर्व्यवहार किया। वे बहाइयों के प्रति निष्ठुर थे और उनसे बात नहीं करना चाहते थे। शीघ्र ही, हालांकि, उन्हें पता चल गया कि बहाई प्रेमपूर्ण और दयालु होते हैं, और धीरे–धीरे शहर के अधिकांश लोगों ने उन्हें वापस दयालुता दिखनी आरम्भ कर दी। लेकिन अभी भी कुछ थे जो अपने गुस्से तथा घृणा से चिपके हुए थे।

अब एक दिन, एक व्यक्ति ने, जो अपने हृदय में अब्दुल बहा के प्रति घृणा रखे हुए था, लोगों को उनकी महानता तथा सहृदयता की प्रशंसा करते हुए सुना। यह व्यक्ति अत्यंत क्रोधित हो गया। उसने गुस्से में कहा कि वह सबको दिखाएगा कि वे जिसकी प्रशंसा कर रहे हैं, वह उतना अच्छा नहीं है। गुस्से से भरे हृदय के साथ वह वहाँ से चला गया। उसे पता था कि अब्दुल बहा उस समय मस्जिद में प्रार्थना करते पाए जाएंगे। प्रिय मास्टर पर हाथ उठाने के लिए वह वहाँ भागते हुए गया,। परन्तु अब्दुल बहा ने शांति और सौम्यता के साथ उसे देखा। प्रेम से उन्होंने ईश्वर की शिक्षाओं के बारे में बताया कि हमें अपने अतिथियों के साथ उदार होना है, उनके प्रति भी जो हमसे भिन्न हैं। इस पर, उस व्यक्ति ने पहचाना कि अब्दुल बहा और अन्य बहाई वास्तव में, उसके आवास, अक्का में अतिथि की भांति हैं। एक उदार मेजबान की भांति उसे उनका स्वागत प्रेम से करना चाहिए तथा दयालुता से पेश आना चाहिए।

ङ. खेल : "छिपा हुआ गुण"

बच्चों से कहें कि वे एक घेरा बनाएँ और अपने दोनों हाथों को अपने सामने फैला कर खड़े हो जायें। इसके बाद आप अपनी मुठ्ठी में एक छोटी वस्तु – जेसे कि एक पत्थर – लिये घेरे के बीच में खड़े हो जायें। सिक्का या वह वस्तु एक गुण दर्शाता है, जैसे कि, "दयालुता"। फिर आप इस घेरे में चक्कर लगाते हुए, प्रत्येक बच्चे के हाथों पर अपना हाथ रखते जायें और उदाहरण के लिये, कहें कि : "जॉन दयालु है, मार्था दयालु है, डर्वी दयालु है" इत्यादि। जब आप अपना हाथ बच्चों के हाथों पर रखें तो प्रत्येक बच्चे को ऐसे दिखाना है जैसे आपने वह वस्तु उसी के हाथ में रखी हो। वास्तव में आपको किसी एक बच्चे के हाथ में वस्तु रख़नी है। जब आप पूरे घेरे का चक्कर लगा चुके हों, तो किसी एक बच्चे को यह कहते हुए कि, उदाहरण के लिये : "केन्जी बहुत दयालु है," यह बताना है कि सिक्का किसके हाथ में है। इसके बाद केन्जी को अपना हाथ खोल कर दिखाना होगा कि सिक्का सचमुच उसके हाथ में है या नहीं। सिक्का किसके पास है यह पता लगाने के लिये एक बच्चे को तीन मौके दिये जाने चाहिये, जिसके बाद इस खेल को किसी दूसरे गुण के साथ दोहराया जा सकता है।

च. रंग भरना : चित्र क्रमांक 16

छ. समापन प्रार्थनाएँ

पाठ 17

क. प्रार्थनाओं का पाठ करना और उन्हें कंठस्थ करना

अगले चार पाठों में, बच्चे नीचे दी प्रार्थना कंठस्थ कर गाना सीखेंगे, और वे इसे प्रोत्साहन का स्रोत पाएंगे यदि आप प्रत्येक कक्षा का आरम्भ एक नई कंठस्थ की प्रार्थना से करेंगे, जैसी कि भाग 16 में सुझाव दिया गया है। जब कुछ विद्यार्थी प्रारम्भिक प्रार्थना में आपका साथ दे चुके हों, आप इस प्रार्थना को सदैव की भांति अवगत करा सकते हैं।

> **"तेरा नाम ही मेरा आरोग्य है, हे मेरे ईश्वर, तेरा स्मरण ही मेरी औषधि है, तेरा सामीप्य ही मेरी आशा है, तेरा प्रेम ही मेरा सहचर है। मुझ पर तेरी अनुकंपा ही मेरी नीरोगता तथा इहलोक तथा परलोक में मेरी आपद सहायक है। वस्तुतः, तू ही है सर्वप्रदाता, सर्वज्ञ एवं सर्वप्रज्ञ।"[118]**

ख. गीत (इसमें पिछले गीतों को दोहराया जाना भी शामिल है)

साहस का स्रोत

समूहगानः

साहस और शक्ति का स्रोत है
प्रसार ईश्वर के शब्द का
साहस और शक्ति का स्रोत है
उसके प्रेम मे दृढ़ता

केवल अपने बारे में ना सोचो
साथ दो उसका सही है जो
ज़रूरतमंदों की करो सुरक्षा
प्रभु की शक्ति पर रखो भरोसा

ईश्वर के शब्द का करो प्रचार
दिखाओ साहस अपने कर्मों में
चलते रहो मार्ग पर उसके
ले जाता जो खुशियों के द्वार

समूहगान

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

कंठस्थ करने के लिए उद्धरण और पाठ की विषय–वस्तु को प्रस्तुत करने में नीचे दिया कथन आपकी सहायता करेगा।

> साहसी होने का अर्थ है उसका समर्थन करना जो सही है चाहे ऐसा करने वाले हम अकेले ही क्यों ना हों, उन लोगों की रक्षा करना जिन्हें हमारी सहायता की आवश्यकता है, चाहे उसके लिये हमें असुविधाओं का सामना ही क्यों न करना पड़े, और सत्य कहना, चाहे यह हमें

कठिनाइयों की ओर ही क्यों ना ले जाए। मुसीबतों का शांति और धैर्य से सामना करने में साहस की आवश्यकता होती है। साहस हमें ईश्वर से प्रेम करने और इससे परे उसको प्रसन्न करने की हमारी अभिलाषा से प्राप्त होता है। यह कंठस्थ रखने में हमारी सहायता के लिये, कि हमें जीवन की हर परिस्थति का सामना साहस के साथ करना चाहिये, आईये हम निम्नलिखित उद्धरण कंठस्थ करें :

"साहस और शक्ति का स्रोत है ईश्वर के शब्द का प्रसार, और उसके प्रेम में दृढ़ता।"[119]

स्रोत

1. क्योंन्गामी घाटी के एक गाँव में रहती है। गाँव का पानी पास के पर्वतों की पिघली बर्फ से उपलब्ध होता है। गाँव के पानी का स्रोत पर्वत शिखरों की बर्फ है।

2. श्रीमती पुटर्स के तीन प्रिय और शिष्ट बच्चे हैं। उनके बच्चे उनके लिये आनन्द और प्रसन्नता का स्रोत हैं।

प्रसार

1. शोआ के दो मित्रों में बहस होने लगी और वे आपस में नाराज हो गए। शोआ ने एक दूसरे के दृष्टिकोण को देखने और शांति बनाये रखने में एक–दूसरे की सहायता की। शोआ सदैव अपने मित्रों के मध्य शांति और समझ का प्रसार करती है।

2. बच्चों को उनके स्वास्थ्य के लिए अच्छे खाद्‌य पदार्थो के बारे में सिखाने के लिए एक नर्स कक्षा में जाती है। नर्स स्वस्थ भोजन का प्रसार करती है।

दृढ़ता

1. प्रोमिला जानती थी कि वह एक डॉक्टर बनना चाहती है। स्कूल की पढ़ाई में वह हमेशा मेहनत किया करती थी और अपने खाली समय में अस्पताल में स्वयंसेविका के रूप में कार्य करती थी। एक डॉक्टर बनने के अपने निर्णय में उसने दृढ़ता दिखायी।

2. ज़्वोनडाय बहुत दूर के एक गाँव में एक स्कूल की स्थापना करने गया। यद्यपि उसे अपने परिवार की याद आती थी और उसे कई कठिनाईयों का सामना भी करना पड़ा, फिर भी उसने दृढ़ता दिखायी और कई वर्षों तक गाँव में रह कर शिक्षकों का प्रशिक्षण किया और बच्चों के साथ काम किया।

घ. कहानी

अली–अस्कर फारस के एक सौदागर थे। जब वे बहाई बने, तो उन्होंने प्रभुधर्म के विरोधियों के हाथों बहुत कठिनाईयाँ सहीं। कुछ ही समय में वे अपना सबकुछ गवाँ चुके थे, फिर भी, अली अस्कर मायूस नही हुए। जब उन्होंने देखा कि वे अपने देश में अपनी आजीविका नही कमा सकते थे, तो उन्होंने ऐड्रियानोपल जाने का निर्णय लिया, जो पड़ोसी देश का एक शहर था।

यद्यपि एड्रियानोपल में उनके पास बहुत ज्यादा कुछ नहीं था, फिर भी वे व्यापार के लिये थोडा बहुत सौदा जुटाने में सफल हो गये। लेकिन इससे पहले कि वे एक भी वस्तु बेच पाते,

कुछ डाकुओं ने उन पर हमला किया और उनके पास जो कुछ भी था सब लूट कर ले गये, और अब एक बार फिर अली अस्कर के पास कुछ नहीं बचा था।

कुछ ही समय बाद उन लुटेरों को गिरफ्तार कर लिया गया, और उनके द्वारा लूटा गया बहुत सारा धन जब्त कर लिया गया। इतनी सारी दौलत की चकाचौंध से चकित हो कर स्थानीय अधिकारी ने सोचा कि क्यूँ न वह यह सारी धन–दौलत अपने पास रख ले। उसने अली अस्कर को अपने दफ़्तर में बुलवाया और उन्हें समझाते हुए कहा :

"अली अस्कर," वह बोला, "ये डाकू बहुत अमीर हैं। सरकार को भेजी जाने वाली मेरी रिपोर्ट में मैंनें लिखा है कि चोरी किया गया माल बहुत अधिक था। इसलिये तुम्हें मुकदमे की सुनवाई में हाज़िर होना होगा और जो कुछ मैंने लिखा है उसकी गवाही देनी होगी।" उस अफसर ने सोचा कि इस तरह पूरा पैसा अली अस्कर को लौटा दिया जायेगा और उसे दोनों आपस में बाँट लेंगे।

अली अस्कर जानते थे कि वे ऐसी योजना में कभी शामिल नहीं हो सकते थे। "महामहिम खान साहब," उन्होंने उत्तर दिया, "चोरी किया गया माल बहुत कम था। मैं ऐसी रिपोर्ट कैसे दर्ज करा सकता हूँ जो सच न हो ? जब वे मुझसे पूछेंगे, तब मैं तथ्यों को बिल्कुल सही–सही बयान कर दूँगा। मैं इसे और केवल इसे ही अपना कर्तव्य समझता हूँ।"

अफसर ने अली अस्कर को समझाने की बहुत कोशिश की। "देखो, यह हमारे लिये एक सुनहरा मौका है," वह बोला, "हम दोनों को इससे लाभ हो सकता है। ऐसा मौका जीवन में शायद ही कभी मिलता है, इसे अपने हाथ से मत जाने दो !"

लेकिन अली अस्कर ने यह कहते हुए एक बार फिर इन्कार कर दिया, कि "खान, मैं ईश्वर को क्या जवाब दूँगा ? मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो। मैं केवल सच ही कहूँगा और सच के सिवाय कुछ नहीं कहूँगा।"

अब वह अफसर नाराज़ हो गया। उसने सोचा यदि अली अस्कर उसके मंसूबे में शामिल न हुआ तो उसके किये धरे पर पानी फिर जायेगा और वह उस दौलत को गँवा बैठेगा जो इस समय उसके हाथों में थी। इसलिये वह इस आशा के साथ अली अस्कर को धमकाने लगा कि उसे डराने–धमकाने से वह उसे अपने कपट–प्रबंध में सहयोग करने के लिये मजबूर कर देगा। वह बोला, "मैं तुम्हें जेल में डाल दूँगा, मैं तुम्हें निर्वासित कर दूँगा; ऐसी कोई यातना नहीं बचेगी जो मैं तुम्हे नही दूँगा।" और फिर उसने अली अस्कर से कहा, कि यदि वह सहमत न हुआ, तो वह उन्हें फारस वापस भेज देगा।

अली अस्कर केवल मुस्कुराते रहे। "जनाब–ए–खान", वे बोले, "मेरे साथ जैसा चाहें वैसा व्यवहार कीजिये; लेकिन मैं उससे नहीं फिरूँगा जो सच है।"

ङ. खेल : "हाँ या ना"

खेल का आरम्भ बच्चों से एक बड़ा घेरा बनाने को कह कर करें और आप स्वयं केंद्र में रहें। अब बच्चों को बताएं कि आप अनेक कथन कहने जा रहे हैं। कुछ सही होंगे, कुछ गलत। उन्हें बताएं, कि यदि कथन सही है तो वे बोलें "हाँ" और केंद्र की ओर एक बार कूदें। यदि यह गलत है तो, वे जोर से बोलें "ना" और पीछे की ओर कूदें।

आपके सारे कथन उन बातों पर आधारित होने चाहिए जिन्हें बच्चे आसानी से समझ सकें। "हाँ" के कथन निम्न प्रकार हैं : "सूर्य प्रकाश देता है। वृक्ष बीज से उगते हैं। पर्वत विशाल होते हैं।" आप यह भी कथन कह सकते हैं कि बच्चे क्या पहने हुए हैं, जैसे "सेरा नीली कमीज पहने है।" अथवा वे अपने चारों ओर क्या देखते हैं, जैसे "वहाँ पर दो कुर्सियाँ हैं।"

"ना" कथन के कुछ उदाहरण हैं : "वर्षा ऊपर की ओर होती है।" "मछलियाँ उड़ती हैं।" "पत्थर पैरों पर चलते हैं।" पुनः, आप अपने चारों ओर से भी कुछ गलत कथन बना सकते हैं। कंठस्थ रहे कि आप गलत की तुलना में अधिक सही कथंन बोलेंगे, ताकि खेल के अंत तक बच्चे केंद्र में आप तक पहुँच सकें।

च. रंग भरना : चित्र क्रमांक 17

छ. समापन प्रार्थनाएँ

पाठ 18

क. प्रार्थनाओं का पाठ करना और उन्हें कंठस्थ करना

प्रारम्भिक प्रार्थनाओं के बाद, बच्चों को पिछले पाठ में बताई गई प्रार्थना को कंठस्थ कर गाना सीखने में समय बिताना चाहिए।

ख. गीत (इसमें पिछले गीतों को दोहराया जाना भी शामिल है)

आशावान बनें

कल क्या होगा हमें क्या पता
कोई भी न बता सकता
रुकता नहीं कभी उसके आशीष का प्रवाह
ईश्वर में विश्वास हमें दिखाता है रास्ता ...

आशावान बनें हम आशावान बनें
हर जगह हम ईश्वर की कृपा तलाश करें
उगेगा सूरज आसमान को भर देगा
अंधियारा धरती का सारा हर लेगा
आशा भरी निगाह को वह हर जगह दिखता ...

आशावान बन के हम करते रहें प्रयास
फूल बहारों के आयेंगे, रखें सदा विश्वास
कभी नहीं रुकती है उसकी दिव्य कृपा की धारा
वो हर चीज में भर रहा है जीवन प्यारा प्यारा
उसी के दम से ये जग सारा फूलता फलता ...

शांति और खुशी के लिए सेवा सदा करं
सेवा के वरदान से आत्मा को चमकने दें
पल भर भी विश्वास प्रभु का हम न छोडें
आशावान बन के सदा कोशिश को जोडें
कृपा प्रभु की कभी न रुकती, याद रखें सदा

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

नीचे कुछ विचार दिए गए हैं जिनका उपयोग उद्धरण का परिचय कराने में आप कर सकते हैं जिसे बच्चे कक्ष में कंठस्थ करेंगे।

ईश्वर का प्रेम सदैव हमारे साथ है। वह हमें कभी अकेला नहीं छोड़ता और जीवन भर हमारी सहायता करने का वायदा करता है। यद्यपि हम नहीं जानते कि एक दिन से अगले दिन क्या होगा, हम ईश्वर पर भरोसा करते हैं और कंठस्थ रखते हैं कि उसके उपहार और अनुकम्पायें हमारे चारों ओर हैं और इसलिए जब हम भविष्य की ओर देखते हैं तो हम आशान्वित होते हैं, इस विश्वास के साथ कि हम उसकी अनंत कृपाओं का भाग प्राप्त करेंगे। आशा से भरे हृदयों के साथ, हम लगातार यह अपेक्षा करते हैं कि हम पर ईश्वर की कृपा आयेगी। आशावादिता के महत्व को कंठस्थ रखने में हमारी सहायता करने के लिए, आइए अब्दुल बहा के इन शब्दों को कंठस्थ करें :

"ईश्वर में अपना भरोसा कभी ना खोओ। सदा आशावान रहो, क्योंकि मनुष्य पर ईश्वर की अनुकम्पाओं का प्रवाह कभी नहीं थमता।"[120]

भरोसा

1. एडवर्ड को एक समस्या हुई और वह सहायता के लिए हंग वेई के पास गया। एडवर्ड जानता है कि हंग वेई उसकी सहायता करने का हर संभव प्रयास करेगा। एडवर्ड को हंग वेई पर भरोसा है।

2. निर्मला अपने घर की छत की मरम्मत करना चाहती है लेकिन वह अकेले नहीं कर सकती। निर्मला के मित्र उसकी सहायता के लिए अगले दिन आने की पेशकश करते हैं। उसे भरोसा है कि वे वायदे के अनुसार आयेंगे और सब कुछ तैयार कर लेंगे।

आशावान

1. आइसोफिना एक धूप वाली जगह पर बीज बोता है और हर दिन उसे पानी देता है। वह इसे बढ़ता हुआ देखने के लिए उत्सुक है। आइसोफिना आशावान है कि बीज एक दिन सशक्त वृक्ष बनेगा

2. मैट का एक अच्छा मित्र किसी दूसरे शहर में रहने चला गया। मैट को अपने मित्र की बहुत याद आती थी, लेकिन वह आशावान था कि वे जल्द ही फिर मिलेंगे।

अनुकम्पा

1. हर रात जब लिलियाना प्रार्थना करती है, तो वह उन कई वस्तुों के बारे में सोचती है जिन्हें पाना उसका सौभाग्य है। वह अपने माता–पिता, अपने मित्र, अपने शिक्षक, और उस बिस्तर के बारे में भी सोचती है जिस पर वह सोती है। लिलियाना उन अनुकम्पाओं के लिये सदा कृतज्ञ रहती है जो उसे प्राप्त हुई हैं।

2. रेज़ा के अनेक मित्र और रिश्तेदार हैं जो उसे प्रेम करते हैं और उसके विकास में सहायता करते हैं। रेज़ा उनकी अनुकम्पाओं और प्रेम के लिये कृतज्ञ है।

थमना

1. जब ताहिर नल बन्द कर देता है, तो पानी का बाहर निकलना बन्द हो जाता है; पानी का बहना थम जाता है।

2. बादलों से घिरे हुए दिनों में भी, सूरज की किरणें पृथ्वी को ऊष्मा देती हैं। सूरज की किरणों का धरती पर पहुँचना कभी नहीं थमता।

घ. कहानी

एक समय की बात है, एक व्यक्ति था जिसके पास कोई घर नहीं था। वह थेम्स नदी के किनारे अकेला रहता था। वह बहुत उदास रहता और जीवन में खुशियाँ पाने की पूरी उम्मीद खो बैठा था। एक दिन, जब वह एक दुकान के पास से गुज़र रहा था तो उसकी नज़र अखबार में छपी एक तस्वीर पर पड़ी। वह अब्दुल बहा की तस्वीर थी। वह व्यक्ति अचानक वहीं थम गया, और उनके चेहरे को देखता रह गया। उसने अब्दुल बहा को पहले कभी नहीं देखा था और वह नहीं जानता था कि वे कौन है, लेकिन वह इतना ज़रूर जानता था कि उसे उनसे मिलना है। अखबार में उनके घर का पता दिया हुआ था, इसलिये उस व्यक्ति ने इस आशा में पैदल चलना शुरू कर दिया कि वह उस पते पर उनसे मिलने पहुँच जायेगा। रास्ता बहुत लम्बा था – लगभग 50 किमी – लेकिन वह तब तक चलता रहा जब तक कि वह उनके घर तक नहीं पहुँच गया।

आखिरकार जब वह वहाँ पहुँचा तो वह थका और भूखा था। घर की मालकिन ने उसे बड़ी दयालुता के साथ अंदर आमंत्रित किया, उसे कुछ भोजन दिया, और कुछ देर आराम करने को कहा। जब वह आराम कर रहा था, तब उसने उस महिला को अपनी कहानी सुनायी और फिर उससे पूछा कि क्या अब्दुल बहा वहाँ हैं। महिला ने उसे आश्वस्त किया कि हाँ, वे यहाँ हैं।

उसने पूछा। "क्या वे मुझसे मिलेंगे ?" "मुझ जैसे से भी ?"

जैसे ही उस महिला ने उत्तर दिया कि उसे पूरा विश्वास था कि अब्दुल बहा उससे मिलेंगे, वैसे ही स्वयं मास्टर यानी अब्दुल बहा दरवाज़े पर दिखायी दिये। वह आदमी उठकर खड़ा हो गया, और उसे गले लगाने के लिये अब्दुल बहा ने अपने हाथ आगे बढ़ा दिये। ऐसा लग रहा था जैसे वह आदमी एक पुराना मित्र हो जिसके आने का अब्दुल बहा को बहुत व्यग्रता से इन्तज़ार था। अब्दुल बहा ने बड़े प्रेम और दया के साथ उसका स्वागत किया और उसे अपने पास बैठने को कहा।

इसके बाद, अब्दुल बहा, जो हमेशा जानते थे कि लोगों के हृदयों की खोयी हुयी खुशियों को दुबारा कैसे लाया जाये, उस आदमी से बातें करने लगे। उसे यह बात याद दिला कर, कि वह ईश्वर के साम्राज्य में धनी है, अब्दुल बहा ने उसे उसकी उदासी त्यागने के लिये प्रोत्साहित किया। जैसे–जैसे अब्दुल बहा उस आदमी पर दया का प्रवाह करते गये, वैसे–वैसे उनके राहत भरे शब्दों ने उस आदमी के हृदय के घावों को भर दिया और उसे बल प्रदान किया। धीरे–धीरे उसकी उदासी दूर हो गयी। जाने से पहले, उस व्यक्ति ने अब्दुल बहा से कहा कि अब वह अपनी गरीबी को अपनी उदासी का कारण नहीं बनने देगा; बल्कि वह खेतों में काम करेगा और पैसे बचायेगा ताकि वह एक छोटी सी ज़मीन खरीद सके, जिस पर वह बाज़ार में बेचने के लिये गुलनार के फूल उगायेगा। इस व्यक्ति ने अब्दुल बहा से ईश्वर में भरोसा और विश्वास रखना सीखा कि ईश्वर उसके प्रयासों को संपुष्टि और कृपादान देगा। उसकी निराशा आशा में बदल चुकी थी।

ङ. खेल : "वर्षाकार"

बच्चों से कहें कि वे आपके इर्दगिर्द एक घेरा बनाएँ। खेल का परिचय देने के लिये, बच्चों से यह कल्पना करने को कहें कि वे रेगिस्तान में हैं और तेज बारिश के लिये तरस रहे हैं। इसके बाद आप अपनी हथेलियों को आपस में रगड़ना शुरू करें और बच्चों से कहें कि वे भी ऐसा करें। अब आप एक–एक करके उनमें से हर एक की तरफ देखें। जब आप ऐसा करते हुए पूरे घेरे का चक्कर लगा चुके हों, और सभी बच्चे अपनी–अपनी हथेलियाँ रगड़ रहे हों, तब उनसे कहें कि उन्हें तब तक ऐसा करते रहना है जब तक कि आप कुछ और करते हुए उनमें से प्रत्येक की तरफ फिर से न देखें। अगली क्रिया के रूप में आप चुटकी बजायें, और फिर ताली, फिर अपने पैरों को थपथपायें, और फिर अपने पैर पटकें। सभी बच्चों द्वारा उत्पन्न की गयी ध्वनि शुरू–शुरू में बारिश की पहली बूँदों जैसी लगनी चाहिये और अन्त तक एक बड़े तूफान जैसी लगनी चाहिये।

च. रंग भरना : चित्र क्रमांक 18

छ. समापन प्रार्थनाएँ

पाठ 19

क. प्रार्थनाओं का पाठ करना और उन्हें कंठस्थ करना

सदैव की भांति, प्रार्थनाओं से कक्षा का आरम्भ करें। तब आप बच्चों की सहायता पाठ 17 में दी प्रार्थना कंठस्थ करने में कर सकते हैं।

ख. गीत (इसमें पिछले गीतों को दोहराया जाना भी शामिल है)

काम करने वाले हाथ

समूहगान

काम करने वाले हाथ बच्चों को देते हैं खुशी

बच्चों मिलती है बहुत खुशी
जब देते हैं ये सबको खुशी
और फैलाते प्रेम और शांति

एक नयी दुनिया बनाने के लिये काम करते हैं ये हाथ
जिसमें सब के लिये काम होगा और होंगे कृतज्ञ सब साथ
क्योंकि प्राप्त कर लेंगे शीघ्र ही हम अपने लक्ष्य तमाम

समूहगान

एक नयी दुनिया बनाने में प्रभु करेंगे मदद हम सभी की
जहाँ हम सभी करेंगे दूसरों की मदद
करेंगे प्यार पड़ोसी से हम स्वयं से भी कहीं अधिक

समूहगान (अंतिम पंक्ति को दोहरा कर)

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

इस पाठ में, बच्चे विश्वासपात्रता के बारे में एक उद्धरण कंठस्थ करेंगे, आप विषय–वस्तु निम्नलिखित तरीके से प्रस्तुत कर सकते हैं।

ईश्वर की दृष्टि में सबसे महान गुणों में से एक है विश्वासपात्रता। एक विश्वसनीय व्यक्ति सत्यवादी और ईमानदार होता है और उसके वायदे पर भरोसा किया जा सकता है। हमें ऐसा नहीं होना चाहिये कि हम कहें कुछ और करें कुछ और हमारे शब्द, हमारे कार्यों में प्रतिबिंबित होने चाहिये। जब हम विश्वास के योग्य होते हैं, तो दूसरों को भरोसा होता है कि हम अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाने का और अपने कर्तव्यों को पूरा करने का सर्वोत्तम प्रयास करेंगे। इस प्रकार, यह जान कर लोग मिलकर सामंजस्य में कार्य कर सकते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति अपने भाग का कार्य पूरा करेगा। विश्वासपात्रता के महत्व को कंठस्थ रखने में हमारी सहायता करने के लिये, आईये हम निम्नलिखित उद्धरण कण्ठस्थ करें :

"विश्वासपात्रता लोगों को शांति और सुरक्षा की ओर ले जाने वाला महत्तम द्वार है।"[121]

विश्वासपात्रता

1. एथोस ने अपनी माँ से वायदा किया कि वह रात का खाना बनाने में उनकी सहायता करेगा। जब उसके मित्र खेलने के लिये उसे बुलाने उसके घर आये, तो एथोस को वह वायदा याद आया जो उसने अपनी माँ से किया था और उसने अपने मित्रों से कहा कि वह किसी और दिन उनके साथ खेलेगा। एथोस ने विश्वासपात्रता का गुण दर्शाया।

2. सुनीता स्टोर से अपने परिवार के लिए कुछ चीजें लेने गई, पर उसे पता चला कि वह आवश्यक चीजें खरीदने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं लाई थी। उसने स्टोर के मालिक से पूछा कि क्या वह बाकी पैसा अगले दिन दे सकती है। मालिक ने कहा, ठीक है, क्योंकि उसे पता था कि सुनीता विश्वासपात्र है और अपने वायदे के अनुसार पैसा दे देगी।

शांति

1. एमिलियो को जब भी कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेना होता है, तो वह सोचने और चिन्तन करने के लिये कोई शांत जगह ढूँढता है। वह पास के एक बगीचे मे जाता है और शांति के वातावरण में अपने हृदय और दिमाग़ की उलझनों को दूर कर पाता है।

2. जब बड़ा तूफान थम गया, तो सब कुछ असाधारण रूप से शांत और स्थिर हो गया। तूफान के बाद शांति छा गयी।

सुरक्षा

1. जब एक जानवर का बच्चा डर जाता है, तो अक्सर सुरक्षा के लिये दौड कर अपनी माँ के पास चला जाता है। माँ अपने बच्चे को सुरक्षा प्रदान करती है।

2. राहगीर मार्ग से भटक गया और जंगल में खो गया। जब वह नहीं लौटा तो गांव के गाइड उसकी तलाश में निकल पड़े। जब उन्होंने उसे पा लिया तो उसे सुरक्षा की भावना महसूस हुई, यह जानते हुए कि वे उसे सुरक्षा से ले जाएंगे।

घ. कहानी

कई वर्षों पहले, प्रभुधर्म के शुरूआती दौर में, बहाइयों की संख्या बहुत कम थी, और कई देशों में फैली हुई थी। बहाई मित्र कई चुनौतियों का सामना कर रहे थे और अक्सर पावन भूमि में बहाउल्लाह को और बाद में अब्दुल बहा को पत्र लिखा करते थे, तथा उन्हें प्रभुधर्म की प्रगति की सूचना देते रहते थे, साथ ही उनसे विभिन्न विषयों पर प्रश्न भी किया करते थे। अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँचने से पहले, उनके पत्र एक लम्बी दूरी तय करते थे, और बहाउल्लाह तथा अब्दुल बहा, प्रत्येक पत्र का उत्तर बड़े प्रेम से और ध्यान के साथ देते थे। उनकी लेखनी से प्रवाहित होने वाले सुन्दर छंद, इन्हें प्राप्त करने वाले अनुयायियों के लिये विशेष उपहार समान होते थे। प्रोत्साहन भरे उनके शब्द इन बहाइयों को शक्ति प्रदान करते थे और उनके हृदयों को प्रसन्नता से भर देते थे और इसलिये यह अत्यंत महत्वपूर्ण था कि पत्र–व्यवहार के इस सिलसिले में बाधा न आ जाये।

प्रभुधर्म के इतिहास की सबसे अंधकारमय अवधियों के दौरान इसके दुश्मन, अब्दुल बहा के विरोध में उठ खड़े हुए। उनके बढ़ते हुए प्रभाव से ईर्ष्या के कारण वे उनके निर्वासन – या इससे भी बदतर – उनकी हत्या की आशा कर रहे थे। उनके घर के आसपास जासूस तैनात कर दिये गये थे, और उन पर लगातार नज़र रखी जा रही थी। उनके दुश्मनों को कितनी उल्लास होती यदि वे उनके प्रत्राचार के प्रवाह को रोक सकते और अब्दुल बहा तथा समर्पित मित्रों के बीच की कड़ी को तोड़ सकते; और उन्हें इससे भी बढ़कर उल्लास होती यदि वे कोई ऐसा दस्तावेज़ चुरा सकते जो शासन के अधिकारियों को गुमराह करने के लिये उपयोग में लाया जा सकता ! लेकिन अब्दुल बहा विचलित नहीं हुए। अपने दीपक के प्रकाश तले उन्हें देर रात तक लिखते हुए देखा जा सकता था; क्योंकि पत्रों की आवा–गमन के लिये उन्होने एक सुरक्षित माध्यम सुनिश्चित कर लिया था। यह एक ऐसा कार्य था जो अनुयायियों में केवल सबसे विश्वसनीय के हाथों में ही सौंपा जा सकता था।

उस इलाके में सैयद मुहम्मद–तग़ी मान्शादी नाम का एक आदमी रहता था। वह फारस से उस समय आया था जब वह काफी जवान था और उसने हाईफा में एक छोटामोटा व्यवसाय

स्थापित कर लिया था। वहाँ, अपने घर में वह उन कई मित्रों का स्वागत करता जो पावन भूमि में तीर्थ करने के लिये आते थे। यात्रा की तैयारियाँ करने में वह उनकी सहायता करता था और अपनी अटल विश्वसनीयता के लिये जाना जाने लगा था। वह इतना भरोसेमंद था कि उसका घर एक केन्द्र बन चुका था जहाँ से लगभग वह पूरी डाक गुज़रती थी जो पावन भूमि के बहाइयों के लिये होती थी और जिसके उत्तर विदेश भेजे जाते थे। सभी जानते थे कि उस पर यह सुनिश्चित करने के लिये पूरा भरोसा किया जा सकता था कि हर चिट्ठी तत्काल और सुरक्षित पहुँच जाये।

निश्चित रूप से, प्रभुधर्म के दुश्मन भी इस बात को जानते थे, और इसलिये सैयद मुहम्मद–तग़ी मान्शादी बहुत खतरे में थे। अब्दुल बहा देख सकते थे कि ये शत्रु प्रभुधर्म को हानि पहुँचाने के लिये हर सम्भव माध्यम का उपयोग करेंगे। वे निश्चित ही पत्रों को रोकने की कोशिश करेंगे, और जल्द ही मुहम्मद–तग़ी उनके षड़यंत्रों का निशाना बन जायेंगे। ऐसे में आपको क्या लगता है कि अब्दुल बहा ने क्या किया होगा ? उन्हें मुहम्मद तग़ी पर इतना विश्वास था कि वे उसकी बहुमूल्य सेवाओं को समाप्त नहीं करना चाहते थे। इसलिये उन्होंने उसे पास ही में मिस्र में स्थित पोर्ट सै द की सुरक्षा में भेज दिया और पत्रों की आवक–जावक के लिये ऐसे अन्य लोगों की व्यवस्था कर ली जिन पर उनके शत्रुओं को शक नहीं हो सकता था। और वहाँ, पोर्ट सैद में, मुहम्मद तकी ने हमेशा की तरह दूर दराज़ के मित्रों के लिये पत्र भेजना और प्राप्त करना जारी रखा और जो विश्वास अब्दुल बहा ने उन पर किया था उसे उन्होंने कभी नहीं तोड़ा। इसलिये सबसे अंधकारमय समय में भी, पावन भूमि से जगमगाने वाला मार्गदर्शन का प्रकाश दूरस्थ क्षेत्रों में निवास करने वाले मित्रों तक पहुँचता रहा।

ङ. खेल : "मार्गदर्शक"

बच्चों को जोड़ों में बांट दें। प्रत्येक जोड़े के किसी एक बच्चे की आँखों पर पट्टी बाँधें और दूसरे से कहें कि वह उस बच्चे को इधर–उधर घुमाने ले जाये, लेकिन उसे यह सुनिश्चित करना होगा कि रास्ते मे उसे ठोकर न लग जाये। खेल को और भी चुनौतीपूर्ण बनाने के लिये, जिस बच्चे की आँख पर पट्टी बंधी हो, उसे कुछ बाधाओं के आसपास से गुज़ार कर ले जाया जा सकता है, जैसे कि पेड़ के तने, गड्ढे, पत्थर, और टायर। एक बार जब उनमें विश्वास का संबंध बन जाए तो जिस बच्चे की आँख पर पट्टी बांधी गयी हो उसे केवल शाब्दिक निर्देश दे कर भी इधर–उधर जाने को कहा जा सकता है। ऐसे में, जो बच्चा मार्गदर्शन दे रहा हो, उसे उसके पास रह कर साथ–साथ चलना होगा ताकि यदि उस बच्चे को ठोकर लगे तो वह उसे सम्भाल सके।

उपरोक्त खेल के विकल्प के रूप में सभी बच्चों की आँखो पर पट्टी बांधी जा सकती है और उन्हें एक ऐसी ट्रेन बनाने को कहा जा सकता है जिसे आप या कोई एक बच्चा आगे ले जायेगा।

च. रंग भरना : चित्र क्रमांक 19

छ. समापन प्रार्थनाएँ

पाठ 20

क. प्रार्थनाओं का पाठ करना और उन्हें कंठस्थ करना

एक बार जब आपने और कुछ विद्यार्थियों ने प्रार्थनाएं कर ली हों, तो बच्चों के प्रार्थनाओं की पुनः विचार करें जिन्हें वे पिछले तीन पाठों से सीख रहे हैं।

ख. गीत (इसमें पिछले गीतों को दोहराया जाना भी शामिल है)

Kindling the Fire of God's Love

D
In my heart

A
There is a flame

G
That God has placed

D
A special flame

A
This is the fire

G
The fire

D
Of His love

CHORUS:

D A
I will pray
I will pray *(echo voice)*

G
To God

A D A
To kindle in my heart
To kindle in my heart *(echo voice)*

G
That flame

A D A
The fire of His love

G
And I will strive

A D
That its light illumines all hearts

Day by day
I will feed this flame
As I pray
And do good unto others

This flame will grow
As I pray
And serve mankind

And as this flame burns
As it grows
It will be felt
By all who come
Its way
It will bring warmth
To all
Who come its way

CHORUS

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

पाठ की विषय–वस्तु प्रज्जवलन है और नीचे दिया कथन आपको इसे तथा कंठस्थ किए जाने वाले उद्धरण को परिचित कराने में सहायता करेगा।

> प्रत्येक मनुष्य को, ईश्वर को जानने और उससे प्रेम करने के लिये उत्पन्न किया गया है, और हम सभी के हृदयों में उसके प्रेम की चिंगारी है। यह महत्वपूर्ण है कि हम प्रतिदिन ईश्वर से प्रार्थना के द्वारा, तथा दूसरों की सेवा के द्वारा ईश्वर के प्रेम की ज्योति को जलाए रखें। जब यह ज्योति अधिक से अधिक तीव्रता से जलती है, तो वे सभी लोग इसे महसूस करते हैं जो हमारे संपर्क में आते हैं और इसका प्रकाश उनके मन को प्रकाशित करता है। जब हम इतने प्रज्ज्वलित हो जाते हैं, तो हम एक जलती हुयी मोमबत्ती के समान हो जाते हैं जो खुद को प्रकाश देने से नहीं रोक पातीं। आईये हम निम्नलिखित उद्धरण कंठस्थ कर लें :
>
> **"हे लोगों, ईश्वर के प्रेम की अग्नि से प्रज्ज्वलित रहो, ताकि तुम दूसरों के हृदय को भी प्रज्जवलित कर सको।"[122]**

प्रज्जवलित

1. घर ठंडा था, अतः अक्सेल के पिता ने आग जलाने का निर्णय लिया। उन्होंने बड़े लट्ठे भट्टी में रखे तथा नीचे रखे कुछ तिनकों में आग लगा दी। लकड़ी जल्द ही प्रज्जवलित हो गई और आग ने कमरे को गर्म कर दिया।

2. एक वैज्ञानिक ने एक विद्यालय में ब्रह्मांड से संबंधित अनेक मनोरंजक बातें विद्यार्थियों को समझाईं। वे इसके बाद अनेक प्रश्न पूछने लगे। उसने बच्चों में विश्व के बारे में जानने की इच्छा प्रज्जवलित कर दी थी।

घ. कहानी

थोमस ब्रेकवेल एक जवान अंग्रेज़ थे जो 19वीं शताब्दी के आरम्भ में इस दुनिया में थे। वे दक्षिण अमेरिका के एक कपास के कारखाने में एक महत्वपूर्ण पद पर कार्यरत थे, और अपनी छुट्टियाँ यूरोप में बिताया करते थे। 1901 की यूरोप की अपनी यात्रा के दौरान, एक स्टीमर पर उनकी मुलाकात एक महिला से हुई और वे उनके साथ आध्यात्मिक विषयों पर बातचीत करने लगे। जब वे पेरिस पहुँचे, तो वह महिला उन्हें अपने साथ अपनी एक मित्र से मिलवाने ले गयी जो शहर के एक फ्लैट में रहती थी, और जिसकी दिलचस्पी भी – वह जानती थी – इसी प्रकार की बातों में थी। उस जवान महिला ने उनका स्वागत किया और तीनों ने कुछ देर बातें की। जाने से पहले, ब्रेकवेल ने अपनी मेज़बान से और चर्चाएँ करने के लिये दुबारा आने की अनुमति माँगी। उन्हें अगले दिन फिर आने का आमंत्रण दिया गया।

अगले दिन सुबह, जब ब्रेकवेल वहाँ पहुँचे, तो उस जवान महिला ने देखा कि उनकी आँखें तेज से चमक रहीं थीं और उनकी आवाज़ संवेदना से भरी थी। उन्होंने ब्रेकवेल से बैठने को कहा। ब्रेकवेल ने पल भर के लिये उन्हें बड़े गौर से देखा, और फिर एक बड़े अजीब अनुभव के बारे मे उन्हें बताया। उन्होंने कहा कि एक दिन पहले जब वे उस महिला के घर से लौट रहे थे तब उस गर्म और तेज़ हवाओं वाली शाम को वे एक रास्ते पर अकेले जा रहे थे। अचानक एक तेज़ हवा चली और उस हवा में उन्हें एक आवाज़ सुनायी दी, एक मीठी और शक्तिशाली आवाज़, जो ईश्वर की ओर से एक नये संदेश के आने की बात कर रही थी।

उस युवा महिला ने उन्हें धैर्य रखने को कहा, क्योंकि वे उस संदेश के बारे मे जानती थी जिसकी बात ब्रेकवेल कर रहे थे। अगले तीन दिन के दौरान उस महिला ने कई घंटों तक ब्रेकवेल को वह सब कुछ बताया जो वह बहाई धर्म के बारे में – यानी इसके इतिहास एवं शिक्षाओं के बारे में – तथा उन शिक्षाओं के दोष रहित आदर्श अब्दुल बहा के बारे में जानती थी जो कि पावन भूमि में स्थित अक्का की कारा नगरी में रहते थे।

उन तीन दिनों के अंत तक तो ब्रेकवेल का हृदय प्रसन्नता और आशा से इतना भर गया था कि अब उनकी एकमात्र इच्छा थी कि वे अक्का जायें और अब्दुल बहा से मिलें। हुआ यूँ कि एक और युवक था जिसने इसी उद्देश्य से पावन भूमि जाने की योजना बनायी थी और जो ब्रेकवेल को अपने साथ ले जाने में बहुत खुश था। अतः, अब्दुल बहा को एक संदेश भेजा गया और उनसे अनुरोध किया गया कि वे ब्रेकवेल को भी पावन भूमि आने की अनुमति प्रदान करें, और शीघ्र ही दोनों युवक अपनी यात्रा पर निकल पड़े।

जब वे दोनों अब्दुल बहा के घर पहुँचे, तो उन्हें एक कमरे में ले जाया गया जहाँ कई और आदमी इकट्ठा हुए थे। आसपास नज़र दौड़ाने पर ब्रेकवेल बहुत परेशान हो गये। कमरे में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं था जिसकी ओर उनका हृदय आकर्षित होता, और यह सोच कर कि अब्दुल बहा वहाँ उपस्थित व्यक्तियों में से ही एक होंगे, उन्हें डर था कि कहीं वे उस दैवीय हस्ती को पहचानने में विफल न हो गये हों जिनके बारे में उन्होंने पेरिस में सुना था। वे निराश हो कर बैठ गये। उसी क्षण, एक दरवाज़ा खुला और ब्रेकवेल ने ऊपर देखा। वहाँ उन्हें एक तीव्र प्रकाश दिखायी दिया जिसमें उन्हें अब्दुल बहा की आकृति दिखायी दी। ब्रेकवेल तुरन्त समझ गये कि उनकी सबसे प्रिय इच्छा पूरी हो चुकी थी।

ब्रेकवेल ने अब्दुल बहा की उपस्थिति में आनन्द भरे दो दिन बिताये, जिसके दौरान उनके हृदय में प्रज्ज्वलित की गयी आग और तेज़ होती गयी। जब ब्रेकवेल ने अब्दुल बहा को कपास के कारखाने में अपनी नौकरी के बारे में बताया, तो अब्दुल बहा ने उन्हें नौकरी से

इस्तीफा देने को कहा। ब्रेकवेल ने इस कार्य को बगैर हिचकिचाहट के पूरा किया। अपनी मुलाकात के अंत में वे पेरिस लौटे, उनकी चेतना पूरी तरह प्रज्ज्वलित हो चुकी थी। अब उन्हें कपास के कारखाने की नौकरी से कोई आमदनी नहीं मिल रही थी, और वे बहुत बीमार रहने लगे थे। लेकिन इन बातों ने उनके उल्लास को बिल्कुल कम नहीं किया। वे तेज़ मोमबत्ती की तरह जलते रहे और अपना प्रकाश उन सभी के साथ बांटते रहे जिनसे उनकी मुलाकात होती थी, और यह तब तक चलता रहा जब तक कि उनकी बीमारी के कारण उनकी मृत्यु नहीं हो गयी। उनकी मृत्यु पर अब्दुल बहा ने उनके सम्मान में एक पाती प्रकट की, जिसमें निम्नलिखित पंक्तियाँ शामिल हैं: "ओ ब्रेकवेल, ओ मेरे प्रिय ! तुमने स्वर्गिक सम्मिलन में एक लौ प्रज्ज्वलित की है, तुमने आभा स्वर्ग में कदम रखा है, तुमने उस आशीर्वादित वृक्ष की छाँव में आश्रय प्राप्त किया है, स्वर्ग के शरण स्थल में तुम उससे मिलन को प्राप्त हुए हो।"

ङ. खेल : "बीमारों की सहायता करो"

किसी एक बच्चे को एक "बीमार" का अभिनय करने को कहें। अब दो अन्य बच्चों से कहें कि वे अपने हाथों की "कुर्सी" बनाने के लिये एक दूसरे के हाथों को मजबूती से पकड़कर एक आकार बनाए यानी दाहिने से दाहिना हाथ पकड़ें और बायें से बायाँ हाथ पकड़ें।

अब इस बीमार बच्चे की सहायता करने के लिये दूर से बच्चों को उसे कुर्सी पर बिठाना होगा। किसी पेड़ या किसी अन्य विशेष स्थान को चुनकर उसे "स्वास्थ केन्द्र" बनाएँ, और कुर्सी बनाने वाले दो बच्चों से कहें कि वे इस "बीमार" बच्चे को उस स्थान तक ले जायें।

यदि बच्चों का समूह बड़ा हो, तो बच्चे कुर्सी के स्थान पर बच्चे एक "स्ट्रेचर" बना सकते हैं। स्ट्रेचर बनाने के लिये उन्हें दो पंक्तियाँ बना कर एक दूसरे की तरफ मुँह करके खड़ा होना है। प्रत्येक बच्चे को अपने दाहिने हाथ से बायें हाथ की कोहनी के ऊपर वाले हिस्से को कस कर पकड़ना है, और अपने बायें हाथ से सामने वाले बच्चे के हाथ की कोहनी के ऊपर वाले हिस्से को कस कर पकड़ना है। इस प्रकार एक स्ट्रेचर तैयार हो जाता है। इकसे बाद "बीमार बच्चा" स्ट्रेचर पर लेट जाता है ताकि उसे "स्वास्थ केन्द्र ले जाया जा सके।"

च. रंग भरना : चित्र क्रमांक 20

छ. समापन प्रार्थनाएँ

पाठ 21

क. प्रार्थनाओं का पाठ करना और उन्हें कंठस्थ करना

इस पाठ और अगले तीन पाठों में, कंठस्थ की प्रार्थना, जैसी कि पाठ 19 में सुझाई गई थी, का गान कर प्रत्येक कक्षा का आरंभ करें। जब आपने और कुछ बच्चों ने प्रार्थनाएँ कर ली हों, आप नीचे दी प्रार्थना उन्हें बता सकते हैं जो इस ग्रैड की कंठस्थ की जाने वाली आखिरी प्रार्थना होगी।

"हे तू दयालु स्वामी ! मैं एक नन्हा शिशु हूँ, साम्राज्य में प्रवेश करा मुझे उच्च बना। मैं धरती का हूँ, मुझे आकाश का बनाय मैं नीचे विश्व का हूँ, मुझे ऊपर स्थान का बनने देय उदास, प्रकाशित बनाय भौतिक, मुझे आध्यात्मिक बना, और वर दे कि मैं तेरी अनंत अनुकम्पायें प्रकट कर सकूँ।

"तू शक्तिशाली, सर्व–प्रेमी है"[123]

ख. गीत (इसमें पिछले गीतों को दोहराया जाना भी शामिल है)

Radiance

```
     E                              A
As we reflect the light that shines from above
B                                   E
Our hearts will radiate with kindness and love
     E                 A
As we are joyful, illumined and bright
     B                                E
All those around will feel the warmth of His light
```

CHORUS:

```
   E                A
O Son! O Son of Being!
   B                          E
Thou art My lamp and My light is in thee!
   E                A
O Son! O Son of Being!
   B                          E
Thou art My lamp and My light is in thee!
```

The love of God never ceases to flow
As we arise to serve its brightness will grow
Don't hesitate! Just radiate! With all of your might
Till each and every heart is filled with His light

CHORUS *(with last line repeated)*

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

इस पाठ में बच्चे चमक के गुण से संबंधित उद्धरण को कंठस्थ करेंगे, जिसे आप नीचे दिए तरीके से परिचित करा सकते हैं।

> ईश्वर के प्रेम का प्रकाश हमारे हृदयों को निरन्तर प्रकाशित करता रहता है। जैसे जैसे यह प्रकाश बढ़ता जाता है, वैसे वैसे हमारे हृदय उसके प्रेम से चमकते जाते हैं। ईश्वर के ज्ञान का प्रकाश–उसकी महंत, उसकी आभा का ज्ञान–हमारे नेत्रों को रोशन कर देता है। हमारे उदार कार्यों और दयालु शब्दों से प्रेम व ज्ञान का प्रकाश दिखने लगता है। हमारे आसपास के लोग, हमारे आनन्द की चमक के स्पर्श का अनुभव करते हैं। चमक के गुण के महत्व को कंठस्थ रखने में हमारी सहायता करने के लिये, आईये हम निम्नलिखित उद्धरण कंठस्थ करें

> **"हे अस्तित्व के पुत्र! तू मेरा दीपक है और तुझमें मेरा प्रकाश है। तू उसमें से अपनी कांति प्राप्त कर और मेरे अतिरिक्त किसी अन्य की कामना न कर।"**[124]

चमक

1. जब टाइरेल सो कर उठा, तो कमरा सूर्य की रोशनी से चमक रहा था। वह सूर्य की चमक देख कर प्रसन्न था।

2. श्रीमती संतोष सभी को अपने ही परिवारजनों की तरह प्रेम करती हैं। वे हमेशा दूसरों के प्रति उदार और दयालु रहती हैं और दूसरों की सहायता करती हैं। उनके हृदय का प्रेम उन सभी को महसूस होता है जो उनसे मिलते हैं, जिसके कारण सभी को प्रसन्नता मिलती है। उनके प्रेम की चमक सभी के हृदयों को छू लेती है।

कामना

1. माँ बच्चों के लिये ताज़ा भोजन बनाती है। माँ की कामना है कि बच्चे स्वस्थ रहे।

2. समीर बहुत मेहनत से डॉक्टर बनने के लिये पढ़ाई करता है। वह रोगियों को रोगमुक्त करने की कामना करता है।

घ. कहानी

डोरोथी बेकर, जिनके बारे में संभवतः किसी दिन और सीखेंगे, जब छोटी बच्ची थीं, तभी अब्दुल बहा से मिलने का सौभाग्य मिला। वह डोरोथी की नानी माँ एलेन बीचर ही थीं जो उन्हें अब्दुल बहा के पश्चिमी भ्रमण के दौरान मिलाने के लिये ले गयी थीं। एक ऐसे घर पर पहुँच कर – जहाँ वे पहले कभी नहीं आयी थीं – डोरोथी ने एक कमरे में प्रवेश किया जिसमें अब्दुल बहा के वक्तव्य के इन्ज़ार में कई लोग आपस में धीमी आवाज़ में और आदर के साथ बातें कर रहे थे। जब श्रीमती बीचर ने कमरे में प्रवेश किया तो अब्दुल बहा मुस्कुराए और नन्ही डोरोथी को इशारे से अपने पास बैठने को कहा। अब्दुल बहा के पैरों के पास रखी चौकी तक पहुँचने के लिए, ऊपर की ओर देखे बगैर वह बड़ी सावधानी से अन्य अतिथियों के पास से निकली।

जब अब्दुल बहा बोल रहे थे तब वह अपनी आँखे झुकाए अपने काले जूतों की ओर देखती रही। उसके अंदर अब्दुल बहा की ओर देखने का साहस नही था। लेकिन जल्द ही उसका डर दूर हो गया। अपनी आत्मा को अब्दुल बहा के प्रेम की महानता में खो देने की गहन इच्छा से उसका मन भर उठा। उनके तेज ने उसके मन को छू लिया और वह उनकी उपस्थिति के आनन्द में मग्न हो गयी।

एक अधिक महान शक्ति ने डोरोथी के डर का स्थान ले लिया था। वह अब्दुल बहा से एक पल के लिये भी अलग होने की कल्पना नहीं कर सकती थी। ऐसा लग रहा था मानो उनकी प्रेममयी आँखें उससे बातें कर रहीं थीं, और उसे ईश्वर के लोकों के बारे में बता रहीं थीं। उसने अब्दुल बहा की प्रेमपूर्ण उपस्थिति की ऊष्मा की ओर आकर्षित अनुभव किया। उनकी तेजस्विता चुम्बकीय थी। वह समझ ही नहीं पायी कि कब वह उनकी ओर मुड़ गई, अपनी कोहनियाँ अपने घुटनों पर टिकी, और अपनी ठोड़ी को अपने हाथों में लिए, अब्दुल बहा के प्रकाशित चेहरे पर नजर टिकाए।

डोरोथी को कंठस्थ नहीं था कि अब्दुल बहा ने उस दिन किस विषय के बारे में बात की थी। उसे तो केवल उनका दयालु चेहरा, उनकी मधुर आवाज़, और उनकी उपस्थिति की ऊष्मा कंठस्थ थी। उनकी प्रेमपूर्ण आँखें ईश्वर के आध्यात्मिक लोकों को बताती प्रतीत होती थी।

समय के साथ, उसके हृदय में प्रज्जवलित ईश्वर का प्रेम इतना गहन हो गया कि उसने अब्दुल बहा को पत्र लिखना तय किया। अपने पत्र में उसने अब्दुल बहा से विनती की कि वे उसे अपनी और अपने पिता बहाउल्लाह के धर्म की सेवा करने की आज्ञा दें। डोरोथी को लिखे गये अपने उत्तर में अब्दुल बहा ने उसके लक्ष्य की प्रशंसा की, उसे ईश्वर की अनुकम्पाओं का आश्वासन दिया, और यह आशा व्यक्त की, कि उसकी इच्छा पूरी हो जाये। और वास्तव में, डोरोथी ने अपना पूरा जीवन ईश्वर और मानवजाति की सेवा को समर्पित कर दिया।

ङ. खेल : "दो तरफा नकल"

बच्चों को इस तरह जोड़ों में बांट दें कि प्रत्येक बच्चा अपने साथी के सामने मुँह करके खड़ा रहे। अब हर जोडे के एक बच्चे से कोई क्रिया करने को कहें और उसके साथी से कहें कि वह उसकी नकल करने को कहें। कुछ क्षणों के बाद, सभी जोड़े भूमिकाएँ बदल लें। क्रिया के स्थान पर वे चेहरे के हावभावों की नकल भी प्रतिबिंबित कर सकते हैं। इसके बाद, हर जोड़े में से एक बच्चे को अपने साथी के पीछे खड़े रहने को कहें। जब आगे खड़ा हुआ बच्चा कोई क्रिया करे, तो पीछे खड़े हुए बच्चे को उसकी परछाई की तरह उसकी नकल करना है।

च. रंग भरना : **चित्र क्रमांक 21**

छ. समापन **प्रार्थनाएँ**

पाठ 22

क. प्रार्थनाओं का पाठ करना और उन्हें कंठस्थ करना

प्रारम्भिक प्रार्थनाओं के बाद, बच्चे पिछले पाठ में बताई गई प्रार्थना को कंठस्थ करना जारी रख सकते हैं।

ख. गीत (इसमें पिछले गीतों को दोहराया जाना भी शामिल है)

मैं प्रसन्न रहना चाहता हूँ

मैं मजबूत बनना चाहता हूँ
अपने पूरे जीवन में प्रभु का सेवक बनना चाहता हूँ
इसीलिये प्रभु के नियमों का मुझे करना होगा पालन
हाँ प्रभु के नियमों का हमें करना होगा पालन
कुछ बात हमें अवश्य जानना चाहिये
कुछ बात हमें अवश्य जानना चाहिये

इस दम्भ और दिखावे की दुनिया में
खोखली बातें सुनकर थक गये हैं लोग
लेकिन जो हम कहते हैं उसे अपनाते हैं लोग
और यही देखना चाहते हैं लोग

कुछ बात हमें अवश्य जानना चाहिये
कुछ बात हमें अवश्य जानना चाहिये
इस धर्म में हमें दिखलाना चाहिये
कुछ बात हमें अवश्य जानना चाहिये
कुछ बात हमें अवश्य जानना चाहिये

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

इस पाठ में बच्चे नीचे दिया उद्धरण कंठस्थ करना सीखेंगे, जो कि निष्ठा की विषय–वस्तु पर केंद्रित है। यहाँ कुछ विचार इसकी पहचान कराने के लिए दिए गए हैं।

एक निष्ठावान आत्मा कभी भी ईश्वर की अनुकम्पाओं को नहीं भूलती, यह ईश्वर को प्रेम करना कभी नहीं रोकती। यह हमारी निष्ठा के कारण ही है कि हम सदैव उसकी शिक्षाओं पर चलने और उसेके नियमों का पालन करने का सर्वोत्तम प्रयास करते हैं, तब भी जब यह अत्यंत दुष्कर होता है। अतः हम दूसरों की सेवा करने के लिये मेहनत और अच्छे कर्म इसलिये करते हैं क्योंकि हमारे मन में उस प्रभु की सुप्रसन्नता प्राप्त करने के अतिरिक्त और कोई विचार नहीं होता है। एक निष्ठावान आत्मा के लिये ईश्वर को प्रसन्न करने का प्रयास करने से बड़ा और कोई आनन्द नहीं होता। आइए बहाउल्लाह के निम्न उद्धरण को कंठस्थ करें।

"धन्य है वह निष्ठावान जो उच्च प्रयासों के परिधान से सुसज्जित है और इस धर्म की सेवा करने के लिए उठ खड़ा हुआ है।[125]

सुसज्जित

1. मेय के पास एक अच्छी पोशाक है जो वह केवल विशेष अवसरों पर पहनती है। उसने अपनी इस पोशाक को सामुदायिक सभा में पहना। मेय अपनी इस विशेष पोशाक से सुसज्जित है।

2. नतालिया सभी के प्रति दयालु है। ईश्वर ने उसकी आत्मा को दया से सुसज्जित किया है।

परिधान

1. कुछ स्थानों पर, अदालत में जज को सफेद रंग के नकली बाल और एक लम्बा काला लबादा पहनना होता है। उन्हें, एक जज का पूरा परिधान पहनना पड़ता है।

2. राजमहल छोड़ने से पहले, राजकुमार अपना अंगरखा और ताज पहनता है। वह अपने शाही परिधान पहनता है।

3. जेकब घर से बाहर निकालने के पूर्व प्रत्येक सुबह प्रार्थना करता है। प्रार्थनाएं उसकी आत्मा के परिधान की भांति हैं। वे पूरे दिन उसे शक्ति एवं सुरक्षा प्रदान करती हैं।

प्रयास

1. छात्रों ने स्कूल के आसपास पेड़ लगाने का निर्णय लिया। समुदाय ने बीज और मिट्टी का इन्तज़ाम करके उनके प्रयासों को समर्थन दिया।

2. पिएरी और आर्लीन ने निर्णय लिया कि वे पहाड़ की चोटी तक पहुँचेंगे। वे जानते थे कि यह एक कठिन प्रयास होगा, लेकिन उन्होंने कोशिश करने का निश्चय किया।

घ. कहानी

जब अब्दुल बहा एक नन्हे बालक थे, तब उनके परिवार के पास – जो कि फारस के सबसे कुलीन परिवारों में से एक था – एक नौकर था जिसका नाम था इस्फान्दियार। वह इस परिवार के प्रति बहुत निष्ठावान था जिसे उस पर बहुत भरोसा था। जब पूर्वाग्रह और अज्ञानता के कारण शासन के अधिकारियों ने अब्दुल बहा के प्रिय पिता बहाउल्लाह को गिरफ्तार करवा दिया, तब उनके परिवार की पूरी संपत्ति छीन ली गयी। उनके पास कुछ भी नहीं बचा था, और बहाउल्लाह के सभी सगे–संबंधियों और मित्रों पर खतरा मंडराने लगा था। इसके बावजूद इस्फान्दियार ने उनके परिवार की देखभाल करना जारी रखा। यह जानते हुए कि कई सरकारी अफसर इस्फान्दियार को ढूँढ रहे होंगे, अब्दुल बहा की माता ने इस्फान्दियार से शहर छोड़ने का आग्रह किया लेकिन इस्फान्दियार नही गये।

"मैं नहीं जा सकता," वे बोले, और कहा कि जो सामान उन्होंने खरीदा था उसके लिये उन्हें कई दुकानदारों को पैसे चुकाने थे, "मैं कैसे जा सकता हूँ ?" उन्होंने पूछा। "लोग कहेंगे कि बहाउल्लाह के सेवक ने पैसे चुकाए बगैर दुकानदारों से सौदे और माल का उपयोग कर लिया है। जब तक मैं ये पैसे नहीं चुका देता, मैं नहीं जाऊँगा। यदि वे मुझे गिरफ्तार भी कर लेते हैं तो भी कोई बात नहीं। और यदि वे मुझे सज़ा भी देते हैं, तो इसमें कोई हानि नहीं है। यदि वे मेरी जान भी ले लेते हैं, तो भी दुखी मत होना, लेकिन मेरे लिये यहाँ से जाना असम्भव है। मुझे यहाँ तब तक रहना है जब तक कि मैं अपना सभी उधार नहीं चुका देता।"

एक माह तक इस्फान्दियार सड़कों और बाज़ारों में अपनी छोटी–छोटी वस्तुयें बेचता रहा। जब उसने अपनी आखरी उधारी भी चुका दी, तो वह अब्दुल बहा के परिवार के पास गया और उनसे अलविदा कहा, क्योंकि वह जानता था कि अब वह उनके साथ और नहीं रह सकता था। ऐसे खतरनाक समय में एक मंत्री इस्फन्दियार को अपने घर पर रखने के लिये तथा उसे सुरक्षा एवं आश्रय प्रदान करने के लिये राज़ी हो गया।

कई महीनों के बाद, बहाउल्लाह कैद से रिहा हुए और शासन के अधिकारियों ने उन्हें और उनके परिवार को फारस से निर्वासित कर दिया। वे एक पड़ोसी देश के शहर बग़दाद में चले गये। बहाउल्लाह के प्रति सदा वफादार इस्फान्दियार ने उनसे यह पूछने के लिये बग़दाद तक की यात्रा की, कि क्या वह एक बार फिर उनके परिवार की सेवा कर सकता है। बहाउल्लाह ने उससे कहा, "जब तुमने हमसे विदा ली थी, तब फारस के एक मंत्री ने तुम्हें उस समय रहने के लिये जगह दी थी जब और कोई तुम्हें सुरक्षा देने को तैयार नहीं था। चूंकि उस मंत्री ने तुम्हें आश्रय दिया था और तुम्हारी रक्षा की थी, इसलिये तुम्हें उसके प्रति निष्ठावान रहना चाहिये। यदि वह तुम्हें भेजने को तैयार हो जाता है, तो हमारे पास आ जाना लेकिन यदि वह नहीं चाहता कि तुम आओ, तो उसे मत छोड़ना।"

निस्सन्देह, इस्फान्दियार इतना सदाचारी, इतना विश्वासपात्र और वफादार था, कि मंत्री नहीं चाहता था कि वह जाये। "हे इस्फान्दियार!" उसने कहा, "मैं नहीं चाहता कि तुम जाओ, फिर भी, यदि तुम जाना चाहते हो तो जैसी तुम्हारी इच्छा।" लेकिन इस्फान्दियार को बहाउल्लाह के शब्द कंठस्थ थे। वह तब तक मंत्री की सेवा में रहा, जब तक कि कुछ समय बाद मंत्री की मृत्यु नहीं हो गई, जिसके बाद इस्फान्दियार एक बार फिर उस परिवार के पास लौट

आया जिससे वह इतना प्रेम करता था और अपने जीवन के अंतिम दिनों तक वह अब्दुल बहा की सेवा करता रहा।

ङ. खेल : "मेरा दरवाजा कौन खटखटा रहा है ?"

किसी एक बच्चे की आँखों पर पट्टी बाँध दें और उसे एक बेंच पर इस तरह बैठने को कहें कि उसकी पीठ कक्षा के बाकी बच्चों की तरफ हो। अब एक और बच्चे की ओर इशारा करें जिसे बेंच पर बैठे बच्चे के पास जाकर बैंच खटखटाना हैं। बैठा हुआ बच्चा पूछेगा, "मेरा दरवाजा कौन खटखटा रहा है ?" दूसरा बच्चा अपनी आवाज बदल कर उत्तर देगा, "मैं हूँ !" अब बैठे हुए बच्चे को अनुमान लगाना है कि कौन खटखटा रहा है। जिस बच्चे की आँखों पर पट्टी बंधी होगी, उसे सही अंदाजा लगाने के लिये तीन मौके दिये जायें, जिसके बाद किसी दूसरे बच्चे की बारी आयेगी। आप बताना चाहेंगे कि यदि पट्टी बंधे बच्चे को ध्यान से सुनना है तो कक्षा के बाकी बच्चों को बिल्कुल शांत रहना होगा।

च. रंग भरना : चित्र क्रमांक 22

छ. समापन प्रार्थनाएँ

पाठ 23

क. प्रार्थनाओं का पाठ करना और उन्हें कंठस्थ करना

आप कक्षा का आरंभ प्रार्थनाओं से आरम्भ कर सकते हैं और फिर पाठ 21 में बताई गई प्रार्थना को कंठस्थ करने में बच्चों की सहायता कर सकते हैं।

ख. गीत (इसमें पिछले गीतों को दोहराया जाना भी शामिल है)

धैर्य

पाँव तुम्हारे थक चुके हैं
और रास्ता बहुत लम्बा है अभी
छोड़ देना चाहते तुम कोशिश
और तेज हो चली अब धूप भी
पर धीरज खोने से क्या लाभ
और रोना तो है बेकार
आगे बढ़ोगे तुम एक एक कदम यदि
तो समय बीत जाएगा देखते देखते ही

समूहगान :

जब हों हम दुखी और उदास
तो धीरज ही है बस एक इलाज
धैर्य का फल होता है मीठा
दिलाएगा तुम्हें यह प्रसन्नता

भाई को समझाया तुमने कई बार
पर समझ न पाया वह हर बार
कोशिश कीजिये फिर एक बार
अच्छा बनने का करो पूरा प्रयास
और धीरज खोने से क्या लाभ

कठोर बनना है बेकार
कीजिये सदा अच्छा व्यवहार
यदि दिखाओगे उसे दया
सीखने में करोगे सहायता
है बस यही एकमात्र मार्ग

समूहगान

करना चाहते हैं आप और अच्छा
फिर भी न हो पाते कामयाब
सोचते हो करें क्यों प्रयास
जाने कहाँ ले जाये ये बात
पर धीरज खोने से क्या है लाभ
कम काम करना नासमझी है
यदि करते रहोगे तु प्रयास
तो अंत में करोगे तुम विकास

समूहगान
(जिसके साथ अंत की दो पंक्तियाँ दोहरायी जानी हैं)

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

इस पाठ में बच्चे धैर्य से संबंधित उद्धरण कंठस्थ करेंगे, जिसे आप उनके समक्ष निम्नलिखित तरीके से प्रस्तुत कर सकते हैं :

> धैर्य उन सबसे महत्वपूर्ण गुणों में से एक है जिन्हें हम धारण कर सकते हैं। धैर्य के बिना हम इस जीवन में कुछ भी हासिल नहीं कर सकते। अपनी पढ़ाई में, अपने काम में, दूसरों के साथ अपनी मित्रता में, आध्यात्मिक रूप से विकास करने के अपने प्रयासों में धैर्य आवश्यक है। जीवन का हर काम जल्दबाज़ी में नहीं किया जा सकता। कई कार्यों को थोड़ा–थोड़ा करके ही दिन प्रतिदिन किया जा सकता है। जब हम धैर्य रखते हैं, तो हम उन वस्तुों में जल्दबाज़ी करने की कोशिश नहीं करते जिनमें समय लगता है। हमें दूसरों के साथ और खुद के साथ धैर्य रखने की आवश्यकता है क्योंकि हम सभी सीख रहे हैं और विकास कर रहे हैं। धैर्य प्राप्त करने के अपने प्रयासों में हमारी सहायता करने के लिये आईये हम निम्नलिखित उद्धरण कंठस्थ करें :

"सत्य ही, वह उनके पुरस्कारों को बढ़ा देता है जो धैर्य से सहते हैं।"[126]

पुरस्कार

1. श्रीमती एंडरसन अपनी कक्षा के बच्चों द्वारा तैयार विज्ञान के प्रोजेक्ट्स से अत्यंत प्रसन्न थी। पुरस्कार के रूप में वह उन्हें पास के मछलीघर घुमाने ले गई।

2. अलिना ने प्रत्येक दिन गिटार बजाना सीखने में समय बिताया। जब उसने अपने छोटे भाई के लिए एक मधुर गाना बजाया, तो भाई के चेहरे पर आया आनंद उसके प्रयासों के लिए पुरस्कार था।

सहना

1. आलिया और उसका परिवार एक दूर–दराज़ स्थान में रहने चला गया। पहले कुछ महीनों में उन्हें कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। लेकिन, उनके दयालु पड़ोसियों की सहायता से वे इन कठिनाईयों को सहन कर सके और अब वे अपने नये घर में बहुत खुश हैं।

2. ह्यूग बीमार हो गया। उसे बहुत दर्द था, लेकिन उसने शिकायत नहीं की। उसने अपनी तकलीफ को धैर्य से सहन किया।

घ. कहानी

ली ज़िन को आडू बहुत पसंद थे। यह उसके सबसे प्रिय फलों मे से एक था। वह रोज़ाना एक आडू अपने साथ स्कूल में लाता और दोपहर के भोजन के समय उसे खा लिया करता था। उसे इसके हर कौर में आनन्द आता, लेकिन वह अंदर के बीज वाले हिस्से को हमेशा फैंक दिया करता था।

एक दिन, ली ज़िन की कक्षा में बीज के बारे में बताया गया। इससे ली ज़िन को यह विचार आया कि वह अपने आडू का एक बीज बोयेगा और पेड़ बनने में उसकी सहायता करेगा ! दोपहर के भोजन के समय, उसने अपने आडू के बीज वाले हिस्से को बचा लिया और उसे एक कागज़ के टुकड़े में लपेट लिया। जब स्कूल की छुट्टी हुयी, तो उसने घर पहुँच कर आडू का पेड़ लगाने के लिये एक जगह ढूँढने में अपने पिता की सहायता माँगी। उसके पिता ने उसे याद दिलाया कि बीज को निकालने से पहले, उसे आडू के बीज वाले हिस्से के सूख जाने का इन्तज़ार करना होगा। लेकिन ली ज़िन बीज वाले हिस्से को तत्काल बोना चाहता था : "ली ज़िन," उसके पिता बोले, "जब तुम्हारे अंदर इस बीज वाले हिस्से को सुखाने का ही धैर्य नहीं है, तो बीज के अंकुरित होने का धैर्य कैसे होगा ?" इसलिये ली ज़िन ने बीज वाले हिस्से को सुखाने के लिये बाहर रख दिया।

आखिरकार, कुछ दिनों बाद ली ज़िन उस बीज वाले हिस्से को तोड़ कर उसमें से बीज निकाल सका। उसकी माँ ने उसे आंगन का एक कोना दिखाया जहाँ उसका पेड़ बड़ा और ऊँचा उग सकता था। ली ज़िन ने एक छोटा सा गड़ढा खोदा और उसमें बीज डाल दिया, और फिर उसे नम मिट्टी के ढेर से ढक दिया। वह उत्साह से मुस्कुराने लगा क्योंकि आखिरकार उसका पेड़ उगने के लिये तैयार था !

बीज के अंकुरित होने का कोई चिन्ह देखने की आशा में, ली ज़िन रोज़ उस मिट्टी के ढेर के पास जाता, लेकिन कई हफ्तों तक उसे कोई अंकुर दिखायी नहीं दिया और वह निराश होने लगा। उसे चिन्तित देख कर उसकी माँ ने उससे इसका कारण पूछा। "मेरा बीज उग

नहीं रहा है।" ली ज़िन बोला। "सोचता हूँ क्या यह पेड़ कभी मेरे पास होगा।" "देखो," माँ ने उत्तर देते हुए कहा, "इस बीज को अभी बहुत विकसित होना है। इस अर्थ में यह बहुत कुछ तुम्हारी तरह है। जब तुम पैदा हुए थे, तब एक छोटी सी जान थे और केवल खाते और सोते थे। और अब अपने आप को देखो ! तुम एक नन्हे बालक बन गये हो, चल सकते हो, बोल सकते हो, और सोच सकते हो ! इस पेड़ को बड़े होने में कई वर्ष लग सकते हैं, लेकिन, यदि तुम इसकी अच्छी देखभाल करोगे, तो किसी दिन तुम इसकी छाँव में बैठ सकोगे और इसके फलों का आनन्द ले सकोगे।" यह सुनकर ली ज़िन के मन में एक बार फिर आशा जाग गठी। अपनी कक्षा में उसने सीखा था कि अंकुर बनने से पहले एक बीज को कई बदलावों से गुज़रना होता है।

और फिर, बसंत के मौसम में, हमेशा की तरह एक दिन ली ज़िन मिट्टी के उस ढेर को देखने गया। और जब उसने देखा कि मिट्टी में से एक नन्हा हरा अंकुर बाहर निकला है, तो उसके उत्साह का ठिकाना न रहा। उसका पेड़ उग रहा था ! वह दौड़कर अपनी पड़ोसन के पास गया, जो एक किसान थी, और उसे यह रोमांचक खबर सुनाई। पड़ोसन ने उसे सिखाया कि जब एक नया पेड़ इतना नन्हा और नाजुक होता है, तो उसकी देखभाल कैसे की जाती है। अपने पेड़ की अच्छी से अच्छी देखभाल करने की चाह रखने वाले ली ज़िन ने उसके हर शब्द को बड़े ध्यान से सुना। "आपकी सलाह के लिये धन्यवाद के रूप में जल्द ही मेरे पास आपको देने के लिये बहुत सारे आडू होंगे" वह बोला। लेकिन पड़ोसन केवल मुस्कुराई। "ली ज़िन, क्या तुम्हे याद है, कि इसके बीज वाले हिस्से के सूखने के इन्तज़ार में तुम्हें किस तरह धैर्य रखना पड़ा था ?" ली ज़िन ने सिर हिलाया। "और क्या तुम्हें याद है कि तुम्हारे इस बीज के अंकुरित होने के इन्तज़ार में तुम्हें किस तरह और भी धैर्य रखना पड़ा था ?" ली ज़िन को यह भी याद था। "देखो," पड़ोसन बोली, "तुम्हारे इस अंकुर को पेड़ बनने में इससे भी ज़्यादा समय लगेगा, और उसके कुछ और समय बाद यह फल देगा। तुम्हें आडू देने के लिये तैयार होने में इस पेड़ को कई वर्ष लग जायेंगे।"

और इस प्रकार ली ज़िन ने अपने पेड़ की देखभाल की और जैसे–जैसे वह एक अंकुर से पौधा, और पौधे से पेड़ बना, वैसे–वैसे उसने उसकी आवश्यकताों को पूरा किया। ली ज़िन की तरह ही वह पेड़ भी धीरे–धीरे ऊँचा और चौड़ा होता गया। और फिर एक दिन, जब ली ज़िन स्कूल से लौटा, तो उसने पहली बार पेड़ के उन स्थानों पर छोटे छोटे आडू लगे हुए देखे जहाँ पहले केवल फूल थे। एक बार फिर, उसे वही आनन्द महसूस हुआ जो उसे तब हुआ था जब बीज पहली बार अंकुरित हुआ था। और एक बार फिर वह समझ गया कि उसे धैर्य रखना होगा। क्योंकि आडूओं को खाने लायक बनने में अभी कुछ समय और लगना था।

ङ. खेल : "प्रारंभक को खोजें"

एक बच्चे की आँख पर पट्टी बांध कर समूह से बाहर भेजें। जब वह बाहर जा चुका हो, तो कक्षा के बाकी बच्चे एक अन्य बच्चे को "प्रारंभक" बनायेंगे और फिर सभी बच्चे उस प्रारंभक की क्रियाओं की नकल करेंगे। उदाहरण के लिये, यदि वह ताली बजाता/बजाती है, तो सभी वैसा ही करेंगे। यदि वह टाटा करता/करती है, तो बाकी सब भी वही करेंगें। जिस बच्चे को बाहर भेजा गया था उसे ध्यान से देखना है और पता लगाने की कोशिश करनी होगी कि क्रियाओं का प्रारंभक कौन है। साथ ही, बाकी बच्चों को इस बात का ध्यान रखना होगा कि वे प्रारंभक की तरफ ज़्यादा ध्यान से या बहुत देर तक न देखें, क्योंकि ऐसा करने से प्रारंभक बच्चे को खोजने वाले बच्चे के लिये उसे पहचानना बहुत आसान हो जायेगा। जो सही बताए वह अथवा बारी बारी से बच्चे "प्रारंभक" बन सकते हैं।

च. रंग भरना : चित्र क्रमांक 23

छ. समापन प्रार्थनाएँ

पाठ 24

क. प्रार्थनाओं का पाठ करना और उन्हें कंठस्थ करना

कक्षा का आरम्भ सदैव की भांति प्रार्थनाओं से करें और फिर बच्चों के साथ उस प्रार्थना का पुनरावलोकन करें जो वे पिछले कुछ पाठों से कंठस्थ कर रहे हैं।

ख. गीत (इसमें पिछले गीतों को दोहराया जाना भी शामिल है

Firm in the Love of God

```
G         C
We walk, we walk
          D         G
We walk the path of God
          G         C
We're firm, we're firm
D         G
Firm in our love of God

          G         C
We walk the path of God
 D        G
When troubles come our way
    G     C
We're firm in our love of God
          D         G
And on His path we stay
```

We serve, we serve
We serve the Cause of God
We're firm, we're firm
Firm in our love of God
We serve the Cause of God
Always doing our part
We're firm in our love of God
And serve with a joyful heart

We stand, we stand
We stand, hearts turned towards God

We’re firm, we’re firm
Firm in our love of God
We stand, hearts turned towards God
Never doubting His aid
We’re firm in our love of God
And all our sorrows fade

ग. उद्धरण कंठस्थ करना

निम्नलिखित विचार उस उद्धरण को प्रस्तुत करने में आपकी सहायता करेंगे जिसे बच्चे इस अंतिम पाठ में कंठस्थ करेंगे, जो कि दृढ़ता की विषय–वस्तु पर केंद्रित है।

> ईश्वर से सच्चा प्यार करने वाले व्यक्ति के सबसे महत्वपूर्ण गुणों में से एक है दृढ़ता। जीवन में कुछ भी घटित क्यों न हो जाये, हम ईश्वर को तथा उसके लिये अपने प्रेम को हमेशा याद रखते हैं। इसलिये, दूसरों द्वारा कही गयी कोई भी बात या उनका कोई भी कृत्य ईश्वर पर हमारे विश्वास को प्रभावित नहीं कर सकता। हम उससे प्रेम करते हैं और उसके नियमों एवं शिक्षाओं का पालन करते हैं। दृढ़ता के महत्व को याद रखने के लिये, आईये हम बहाउल्लाह के निम्नलिखित उद्धरण को कण्ठस्थ करें :
>
> **“तुम्हारा स्थान अत्यंत उच्च होगा यदि तुम अपने स्वामी के धर्म में अडिग बने रहोगे।”**[127]

अत्यन्त

1. बगीचे अत्यन्त सुन्दर थे, यानी अब तक देखे गये किसी भी बगीचे से कहीं अधिक सुन्दर।

2. मारिया की माँ ने अपने परिवार के लिये एक बहुत विशेष केक बनाया। सभी ने इसे बहुत आनन्द ले कर खाया और कहा कि वह अत्यन्त स्वादिष्ट थी।

ऊँची

1. हर रात सोने से पहले मार्था प्रार्थना करती है और खुद को ईश्वर के नज़दीक महसूस करती है। जब वह सो जाती है तो उसकी आत्मा एक ऊँची अवस्था में होती है।

2. सभा में, कुमार विश्व शांति और मानवजाति की अच्छाई के बारे में एक वक्तव्य दे रहा था। कुमार ऊँची बातों के बारे में बात कर रहा है।

दृढ़ बने रहना

1. रोज़मेरी की सहेली उससे कहती रहती है कि सितारे आसमान में बनाये गये सफेद रंग के धब्बे होते हैं, लेकिन रोज़मेरी ने सीखा है कि हर सितारा वास्तव में एक बहुत दूर स्थित सूरज होता है। रोज़मेरी अपना विचार नहीं बदलती। वह उस बात पर दृढ़ बनी रहती है जिसे वह जानती है कि वह सत्य है।

2. किसी ने मोना से कहा कि रोज़ प्रार्थना करना महत्वपूर्ण नहीं है, फिर भी वह प्रार्थना करती रही क्योंकि वह जानती थी कि प्रार्थना करना ईश्वर का नियम है। प्रार्थना के नियम का पालन करने में मोना दृढ़ बनी रही।

घ. कहानी

शायद आप जानते होंगे कि बाहिये खानुम अब्दुल बहा की छोटी बहन थीं। जब बाहिये खानुम के प्रिय पिता बहाउल्लाह को अन्यायी सरकार ने गिरफ्तार कर कैद कर लिया था, तब वे केवल छः वर्ष की थीं। एक दूसरी कहानी से आपको पता है कि उनका परिवार शहर के कुलीन परिवारों में से एक था। अब उनकी पूरी सम्पत्ति छीन ली गयी थी। उनकी जमीन, उनके घर, उनके साजोसामान, उनकी चीजें–सब कुछ ले लिया गया था। परिवार के पास लगभग कुछ भी नहीं बचा था, खाने को भी नहीं था। जब वे और उनके बड़े भाई श्अब्दुल बहाश भूखे थे और खाने को रोटी नहीं थी तो उनकी माँ ने उनके हाथों में रोटी की जगह कुछ आटा खाने के लिए रख दिया

कुछ समय पश्चात उनके पिता को रिहा किया गया और सरकार ने उन्हें उनका देश छोड़ने के लिये मजबूर कर दिया। बाहिये खानुम और उनका परिवार खच्चरों पर पड़ोसी देश के बगदाद शहर की ओर निकल पड़े। इस शहर तक पहुँचने के लिए उन्हें विशाल बर्फ से ढके पहाड़ों को पार करना पड़ा। यात्रा दुष्कर थी और इसके लिए उनके पास पर्याप्त सामग्री भी नहीं थी। उनके कपड़ों ने बर्फ और ठंड से बचने में उनकी खास सहायता नहीं की। कुछ खच्चरों की सहायता से उन्होंने धीरे धीरे पहाड़ों की ऊंची चोटियों को पार किया। अनेक बार उन्हें भयावह रात बितानी पड़ती। ईश्वर ने उनकी रक्षा की, और उसकी अचूक सहायता से वे तीन माह बाद बगदाद में सुरक्षित पहुंचे। बाहिये खानुम कभी वापस अपने जन्म स्थान नहीं जा पाईं।

अपने बाकी जीवन के दौरान, बाहिये खानुम ने अपने पिता के कष्टों और निर्वासन को बाँटा। अंततः, सरकार ने बहाउल्लाह को कारा नगरी निर्वासित कर दिया, जहां वे तथा उनका परिवार दुर्दांत अपराधियों के साथ रहा। जब उनके प्रिय पिता का देहांत हो गया, बाहिये खानुम ने अपने भाई अब्दुल बहा का पूरा समर्थन किया, जो कि अपने पिता के धर्म के मुखिया नियुक्त किए गए थे। और अनेक वर्षों बाद, जब अब्दुल बहा भी परलोक सिधार गए, बाहिये खानुम उनके नाती, जो कि अब्दुल बहा द्वारा धर्मसंरक्षक नामित किए गए थे, युवा शोगी एफेंदी की महानतम समर्थक तथा दृढ़ रक्षक बन गईं।

बाहिये खानुम अब एक वृद्ध महिला हो चुकी थीं। उनका जीवन अशांति और उथल–पुथल से भरा रहा और एक के बाद एक कष्ट, एक के बाद दूसरी विपदा से गुजरता रहा। लेकिन उनकी आत्मा स्थिर बनी रही, और उनका हृदय हमेशा ईश्वर के प्रेम से भरा था। वे जीवन के अन्तिम दिनों तक दृढ़ और अटल थीं।

ङ. खेल : "मददगार हाथ"

बच्चों को जोड़े बनाने को हाथ पकड़ने को कहें। पहले उन्हें आँख खुली रख कर क्षेत्र में घूमने को कहें। उन्हें छोटे कदम आरम्भ में रखने चाहिए, और धीरे धीरे उनके कदम लंबे होते जाने चाहिए। प्रत्येक जोड़े को यह ध्यान रखना होगा कि दूसरों से टकराएं नहीं। तब जोड़े के एक साथी को अपनी आँख बंद रखनी होगी, और तब फिर क्षेत्र में घूमना होगा। अब अगर उन्हें किसी से टकराना नहीं है तो दूसरे बच्चे को उसके हाथ से मार्गदर्शन करना होगा। उन्हें बताएं कि मात्र स्पर्श संकेत ही दे सकते हैं। आप उनकी सहायता शुरू करने से पहले इन संकेतों को तय करने में कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, हाथ को एक बार दबाना अर्थात "रुको", दो बार "पीछे जाओ", तीन बार "दायें घूमो", और चार बार "बाएं घूमो"।

च. रंग भरना : **चित्र क्रमांक 24**

छ. **समापन प्रार्थनाएँ**

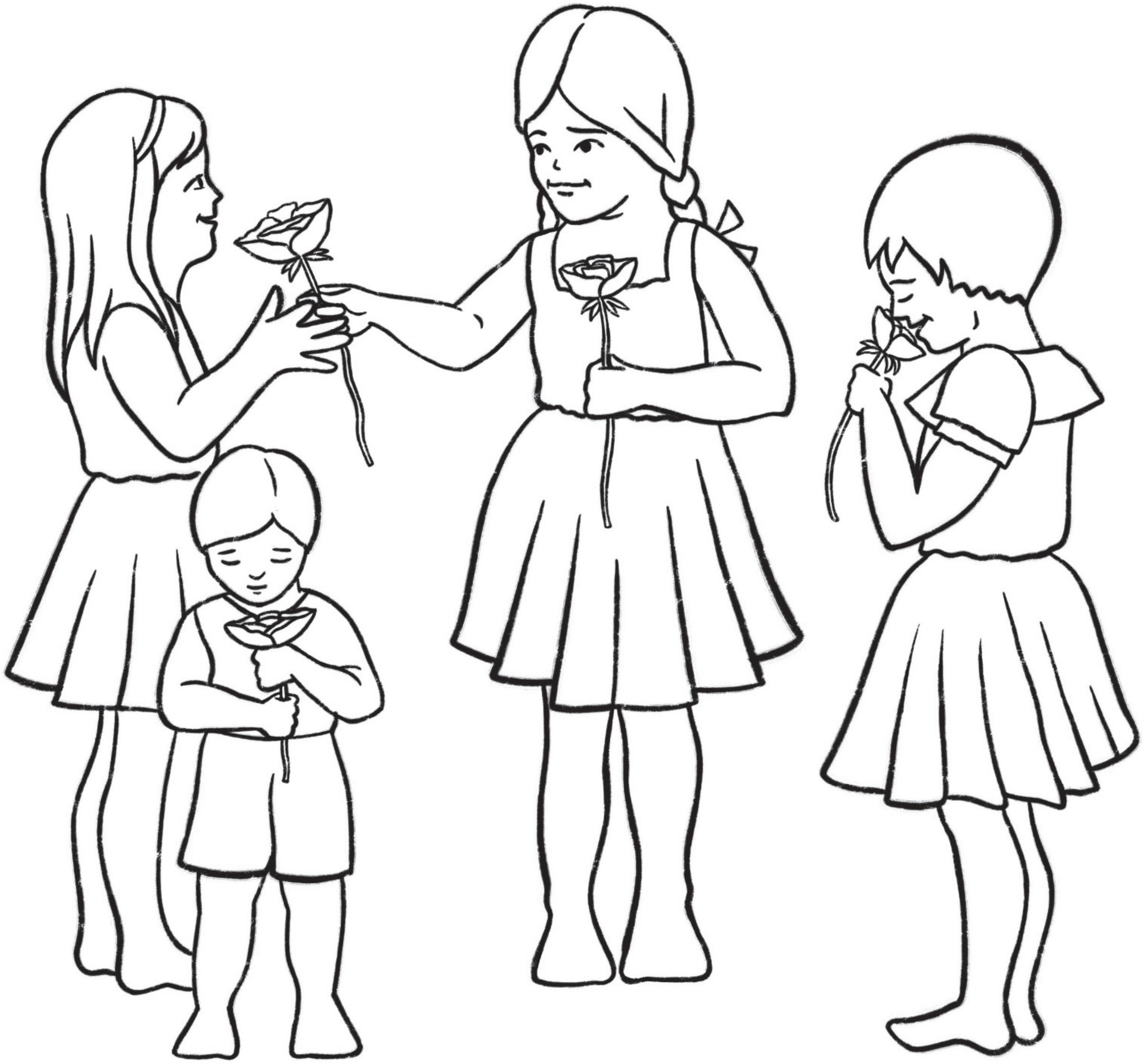

“हे चेतना के पुत्र ! मेरा प्रथम परामर्श यह है : एक शुद्ध, दयालु एवं प्रकाशमय हृदय धारण कर ...।”

“न्यायपथ का अनुसरण करो, क्योंकि यही सीधा मार्ग है।”

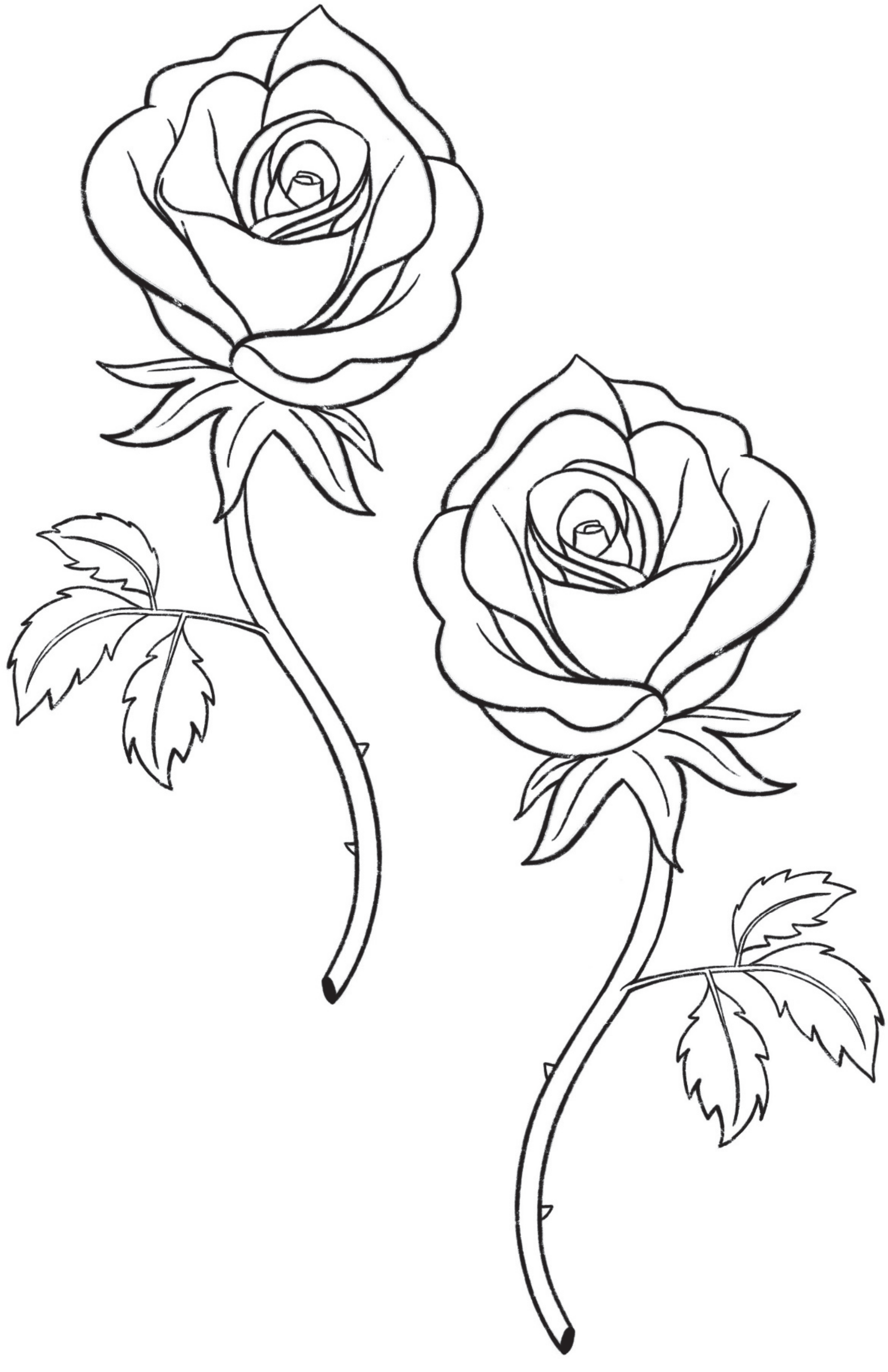

“हे मित्र ! अपनी हृदय–वाटिका में प्रेम के गुलाब के अतिरिक्त कुछ भी न उपजा ...।”

“सत्यवादिता सभी मानवीय गुणों का आधार है।”

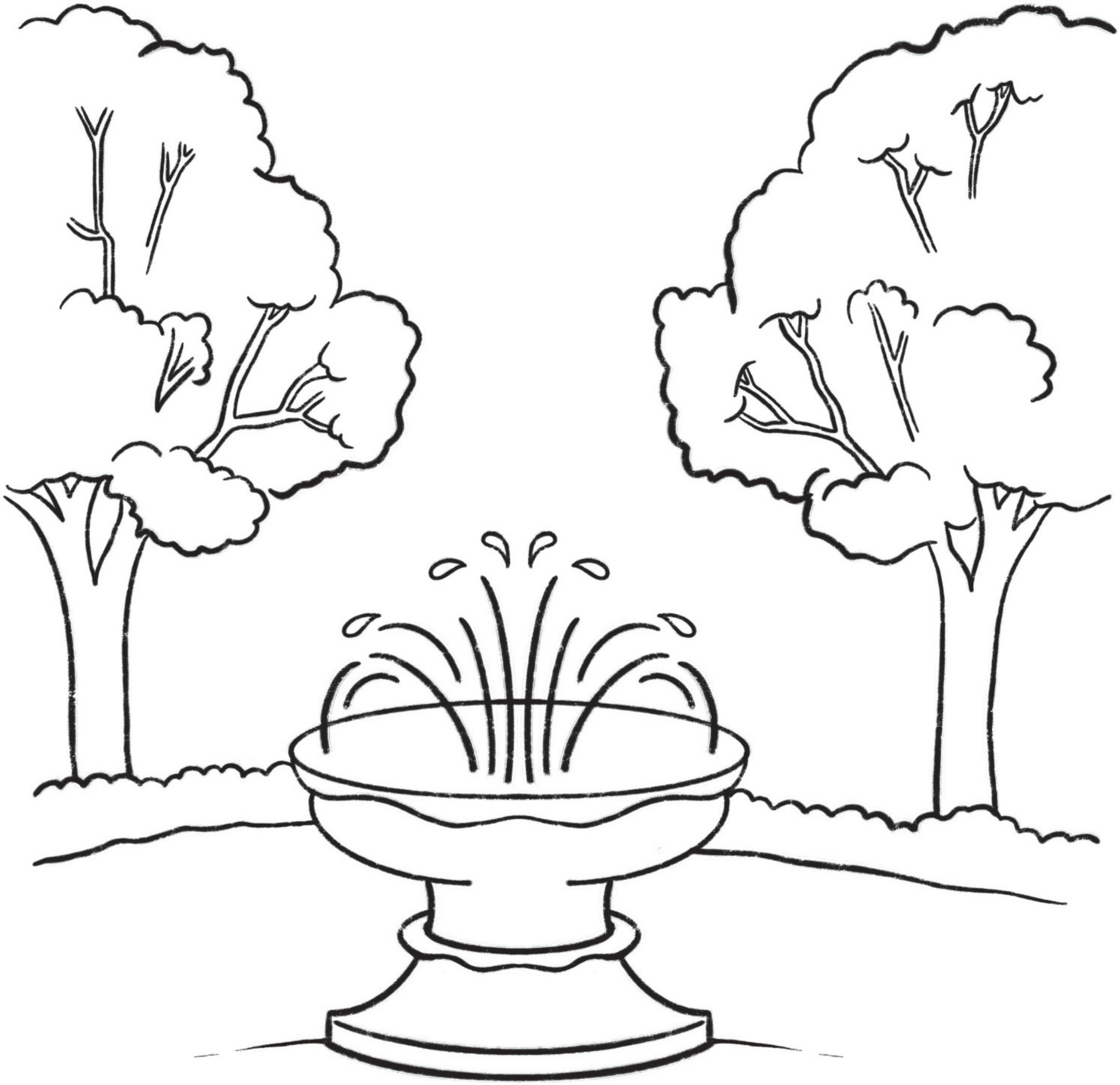

"देना तथा उदार रहना मेरे गुण है, कल्याण हो उसका जो स्वयं को मेरे गुणों से अलंकृत करता है।"

“धन्य है वह जो अपने भाई को अपने से अधिक महत्व देता है।”

“हे मनुष्य के पुत्र ! अपने हृदय के आनन्द में लीन रह, ताकि तू मुझसे मिलन के योग्य तथा मेरे सौंदर्य को प्रतिबिम्बित करे।”

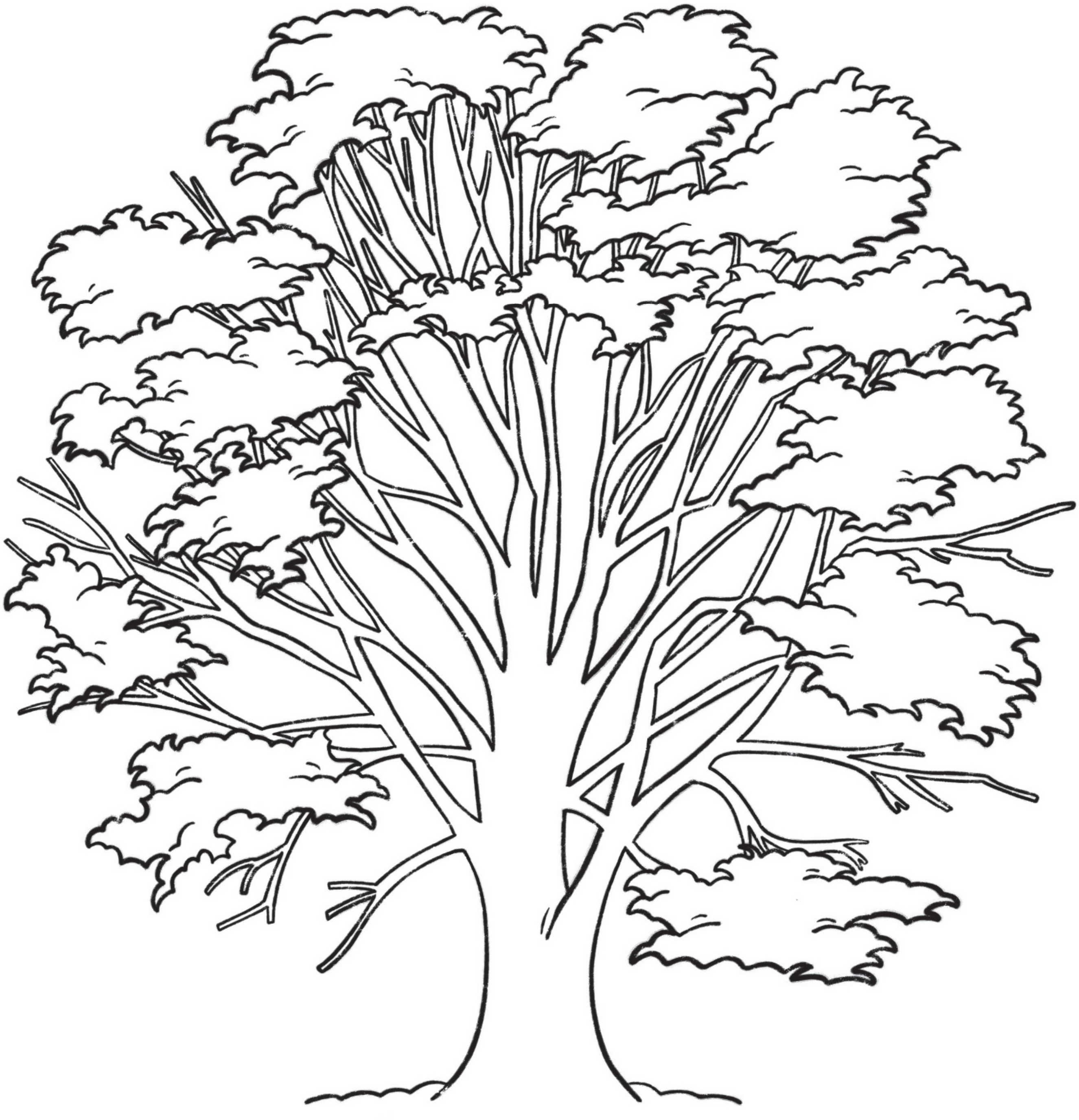

“हमें सभी समय में अपनी सत्यवादिता और निष्ठा को प्रकट करना चाहिये …।”

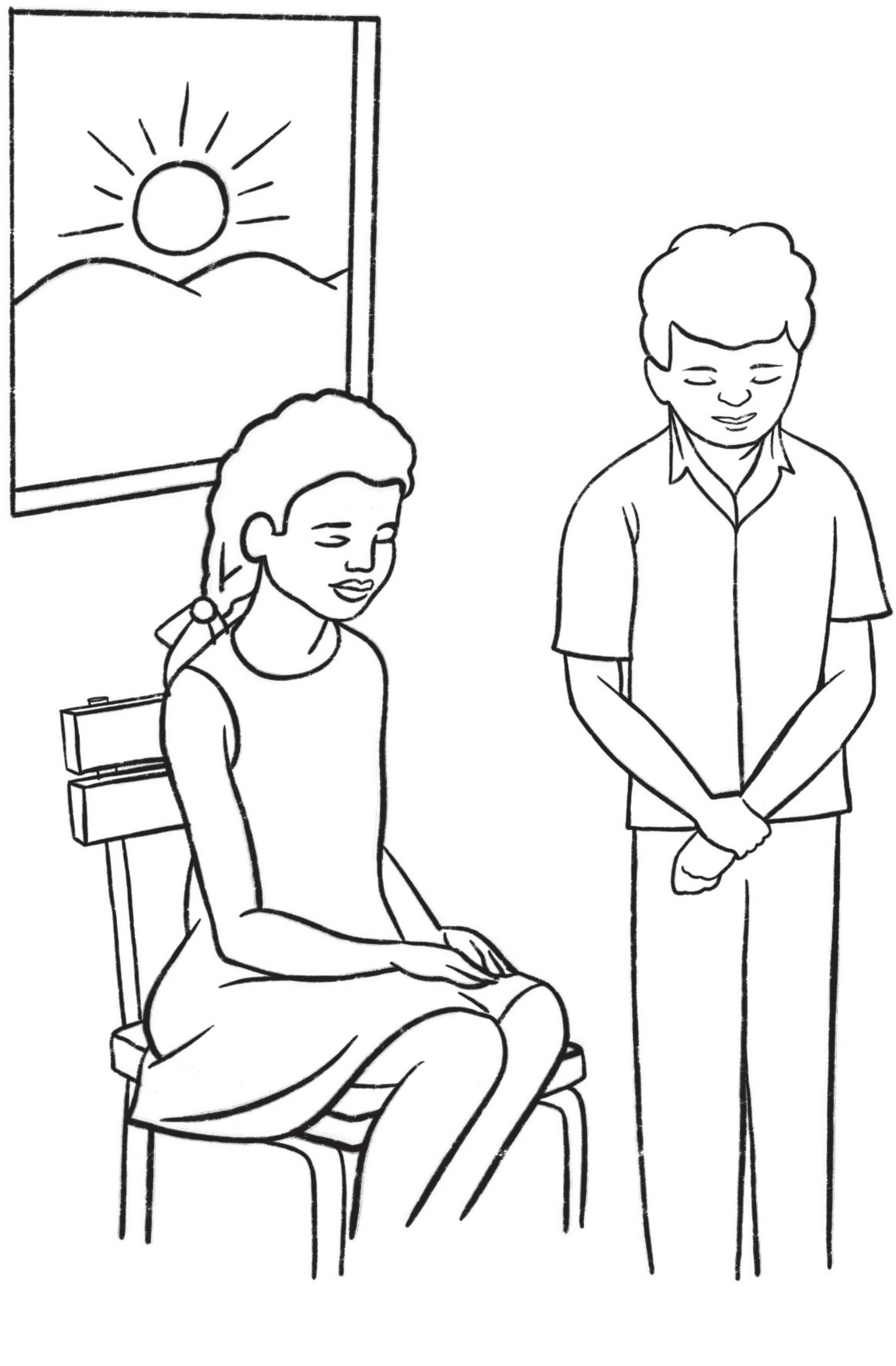

“हे मनुष्य के पुत्र ! मेरे समक्ष स्वयं को विनीत कर ले, ताकि मैं कृपापूर्वक तुझ तक आगमन करूँ।”

“तुम प्रसन्न बनो। तुम कृतज्ञ बनो। ईश्वर को धन्यवाद अर्पित करने के लिये उठ खड़े हो, ताकि यह कृतज्ञता अनुकम्पाओं को बढ़ाने में सहायक बन सके।”

"... क्षमा और कृपा तुम्हारे आभूषण हों और जिससे ईश्वर के प्रिय पात्रों के हृदयों को आनन्दित कर सको।"

“हे लोगो, अपनी जिह्वा को सत्यवादिता के सौंदर्य से निखारो और अपनी आत्माओं को ईमानदारी के आभूषण से विभूषित करो।”

“ईश्वरीय साम्राज्य समानता और न्याय के साथ–साथ, कृपा, करूणा, और प्रत्येक सजीव आत्मा के प्रति दया से प्राप्त किया जा सकता है।”

"यह जान लो कि तुम्हारा सच्चा आभूषण ईश्वर से प्रेम करने में, और उसके अतिरिक्त अन्य सभी से अनासक्त रहने में है …।"

“समस्त महिमा का स्रोत वह सब कुछ स्वीकार करना है जो उस स्वामी ने प्रदान किया है, और उसमें संतुष्ट रहना जो उस ईश्वर ने आदेशित किया है।”

“धन्य है वह जो सभी मनुष्यों से पूर्ण दयामयता और प्रेम की भावना से मिलता है।”

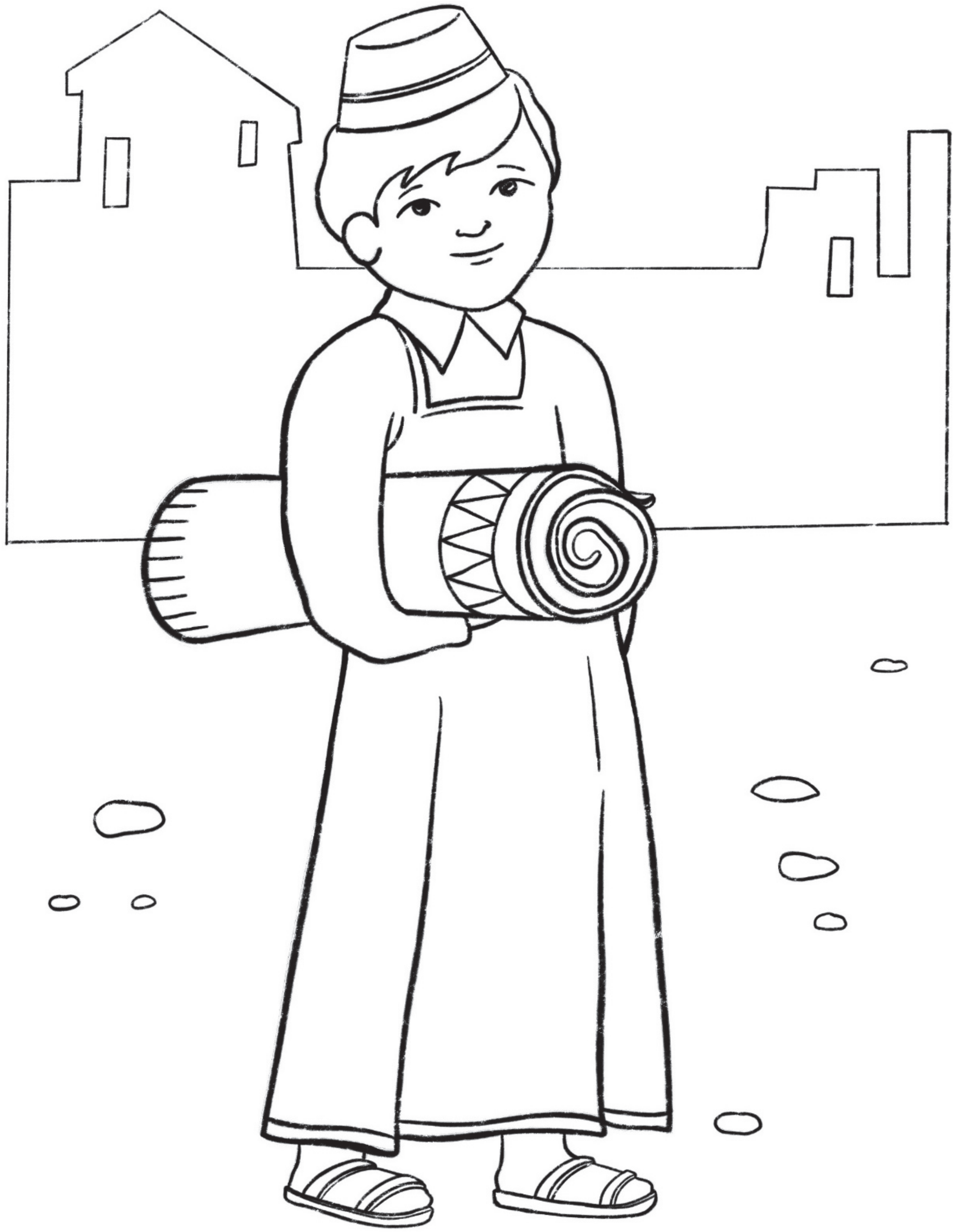

“साहस और शक्ति का स्रोत है ईश्वर के शब्द का प्रसार,
और उसके प्रेम में दृढ़ता।”

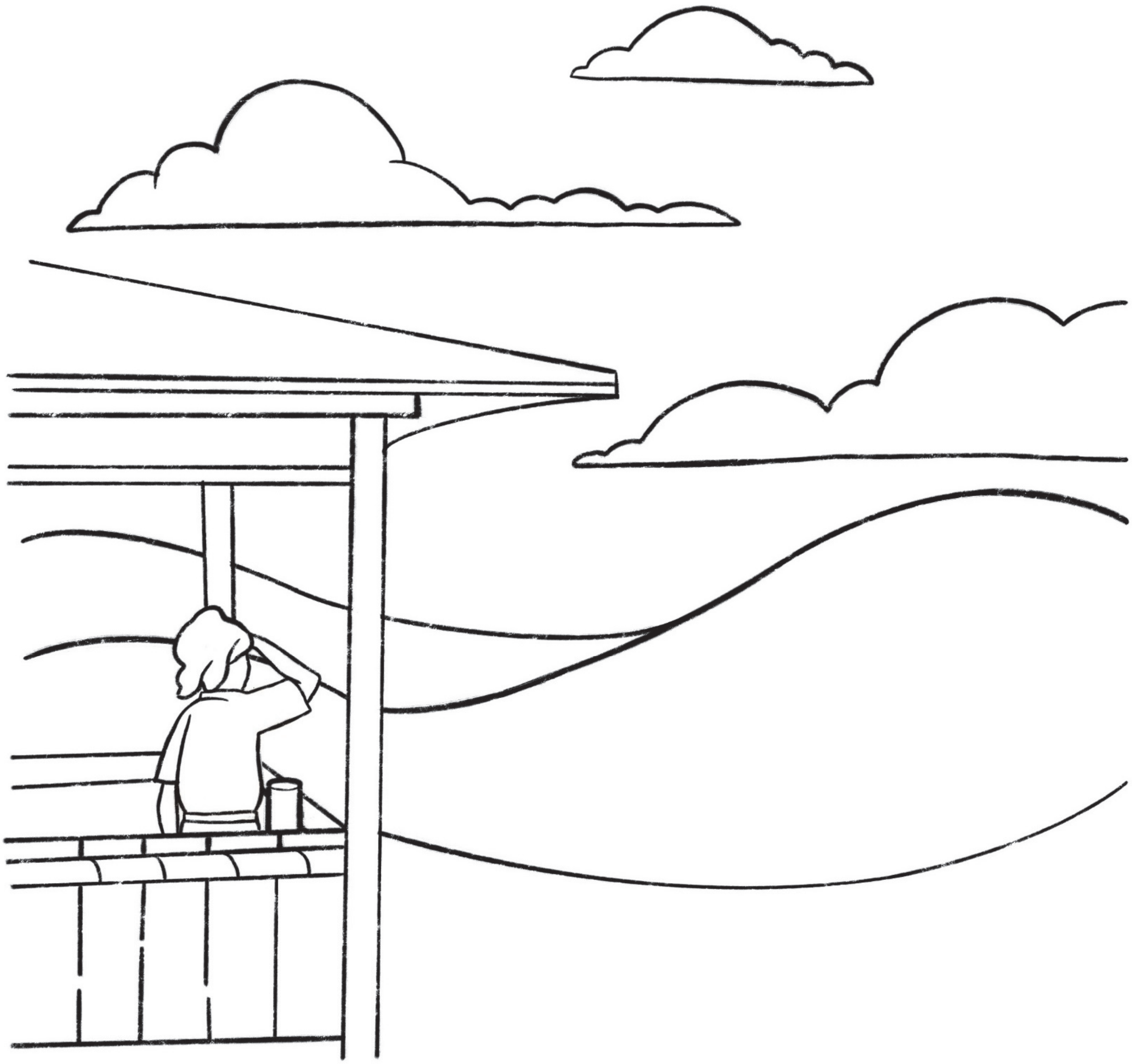

“ईश्वर में अपना भरोसा कभी न खो। सदैव आशावान बनो, क्योंकि मनुष्य पर ईश्वर की अनुकम्पाओं का प्रवाह कभी नहीं थमता।

“विश्वासपात्रता लोगों के शांति और सुरक्षा की ओर ले जाने वाला
महानतम द्वार है।“

"हे लोगो, तुम ईश्वर के प्रेम की उष्मा के साथ प्रज्वलित बनो, ताकि तुम दूसरों के हृदय को भी प्रज्जवलित कर सको।"

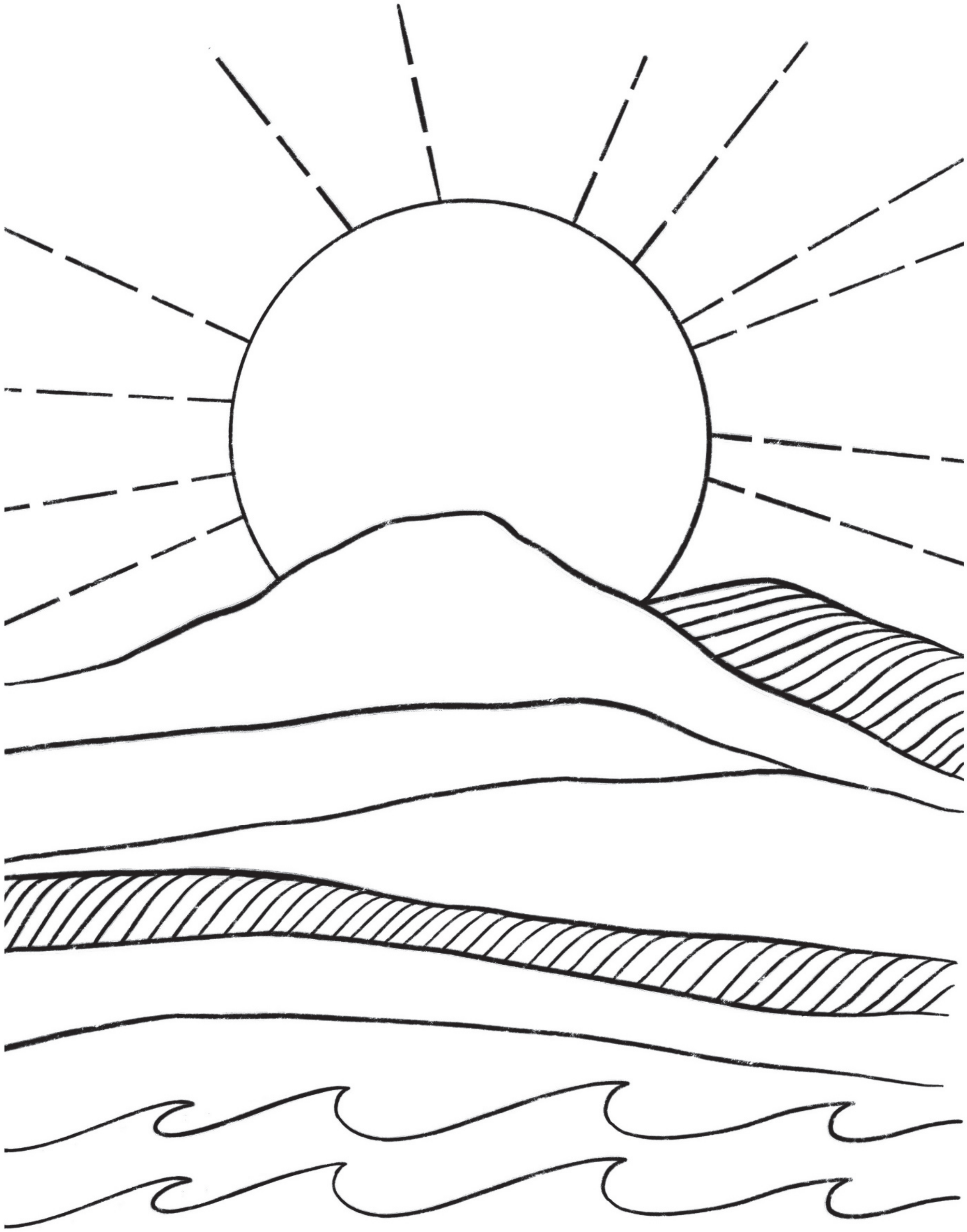

"हे अस्तित्व के पुत्र ! तुम मेरे दीपक हो और तुममें मेरा प्रकाश है। तुम उसमें से अपनी कांति प्राप्त करो और मेरे अतिरिक्त किसी अन्य की खोज न करो।"

“आनन्दित है वह निष्ठावान जो उच्च प्रयासों के परिधान से शोभित है और इस धर्म की सेवा करने के लिये उठ खड़ा हुआ है।”

“वह सत्य ही, उनके पुरस्कारों को बढ़ा देगा, जो धैर्य के साथ सहन करते हैं।”

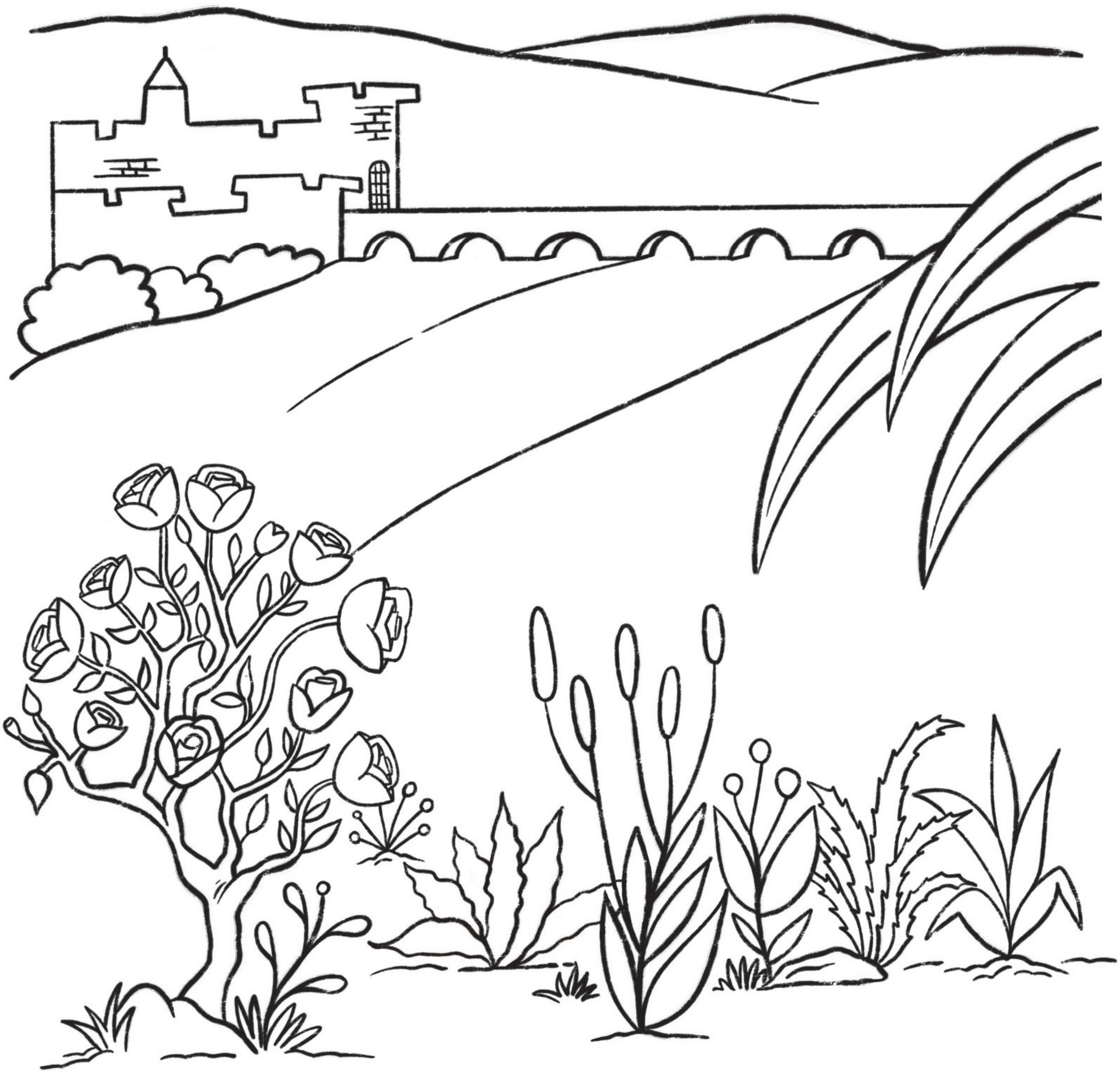

“तुम्हारा स्थान अत्यंत उच्च होगा यदि तुम अपने स्वामी के धर्म में अडिग बने रहोगे।”

संदर्भ

1. अब्दुल बहा बहाई प्रार्थनाओं में
2. अब्दुल बहाई बहाई प्रार्थनाओं में
3. किताब–ए–अक़दस के बाद बहाउल्लाह की प्रकटित पाती
4. बहाउल्लाह, दिव्य न्याय का अवतरण, शोगी एफेंदी
5. किताब–ए–अक़दस के बाद बहाउल्लाह की प्रकटित पाती
6. बहाउल्लाह, निगूढ़ वचन, अरबी सं. 2
7. किताब–ए–अक़दस के बाद बहाउल्लाह की प्रकटित पाती
8. अब्दुल बहा की पातियों से
9. अब्दुल बहा की पातियों से
10. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स आफ अब्दुल बहा
11. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन
12. बहाउल्लाह, दिव्य न्याय का अवतरण, शोगी एफेंदी
13. अब्दुल बहा, "विश्वासपात्रता" संकलन में
14. अब्दुल बहा बहाई प्रार्थनाओं मे
15. अब्दुल बहा बहाई प्रार्थनाओं मे
16. किताब–ए–अक़दस के बाद बहाउल्लाह की प्रकटित पाती
17. किताब–ए–अक़दस के बाद बहाउल्लाह की प्रकटित पाती
18. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स आफ अब्दुल बहा
19. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स आफ अब्दुल बहा
20. अब्दुल बहा, द प्रोमलगेशन आफ यूनीवर्सल पीस, 1 जुलाई 1912 का वक्तव्य
21. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स आफ अब्दुल बहा
22. अब्दुल बहा, द प्रोमलगेशन आफ यूनीवर्सल पीस, 3 सितम्बर 1912 का वक्तव्य
23. द टेबरनेकेल आफ यूनिटी

24. डेज आफ रिमेम्बरेन्स

25. अब्दुल बहा, अमृतवाणी में, 22 नवम्बर 1911 का वक्तव्य

26. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स आफ अब्दुल बहा

27. बहाउल्लाह की पातियाँ : द सम्मन्स आफ द लार्ड आफ होस्ट

28. किताब–ए–अक़्दस के बाद बहाउल्लाह की प्रकटित पाती

29. बहाउल्लाह की पातियाँ : द सम्मन्स आफ द लार्ड आफ होस्ट

30. अब्दुल बहा, द प्रोमलगेशन आफ यूनीवर्सल पीस, 5 मई 1912 का वक्तव्य

31. बहाउल्लाह, बहाई प्रार्थनाओं में

32. बहाउल्लाह, बहाई प्रार्थनाओं में

33. किताब–ए–अक़्दस के बाद बहाउल्लाह की प्रकटित पाती

34. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, सं. 82 पैरा. 3

35. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, सं. 5 पैरा. 2

36. अब्दुल बहा, द सीक्रेट आफ डिवाइन सिवलाइजेशन

37. निगूढ़ वचन, अरबी सं. 70

38. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, सं. 129 पैरा. 2

39. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, सं. 139 पैरा. 2

40. अब्दुल बहा, द प्रोमलगेशन आफ यूनीवर्सल पीस, 23 अप्रैल 1912 का वक्तव्य

41. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, सं. 125 पैरा. 3

42. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, सं. 15 पैरा. 1

43. अब्दुल बहा, द प्रोमलगेशन आफ यूनीवर्सल पीस, 5 मई 1912 का वक्तव्य

44. अब्दुल बहा, द प्रोमलगेशन आफ यूनीवर्सल पीस, 2 दिसम्बर 1912 का वक्तव्य

45. किताब–ए–अक़्दस के बाद बहाउल्लाह की प्रकटित पाती

46. बहाउल्लाह, भेड़िए–पुत्र के नाम पत्र

47. बहाउल्लाह, “विश्वासपात्रता” में

48. अब्दुल बहा, बहाई प्रार्थनायें एवं बच्चों के लिए पातियाँ, एक संकलन

49. अब्दुल बहा, बहाई प्रार्थनायें एवं बच्चों के लिए पातियाँ, एक संकलन सं. 10

50. अब्दुल बहा, द प्रोमलगेशन आफ यूनीवर्सल पीस, 14 अप्रैल 1912 का वक्तव्य

51. अब्दुल बहा आन डिवाइन फ्लास्फी

52. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स आफ अब्दुल बहा

53. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स आफ अब्दुल बहा

54. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, सं. 1121 पैरा. 6

55. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, सं. 66 पैरा. 6

56. किताब–ए–अक़दस के बाद बहाउल्लाह की प्रकटित पाती

57. बहाउल्लाह, इन द बहाई वर्ल्ड

58. निगूढ़ वचन, अरबी सं. 40

59. निगूढ़ वचन, फारसी सं. 50

60. अब्दुल बहा की पातियों से

61. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, सं. 146, पैरा 1

62. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स आफ अब्दुल बहा

63. अब्दुल बहा, द प्रोमलगेशन आफ यूनीवर्सल पीस, 12 मई 1912 का वक्तव्य

64. अब्दुल बहा द्वारा दिया गया वक्तव्य 16 व 17 अक्टूबर 1911, अमृतवाणी, सं. 1.7

65. अब्दुल बहा, बहाई प्रार्थनाओं में

66. बहाउल्लाह, बहाई प्रार्थनाओं में

67. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स आफ अब्दुल बहा

68. अब्दुल बहा, द प्रोमलगेशन आफ यूनीवर्सल पीस, 10 नवम्बर 1912 का वक्तव्य

69. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, सं. 153, पैरा 8

70. निगूढ़ वचन, फारसी सं. 29

71. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स आफ अब्दुल बहा

72. अब्दुल बहा द्वारा दिया गया वक्तव्य 21 नवम्बर 1911, अमृतवाणी, सं. 34.8

73. बहाउल्लाह, "विश्वासपात्रता" में

74. बहाउल्लाह, "विश्वासपात्रता" में

75. बहाउल्लाह, "विश्वासपात्रता" में

76. बहाउल्लाह, "गाइडलाइन्स फार टीचिंग" संकलन

77. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, सं. 15, पैरा 6

78. द समन्स आफ द लार्ड आफ होस्ट

79. काल आफ द डिवाइन बिलवेड

80. बहाउल्लाह, बहाई प्रार्थनाओं में,

81. अब्दुल बहा, बहाई प्रार्थनाओं में

82. अब्दुल बहा की पातियों से

83. बहाउल्लाह, किताब–ए–अक़दस में, पैरा 70

84. अब्दुल बहा द्वारा दिया गया वक्तव्य 23 नवम्बर 1911, अमृतवाणी, सं. 36.9

85. अब्दुल बहा, द प्रोमलगेशन आफ यूनीवर्सल पीस, 12 अप्रैल 1912 का वक्तव्य

86. द टैबरनेकेल आफ यूनिटी

87. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स आफ अब्दुल बहा

88. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स आफ अब्दुल बहा

89. निगूढ़ वचन, अरबी सं. 48

90. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, सं. 66, पैरा 11

91. द समन्स आफ द लार्ड आफ होस्ट

92. किताब–ए–अक़दस के बाद बहाउल्लाह की प्रकटित पाती

93. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, सं. 134, पैरा 1

94. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, सं. 161, पैरा 1

95. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, सं. 143, पैरा 1

96. बहाउल्लाह, सम्पूर्ण आस्था की पुस्तक पैरा 146

97. अब्दुल बहा, द प्रोमलगेशन आफ यूनीवर्सल पीस, 23 नवम्बर 1912 का वक्तव्य

98. अब्दुल बहा, बहाई प्रार्थनाओं में

99. निगूढ़ वचन, फारसी सं. 3

100. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, सं. 118, पैरा 1

101. निगूढ़ वचन, फारसी सं. 3

102. बहाउल्लाह, दिव्य न्याय का अवतरण, शोगी एफेंदी

103. अब्दुल बहा, बहाई प्रार्थनाओं मे

104. निगूढ़ वचन, फारसी सं. 49

105. किताब–ए–अक़दस के बाद बहाउल्लाह की प्रकटित पाती

106. निगूढ़ वचन, अरबी सं. 36

107. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स आफ अब्दुल बहा

108. अब्दुल बहा, बहाई प्रार्थनाओं में

109. निगूढ़ वचन, अरबी सं. 42

110. अब्दुल बहा की पातियाँ

111. किताब–ए–अक़दस के बाद बहाउल्लाह की प्रकटित पाती

112. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, सं. 136, पैरा 6

113. अब्दुल बहा, बहाई प्रार्थनाओं में

114. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स आफ अब्दुल बहा

115. द समन्स आफ द लार्ड आफ होस्ट

116. किताब–ए–अक़दस के बाद बहाउल्लाह की प्रकटित पाती

117. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, सं. 156, पैरा 1

118. बहाउल्लाह, बहाई प्रार्थनाओं में

119. किताब–ए–अक़दस के बाद बहाउल्लाह की प्रकटित पाती

120. सलेक्शन फ्राम द राइटिंग्स आफ अब्दुल बहा

121. किताब–ए–अक़दस के बाद बहाउल्लाह की प्रकटित पाती

122. बहाउल्लाह की पातियों से

123. अब्दुल बहा, बहाई प्रार्थनाओं में

124. निगूढ़ वचन, अरबी सं. 11

125. किताब–ए–अक़दस के बाद बहाउल्लाह की प्रकटित पाती

126. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, सं. 66, पैरा 10

127. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, सं. 115, पैरा 13